जैसा ये था
(As it was)

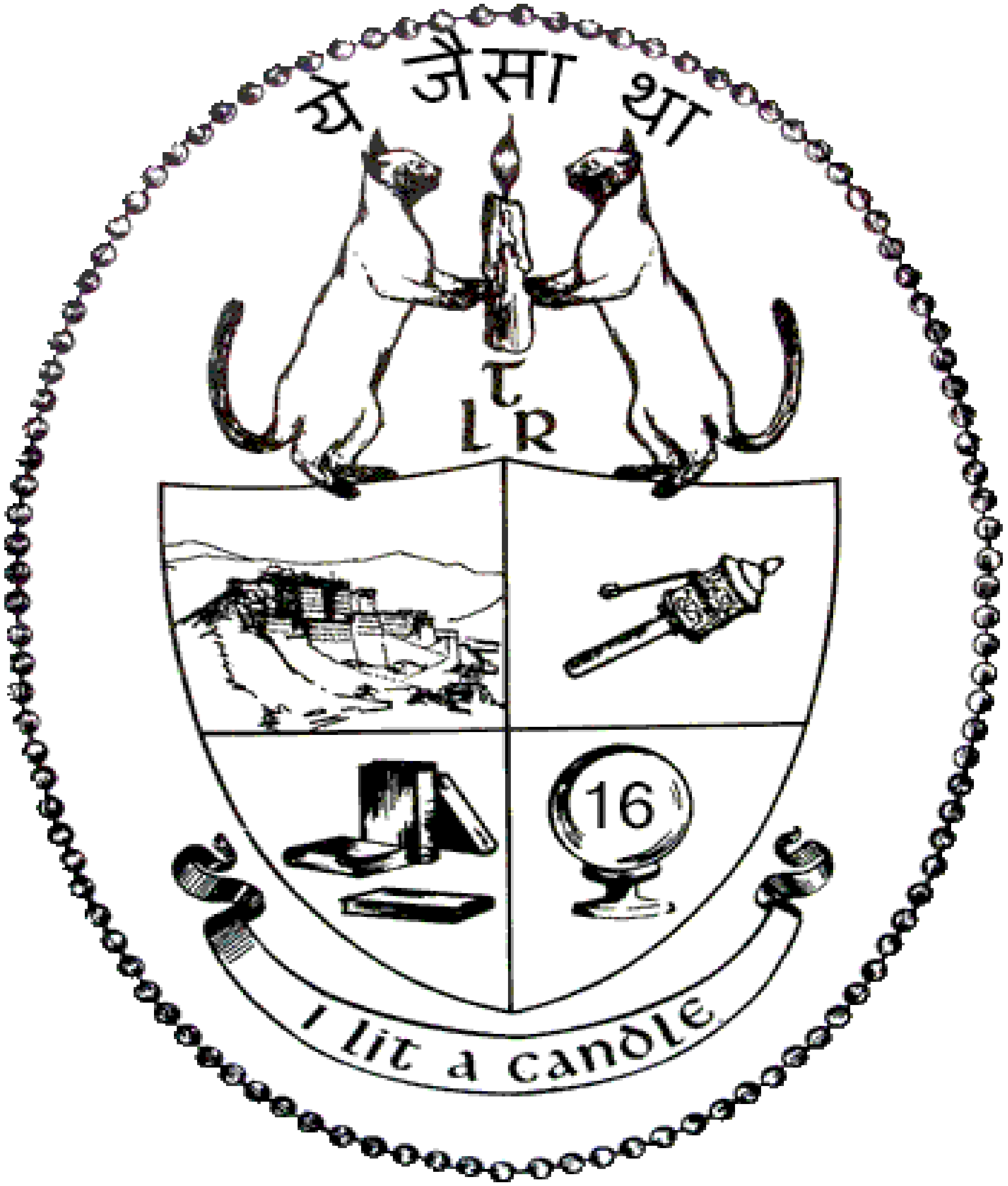

(I Lit a candle)
मैंने दीप जलाया

जैसा ये था
(As it was)

मूल लेखक
टी. लोबसांग रम्पा

हिन्दी रूपान्तरण कर्ता
डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शोधकार्यों के हितार्थ

निःशुल्क वितरण के लिये

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्ति स्थल : www.lobsangrampa.org
email : tuesday@lobsangrampa.org
drguptavp@gmail.com

विषय सूची

अनुवादक का निवेदन	:	i
धन्यवाद	:	
अग्रेषण	:	vi
पुस्तक एकः जैसा ये प्रारम्भ में था		
अध्याय एक	:	1
अध्याय दो	:	11
अध्याय तीन	:	21
पुस्तक दोः प्रथम काल	:	
अध्याय चार	:	32
अध्याय पॉच	:	43
अध्याय छैः	:	54
पुस्तक तीनः परिवर्तनों की पुस्तक		
अध्याय सात	:	72
अध्याय आठ	:	86
अध्याय नौ	:	99
पुस्तक चारः जैसा ये अब है!		
अध्याय दस	:	109
अध्याय ग्यारह	:	120

धन्यवाद

कालगेरी नगर को समर्पित,
जहॉ मुझे व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप से
शान्ति और मौन और स्वतंत्रता मिली।
कालगेरी शहर, आपको धन्यवाद,

अनुवादक का निवेदन

लोबसांग रम्पा की सोलहवीं पुस्तक "As it Was" का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। वास्तव में, ये एक प्रकार से, रम्पा की आत्मकथा ही है। वैसे तो रम्पा ने अपनी प्रथम तीन पुस्तकों, तीसरी ऑख (The Third Eye), ल्हासा का डाक्टर (Doctor from Lhasa), और रम्पा की कहानी (The Rampa Story), में इसे बता दिया था, परन्तु वहॉ कहने के अंदाज और यहॉ के वर्णन की शैली और घटनाओं के चयन में काफी भिन्नता है, जो स्वाभाविक है।

सायरिल हॉस्किन (Cyril Hoskin), जिसने टी. लोबसांग रंपा के छद्म नाम से तीसरी ऑख व अन्य 18 पुस्तकें लिखीं, का जन्म 8 अप्रैल 1910 को इंग्लैंड के प्लिम्टन, डेवन में हुआ था। लोबसांग रंपा, डेवोनशायर लहजे वाला एक अंग्रेज था, जिसने जोर देकर कहा था कि वह तिब्बत का एक उच्चश्रेणी का लामा था। उसने दावा किया था कि उसने अपने जीवन के मिशन को पूरा करने के लिये, 1949 में सायरिल हॉस्किन (Cyril Hoskin) की सहमति के साथ उसके इच्छुक शरीर में प्रवेश किया था। लामा के दुरानुभूतिपूर्ण सुझाव के आधार पर, 1948 में, हॉस्किन ने अपना नाम, वैधानिक तरीके से बदलकर डॉ. कार्ल कुआनसुओ (Dr. Carl KuanSuo) कर लिया था, और बाद में उसका कुलनाम, संक्षेप में बदलकर कुआन हो गया (स्वाभाविक रूप से उसके तिब्बती पासपोर्ट, चिकित्सकीय लामा होने के प्रमाणपत्र एवं दूसरे अन्य वैधानिक कागजात, इसी नाम से रहे होंगे।)। तिब्बत और चीन के संबंध में रंपा की विस्तृत स्मृतियॉ, गूढ़ कलाओं के सम्बंध में उसकी ज्ञानसंपदा, और उसकी कर्त्तव्यनिष्ठा ने, उसके अनेक पाठकों को, उसकी प्रमाणिकता का विश्वास दिलाया था।

अनेक असाधारण गुणों वाला लोबसांग रंपा, एक अद्वितीय व्यक्ति था। कुछ मायनों में वह विवादग्रस्त व्यक्ति था। वह एक ब्रह्मचारी भिक्षु था, जिसकी एक समर्पिता पत्नी थी, पूरी तरह से आत्मलीन व्यक्ति, जिसने खुलकर अपने जीवन के बारे में लिखा, एक स्वघोषित तिब्बती, जिसका तिब्बती समुदाय के साथ कोई संपर्क नहीं था, और एक बौद्ध, जिसने अनेक पश्चिमी गूढ़ कलाओं का अभ्यास किया।

रंपा अपने खराब स्वास्थ्य से अभिशप्त था। वह हृदयाघात (coronary thrombosis), मधुमेह (diabetes), हड्डी के जोड़ों का दर्द (arthiritis) और अपने मेजबान से अनुवांशिकी में प्राप्त, अधो अंगों के लकवे (paraplegia) से पीड़ित था। उसकी श्रवण शक्ति युद्ध की चोटों के परिणामस्वरूप लगातार गिर रही थी, और उसकी दृष्टि आयु के साथ लगातार खराब हो रही थी। यद्यपि, वह अपने बाद के वर्षों में अक्सर चिड़चिड़ा (grumpy) हो गया था, तथापि, उसने अपनी हाजिरजवाबी, और हास्य स्वभाव को कभी भी नहीं खोया।

रंपा एक सदाशयी, उदार व्यक्ति था, जिसकी सांसारिक चीजों में थोड़ी सी भी रुचि नहीं थी। वर्षों पहले, उसने अपने रंगीन टेलीविजन को एक अनजान आदमी को दे दिया था, पहिये वाली कुर्सी एक घायल पुलिस के सिपाही को दे दी, और पूरी तरह से फर्नीचर से सुसज्जित घर, नवविवाहितों को दे दिया था। मित्र और परिचित, अक्सर, उससे बहुमूल्य उपहार प्राप्त करते रहते थे, जिसे वे उसका अपमान किये बिना लौटाने में असमर्थ रहते थे। अपने जीवनकाल में उसने दसियों हजार पत्रों का अपने प्रशंसकों को, सामान्यतः डाक खर्च को स्वयं भुगतते हुए, व्यक्तिगतरूप से उत्तर दिया। उसमें लोगों को मदद करने की निष्ठापूर्ण (sincere) इच्छा थी।

दूसरी तरफ, रंपा का मिजाज जल्दी गर्म हो जाता था, और अक्सर स्वार्थी और छिछले लोगों के प्रति, उसका अधैर्य प्रदर्शित होता था। वह लोगों को बेवकूफ बनाने में प्रसन्न नहीं होता था। उसने

नारीवादियों, किशोरों, कैथोलिक ईसाइयों, पश्चिमी डॉक्टरों, साम्यवादियों और तिब्बती निर्वासित सरकार को वर्षों तक निशाना बनाया। तथापि, उसका सर्वाधिक वैमनस्य संवाददाताओं, पत्रकारों, आयकर अधिकारियों और साहित्यिक आलोचकों के लिये आरक्षित था, जिनकी उसने भरपूर निंदा की।

निस्संदेह रूप से, लोबसांग रंपा एक ईश्वरीय उपहार प्राप्त मानसिक और परोक्षानुभूति क्षमताओं से सम्पन्न था। वह सरलता से प्रभामंडल देखने, भविष्यकथन करने, और किसी व्यक्ति के चरित्र को अत्यधिक सुग्राहकता के साथ निर्णय कर लेने में सक्षम था। वह क्रिस्टल बॉल का उपयोग कर सकता था, जन्मपत्रियों को बना सकता था, हस्तरेखाओं का अध्ययन करता था, और अपनी चेतना का अपने शरीर के बाहर प्रक्षेप कर सकता था। ये क्षमताऐं, उसने अनेक बार, अनेक लोगों के सामने प्रदर्शित भी कीं, यद्यपि उसे इस कार्य में अत्यधिक संकोच भी होता था। जैसा कि उनके फ्रांसीसी भाषा के प्रकाशक एलन स्टांके (Alain Stanke) ने प्रमाणित किया, पश्चिमी और पूर्वी गूढ़विज्ञान के संबंध में उसका ज्ञान अद्‌भुत था। रंपा में अपनी बिल्लियों के साथ दुरानुभूति से संभाषण करने की क्षमता थी।

रंपा में, अपने लेखन और मनोक्षमताओं के अतिरिक्त, दूसरी अनेक प्रखरतायें भी थीं। वह एक कुशल फोटोग्राफर था, जिसने अनेक भव्य फोटो बनाये। उसका हाथ लगते ही सभी प्रकार की मशीनें चालू हो जाती थीं, और वह लगभग किसी भी प्रकार की यांत्रिक समस्या को हल करने में कुशल था। अपनी गिरती हुई नजर और गठिया से पीड़ित हाथों के बावजूद, वह एक कुशल दस्तकार था, जिसने पानी के जहाज, रेलें और कारों के अनेक मॉडल बनाये। वह शॉर्टवेव (shortwave) सहित, नौसिखिया रेडियो (amatuer radio) में काफी रुचि रखता था।

लोबसांग रंपा एक मित्रवत् परंतु अपने आप में गम्भीर व्यक्ति था, जिसके खराब स्वास्थ्य और सार्वजनिक उत्सुकता और मीडिया के द्वारा प्रदत्त प्रताड़ना ने उसको एकांत में जाने को मजबूर किया। चूंकि भीड़ की उत्सुकता और उत्साह उसके लिये असहनीय था, बाद के वर्षों में, अपनी पहिये वाली कुर्सी से बंधा हुआ रंपा, मुश्किल से जनता के बीच जाता था। ये विश्वास करते हुए कि लोग आध्यात्मिक रूप से केवल तभी प्रगति करते हैं, जबकि वे एकांत में अध्ययन करें और ध्यान लगायें। वह कभी किसी समूह में शामिल नहीं हुआ और न ही उसने कोई भाषण दिया।

तीसरी ऑख (The Third Eye) पुस्तक के लेखक रंपा, के आलोचक उसकी निंदा में, जोरदार आवाज के साथ बोलते थे—इतनी जोरदार आवाज में, कि तिब्बत के बारे में उसकी पहली पुस्तक, 'तीसरी ऑख', को सभी समयों में, सबसे बड़ी साहित्यक धोखेबाजी समझा जाने लगा। आलोचकों में, तिब्बती और पूर्वी अध्ययनकर्त्ता, संचार माध्यमों के अनेक प्रतिनिधि, और निर्वासित तिब्बती समुदाय के अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों सहित अनेक सदस्य, सम्मिलित थे।

रंपा, मीडिया पर गलत उद्धरण देने और प्रताड़ित करने का आरोप लगाते हुए, सदैव उन से बचकर रहता था। अपने लेखक जीवन में उसने स्वयं या अपनी पत्नी का साक्षात्कार लेने के लिये केवल तीन पत्रकारों को आज्ञा दी। पहला साक्षात्कार 1958 में हुआ, जब वह हृदयाघात से बिस्तर पर पड़ा था, और परिणामित लेख, इतना गंदा था कि उसे, बीमारी की अवस्था में ही, टेप के द्वारा उसका खंडन करना पड़ा। 1965 में एक कनाडाई नागरिक के द्वारा परेशान किये जाने पर, उसने फिर कभी प्रेस के लोगों से न मिलने की कसम खाई। तथापि, उसने अपने मित्रों, एजेंट और प्रकाशक, एलन स्टांके को साक्षात्कार देने और मॉन्ट्रियल में अपने ऊपर फिल्म बनाने की आज्ञा दी थी, यद्यपि उसने 1974 में अपनी पुस्तक कैन्डल लाईट (candle light) में पूरे साक्षात्कार को रिकॉर्ड कराते हुए, स्वयं को बचाकर रखा। दुर्भाग्यवश, उसके मीडिया के साथ सहयोग करने से मना करने ने, प्रेस की ज्वालाओं और सार्वजनिक उत्सुकता को भड़काया। उन्होंने अक्सर बैचेनी के साथ, उसका पीछा किया, उसके पीछे जासूस लगाये, मनगढ़ंत साक्षात्कार बनाये और उसे झूठा और धोखेबाज कहा।

रंपा अपनी पत्नी सराह (Sarah) के प्रति, जो बिना किसी प्रश्नचिन्ह के, उसके सही स्वामी होने

पर विश्वास करती थी, एक समर्पित और महान पति था। वह अपनी दत्तक पुत्री, शीलाघ राउस (Sheelagh Rouse) (जो पारिवारिक मित्र से, हाल ही में अलग होने के बाद, उसके साथ जवानी में जुड़ी थी, और जिसको रम्पा स्नेहवश बटरकप कहते थे।) और वैसे ही अपनी प्रिय सियामी बिल्लियों का एक प्रेमपूर्ण और दयावान पिता था। उसने अपने मित्रों हाई मेल्डेलसॉन (Hy Meldelsohn), जॉन बिगरास (John Bigras), जॉन हेन्डरसन (John Henderson), वेलेरिया सोरोक (Valeria Sorock), श्रीमती ओग्रेडी (Mrs. O'Grady), पैट लोफ्टस (Pat Loftus) और अनेक दूसरों को, अपनी अनेक पुस्तकों में श्रद्धा अर्पित की है। रंपा ने अपने वफादार पाठकों से प्राप्त प्रश्नों को कई पुस्तकें समर्पित कीं और तिब्बतियों के हितों को प्रोत्साहित करना जारी रखा, यद्यपि उसे कभी तिब्बती समुदाय से कोई प्रतिदान (acknowledgement) प्राप्त नहीं हुआ।

भाग्यवश, रंपा ने कभी अपना ध्यान को बंटने नहीं दिया। उसका विश्वास था कि उसे पश्चिम में एक प्रभामंडल कैमरा विकसित करने, और बीमारियों के उन्मूलन हेतु, रोग निदान की एक युक्ति (diagnostic device) बनाने के लिये के लिये भेजा गया है। उसका दूसरा उद्देश्य था, तिब्बत की शाश्वत संपदा को पश्चिम के सामने उद्घाटित करना, ताकि पश्चिमी देशों में, उसके प्रिय देश को मुक्त कराने की इच्छा उत्पन्न हो सके। फिर भी, वह अपने मिशन को पूरा नहीं कर सका। रंपा ने अपनी शिक्षाओं से विश्व को ज्ञान प्रदान किया, जिसे नई सहस्राब्दी में, फिर से, परीक्षण किये जाने की अपेक्षा है। ये पुस्तक उसकी परम्परा को जांचने और एक आदमी, जिसने शुद्ध रूप में विश्वास किया कि वह एक तिब्बती लामा था, जिसने अपने कर्मों को पूरा करने के लिये, एक अंग्रेज के शरीर में, अपनी आत्मा को प्रवेश कराया, के काम को पूर्ण करने के लिये समर्पित है।

1956 में प्रकाशित, तीसरी ऑख एक तिब्बती भद्र नौजवान, मंगलवार लोबसांग रंपा, जिसे सात वर्ष आयु में एक चिकित्सा लामामठ में भेजा गया था, की आत्मकथा है। चाकपोरी में उसे चिकित्सा, धर्म, युद्धकौशलों (marshal arts) और तिब्बती शाश्वत विज्ञान (Tibetan esotoric science) के सर्वाधिक गूढ़ रहस्य पढ़ाये गये थे। उसकी अद्भुत मनोशक्तियॉ (psychic powers) ''तीसरे नेत्र का खोलना'' नामक एक शल्यक्रिया, जिसने मस्तिष्क के मनोकेन्द्र (psychic centre) को उत्तेजित कर दिया था, के द्वारा बढ़ाई गईं थीं। 13वें दलाईलामा उसके संरक्षक थे। लामा ने अनेक आश्चर्यों, जैसे कि इतर भूलोकीय ममियों (extraterrestrial mummies) तथा हिममानवों (Yeties) को साक्षात् देखा था।

आलोचकों के बावजूद, अपने भोलेपन और अपनी प्रमाणिकता की लगातार घोषणा करते हुए, रंपा दृढ़तापूर्वक अपनी पुस्तकों को लिखने में जमे रहे। उसकी मृत्यु के बाद, उनकी पुस्तकें, नवीन काल की झालरों के रूप में स्थापित की गईं, और दूसरे लेखकों के द्वारा, बेशर्मी के साथ, अनकी साहित्यिक चोरी की गई। 1990 के दशक तक, लोबसांग रंपा ने, गिनीज बुक ऑफ फेक, फ्रॉड एंड फौर्जरी (Guinness Book of Fakes, Frauds and Forgeries) (न्यून्हाम, 1991) में एक पूरा पेज घेर लिया और उसकी अधिकांश पुस्तकें अप्राप्य (out of print) हो गईं।

अंर्तजाल (internet) ने रंपा के अनेक वफादार पाठकों को, जिन्होंने गूढ़ कलाओं और जीवन के बाद के संकल्पों पर, उनकी शिक्षा से लाभ उठाया था, इकठ्ठा किया है। नई सहस्राब्दी (millenium) ने ऐसे शाश्वत क्षेत्रों, जैसे कि उड़नतश्तरी विज्ञान (ufology), सूक्ष्मशरीरी प्रक्षेपण (asteral projection), प्रभामंडल की फोटोग्राफी (aura photography), वैकल्पिक इतिहास (alternative history) और मानव आत्मा के अमरत्व (immorality of human spirit) में, रंपा के शान्त प्रभाव को प्रकट किया है। तिब्बत की सकारात्मक छवि, उनके आक्रमित देश के लिये समर्थन जुटाने और पश्चिमी लोगों को बौद्धधर्म से परिचित कराने में उपकरण सिद्ध हुई है। विडंबनास्वरूप, 'तीसरी ऑख' तिब्बत के सम्बंध में, कभी भी लिखी गई सभी पुस्तकों में, सर्वाधिक लोकप्रिय है।

लोबसांग रंपा का निजी नीतिवाक्य था ''मैंने दीप जलाया (I lit a candle)'' कुल मिलाकर, रंपा की वास्तविक पहचान अनर्गल है, चूंकि यह ज्ञान ही है, जो जीवित रहता है। यही समय है, लोबसांग रंपा का पहचानने का, जो वह थाः एक सही रहस्यवादी और नये युग का पथप्रदर्शक।

कनाडा के कालगेरी के फुटहिल अस्पताल में, एक आकस्मिक चिकित्सा वार्ड (emergency ward), में मंगलवार लोबसांग रंपा के नाम से जाने जाने वाले प्रसिद्ध लेखक और रहस्यवादी, ने भी अपने दशकों पुराने खराब स्वास्थ्य के बाद अपनी अंतिम सांस ली। तिब्बत और गूढ़ कलाओं (mystic arts) के संबंध में उनकी 19 पुस्तकें, लाखों में बिक चुकी थीं और उनके प्रशंसक सभी छै महाद्वीपों में पाये जाते थे। तथापि, उनकी प्रसिद्धि के बावजूद, तिब्बती समाज की ओर से, कोई सराहना अथवा प्रशंसा नहीं की गई। वह बिना पहचाने हुए, और तिब्बत की जनता, जिसकी उन्होंने मदद करने की कोशिश की थी, के द्वारा दावा न किये जाते हुए, लावारिस की भांति गुजर गये।

आज राम–जानकी विवाह की वर्षगॉठ के शुभ अवसर पर इस पुस्तक को पूर्ण करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। चॅूकि मूल पुस्तक की विषय वस्तु में कुछ भी जोड़ा नही जा सकता, अतः यहॉ अनुवादक के निवेदन में, इस अवसर के इतिहास पर, गौर करना अप्रासंगिक नहीं होगा।

राम–जानकी के विवाह की वर्षगांठ के तौर पर मार्गशीर्ष शुक्ला पंचमी को विवाह का उत्सव मनाया जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार मार्गशीर्ष (अगहन) मास के शुक्लपक्ष की पंचमी को राम–सीता का विवाह हुआ था, जबकि स्वयंवर, इससे लगभग एक माह पहले हो चुका था।

इस पर्व को मिथलांचल और नेपाल में बहुत उत्साह और आस्था से मनाया जाता है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार, भगवान राम और देवी सीता भगवान विष्णु और लक्ष्मी के अवतार हैं। दोनों ने समाज में आदर्श और मर्यादित जीवन का उदाहरण स्थापित करने के लिए मनुष्य का अवतार ग्रहण किया था। अगहन मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को राम–सीता का विवाह मिथलांचल में सम्पन्न हुआ था।

पुराणों में बताया गया है कि भगवान राम और देवी सीता, भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के अवतार हैं। वैवस्वत मनु पहले प्रजापति थे। इनसे इक्ष्वाकु नामक पुत्र हुआ, जो अयोध्या के प्रथम राजा था, इन के नाम पर इक्ष्वाकु वंश परम्परा प्रारम्भ हुई। अयोध्या को कौशल नाम से भी जाना जाता था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, इस वंश परम्परा में क्रमशः कुक्षि, विकुक्षि, बाण, अनरण्य, पृथु, त्रिशंकु, धुन्धुमार, युवनाश्च, मान्धाता, सुसन्धि, ध्रुवसंधि, भरत, असित, सगर, असमंज, अंशुमान, दिलीप, भगीरथ, ककुत्स्थ, रघु, प्रवृद्ध या कल्माषपाद, शंखण, सुदर्शन, अग्निवर्ण, शीघ्रग, मरु, प्रशुश्रुक, अम्बरीष, नहुष, ययाति, नाभाग, अज, और दशरथ हुए। दशरथ, इक्ष्वाकु वंश परम्परा में चौतीसवें राजा थे। किसी न किसी कारण से, त्रिशंकु, मान्धाता, भरत, सगर, अंशुमान, दिलीप, भगीरथ, रघु, अम्बरीष, नहुष, ययाति, दशरथ इतिहास और धार्मिक ग्रन्थों और चर्चाओं के विषय रहे हैं। भरत के नाम पर देश का नाम भारत पड़ा। इस वंश परम्परा में, केवल शासकों के नाम लिये जाते रहे हैं। इसका आशय ये है कि उपरोक्त सभी राजाओं में से अनेक के भाई भी रहे होंगे, परन्तु परम्परा ये थी कि राज्य केवल बड़े को ही सौंपा जाता था। अयोध्या एक बड़ा राज्य था। यदि एक पीढ़ी को औसत तीस वर्ष का भी माना जाय, तो इसका आशय ये हुआ कि भारत के एक बड़े भाग पर लगभग 1200 वर्ष तक एक ही वंश का शासन रहा। इस वंश के काकुस्थ कुलभूषण, रघुकुल तिलक राम, राजा दशरथ के पुत्र के रूप में अवध (अयोध्या) में पैदा हुए थे। राम के तीन भाई लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और थे।

प्राचीन काल में निमि नामक एक परम प्रतापी, धर्मात्मा राजा हुए थे। उनके मिथि नाम का पुत्र हुआ, जिसके नाम पर उसका राज्य मिथला कहलाता था। मिथि के पुत्र का नाम जनक था, वह पहला जनक था, बाद में, उसी के नाम पर उस वंश का प्रत्येक राजा जनक कहलाता था। महाराज जनक की परम्परा में उदावसु (द्वितीय), नन्दिवर्धन (तृतीय), सुकेतु (चतुर्थ), देवरात (पंचम), बृहद्रथ (षष्टम), महावीर (सप्तम), सुधृति (अष्टम), धृष्टकेतु (नवम), हर्यश्व (दशम), मरु (एकादशम), प्रतीन्धक (द्वादशम), कीर्तिरथ

(त्रयोदशम), देवमींढ़ (चतुर्दशम), विबुध (पंचदशम), महीध्रक (षष्टदशम), कीतिरात (सप्तदशम), महारोमा (अष्टादशम), स्वर्णरोमा (एकोंविशम), ह्रस्वरोमा (विंशः), जनक (एकविंशः), इक्कीसवें जनक थे, जिन्हें ऋषि अष्टावक्र से ज्ञान प्राप्त हुआ और वे विदेह कहलाये और इन्हीं इक्कीसवें जनक की पुत्री हैं, सीता। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, सीता का जन्म धरती से हुआ था। एक दिन जब जनक हल चला रहे थे, तभी हल के अग्रभाग से जोती हुई भूमि (हराई या सीता) से एक अयोनिजा कन्या प्रकट हुयी। सीता (हल की लीक) से प्रकट होने के कारण, उसका नाम सीता रखा गया। यही जनकनंदिनी या जानकी, वैदेही या मिथिलेश कुमारी कहलाईं।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार दक्षयज्ञ विध्वंस के समय भगवान शंकर ने यज्ञ विध्वंस के बाद, खेलखेल में ही, रोषपूर्वक इस धनुष को उठाकर, देवताओं से कहा, ''मैं यज्ञ में भाग प्राप्त करना चाहता था, परन्तु तुम लोगों ने नहीं दिया, इसलिये इस धनुष से में तुम सब लोगों के सिर काट डालूँगा।'' यह सुनकर देवता उदास हो गये, उन्होंने शिव की स्तुति की, जिससे प्रसन्न होकर यह धनुष देवताओं (देवराज इन्द्र) को भेंट कर दिया। बाद में त्रिपुरासुर के वध के लिये देवराज इन्द्र ने इस धनुष को फिर शंकर जी को सौंप दिया। बाद में, शंकर जी ने यही धनुष, जनक के पूर्वज महाराज देवरात (पंचम जनक) के पास धरोहर के रूप में रख दिया। महाराज (इक्कीसवें जनक) ने, श्रद्धापूर्वक यह धनुष मंदिर में रखवा दिया और विधिवत पूजा अर्चना की। मान्यता है कि एकबार, बचपन में सीता ने मंदिर में रखे शिव धनुष को बड़ी सहजता से उठा लिया था। उस धनुष को तब तक शिवशिष्य परशुराम के अतिरिक्त और कोई नहीं उठा पाया था। जब राजा जनक ने प्रतिज्ञा की कि जो कोई शिव का यह धनुष उठा पाएगा, और उस पर प्रत्यंचा चढ़ायेगा, उसी से सीता का विवाह किया जाएगा। उचित समय पर, सीता के स्वयंवर का समय निश्चित किया गया, और सभी जगह संदेश भेजे गए। उस समय भगवान राम और लक्ष्मण महर्षि वशिष्ठ के साथ दर्शक के रूप में उस स्वयंवर में पहुंचे थे। कई राजाओं ने प्रयास किए, लेकिन प्रत्यंचा चढ़ाना तो दूर की बात थी, कोई भी उस धनुष को हिला तक न सका। हताश जनक ने करुण शब्दों में अपनी पीड़ा वशिष्ठ के सामने व्यक्त की ''क्या इस पृथ्वी पर कोई भी वीर, मेरी पुत्री के योग्य नहीं है ?'' तब महर्षि वशिष्ठ ने भगवान राम को इस स्वयंवर में भाग लेने के लिए आदेशित किया।

अपने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए भगवान श्रीराम ने धनुष उठाया, और उस पर प्रत्यंचा चढ़ाने लगे कि धनुष टूट गया। इस तरह उन्होंने स्वयंवर की शर्त को पूरा किया और वह सीता से विवाह के लिए योग्य पाए गए। महाराज जनक का एक पुत्री उर्मिला और थी। जनक के छोटे भाई कुशध्वज की श्रुतिकीर्ति और मांडवी नाम की दो कन्याऐं थीं। एक ही साथ चार मंडपों में, चारों भाइयों और चारों बहनों का विवाह हुआ। सीता का विवाह राम के साथ, उर्मिला का लक्ष्मण के साथ, मांडवी का भरत के साथ, तथा श्रुतिकीर्ति का शत्रुघ्न के साथ सम्पन्न हुआ।

राम और सीता भारतीय जन मानस में प्रेम, समर्पण, उदात्त मूल्य और आदर्श के परिचायक पति–पत्नी हैं। इतिहास पुराण में राम सा कोई पुत्र, भाई, योद्धा और राजा नहीं हुआ। इस प्रकार इतिहास पुराण में सीता सी कोई पुत्री, पत्नी, मां, बहू नहीं हुई। इसलिए भी हमारे समाज में राम और सीता को आदर्श पति–पत्नी के रूप में स्वीकारा, सराहा और पूजा जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए राम सीता के विवाह की वर्षगांठ को उत्सव के रूप में मनाए जाने की परम्परा है। बस उस दिन विवाह की परम्परा नहीं है।

विवाह पंचमी का इतना महत्व होने के बावजूद, कई जगह इस दिन विवाह नहीं किए जाते हैं। भले ही धार्मिक दृष्टि से इस दिन का बहुत महत्व हो, परन्तु मिथिलांचल और नेपाल में इस दिन विवाह नहीं किए जाते। जनकपुर (नेपाल में) त्यौहार मनाया जाता है, उत्सव में अनेक भारतीय भी शामिल होते हैं, नैपाली उनका स्वागत, सत्कार करते हैं, उन्हें भेंट देते हैं, आज के दिन उनसे किसी चीज का मूल्य

नहीं लिया जाता, लेकिन सीता के दुखद वैवाहिक जीवन को देखते हुए, इस दिन विवाह निषिद्ध होते हैं। भौगोलिक रूप से, सीता मिथिला की बेटी कही जाती है, इसलिए भी मिथिलावासी सीता के दुख और कष्टों को लेकर अतिरिक्तरूप से संवेदनशील रहते हैं। चौदह वर्ष वनवास के बाद भी, राम ने गर्भवती सीता का परित्याग कर दिया था, इस तरह राजकुमारी सीता को महारानी सीता का सुख नहीं मिला। इसलिए विवाह पंचमी के दिन लोग अपनी बेटियों का विवाह नहीं करते हैं। आशंका यह होती है कि कहीं सीता की तरह उनकी बेटी का वैवाहिक जीवन दुखमय न हो। सिर्फ इतना ही नहीं विवाह पंचमी पर कही जाने वाली रामकथा का अंत, राम और सीता के विवाह पर ही हो जाता है, क्योंकि, दोनों के जीवन में आगे की कथा दुख और कष्ट से भरी है, और इस शुभ दिन सुखांत करके ही कथा का समापन कर दिया जाता है।

पुस्तक के अनुवाद कार्य में मुझे अपने मित्रों और शुभचितकों का जो अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ है, उसके लिये मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। विशेषरूप से श्री प्रगल्भ शर्मा और श्रीमती प्रीति गोयल का मैं आभारी हूँ जिनके अथक परिश्रम एवं सहयोग के बिना यह कार्य असम्भव ही हुआ होता। इस विश्वास के साथ कि ज्ञानयज्ञ की अविरल परंपरा में, पाठकगण मेरी इस आहुति को स्वीकार करेंगे, पुस्तक में रह गई भूलों और त्रुटियों के लिये, मैं पाठकों से क्षमा याचना करता हूँ तथा अपेक्षा करता हूँ कि विद्वत् पाठकगण उन्हें मेरे संज्ञान में लाने का कष्ट अवश्य करेंगे, ताकि उन्हें यथाशीघ्र सुधारा जा सके।

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता,

इन्दिरा कॉलोनी, नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर – 474009, म.प्र., (भारत)
फोन 0751–2433425
मोबाइल : 9893167361
email : drguptavp@gmail.com
web : www.bookstranscriptedinhindi.yolasite.com

राम–जानकी विवाह जयंती, अगहन शुक्ला पंचमी

श्रीसाधारण संवत्सर, 2074 विक्रमी

तद्नुसार,

गुरुवार, 24 नवम्बर 2017 ई0

विषय वस्तु

पुस्तक एकः जैसा ये प्रारम्भ में था

पुस्तक दोः प्रथम काल

पुस्तक तीनः परिवर्तनों की पुस्तक

पुस्तक चारः जैसा ये अब है!

अग्रेषण

सभी ''सर्वोत्तम'' पुस्तकों में अग्रेषण होता है, इसलिए ये अत्यावश्यक है कि **इस** पुस्तक में भी हो। कुल मिलाकर, लेखक अपनी खुद की पुस्तकों को सर्वोत्तम मानने के लिए, पूरी तरह से अधिकारी हैं। मुझे सर्वोत्तम को, इस स्पष्टीकरण के साथ कि मैंने इसे अपना शीर्षक क्यों चुना, प्रारंभ करने दें।

''जैसा ये था (As is was!)" अब वह ऐसे मूर्खतापूर्ण शीर्षक का उपयोग क्यों करेगा? वह दूसरी पुस्तकों में कहता है कि वह **हमेशा** सत्य लिखता है पक्का, पक्का, आपको अपना स्पष्टीकरण मिलेगा, इसलिए **केवल शांत बने रहें** (छः–इंच बड़े अक्षरों में होना चाहिए) और **पढ़ते जायें**।

मेरी सभी पुस्तकें सत्य हैं, और मैंने निर्मम मिथ्यापवाद और उत्पीड़न के चेहरे में भी, उस तथ्य को बचाये रखा है। परंतु सभी युगों में बुद्धिमान, संवेदनशील, लोग उत्पीड़ित किये जाते रहे हैं और जैसा ये था, कहने के लिए!, प्रताड़ित भी गये हैं, और मारे भी गये हैं। एक अत्यंत विद्वान व्यक्ति को, जैसा कि पुजारी लोग पढ़ाते थे कि पृथ्वी सृष्टि का केन्द्र थी, और सभी ग्रह इसके चारों और घूमते थे, के बदले में, इस पर दुस्साहसपूर्वक जोर देने के लिये कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती थी, इस दांव पर, लगभग जला दिया गया था। बेचारे गरीब का समय, यातना यंत्र (rack) पर खींचे जाते हुए, और केवल खंडन करने की शर्त पर ही मुक्त किये जाते हुए, भयानक गुजरा।

तब वहॉ लोग रहे हैं, जो अनजाने ही, गलत क्षणों में, गलत लोगों के सामने, गलत परिणामों के साथ, हवा में उडे (lavitated); सबको ये मालूम कराने के लिये कि वे सामान्य भीड़ से अलग थे, उनको विभिन्न दृश्य तरीकों से ठोकरें मारीं गयीं। ''भीड़'' में से कुछ, सामान्य भी हैं, विशेषरूप से, यदि वे प्रेस के आदमी हों!

सबसे खराब प्रकार के मानव, आप जानते हैं कि **वे कौन** हैं! केवल प्रत्येक को समान स्तर तक नीचे खींचने के लिये ही प्रेम करो; वे इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते कि कोई उनसे अलग है, इसलिए, वे पागलों की तरह से, चीखते हैं, ''नष्ट करो! नष्ट करो!'' और किसी व्यक्ति को सही सिद्ध करने के प्रयास करने के बजाय, उन्हें हमेशा गलत सिद्ध करने का प्रयास करना चाहिए। प्रेस, विशेष रूप से, संदिग्ध व्यक्तियों की खोज (witch-hunting) प्रारंभ करना, और एक व्यक्ति को प्रताड़ित करना पसंद करती है, ताकि, सनसनी फैलाई जा सके। प्रेस के मूर्ख, थोड़ा सा भी सोचने में पीछे रहते हैं कि ''कुल मिला कर, शायद, इसके पीछे कुछ हो सकता है!''

एडवार्ड डेविस (Edward Davis), ''अमेरिका के कठोरतम पुलिस अधिकारी'' ने, ट्रू पत्रिका (True magazine) के जनवरी 1975 अंक में लिखा था। ''मीडिया, सामान्यतः वास्तव में, निराश गल्प लेखकों के समूहों से बनता है। इसे दूसरी तरह से कहने पर, पत्रकारिता, पिकासो[1] प्रकार (Picasso

1 अनुवादक की टिप्पिणी : स्पेन के महान चित्रकार, मूर्तिकार, मंच–सज्जाकार, कवि एवं नाटककार, पाब्लो पिकासो (Pablo Picasso) का जन्म, 25 अक्टूबर 1881 को मलागा (Malaga), स्पेन में हआ। पिकासो के पिता कला के अध्यापक थे, इसलिये उन्हें बचपन में, 1890 से ही, अपने पिता से कला की शिक्षा मिली। वे किशोर अवस्था में ही उत्कृष्ट चित्र बनाने लगे थे। बाद में चित्रकारी में उच्च शिक्षा के लिये उन्हें स्पेन की राजधानी मेड्रिड (Madrid) भेजा गया। 1900 में, कुछ समय के लिये, वे तत्कालीन कला के केन्द्र और फ्रांस की राजधानी पेरिस गये। उनके उस काल के चित्रों में, गहरे नीले रंग और गुलाब के फूलों की बहुतायात है। वर्ष 1904 में उनकी कला में दूसरा मोड़ आया, और उन्होंने कलाबाजों, भांडों, मसखरों, सितारवादकों के चित्र बनाये। 1906 में उन्होंने अपनी सुप्रसिद्ध कलाकृति एविगनन की महिलायें (Les Demoiselles d'Avignon) बनानी शुरू की, जो लगभग एक वर्ष में, 1907 में पूरा हुआ। वर्ष 1909 में पिकासो ने, कला के क्षेत्र में तीक्ष्ण रेखाओं का प्रयोग करके घनवाद आन्दोलन (cubist movement) को जन्म दिया, जो साठ–पैंसठ वर्षों तक आलोचना का विषय रहा, और इसने विश्व के युवा कलाकारों को प्रभावित किया। पिकासो की कलाकृतियॉ मानव वेदना की जीवित दस्तावेज हैं। पिकासो किसी भी रूप में अत्याचार और अन्याय को स्वीकार नहीं करते थे। 1957 में नाजी बमवर्षकों ने स्पेन की फौजों पर बमवारी की, तो उन्होंने इसके विरुद्ध अपना रोष जताने के लिये 1937 में एक विशालकाय चित्र ग्वेर्निका (Guernica) बनाया, और स्वेच्छा से देश को छोड़ दिया। उन्होंने चित्रकला से अथाह दौलत कमाई, वह निजी व्यक्तियों से अपने चित्रों का अधिकतम मूल्य वसूल करते थे। वहीं उन्होंने अपने अनेक चित्र, अनेक संग्रहालयों को निशुल्क भेंट कर

type) के लोगों से भरी है, जो अपने चित्रकारी के डिब्बों को निकालते हैं, जो ऐसा चित्र बनाते हैं, जो मुझ होना (to be me) माना जाता है, परंतु जिसे कोलतार के ब्रश और पंखों के साथ वाले उस लड़के सिवाय, कोई नहीं पहचानता है।'' श्रीमान् डेविस, अत्यंत स्पष्ट है, कि प्रेस को पसंद नहीं करते। न मैं करता हूँ। हम दोनों के पास, ऐसा न करने का अच्छा कारण है। प्रेस के एक आदमी ने मुझसे कहा था। ''सत्य? सत्य ने कभी किसी समाचार पत्र को नहीं बिकवाया। सनसनी बिकवाती है। हम सत्य से परेशान नहीं होते; हम सनसनी बेचते हैं।''

एक **सत्य** पुस्तक, **"**तीसरी ऑख (The third eye),**"** के प्रकाशन के बाद से, लम्बे समय से छिपे हुए अजीब प्राणी प्रकट हुए (strange creatures crawl out of the woodwork),'' और उन्होंने मेरे ऊपर आक्रमण करते हुए, जहर में डुबोये हुए कलमों से, पुस्तकें और लेख लिखे। स्वयं विभूषित ''विशेषज्ञों'' ने **इसे** झूठा होना घोषित किया, जबकि विधा के दूसरे प्रकार के लोगों ने, इसे सत्य, परन्तु **उसे** झूठा होना घोषित किया। कोई भी दो ''विशेषज्ञ'' सहमत नहीं हो सके।

चलते फिरते (itinerant) ''जांचकर्त्ताओं (investigators)'' ने, लोगों से, जो मुझसे कभी नहीं मिले थे, साक्षात्कार करते हुए, पूरी तरह से कपोल कल्पित कहानियॉ गढ़ते हुए, आसपास की यात्रायें कीं। कोई भी जांचकर्त्ता मुझसे कभी नहीं मिले। सनसनी के प्रति निराश, प्रेस के लोगों ने, ''साक्षात्कार,'' जो कभी नहीं हुए, गढ़े। पूरी तरह से बुने गये एक ''साक्षात्कार'' में श्रीमती रंपा को, ये कहते हुए कि पुस्तक गल्प थी, गलत संदर्भित किया गया। उसने ऐसा नहीं कहा, उसने ऐसा कभी नहीं कहा। हम दोनों कहते हैं, दोस्त मेरी पुस्तकें **सत्य** हैं।

परंतु इस मामले में, प्रेस, रेडियो या प्रकाशकों ने, मुझे, कभी अपना पक्ष रखने का अवसर प्रदान नहीं किया। कभी नहीं! न ही मुझे, किसी टेलीविजन के सामने दिखने और रेडियो के सामने सत्य को बताने को कहा गया! मुझसे पहले वाले अनेक लोगों की भॉति, बहुसंख्यक लोगों से ''भिन्न'' होने के कारण, मुझे प्रताड़ित किया गया। इसलिए मानवता उन लोगों को नष्ट करती है, जो विशिष्ट ज्ञान या विशिष्ट अनुभवों के साथ, मानवता की सहायता कर सकते थे। असामान्य हम, यदि हमें करने दिया जाये, तो ज्ञान की अग्रणी सीमाओं (frontiers of knowledge) और मनुष्यों के सम्बंध में, अग्रगण्य मनुष्यों (advance men) की समझदारी को पीछे धकेल सकते थे।

प्रेस, मुझे छोटा और बालों वाला, बड़ा और गंजा, लंबा और छोटा, पतला और मोटा बताता है। प्रेस की ''विश्वस्त'' सूचनाओं के अनुसार, मैं अंग्रेज, रूसी, हिटलर द्वारा तिब्बत को भेजा गया एक जर्मन, भारतीय इत्यादि हूँ। प्रेस की **''विश्वस्त''** सूचनायें! कुछ भी, बिलकुल कुछ भी, परंतु सिवाय सत्य के, जो मेरी पुस्तकों में निहित है—कुछ भी।

मेरे सम्बंध में अनेक झूठ कहे गये हैं। इतनी अधिक विकृत कल्पना गढ़ी गई है, इतनी अधिक पीड़ा, इतनी अधिक दीनता पैदा की गई है। परंतु यहॉ इस पुस्तक में सत्य है। मैं इसे **जैसा ये था** कह रहा हूँ!

दिये। वे बीसवीं शताब्दी के सबसे अधिक चर्चित, विवादास्पद और समृद्ध कलाकार थे। उनका निधन 8 अप्रैल 1973 को मौगिन्स, फ्रांस में हुआ।

पुस्तक एकः

जैसा ये प्रारम्भ में था

अध्याय–1

बूढ़ा आदमी, समर्थन देने वाले एक खंबे के विरुद्ध, कठिनाई से पीछे की तरफ झुका। उसकी पीठ, लंबे घंटों तक कसी हुई स्थिति में बैठने के कारण, कष्ट के साथ सुन्न थी। उसकी ऑखें, उम्र के बढ़ने के साथ धुंधली हो रहीं थीं। धीमे से, उसने अपनी ऑखें हाथ के पिछले हिस्से से रगड़ीं और आसपास देखा। कागज, कागज, कुछ नहीं, उसके सामने मेज पर केवल कागज, अनजान संकेतों और बड़ी संख्या में जटिल चित्रों से ढके हुए कागज, बिखरे पड़े थे। धुंधले से दिखने वाले लोग, उसके आदेशों की प्रतीक्षा करते हुए, उसके सामने से गुजरे।

बूढ़ा आदमी, परेशान होते हुए हाथों की सहायता से, एक तरफ धकेलते हुए, धीमे से, अपने पैरों पर चढ़ा। वर्षों के बोझ के साथ कांपते हुए, वह एक समीपवर्ती खिड़की तक चला। खोलने के द्वारा थोड़ा सा कांपते हुए, उसने अपनी पुरानी पोशाक अपने आसपास, अपने विरले ढांचे पर कसकर लपेटी। पत्थर के कार्य के विरुद्ध, अपनी कुहनियों को चिपकाते हुए, उसने आसपास घूरकर देखा। दूर तक देख पाने की क्षमता से अभिशापित होने से, जबकि उसका कार्य, उससे समीप देखने की मांग करता था, वह अब ल्हासा के पठार की बहुत दूर की सीमाओं तक देख सकता था।

ल्हासा के लिये दिन गर्म था। जवानी में, पत्तियों को सबसे हरा दिखाते हुए, फर के पेड़ (willow trees) अपने सर्वोत्तम में थे। छोटी बच्ची बिल्लियों, या पूसी बिल्लियों ने, अनगिनत सुखद पीली सी हरी धारियॉ और एक भूरी पृष्ठभूमि प्रदान की। बूढ़े आदमी के चार सौ फीट नीचे, निचली शाखाओं में होकर दिखते हुए रंग, शांत जल की चमक के साथ, अधिक सामंजस्य में मिलजुल गये थे।

बूढ़े प्रमुख ज्योतिषी ने अपने सामने की भूमि पर चिंतन किया, शक्तिशाली पोटाला, जिसमें वह रहता था और जिसको उसने केवल अत्यधिक दवाब देने वाले मामलों में, विरले ही कभी छोड़ा था, पर चितन किया। नहीं, नहीं, उसने सोचा, उस पर मुझे अभी नहीं सोचने दें; दृश्य का आनंद लेते हुए, मुझे अपनी ऑखों को आराम देने दें।

शो (Sho) के गॉव में काफी चहलपहल थी, जो बड़े आराम से, पोटाला के चरणों में झुंड बनाये हुए थी। ऊँचे पहाड़ी दर्रो में व्यापारियों को लूटने के दौरान, लुटेरे पकड़े जा चुके थे और उन्हें गॉव के न्यायिक हॉल (hall of justice) में लाया गया था। दूसरे अपराधियों का न्याय भी पहले से किया जा चुका था; कुछ गम्भीर या दूसरे अपराधों में सजा पाये हुए आदमी, धुन में अपनी जंजीरें बजाते हुए, अपने कदमों के साथ टहलते हुए, हॉल से बाहर निकल गये। अब उन्हें, अपने खाने के लिए, स्थान स्थान पर भीख मांगते हुए घूमना पड़ेगा, क्योंकि जंजीर में बंधे हुए वे, आसानी से काम नहीं कर सकते थे।

बूढ़े ज्योतिषी ने, उत्साह के साथ, ल्हासा के महान प्रार्थनागृह के ऊपर टकटकी लगाई। उसने अपने बचपन की स्मृतियों को ताजा करने के लिए, लंबे समय से वहॉ जाने के लिए सोचा था; उसके आधिकारिक कर्तव्य ने, उसको केवल आनंद के लिये किसी भी प्रकार के विचलन को, अत्यधिक वर्षो के लिए रोका। आह भरते हुए, उसने खिड़की से मुड़ना प्रारंभ किया और वह रुका और उसने कठोरता से दूरी पर देखा। एक सेवक को इशारा करते हुए, उसने कहा, ''राजा (Caesar) के समीप ही, डोडपाल लिंगा (Dodpal Linga) के साथ आता हुआ वह बच्चा, मुझे पहचाना हुआ सा लगता है, क्या ये रंपा का लड़का नहीं है?'' सेवक ने हॉ में सिर हिलाया ''हॉ, श्रद्धेय श्रीमान्, वह रंपा का लड़का ही है, वह लड़का, जिसका भविष्य आप उस जन्मपत्री में तैयार कर रहे हैं, और पुरुष सेवक त्सू ही है।'' बूढ़ा ज्योतिषी, जैसे ही उसने, नीचे बहुत छोटे बच्चे की आकृति को, और बहुत बड़े, लगभग सात फुट लंबे,

खाम प्रदेश के सात फुट लंबे पुरुष सेवक को देखा, व्यंगपूर्वक मुस्कराया। उसने उन्हें, जबतक कि पर्वत की चट्टान के बाहर निकले हुए हिस्से ने, उस दृश्य को छिपा नही लिया, एक को छोटे खच्चर के ऊपर और दूसरे को एक बड़े घोड़े पर चढ़ी हुईं, दो बेमेल आकृतियों के रूप में देखा। वह स्वयं के लिये सिर को हिलाते हुए, कूड़े से भरी मेज की ओर पीछे मुड़ा।

''इसलिए **इसे**'' वह बुदबुदाया, ''**उसके** साथ बराबर किया जायेगा। हम्म्, इसलिए साठ वर्ष के अधिक समय के लिये, (?) के विपरीत प्रभावों के कारण, उसे अधिक पीड़ा होगी'' जैसे ही उसने, यहॉं पर टिप्पणियॉं लिखते हुए, और वहॉं से मिटाते हुए, अनगिनत पत्रकों में होकर देखा, उसकी आवाज एक नीचे गूंजते हुए स्वर में डूब गई। ये बूढ़ा आदमी, तिब्बत का सबसे अधिक प्रसिद्ध ज्योतिषी, उस आदरयुक्त कला के रहस्यों में, एक अत्यंत कुशल आदमी था। तिब्बत की ज्योतिष, उनसे, जो पश्चिम की है, एकदम अलग है। यहॉं ल्हासा में गर्भाधान की तिथि, जन्मतिथि से जोड़ी जाती थी। एक उन्नत की गई जन्मपत्री, उस दिन के लिए, जबकि पूरा ''काम'' प्रस्तुत किया जाना था, बनाई जायेगी। प्रमुख ज्योतिषी, उनके परिवारों के प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवनपथ की भविष्यवाणी करेंगे। ज्योतिषियों द्वारा, जैसे दलाईलामा को सलाह दी जाती थी, वैसे ही स्वयं सरकार को भी सलाह दी जाती थी। परंतु ये पश्चिम का ज्योतिष नहीं था, जो सनसनी फैलाने वाले प्रेस कर्मियों के द्वारा व्यभिचारित (prostituted) किया जाता सा दिखता था।

पुजारी ज्योतिषी, आंकडों, और उनके पारस्परिक सम्बंधों की जॉंच करते हुए, लंबी और नीची मेजों पर, पालथी मारकर बैठे। गर्भधारण के समय पर, जन्म के समय पर, जन्मपत्री के पढ़े जाने के समय पर, जो पहले से ही बहुत अच्छी तरह ज्ञात था, आकाशीय राशियों के चार्ट बनाये गये। ''जातक के जीवन'' के प्रत्येक वर्ष के लिए, पूरे चार्ट और वार्षिक–ग्रह–स्थितियॉं तैयार की गईं। तब एक बहुत बड़ी रिपोर्ट में, इन सबको आपस में मिलाया गया।

तिब्बती कागज, पूरी तरह से हाथ से बना होता है, और लकड़ी की दो पट्टियों के बीच थपकी बनाकर रखे जाने पर, काफी मोटा गट्ठा बनाता था। पश्चिमी कागज, ऊपर से नीचे तक आठ से आठ इंच, गुणा, लगभग दो फीट से दो फीट छः इंच तक चौड़ा होता है। लिखने का पश्चिमी कागज, ऊपर से नीचे तक, चौड़ाई की तुलना में लंबा होता है; तिब्बती कागज एकदम विपरीत है। पुस्तकों के पन्ने जिल्द में नहीं बांधे जाते, परंतु, पेजों के खो जाने और खराब हो जाने के कारण पुस्तकें शीघ्र ही खराब हो जाती हैं। तिब्बत में कागज की बहुत तंगी है, और उसके साथ अत्यधिक सावधानी से व्यवहार किया जाता है; कागज को बेकार करना एक गंभीर अपराध है, और किसी पृष्ठ को फाड़ना, उसे व्यर्थ करने के समान है। इसलिए अत्यधिक सावधानी रखी जाती थी। एक लामा पढ़ रहा होगा, परंतु उसके साथ उसके बगल से एक छोटा सहयोगी खड़ा हुआ होगा। पुस्तक की ऊपर की लकड़ी की पट्टी अत्यन्त सावधानी से हटाई जाती है, और बड़ी सावधानी से वाचक के बांयी ओर रखी जाती है। तब सबसे ऊपर के पन्ने को पढ़ने के बाद, पन्ने को उल्टा करके हटाया जाता है और सहायक के द्वारा, उल्टा करके आवरण के ऊपर रखा जाता है। वाचन खत्म होने के बाद, कागजों को सावधानी से समतल किया जाता है, और पुस्तक को फीतों से बांध दिया जाता है।[2]

इस प्रकार जन्मपत्री तैयार हुई। पन्ने के बाद पन्ने लिखे गये या, उन पर (चार्ट) खींचे गये। सुखने के लिये, पन्ना एक तरफ रखा गया, क्योंकि पन्ने को गंदा करना (smudging), फाड़ कर नष्ट करना, एक अपराध था। तब अंत में, शायद, छै महीने बाद, चूंकि समय का कोई अर्थ नहीं था, जन्मपत्री

2 अनुवादक की टिप्पिणी : पहले हमारे यहॉं, भारत में, कथावाचकों, पंडितों, के पास, पोथियॉं हुआ करतीं थीं, जिनका प्रत्येक पन्ना अलग अलग होता था। कथावाचक, एक एक करके पन्ना उठाता, उसे पढ़कर, उल्टा पलट कर, दूसरी ओर रखता था। पोथी पूरी पढ़े जाने पर उसे पवित्र लाल कपड़े में बॉंधा जाता था। बचपन में मैंने ऐसी अनेक पोथियॉं देखीं है। वर्तमान में भी, यद्यपि जिल्द बंधीं पुस्तकें बहुतायत में उपलब्ध हैं, तथापि कुछ कथावाचकों के पास ऐसी पोथियॉं देखी जा सकतीं हैं। संस्कृत के पुराने सभी ग्रन्थ, और पांडुलिपियॉं इसी प्रकार की होती हैं। विभिन्न पुस्तकालयों में उन्हें देखा जा सकता है।

तैयार हुई।

धीमे से, सहायक, इस मामले में अनेक वर्षो के अनुभव वाले एक नौजवान भिक्षु ने, श्रद्धापूर्वक पन्ने को उठाया और उसे उल्टा करके अपने साथ वाले पन्ने पर रख दिया। बूढ़े ज्योतिषी ने, इस प्रकार अनावरित (exposed) हुए नये पन्ने को उठाया। ''टक टक'' वह बड़बड़ाया, ''ये स्याही, सूर्य के प्रकाश से अनावरित होने से पहले ही काफी बदरंग होती जा रही है। हमें ये कागज लिखा हुआ चाहिए।'' इसके साथ ही, उसने अपनी ''कलमों (scribble sticks)" में से एक को उठाया, और जल्दी से एक संकेत बनाया।

ये कलमें, अनेक हजार वर्षों पहले का एक अविष्कार थीं, परंतु वे अत्यधिक शुद्धता के साथ उसी ढंग से बनायी गयीं थीं, जितनी कि वे दो या तीन हजार वर्ष पहले बनायी जाती थीं। वास्तव में, वहॉ, इसप्रकार की एक जनश्रुति थी कि तिब्बत एकबार चमकते हुए समुद्र के तट पर रहा है, और इस जनश्रुति को, जल्दी जल्दी पाये जाने वाले समुद्री कवचों (sea shells), और जीवाश्म बनी हुई मछलियों (fossilized fish) और दूसरी अनेक चीजें, जो केवल, तब के समुद्र के बगल वाले एक गर्म देश से आई हुईं हो सकती थीं, के द्वारा, समर्थन दिया जाता था। वहॉ, बहुत लंबे समय पहले मरी हुई एक प्रजाति की जमीन में गढ़ी हुई कलाकृतियॉ, औजार, और गढ़े हुए जेवरात (मिले) थे। ये सभी, अत्यधिक बड़ी मात्रा में, सोने के साथ, एक साथ, नदियों, जो देश में होकर बहती थीं, के किनारों पर पाये जा सकते थे।

परंतु अब, लिखने वाली कलमें, ठीक वैसे ही तरीके से बनाई जाती थीं, जैसे कि वह पहले बनाई जाती थीं। मिट्टी का बड़ा लौंदा प्राप्त किया जाता था, और तब भिक्षु उत्साहपूर्वक आगे बढ़ते, और फर (willow) के पेड़ों से, किसी की छंगुली उंगुली (little finger) की लगभग आधी मोटाई के बराबर पतले और शायद एक फुट लंबे, नई टहनियों के उपयुक्त टुकड़े तोड़ते थे। इनको अत्यंत सावधानीपूर्वक इकट्ठा किया जाता था, और तब पोटाला के एक विशेष विभाग में वापस ले जाया जाता था। यहॉ सभी टहनियॉ सावधानीपूर्वक जॉची जातीं और उनका वर्गीकरण किया जाता, उन्हें समर्पित सीधी, खराबी रहित की विशेष देखभाल की जाती, उनको छीला जाता और तब मिट्टी में लपेटा जाता, ये निश्चित करने में कि टहनियॉ मुड़ें नहीं, अधिक सावधानी बरती जाती थी।

वे टहनियॉ, जिनमें हल्का सा मोड़ या मरोड़ होता, उन्हें भी मिट्टी में लपेटा जाता था, क्योंकि वे कनिष्ठ भिक्षुओं और सहायकों के अपने खुद के लेखन के लिये उपयुक्त होतीं। ये प्रदर्शित करते हुए कि कौन सा सर्वोच्च लामाओं और स्वयं अंतरतम के लिए, उत्कृष्ट श्रेणी का था, और तब प्रथम श्रेणी वाले उच्च श्रेणी के लामाओं के लिए, और द्वितीय श्रेणी के सामान्य उपयोग के लिए उपयुक्त था, मुद्रा की एक छाप के साथ, मिट्टी के प्रत्येक बण्डल में, मिट्टी में बनाया हुआ एक छोटा छेद होता, ताकि गर्म करने की प्रक्रिया में उत्पन्न हुई भाप बाहर निकल सके और लपेटी हुई मिट्टी को जलने से रोक सके।

अब मिट्टी को, एक बड़े प्रकोष्ठ में पट्टियों पर रखा जाता, और एक महीने या ऐसे ही किसी समय के लिए, कम नमी वाले वातावरण से वाष्पित होते हुए, वह वहॉ पड़ी रहतीं।

बाद में, चार से छै महीने के बीच किसी समय में, मिट्टी के बंडल हटा दिये जाते और आग में डाल दिये जाते और उन्हें सावधानीपूर्वक रखा जाता, ताकि वे आग के ठीक लाल भाग में हों, और आग का उपयोग खाना पकाने में, पानी गर्म करने में और वैसी ही किन्हीं दूसरी चीजों में भी किया जाता। तापक्रम को, एक दिन के लिए बनाये रखा जाता और तब आग को बुझने दिया जाता। जब ये ठंडा होता, तब मिट्टी के बंडलों को तोड़कर खोला जाता और बेकार की मिट्टी फेंक दी जाती और कार्बन के रूप में बनाई हुई फर की बत्तियॉ (कोयला) अब सर्वोच्च उपयोग, जो कि ज्ञान का वितरण है, के लिये तैयार रहतीं।

फर की बत्तियॉ (willow sticks), जो कोयले की बत्तियों के रूप में बदलाव के लिए अनुपयुक्त

मानी गई थीं, अच्छी प्रकार की बत्तियों को सुखाते समय, आग को जलाये रखने में उपयोग में लाई जाती थीं। आग, अच्छी तरह सुखाये हुए याक के उपलों और किसी भी ऐसी वैसी लकड़ी, जो आसपास हो, की होती। परंतु फिर, लकड़ी को, यदि इसका ''कुछ अधिक अच्छे उद्देश्य'' के लिए उपयोग किया जा सकता हो, कभी भी जलाने के लिए उपयोग नहीं किया जाता था, क्योंकि, तिब्बत में लकड़ी की आपूर्ति अत्यन्त कम थी।

लिखने वाली बत्तियॉं, जिन्हें पश्चिम में कोयले की बत्तियॉं (charcoal sticks) कहा जाता है, और जो कलाकारों के द्वारा, उनके श्वेत–श्याम (Black and white) चित्रकारी के उपयोग में लाई जातीं हैं, तब, विलासिता का एक सामान थीं। परंतु तिब्बत में स्याही की भी आवश्यकता होती थी, और उसके लिए दूसरे प्रकार की लकड़ी उपयोग में लाई जाती थी, इसे फिर मिट्टी में लपेटा जाता, इन्हें काफी लंबे समय तक, अधिक तापक्रम पर, गर्म किया जाता। तब कई दिनों के बाद, जब आग बुझ जाती और अब ठंडी आग में से, मिट्टी की गेंदें पट्टियों पर लगा दी जातीं और तोड़कर खोली जातीं, एक अत्यन्त काला अवशेष अंदर मिलता था; लगभग शुद्ध कार्बन।

कार्बन को लिया जाता, और अत्यंत, अत्यंत सावधानी के साथ, ऐसी किसी भी चीज के लिए, जो काला कार्बन न हो, जॉंच की जाती। तब इसे अत्यंत महीन कपड़े में से, जो पत्थर के एक टुकड़े के ऊपर एकदम कसकर बांधा जाता था और जिसमें एक गड्ढ़ा होता था, जो वास्तव में, एक नाद जैसी होती, छाना जाता। नाद संभवतः लगभग अठारह इंच, गुणा बारह इंच की और शायद दो इंच गहरी होती। घरेलू वर्ग (domestic class) के भिक्षु, कपड़े को नाद के तले में कूटते जिससे खरल में, कार्बन की एक अत्यंत महीन धूल बनाई जाती, अंत में उसे मिलाया जाता। तब इसे कुछ निश्चित पेड़ों, जो उस क्षेत्र में उगते थे, के रस के गर्म गोंद के साथ, जबतक उसका परिणाम एक काला चिपचिपा पदार्थ नहीं हो जाता, रगड़कर हिलाया जाता और हिलाया जाता और हिलाया जाता। तब बाद में इसे टिकियों के रूप में सूखने दिया जाता। जब कोई स्याही चाहता तो कोई इन टिकियों में से एक को, एक विशेष पत्थर के बर्तन में रगड़ देता और थोड़ा सा पानी इसमें मिलाया जाता। इसका परिणाम होता स्याही, जो जंग जैसे कत्थई (rusty-brown) रंग की होती।

अधिकारिक दस्तावेज और उच्च महत्व के ज्योतिषीय चार्ट, कभी भी, इसप्रकार के सामान्य आधार की स्याही से नहीं तैयार किये जाते थे। बदले में, एक बहुत अच्छी तरह पालिश किया हुआ संगमरमर का टुकड़ा होता, जो कि लगभग पैंतालीस डिग्री के कोण पर झुका कर लटकाया जाता, और इसके नीचे, शायद, घी के दर्जनों दीपक, थुकथुकाते हुए जलते रहते, बत्तियॉं बहुत लंबी और ऊॅंची बनाई जातीं ताकि दीपक काला और मोटा धुंआ दें। धुंआ पालिश किये हुए संगमरमर से टकराता और तत्काल ही काले पदार्थ के रूप में जम जाता। अंततः जब एक उपयुक्त मोटाई बन जाती, तब एक नौजवान भिक्षु, संगमरमर की पट्टी को झड़ाता और ''सभी इकट्ठी की हुई काजल की प्लेटों को, फिर से, पैंतालीस डिग्री के कोण पर यथास्थान रखने से पहले, इसे इकट्ठा करता ताकि और अधिक कार्बन इकट्ठा किया जा सके। पेड़ों से एक राल जैसा गोंद (rasinous gum) इकट्ठा किया जाता और उसे एक बर्तन में रखा जाता और उसे एक जैसा गर्म किया जाता, जिससे कि गोंद, पानी के साथ एक तार हो जाता और अधिक साफ हो जाता। एक पूरी तरह साफ हल्का सा पीला द्रव पाने के लिए, उबलते हुए गोंद के ऊपरी शिखर से, और ठंडा करते हुए, तलछट का एक मोटा अवशेष हटाया जाता। जबतक कि उसका परिणाम एक अच्छा खासा गाढ़ा पेस्ट नहीं होता, उसके अंदर दीपक के काजल की पूरी मात्रा मिला दी जाती। तब माल को कल्छी से बाहर निकाला जाता और ठंडे होने और जमने के लिए पत्थर पर फैला दिया जाता। सर्वोच्च लामाओं और अधिकारियों के लिए, ये पदार्थ चौकोर रूप में काटा जाता और उसे सुंदर, प्रस्तुत करने योग्य, बना दिया जाता परंतु निम्नस्तर के लोग या भिक्षु, किसी भी आकार की स्याही की टिकिया को पाकर प्रसन्न होते। इसे, जैसे कि प्रथम श्रेणी का था, की

भॉति उपयोग किया जाता, अर्थात् एक दरार के साथ, एक विशेष पत्थर का टुकड़ा या छोटी नाद उपयोग में लाई जाती और इसमें स्याही के छोटे टुकड़े में से कुछ खरोंच दिया जाता और जबतक इसे अनुकूलता नहीं प्राप्त हो जाती, तबतक इसे पानी में मिलाया जाता।

वास्तव में, तिब्बत में, स्टील के कोई पेन नहीं थे, कोई फाउंटेन पेन नहीं, कोई बॉल पेन नहीं, बदले में, फर की टहनियॉ, जिनको सावधानीपूर्वक छीला और चिकना बनाया जाता था और उनके सिरे थोड़े से कुचले जाते थे ताकि प्रभावी रूप से, वे ब्रुश की तरह अत्यंत छोटे छोटे रेशों वाले बन जायें, उपयोग में लाई जाती थीं। बत्तियॉ वास्तव में, किसी प्रकार की चटकन या टेढ़ेपन को वंचित करने के लिए–तब, सावधानीपूर्वक–अत्यंत सावधानीपूर्वक सुखाई जातीं थीं, और जब वे पर्याप्त सूख जातीं तब, फटने से रोकने के लिए, उन्हें गर्म पत्थर पर रखा जाता, जिसका प्रभाव आग से पकाने, कड़ा करने की तरह का होता, ताकि उनको फुरसत के साथ उपयोग में लाया जा सके और ताकि वे काफी लंबी चलें, तिब्बतीय लेखन, तब तिब्बती ब्रुश वाला अधिक होता था, क्योंकि अक्षर (characters), भाव चित्र (ideographs), वैसे ही जैसे कि चीनी या जापनी लोग लिखते हैं, ब्रुश आकृति के साथ लिखे जाते हैं।

परंतु बूढ़ा ज्योतिषी, एक पृष्ठ के ऊपर, स्याही की खराब गुणवत्ता के सम्बंध में बड़बड़ा रहा था। उसने पढ़ना जारी रखा, और तब पाया कि वह जन्मकुंडली के जातक की मृत्यु के सम्बंध में पढ़ रहा था। तिब्बती ज्योतिष, जीवन जीने से मृत्यु तक, सभी पहलुओं को समाविष्ट करता है। वह सावधानीपूर्वक जॉच करते हुए, और दोबारा जॉच करते हुए, भविष्यकथन में होकर गुजरा क्योंकि, ये एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिवार के सदस्य का, एक ऐसे व्यक्ति का, जो न केवल अपने अपने परिवार के सम्बंधों के कारण, परंतु अपने खुद के अधिकारों के कारण, उसको सौंपे गये कार्य के कारण, महत्वपूर्ण था, भविष्य कथन था।

जीर्ण घौंसलों के साथ, अपनी चटकतीं हुई हड्डियों के साथ, बूढ़ा आदमी पीछे बैठा। डर की कंपकपी के साथ, उसे याद आया कि उसकी खुद की मृत्यु एकदम सन्निकट है। एक जन्मकुंडली को ऐसे विस्तार के साथ तैयार करना, जो उसने इससे पहले कभी नहीं किया था, उसका अंतिम बड़ा कार्य था।

इस कार्य की समाप्ति, और अपने अध्ययन की सफलतापूर्वक घोषणा, मांस के साथ उसके बंधनों को ढीला करने, और अपने खुद के जीवन के पूर्व ही समाप्त हो जाने में परिणमित होगी। वह मृत्यु से डरा हुआ नहीं था; मृत्यु, जैसा वह जानता था, मात्र संक्रमण का काल (period of transition) थी; परंतु संक्रमण या कोई संक्रमण नहीं, ये अभी भी परिवर्तन का काल था, परिवर्तन, जिसको बूढ़े आदमी ने नापसंद किया और उस पर आंसू बहाये। उसे अपने प्रिय पोटाला को छोड़ना पड़ेगा। उसे तिब्बत के प्रमुख ज्यातिषी के अपने पद को छोड़ना पड़ेगा, उसको अपनी हर चीज, जिसे वह जानता था, को छोड़ना पड़ेगा, सभी चीजें, जो उसको प्रिय थीं, उन्हें छोड़ना पड़ेगा और उसे लामामठ में एक नये बच्चे की तरह, फिर से प्रारंभ करना पड़ेगा। कब? वह उसे जानता था! कहॉ? वह उसे भी जानता था! परंतु पुराने मित्रों को छोड़ना कठिन था, जीवन में परिवर्तन लाना कठिन था, क्योंकि कोई मृत्यु नहीं होती, जिसे हम मृत्यु कहते हैं, वह मात्र जीवन से जीवन तक एक संक्रमण है।

उसने प्रक्रियाओं के सम्बंध में सोचा। उसने अपने आपको वैसे देखा, जैसे कि वह अक्सर, दूसरों को मरा हुआ देखता था, अचल शरीर, जो अब और अधिक चलने में समर्थ नहीं, अब और अधिक सचेतन प्राणी नहीं, परंतु मरी हुई हड्डियों के द्वारा समर्थित, मरे हुए मांस का, केवल एक पिंड था।

इस प्रकार, इस कल्पना में, उसने स्वयं को, अपनी पोशाक फाड़े जाते हुए और अपने सिर को घुटनों से मिलाकर पोटली बनाते हुए, और टांगे पीछे मोड़े जाते हुए देखा। अपने मन की आंखों में, उसने स्वयं को बंडल बनते हुए, एक खच्चर की पीठ पर, कपड़े में लपेटा हुआ, और ल्हासा शहर की

परिसीमा के भी बाहर, जहॉ उसे मुर्दों को ठिकाने लगाने वाले लोगों की देखभाल में दे दिया जायेगा, ले जाते हुए, भी देखा।

वे उसकी लाश को लेंगे और उसे विशेषरूप से इस उद्देश्य के लिए तैयार की हुई एक बड़ी सपाट चट्टान पर रखेंगे। उसे काटकर खोला जायेगा और उसके अंग बाहर निकाले जायेंगे। लाश को ठिकाने लगाने वालों का प्रमुख, हवा में जोर से चिल्लायेगा और वहॉ ऐसी चीजों को करने के लिए भली भांति अभ्यस्त, गिद्दों का एक पूरा झुंड, धावा बोलता हुआ आ जायेगा।

लाश को ठिकाने लगाने वालों का प्रमुख, हृदय को निकालेगा और उसे प्रमुख गिद्ध की ओर फेंकेगा, जो इसे बिना किसी अधिक हलचल के गटक जायेगा, तब गुर्दें, फेफड़े, और दूसरे अंग काटे जायेंगे और दूसरे गिद्धों को फेंक दिये जायेंगे।

लाश को ठिकाने लगाने वाले, खून से सने हाथों से सफेद हड्डियों से मांस को हटायेंगे, उसे पट्टियों में चीरेंगे और उसे भी गिद्धों को, जो एक बूढ़े आदमी की पार्टी मनाने के लिए भीड़ के रूप में आसपास इकट्ठे हो जाते हैं, फेंक देंगे।

पूरा मांस हटा दिये जाने और सभी अंगों को ठिकाने लगा दिये जाने के बाद, हड्डियों को कम लंबाई के टुकड़ों में तोड़ा जायेगा और तब चट्टान में बने हुए छेदों में घुसा दिया जायेगा। तब चट्टान के बेलन, जबतक कि वे पूरी तरह से चूर्ण न हो जायें, उन हड्डियों पर फिराये जायेंगे। चूर्ण को लाश के खून और दूसरे स्रावों (secretions) के साथ मिलाया जायेगा, और पक्षियों के खाने के लिए, चट्टान पर छोड़ दिया जायेगा। शीघ्र ही, कुछ घंटों में, उसका, जोकि कभी एक आदमी था, कोई चिन्ह भी नहीं बचेगा, और न ही गिद्धों का कोई चिन्ह बचेगा; वे सब, जबतक कि किसी दूसरे अवसर पर, उनकी भयानक सेवा के लिए, उन्हें दोबारा न बुलाया जाये, कहीं जा चुके होंगे।

बूढ़े आदमी ने इस सब को सोचा, उन चीजों के विषय में भी सोचा, जो उसने भारत में देखी थीं, जहॉ गरीब लोगों को, लाशों के साथ पत्थर बांधकर नदियों में फेंक कर या उन्हें जमीन में गाड़कर ठिकाने लगाया जाता था, परंतु धनाढ्य लोग, जो लकड़ी का खर्च झेल सकते थे, अपनी लाशों को जबकि केवल पर्तदार राख न बची रह जाये, जलवाते थे, और तब इसे पवित्र नदी में फेंक दिया जाता था, ताकि राख, और शायद, व्यक्ति की आत्मा को ''पृथ्वी मां'' के आंचल में, वापस बुलाया जा सके।

मोटे तौर से, उसने स्वयं को हिलाया और बड़बड़ाया, ''ये मेरे संक्रमण का कोई समय नहीं है, मुझे, जबकि मैं इस छोटे बच्चे के संक्रमण के लिए नोट्स तैयार कर रहा हूँ, अपना काम समाप्त करने दो।'' परंतु ऐसा नहीं होना था, एक रुकावट आई। बूढ़ा ज्योतिषी, पूरा पृष्ठ अच्छी स्याही में दोबारा लिखने के लिए निर्देश बुदबुदा रहा था, तभी वहॉ जल्दी पड़ते कदमों की, और दरवाजे को धड़ाम से बंद करने की एक आवाज आई। बूढ़े आदमी ने चिड़चिड़ेपन से ऊपर की देखा, वह इसप्रकार के हस्तक्षेपों का अभ्यस्त नहीं था, वह ज्योतिषीय विभाग में शोर सुनने का अभ्यस्त नहीं था। ये शांति का, वैराग्य और चिंतन का, क्षेत्र था, जहॉ सबसे ऊँची आवाजें, हस्तनिर्मित कागज की खुरदरी सतह से, आग से पकाई हुई टहनियों के घिसने की होती थीं। वहॉ ऊँचे स्वर की आवाजें आई। ''अंतरतम (Inmost) चाहते हैं, **मुझे इससे** मिलना चाहिए, **मुझे इससे** इसी क्षण मिलना चाहिए।'' तब वहॉ जमीन पर, कदमों की खटाक खटाक, और कड़े कपड़ों की सरसराहट की आवाज आई। दलाईलामा के घरेलू कर्मचारियों में से एक लामा, अपने दायें हाथ में एक डंडी में झण्डी लगाये हुए, जिसके दूरवर्ती किनारे पर, कागज का एक टुकड़ा, स्वयं अंतरतम की हस्तलिपि में देखा गया था, प्रकट हुआ। लामा आगे आया, बूढ़े ज्योतिषी को परम्परागत अर्द्ध नमन किया और डंडी को उनकी दिशा में झुका दिया ताकि वह लिखे हुए कागज को पढ़ सकें। उसने ऐसा किया और कातरता में भौंहें चढ़ाई। ''परंतु, परंतु वह बुदबुदाया, मैं अभी कैसे जा सकता हूँ? मैं इन गणनाओं के बीच में हूँ; मैं इन संगणनाओं के बीच में हूँ। यदि मुझे इस क्षण में रुकना पड़ता है।'' परंतु तब उसने महसूस किया कि इसमें करने के लिए कुछ

नहीं था परंतु उसे ''तत्काल'' जाना था। विरक्ति की एक आह के साथ, उसने कार्य की अपनी पुरानी पोशाक को, एक स्वच्छ पोशाक के साथ बदला और कुछ चार्टो और लिखने वाली कुछ बत्तियों को उठाया, और एक भिक्षु की तरफ, उससे ये कहते हुए मुड़ा, ''यहॉ, लड़के, इसे ले चलो और मेरे साथ चलो।'' मुड़ते हुए, वह धीमे से, सुनहरी पोशाक वाले लामा की पोशाक में, कमरे के बाहर की ओर चल दिया।

सुनहरी पोशाक वाले लामा ने अपने कदमों को सही किया, ताकि उसके पीछे चलता हुआ बूढ़ा अनावश्यकरूप से परेशान न हो। लंबे समय के तक, उन्होंने असीम गलियारों को पार किया। जैसे ही प्रमुख ज्योतिषी उनके पास से गुजरे, अपने कामों के साथ साथ भागते हुए भिक्षु और लामा, सिरों को सम्मानपूर्वक झुकाये हुए बगल से खड़े हो गए।

एक विचारणीय पैदल दूरी के बाद, और फर्श से फर्श तक चढ़ते हुए, सुनहरी पोशाक वाला लामा और प्रमुख ज्योतिषी, सबसे ऊॅचे तल, जिस में दलाईलामा, तेरहवे दलाईलामा, अंतरतम, जिसको दूसरे किसी भी दलाईलामा की तुलना में, तिब्बत के लिए अधिक करना था, के खुद के अंतःपुर (apartments) थे, पर पहॅुचे।

दोनों आदमी एक कोने की ओर मुड़े और स्पष्टतः उनका सामना राजद्रोहियों की भांति व्यवहार करते हुए, तीन नौजवान भिक्षुओं से हुआ, वे अपने पैरों को कपड़े में लपेटे हुए, आसपास फिसल रहे थे। जैसे ही ये दोनों गुजरे, उन्होंने आदर सहित अपनी कूदफांद समाप्त की और बगल से खड़े हुए। इन नौजवानों की, ये पूरे समय की नौकरी थी; वहॉ अनेक फर्श थे, जो धब्बे रहित चमकदार रखे जाने थे, और ये तीन नौजवान भिक्षु, अपने कार्यदिवस का पूरा समय, अपने पैरों के आसपास भारी कपड़ों के साथ इसी में व्यय करते थे, वे फर्श के विस्तृत क्षेत्रों के ऊपर, चलते थे, दौड़ते थे और फिसलते थे और उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, फर्श में, एक पुराने कसकुट पर हरे रंग के साथ, आश्चर्यजनक चमक होती थी। परंतु फर्श फिसलना था। विचार करते हुए, सुनहरी पोशाक वाला लामा, वापस ठिठका और अच्छी तरह जानते हुए कि इस आयु में, टूटी टांग या टूटी भुजा, एक प्रकार से फांसी का आभासी आदेश ही होगा, उसने बूढ़े ज्योतिषी की बांह पकड़ी।

शीघ्र ही, वे एक बड़े धूपदार कमरे में, जिसमें स्वयं महान तेरहवें, एक खिड़की में से अपने सामने बाहर की ओर घूरते हुए, और वास्तव में, ल्हासा की पूरी घाटी के चारों ओर विस्तारित, हिमालय पर्वत की श्रृंखलाओं के दृश्य को अवलोकित करते हुए, पद्मासन की मुद्रा में बैठे हुए थे, आये। बूढ़े ज्योतिषी ने, तिब्बत के तेरहवें राजा के लिए अपने दंडवत की। दलाईलामा ने अपने सेवकों को चले जाने का इशारा किया, और शीघ्र ही वह और प्रमुख ज्योतिषी, तिब्बत में कुर्सियों के बदले में उपयोग में लाये जाने वाले गद्दीदार आसनों पर, आमने सामने, अकेले बैठे थे।

ये एक दूसरे के तरीकों से भलीभांति परिचित, पुराने पहचान वाले थे। प्रमुख ज्योतिषी, राज्य के सभी मामलों को जानता था, तिब्बत के बारे में सभी भविष्यकथनों को जानता था, क्योंकि, वह वास्तव में, उनमें से अधिकांश को बना चुका था। अब महान तेरहवें, सर्वाधिक गंभीर दिख रहे थे, क्योंकि, ये महत्वपूर्ण दिन थे, तनाव के दिन, चिंता के दिन। ईस्ट इंडिया कंपनी (East India Company)[3],

---

3 अनुवादक की टिप्पिणी : ईस्ट इंडिया कम्पनी (East India Company) ने, 31 दिसम्बर 1600 को महारानी एलिजाबेथ (प्रथम) (Queen Elizabeth I) से रॉयल चार्टर प्राप्त किया था। तब इसके अधिकांश शेयर धनाढ्‍य व्यापारियों और अफसरशाहों के पास थे। प्रारंभ में ब्रिटेन की सरकार की इसमें न तो कोई भागीदारी थी, और न ही कोई प्रत्यक्ष नियंत्रण। ईस्ट इंडिया कंपनी, जिसे आदरणीय ईस्ट इंडिया कंपनी, या ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और अनौपचारिकरूप से जॉन कंपनी भी कहा जाता है, एक संयुक्त शेयर उपक्रम था, जिसे ईस्टइंडीज के साथ व्यापार करने के लिये बनाया गया था। प्रारम्भ में इसका व्यापार मुख्यतः चीन तक सीमित रहा, परन्तु बाद में इसने भारतीय प्रायद्वीप के ऊपर पूरी तरह अपना नियंत्रण कर लिया। प्रारंभ में इसका व्यापार मुख्यतः सूत, रेशम, भारतीय नील (Indigo dye), नमक, साल्ट पीटर (शोरा), चाय और अफीम तक सीमित था। कार्य संचालन के पहले सौ वर्षों में कंपनी का मुख्य ध्यान व्यापार पर रहा। इसका भारत में साम्राज्य बनाने का कोई विचार नही था। बाद में कंपनी ने नील और जूट के बागानों पर कब्जा करते हुए, भारत में शासन प्राप्त करने के लिये संघर्ष करना प्रारंभ कर दिया, जिसका प्रारंभ बंगाल से हुआ। 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य की अवनति होने के साथसाथ, ईस्ट इंडिया कंपनी ने शासन करना शुरू

ब्रिटेन की एक कंपनी, पकड़ बनाने की कोशिश कर रही थी, और सोने तथा दूसरी चीजों को, देश के बाहर ले जाने का प्रयास कर रही थी। विभिन्न एजेंट और ब्रिटिश सैन्यशक्ति के नायक, तिब्बत पर अतिक्रमण करने और उस देश को अपने अधिकार में लेने के विचार के साथ, खेल खेल रहे थे, परंतु समीपवर्ती पृष्ठभूमि में रूस से खतरा, उस कठोर कदम को लिये जाने से रोक रहा था। यद्यपि, ये कहना पर्याप्त होगा, कि उस स्थिति में, ब्रिटिश लोगों ने, तिब्बत के लिए अधिक खलबली और काफी कष्ट पैदा किये, ठीक वैसे ही, काफी बाद के वर्षों में, चीनी साम्यवादी भी वैसा ही करेंगे। जहॉ तक तिब्बती लोगों का सम्बंध था, उन्हें चीनी और ब्रिटिशों के बीच चुनने के लिये थोड़ा सा ही था, तिब्बती केवल अपने आपको अकेला छोड़ दिया जाना पसंद करते थे।

दुर्भाग्यवश, वहॉ एक दूसरी अधिक गंभीर समस्या थी, उसमें तिब्बत में, उस समय धर्माधिकारियों के दो समूह थे, एक पीली टोपी वाला (yellow cap) और दूसरा लाल टोपीवाला (red cap) कहलाता था। कईबार, इन दोनों के बीच हिंसक झगड़े होते थे, और दो नेताओं, दलाईलामा, जो पीली टोपीवालों का प्रमुख था, और पंचेनलामा, जो लाल टोपी वालों का प्रमुख था, के बीच जो कुछ भी हो, आपस में एक दूसरे से प्रेम नहीं था।

वास्तव में, इन दोनों सम्प्रदायों के बीच थोड़ी सी सहानुभूति थी। दलाईलामा के समर्थक, उस समय, अपना वर्चस्व रखते थे, परंतु हमेशा ऐसा नहीं था। कई दूसरी बार, पंचेनलामा, जिसे शीघ्र ही तिब्बत छोड़ने को मजबूर कर दिया गया था, अग्रपंक्ति (forefront) में रहा था, और तब, जबतक कि दलाईलामा, टारटारों की सहायता से, अपने दावों को प्रबलित (reinforce) नहीं कर सके, देश उथलपुथल में गोते लगा रहा था, और चूंकि धार्मिक आधारों पर, पीली टोपीवालों के पास वह था, जिन्हें कोई ''अच्छी शुचिता (sanctity)'' कह सकता है।

अंतरतम, दलाईलामा, जिनको वह उपाधि दी गयी थी, और जो महान तेरहवें के रूप में प्रसिद्ध थे, ने तिब्बत के संभावित भविष्य के सम्बंध में अनेक प्रश्न किये। बूढ़े ज्योतिषी ने कागजों तथा चार्टों को अपने बस्तों में, जो उसके साथ थे, आसपास टटोला तथा उन्हें, जो दोनों लोगों ने उनके ऊपर डाल दिये थे, के साथ प्रस्तुत किया। ''साठ से कम वर्षों में,'' ज्योतिषी ने कहा, ''और आगे, तिब्बत, स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में नहीं रहेगा। वंशानुगत शत्रु (hereditary enemy) चीन, एक नये प्रकार के शासन के साथ, देश को अतिक्रमित करेगा और आभासी रूप से, तिब्बत में धर्माधिकारियों के क्रम को समाप्त कर देगा।''

दलाईलामा को बताया गया था कि महान तेरहवें के गुजर जाने पर, चीनियों के अतिक्रमण के प्रशामक उपचार (palliative) के रूप में, दूसरा चुना जायेगा। तेरहवें दलाईलामा के पुर्नजन्म के अस्तित्व के रूप में, एक बच्चे का चयन किया जायेगा और चुनाव की सत्यता पर बिना ध्यान दिये, ये पहला और सबसे बड़ा राजनीतिक चुनाव होगा, क्योंकि, जिसे चौदहवें दलाईलामा के रूप में जाना जायेगा, वह चीन के प्रभाव वाले क्षेत्र से आयेगा।

अंतरतम, पूरे मामले के सम्बंध में, सर्वाधिक उदास थे और उन्होंने, अपने प्रिय देश को कैसे बचाया जाये, की योजनाओं पर काम करने का प्रयास किया, परंतु चूंकि, प्रमुख ज्योतिषी ने एकदम सही कहा था कि किसी व्यक्ति की बुरी जन्मपत्री को बदलने के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है, परंतु उन्हें एक पूरे देश की जन्मपत्री और उसके भाग्य को बदलने के लिए, कोई ठोस तरीका याद नहीं था।

किया। जून 1757 में, प्लासी (Plassey) की लड़ाई और अक्टूबर 1764 में, बक्सर (Buxar) की लड़ाई, जिनका नेतृत्व रॉबर्ट क्लाइव (Robert Clive) ने किया और उसने भारतीय शासकों को पराजित किया और बंगाल के नियंत्रण को पूरी तरह से कंपनी के अंतर्गत ला दिया। कंपनी ने राजनीतिक और सैन्य शक्तियॉ प्राप्त कीं, जो निकट भविष्य में लगातार बढ़ती गई। 1803 तक ईस्ट इंडिया कंपनी का राज्य अपने सर्वोच्च शिखर पर था, जिसमें उनके पास 2 लाख 60 हजार की निजी सेना थी, ब्रिटेन की सेना से लगभग दो गुनी। भारत में कंपनी का शासन, प्रभावशाली रूप से 1757 से प्रारंभ हुआ, जो 1858 तक चला। 1857 के भारतीय गदर के बाद, ब्रिटिश राज्य ने गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट, 1858 लागू किया। जिससे इसका शासन सीधे ब्रिटेन की सरकार ने अपने हाथों में ले लिया और उसे ब्रिटिश राज्य कहा जाने लगा। कंपनी को 1874 में बंद कर दिया गया, परंतु, अभी 2010 में फिर से इसको पुर्नजीवित किया गया है, और अब ये नये रूप में अपना काम कर रही है।

देश, अत्यधिक संख्या में अनेक इकाइयों, अत्यधिक संख्या में अनेक व्यक्तियों, जो न तो ढाले जा सकते थे, न आदेशित किये जा सकते थे, और न ही एक ही दिशा में, एक ही समय में, एक ही उद्देश्य के लिए, सोचने के लिए समझाये जा सकते थे, से बना हुआ था। इसलिए तिब्बत का भाग्य पता था। विद्वत् लोकोक्तियों, पवित्र पुस्तकों और पवित्र ज्ञान का भाग्य, अभी तक ज्ञात नहीं था, परंतु ऐसा सोचा गया कि उपयुक्त साधनों के द्वारा एक नौजवान को विशेष ज्ञान देते हुए, विशेष क्षमतायें देते हुए, प्रशिक्षित किया जा सके, और तब उसे तिब्बत की सीमाओं के परे, विश्व में आगे भेजा जाये, ताकि वह, अपने और तिब्बतियों के ज्ञान को लिख सके। दोनों लोग ने बातचीत करना जारी रखा और तब अंत में दलाईलामा ने कहा, ''और ये लड़का, रंपा लड़का, क्या तुमने उसकी, अभी तक जन्मपत्री बना ली है? मैं चाहता हूँ कि तुम उसे, आज के दिन से दो हफ्ते बाद, रंपा के घर में, एक विशेष पार्टी के अवसर पर पढ़ो।'' प्रमुख ज्योतिषी ने कंधे उचकाये। दो सप्ताह? यदि उसे एक निश्चित तारीख न दी जाये, तो वह दो महीने या दो वर्षों में भी पूरी नहीं कर सकेगा। इसलिए लड़खड़ाती आवाज में उसने उत्तर दिया, ''हॉं, पवित्रतम, आज के दिन से दो सप्ताह में सब हो जायेगा। परंतु ये लड़का, अपने जीवन में, सबसे खराब दुर्भाग्यशाली स्थितियॉं भोगने वाला है, बुरी शक्तियों और एक विशेष शक्ति के द्वारा, जिसे मैं, अभीतक, पूरी तरह नहीं समझ सका, पीड़ा और यातना, अपने खुद के देशवासियों के द्वारा परित्याग, बीमारी, हर गतिरोध, जिसकी कोई कल्पना कर सकता है, परंतु जो अखबारों के कर्मचारियों के कुछ तरीकों से संबंधित अधिक दिखाई देता है, उसके रास्ते में रखा गया है। दलाईलामा जोर से कराहे और उन्होंने कहा, ''ठीक है थोड़े समय के लिए उसे अलग रख दें, क्योंकि, जो अपरिहार्य है उसे बदला नहीं जा सकता। अगले दो सप्ताहों के बीच, तुमको, जो तुम सुनाने जा रहे हो, उसके प्रति एकदम सुनिश्चित हो जाने के लिए, अपने चार्टों को फिर से देखना पड़ेगा। एक क्षण के लिए, हम शतरंज की एक बाजी खेलें, मैं राज्य के मामलों से थक चुका हूँ।

चांदी की घण्टी टुनटुनाई गई और एक सुनहरी पोशाक वाला लामा कमरे में आया और उसने शतरंज के सैट और शतरंज के मोहरे लाने का आदेश प्राप्त किया, ताकि दोनों लोग खेल सके। ल्हासा के उच्चवर्ग के लोगों में शतरंज बहुत लोकप्रिय था, परंतु ये उससे एकदम अलग है, जो पश्चिमी जगत में खेला जाता है। पश्चिम में, जब खेल शुरू होता है, हर खिलाड़ी का एक एक पैदल, तिब्बत में प्रचलित सामान्य एक खाने के बजाय, दो खाने आगे चलता है, और तिब्बत में किलेबंदी (castling), जिसमें जब पैदल पिछली पंक्ति में पहुँच जाता है, ये एक किला बना देता है, जैसी कोई चीज नहीं होती, और न ही जिच (safemate) जैसी स्थिति उपयोग में लाई जाती है, इसके बजाय ये माना जाता था कि संतुलन या अवरोध की स्थिति (stasis) पहुँच चुकी थी, जबकि बोर्ड पर, बिना एक पैदल के या बिना किसी दूसरे मोहरे के, राजा अकेला रह जाये। प्रेम की उष्म आभा और आदर के साथ, जो इन दोनों में से प्रत्येक के बीच पैदा हुआ था, दोनों आदमी बैठे और असीम धैर्य के साथ खेले। उनके ऊपर, दलाईलामा के घर के ठीक ऊपर, सपाट छत पर, ऊँचे पहाड़ों की हवाओं में, प्रार्थना ध्वज फड़फड़ा रहे थे। नीचे गलियारों में, अपनी काल्पनिक अनंत प्रार्थनाओं को घुमड़ते हुए प्रार्थना चक्र, चटाक चटाक कर रहे थे। सपाट छतों पर, दलाईलामा के पिछले पुर्नजन्मों की समाधियों से, चौंधियाने वाला सुनहरा प्रकाश चमक रहा था, क्योंकि तिब्बती लोग विश्वास करते हैं कि प्रत्येक दलाईलामा, जैसे ही वह मरता है, मात्र संक्रमण को जाता है, और फिर किसी छोटे बच्चे के शरीर में पृथ्वी पर लौटता है। तिब्बत में, परकाया प्रवेश, धर्म का एक इतना स्वीकृत तथ्य था कि कभी इसके ऊपर टिप्पणी करने योग्य भी नहीं समझा गया। इसलिए सपाट छत के ऊपर, बारह शरीर, बारह समाधियों में रखे थे। हर समाधि बुरी आत्माओं के भुलावे के लिए, उन्हें दूर करने, और फेंकने के लिये, उत्तरोत्तर बढ़ते हुए अनेक चक्करों, पेंचदार घुमावों और कुंडलियों वाली छत के साथ, विस्तारपूर्वक डिजायन की गई थी।

स्वर्णिम समाधियों से, कोई चाकपोरी में, लौह पहाड़ी पर स्थित, तिब्बती चिकित्सा के घर,

चिकित्सा महाविद्यालय के चमकते हुए भवन के आरपार देख सकता था। उसके परे, अब आज के दिन, ऊँचे मध्यान्ह सूर्य के साथ तेज चमकता हुआ, ल्हासा का शहर था। आकाश गहरा बैंगनी था, और ल्हासा की घाटी में घंटी बजाते हुए पहाड़ों से उनकी चोटियों से शुद्ध सफेद बर्फ का फैन बहता था।

जैसे ही घंटे गुजरे, पश्चिमी पर्वतश्रृंखला से उगती हुई छायाओं के द्वारा चिन्हित राजकीय घर में, दो लोग नीचे कराहे और उन्होंने अनिश्चितरूप से शतरंज के अपने मोहरों को बगल से खिसकाया चूँकि अब पूजा करने का समय था, समय, जबकि दलाईलामा को अपनी श्रद्धा अर्पित करनी थी, समय, जबकि प्रमुख ज्योतिषी को अपनी गणनाओं पर लौटना था, यदि उसे दलाईलामा द्वारा थोपी गई दो सप्ताहों की अपनी अंतिम सीमा को प्राप्त करना होता।

फिर से चांदी की घंटी टुनटुनाई गई, फिर से स्वर्णिम पोशाक वाला लामा प्रकट हुआ, और उसे प्रमुख ज्योतिषी को, तीन तल नीचे, अपने खुद के घर पर लौटने में सहायता करने के, थोड़े से बड़बड़ाये गये शब्दों के साथ निर्देशित किया गया।

प्रमुख ज्योतिषी, अपनी आयु से चरमराते हुए पैरों पर उठा, अपने रीतिरिवाज के अनुसार दंडवत की और अपने आध्यात्मिक प्रमुख की उपस्थिति में से चला गया।

अध्याय–2

''ऊ–ई! ऊ–ई! ये–याह! ये–याह!'' उस सुखद दिन, सांझ के झुटपुटे में स्वर ने कहा। ''क्या तुमने उस लेडी रंपा के सम्बंध में सुना? वह फिर से इस पर है!'' वहॉ सड़क पर पैरों का पटकना हुआ, पैरों के नीचे से पत्थर के कंकड़ों के घसीटे जाने की थोड़ी आवाज हुई, और तब एक आह निकली। ''लेडी रंपा? अब उसने क्या कर दिया?''

पहली आवाज ने, बुरी तरह छिपायी हुई प्रसन्नता के साथ उत्तर दिया। ऐसा लगता है कि एक विशेष प्रकार की औरत के लिए, यदि वह संदेश की धारक है, उसके वर्ग का, उसकी राष्ट्रीयता का कोई फर्क नहीं पड़ता, प्राथमिकता से, उसका दिन खराब हो जाता है।

''मेरे सौतेले बेटे की आन्टी ने एक अजीब कहानी सुनी। जैसा आप जानते हैं, उसकी शादी, कस्टम के उस आदमी से, जो कि पश्चिमी द्वार पर काम करता है, होने वाली है। उसका पुरुष मित्र (मंगेतर) उसको बताता रहा है कि, लेडी रंपा, गुजरे महीनों में, भारत से सभी चीजों को मंगाने के लिए आदेश देती रहीं हैं, और अब व्यापारी अपने काफिलों में माल को पहॅुचाना शुरू कर रहे हैं। क्या तुमने इस सम्बंध में कोई चीज सुनी है?''

''ठीक है, मैंने सुना है कि वहॉ उनके बागों में, निकट भविष्य में, एक विशेष प्रगति होने वाली है, परंतु आप को याद रखना चाहिए कि, जब ब्रिटेन के अतिक्रमण की अवधि में, अंतरतम भारत गये थे, महान लॉर्ड रंपा, हमारे राज्य अधिकारी थे, जिसने इतना नुकसान पहॅुचाया। मेरा ख्याल है कि ये स्वाभाविक ही है कि हमारे देश की अग्रणी महिलाओं में से एक उसे चाहे, क्या आप?''

सूचना देने वाले ने भावावेश के साथ सांस बाहर निकाली, और तब किसी चीज का आदेश देने के लिए एक गहरी खींची। मैं नहीं समझता कि सांस में, वह क्या गलत कर रही है और आक्षेप कर दिया, ''आह! परंतु आप इस पूरी बात को नहीं जानते, आप इसकी आधी भी नहीं जानते! मैंने अपने दोस्तों में से एक को, जो नीचे केसर (Kesar) पर, प्रतीक्षारत भिक्षुओं में से एक की सेवा करता है, वह पोटाला से आता है, कहते हुए सुना है, आप जानते हैं कि उस छोटे बच्चे की, एक बहुत, बहुत बड़ी जन्मपत्री, और जीवन विवरण तैयार किये जा रहे हैं, तुम उस मरियल से को जानते हो, जो हमेशा परेशानी में पड़ता रहता है, और वह अपने पिता को इतना कड़वा दिखाई देता है। मुझे आश्चर्य है, यदि आपने उसके बारे में कुछ सुना हो?''

दूसरी महिला ने, क्षण भर सोचा और तब उसने उत्तर दिया, ''हॉ, परंतु आप को ध्यान रखना चाहिए कि पालजोर अभी हाल में ही मरा था, मैंने अपनी खुद की आंखों से, उसकी लाश को ले जाते हुए देखा था। लाश तोड़ने वाले उसको बड़े आदर के साथ घर से बाहर ले गये थे, और दो पुजारी दरवाजे तक उसके साथ गये थे, परंतु अपनी खुद की दो ऑखों से मैंने देखा था कि जैसे ही दोनों पुजारी पीछे मुड़े, बेचारी छोटी लाश, एक खच्चर की पीठ पर, पेट नीचे की तरफ, बिना रीति रिवाज के डाल दी गई, और राग्याव तक ले जायी गई, ताकि मृतकों को ठिकाने लगाने वाले, उसे तोड़ सकें और उसे पक्षियों को खिला सके। उसे ठिकाने लगाया जाना था।''

''नहीं, नहीं, नहीं,!'' उत्तेजित मुखबिर ने प्रतिवाद किया, आपने पूरे मुद्दे को गंवा दिया–आप के पास ऐसे सामाजिक मामलों के अधिक अनुभव नहीं हो सकते; बड़े बच्चे की मृत्यु के साथ, वह छोटा बच्चा लोबसांग, अब ल्हालू परिवार की संपत्तियों और सौभाग्यों का उत्तराधिकारी है, आप जानते हैं, वे लखपति हैं। उनका पैसा यहॉ है, उनका पैसा भारत में है, और उनके पास चीन में धन है। मैं सोचता हॅू कि वे हमारा सबसे अधिक धनाड्य परिवार होना चाहिए, और ये छोटा बच्चा, इस सब का वारिस क्यों बने? वह अपने सामने आराम की इतनी अच्छी जिंदगी क्यों जिये, जबकि हमें काम करना पड़ता है, मेरे पति ने मुझे बताया था कि, बुरा मत मानो, किसी दिन परिवर्तन होगा, हम उच्च लोगों के घरों को ले लेंगे और हम विलासिता में रहेंगे और वे हमारे लिये काम करेंगे। यदि हम, केवल लंबे जीते हैं, हम

देखेंगे, जो होगा हम देंखेगे, शुकर मनाओ कि वह दिन आ जाये।

झुटपुटे में से आते हुए मंद कदमों की हल्की आवाज हुई, अब मंद, धुंधला चेहरा और एक तिब्बती औरत का काला काला जूड़ा, मुश्किल से पहचाना जा सकता था। '' जो कहा गया था, मैं उसे समझने में सहायता नहीं कर सकी'' नवागन्तुक ने घोषणा की, ''परंतु हमें याद रखना है कि ये छोटा लड़का, लोबसांग रम्पा, वह अपने सामने कठोर जीवन पाने वाला है, क्योंकि पैसे वाले सभी, वास्तव में, बड़े बड़े कठिन जीवन को पायेंगे।''

''ओह तब ठीक है,'' मुखबिर ने उत्तर दिया, ''वास्तव में, हम में से हर एक का, बहुत बहुत आसान समय होना चाहिए। हमारे पास बिलकुल पैसा नहीं है, क्या हमारे पास है? इसके साथ ही वह डायन जैसी हंसी में खिलखिलाकर फूट पड़ी।

नवागन्तुक कहता चला गया; ''ठीक है, मैंने ये कहते हुए सुना है कि एक बड़े समारोह की योजना बनाई जा रही है, ताकि महान लॉर्ड रंपा, अपने बेटे लोबसांग, को उसका उत्तराधिकारी होना घोषित कर सकें। मैंने यह भी सुना है, कि बच्चा प्रशिक्षण के लिए भारत को भेजा जाने वाला है और तब उसको ब्रिटिश लोगों के हाथों से बचाकर रखने में परेशानी होगी। ब्रिटिश लोग, हमारे देश का नियंत्रण पाने का प्रयास कर रहे हैं, तुम जानते हो, और उस नुकसान को देखो, जो उन्होंने कर दिया है। परंतु, नहीं, वह लड़का अमीर हो या गरीब, उसके सामने कठोर जीवन है, तुम मेरे शब्दों को लिख लो, तुम मेरे शब्दों को लिख लो।'' जैसे ही तीनों औरतें, सावधानीपूर्वक, सर्पमंदिर (snake temple) के साथ गुजरते हुए, कलिंग चू (Kaling Chu) के पास, चारा संपा पुल (Chara Sampa Bridge) को पार करने के लिए, लिंगखोर रोड के साथ गईं, आवाजें दूर हटती गईं।

केवल कुछ गज दूर, या शायद उससे थोड़ा सा अधिक दूर, उनकी चर्चा का विषय, एक छोटा बच्चा, अभी सात वर्ष की आयु का भी नहीं, बैचेन होकर अपने कमरे के कठोर फर्श पर उछला। कमोवेश, चपल स्वप्नों को देखता हुआ, भयानक दिवास्वप्नों! को देखता हुआ, वह नींद में था। वह पतंगों की सोच रहा था और ये कितना आश्चर्यजनक होता, यदि कभी ये पता लगता कि वह उनमें से एक था, जो पतंग, एक वह जो एकाएक यात्रियों पर टूट पड़ी, और उसने उनके खच्चरों को इतना बिदकाया कि सबारों में से एक, गिर पड़ा और लुढ़ककर सीधा नदी में गया, उड़ा रहे थे। वह सवार भी, मठों में से एक, के मठाध्यक्ष के एक सहायक जैसा महत्वपूर्ण आदमी था। बेचारा बच्चा घूमा, और जैसे ही उसने अपनी स्वप्न की अवस्था में सभी कठोर दंडों को सोचा, जो उसके आपत्ति करने वाले शरीर को दिये जायेंगे, भले ही वह कभी भी अपराधी न पाया जाय, अपनी नींद में मरोड़ दिया गया।

ल्हासा में, अग्रणी परिवारों के छोटे बच्चों का जीवन, वास्तव में कठोर होता था। इन बच्चों से, एक उदाहरण प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाती थी, उनसे जीवन के संघर्षों के प्रति उनको मजबूत बनाने के लिए, कठिनाइयों को झेलने की अपेक्षा की जाती थी। एक उदाहरण के रूप में कार्य करने के लिए, ये दिखाने के लिए कि पैसे वालों के बेटे भी, उन लोगों के बेटे भी, जो देश पर शासन करते हैं, कष्ट, पीड़ा और तंगी झेल सकते हैं, उनसे निम्न जन्म वाले लोगों की तुलना में, अधिक कठिनाइयों को पाने की आशा की जाती थी, और एक लड़के का अनुशासन, जो अभी सात वर्ष की आयु का भी नहीं है, कुछ ऐसा था, जिसको पश्चिम के किसी भी उम्र के बच्चे, कभी भी नहीं झेलेंगे।

जैसे ही तीनों औरतें, हर एक अपने घर के लिए रवाना होने से पहले, अपनी आखिरी बातचीत के लिए रुकीं, पुल के परे से फुसफुसाने की आवाजें, फुसफुसाने के मादा स्वर, आईं। अंत में, जबतक कि, उनके पैरों के नीचे से, बजरी, व्यग्रतापूर्वक नहीं फिसली, वहॉं ''रंपा'' ''यशोधरा'' और स्वरों की बुदबुदाहट भरी, भटकी सी हवाऐं आती गईं, औरतों ने शुभरात्रि कहते हुए, एक दूसरे से विदा ली, और हर एक, अपने अपने रास्ते पर चली गई।

महान ल्हालू निवास में, जिसके बड़े से सामने के दरवाजे ने, ब्रिटेन के तोपखाने के हमले को

इतनी अच्छी तरह से झेला था कि वे वहाँ केवल पत्थर की दीवार को ही तोड़ सके थे, परिवार सो रहा था, ''रात के सभी संरक्षकों (guards),'' को छोड़कर, जो चौकीदारी पर खड़े रहते थे, और रात के घंटों में सहायता और मौसम की अवस्था के लिये पुकारते थे, ताकि कोई भी, जो अकस्मात् रूप से जग रहा हो, रात की प्रगति को जान सके।

ल्हालू निवास के बगल से छोटी मठिया (chapel) में सहायकों के क्वार्टर थे। सर्वोच्च वर्ग के तिब्बती अधिकारी, अपने निवास में, और एक या दो पुजारियों की सेवाओं के साथ, अपनी खुद की मठियायें बनाकर रखते थे; रंपा निवास इतना महत्वपूर्ण था कि, दो पुजारी एकदम आवश्यक समझे गये थे। हर तीन साल बाद, पोटाला के पुजारी भिक्षु, दूसरों से बदल दिये जाते थे, ताकि, वे जो घरेलू सेवा में हों, अपने घरेलू अधिवास (domestic domicile) के कारण, अत्यधिक अशक्त न हो जायें। लामाओं में से एक, चूंकि ये भिक्षु वास्तव में लामा थे, ने अभी हाल में ही परिवार में काम प्रारंभ किया था। दूसरा शीघ्र ही, मठ के कठोर अनुशासन के लिए लौटकर जाने वाला था, और बाद वाला, ये उत्सुकता करते हुए कि वह अपने स्थानन (posting) को कैसे लंबा खींच सकता है, बैचेनी से उछल रहा था, क्योंकि वास्तव में, ये देखना कि महान परिवार के वारिस की जन्मपत्री को, जानता में कैसे सुनाया जाता है, ताकि, सभी पहले से ही ये जान सकें कि वह बड़ा होकर, किस प्रकार का आदमी बनने वाला है, जीवन भर का अवसर था।

ये एक जवान लामा था, एक वह, जो अपने मठाध्यक्ष से उच्च अनुशंसा पा कर, ल्हालू रियासत को आया था, परंतु वह खेदपूर्ण एवं निराशाजनक सिद्ध हुआ। उसके कौतुक (amusement) न तो पूरी तरह से मठ जैसे (ecclestcal), और न ही पूरी तरह से पुजारी जैसे थे, क्योंकि वह उन लोगों में से एक था जिसे ''चालू नजर (wandering eye)'' कहा जाता है, और उसकी नजरें हमेशा और बार बार घरेलू कर्मचारियों के सुदर्शन और जवान सदस्यों पर आवारा घूमतीं रहती थीं। एक सेवक, जो मठी के बायीं ओर रहता था, उसने इस पर ध्यान दिया और एक शिकायत दर्ज कराई। इसलिए वह बेचारा जवान लामा, अपमान के साथ बर्खास्तगी झेल रहा था। उसका उत्तराधिकारी अभी नियुक्त नहीं किया गया था और वह नौजवान आदमी, यह जानने को उत्सुक था कि वह मामलों को कैसे विलंबित कर सकता है ताकि उसे, उस बच्चे के उत्सव और धार्मिक सेवाओं के प्रतिभागियों में से एक होने की, प्रसिद्धि मिल सके।

बेचारा दुखी चल सम्पत्ति प्रबन्धक (steward), भी अधिक परेशानी में था। लेडी रंपा, वास्तव में, एक कठिन औरत थी, कईबार अपने निर्णय में अत्यन्त कठोर, किसी व्यक्ति को स्पष्टीकरण देने का अवसर दिये बिना ही कि इनमें से कुछ परेशानियाँ उसके बस की नहीं थीं, निंदा करने के लिए एकदम तैयार। अब उस (परिचारक) के पास, तीन महीनों के लिए, माल के आदेश थे, और ठीक, हर आदमी जानता था कि भारतीय व्यापारी कितने सुस्त थे, परंतु लेडी रंपा, ये कहते हुए कि सेवक, आपूर्तियों को पाने में अपनी अकुशलता के द्वारा, पूरे उद्योग की सफलता को खतरे में डाल रहा था, भयानक हुड़दंग मचाये थी। ''मैं क्या कर सकता हूँ?'' जैसे ही उसने अपने कंबल को फर्श पर उछाला और पलटा, वह खुद में ही बड़बड़ाया। ''माल को समय पर लाने के लिए, मैं कैसे उस व्यापारी के पीछे पड़ सकता हूँ?'' ऐसा बड़बड़ाते हुए, वह अपनी पीठ पर लुढ़क गया, उसका मुँह खुला रह गया और उसने ऐसे भयानक खर्राटे निकाले कि रात के चौकीदारों में से एक ने, ये देखने के लिए झांका, कि वह कहीं मर तो नहीं गया!

लेडी रंपा भी बैचेन होतीं जा रहीं थीं। वह सामाजिकरूप से अत्यंत जागरूक थीं। वह आश्चर्य कर रही थीं कि क्या प्रबन्धक, श्रेष्ठता के क्रम (precedence) का, एकदम पक्का था, आश्चर्य कर रहीं थीं कि क्या सभी संदेश लिखे जा चुके थे, क्या आमंत्रण–पत्र, विशेष प्रकार के हाथ के बने कागज पर रिबन से बांध दिये गये थे, और तब चिरी हुई खपच्चियों पर, जिन्हें तेज धावक अपने खच्चरों पर सवार

होकर ले जायेंगे, लगा दिये गये थे। उसने सोचा, ये सब एकदम ठीक किया जाना था; किसी को भी, अपने से उच्च पद वाले को आमंत्रण मिलने से पहले, आमंत्रण मिल जाने की घटिया प्राप्ति नहीं होनी चाहिए। ये मामले खुल जाते; लोग, एक कड़ी मेहनत करने वाली मेजवान को, जो इसे अपने परिवार की प्रतिष्ठा के लिए, सबसे अच्छे तरीके से करने का प्रयास कर रही है, नीचे खींचने के लिये हमेशा तैयार थे। लेडी रंपा, खाद्य की आपूर्ति के सम्बंध में आश्चर्य करते हुए, यदि संयोगवश चीजें समय पर नहीं आ पहुचें, ऐंठीं और मुड़ीं।

पड़ौस में एक छोटे कमरे में, बहन यशोधरा चिड़चिड़ा रही थी। उसकी मां ने पहले से ही आदेश दे दिया था कि उसे पार्टी में क्या पहनना चाहिए, इसका बिलकुल कोई अर्थ नहीं था कि यशोधरा क्या पहनना चाहती थी, उसके विचार एकदम अलग थे। कुल मिलाकर, जैसा उसने खुद से कहा, वास्तव में, लड़कों पर नजर डालने का कि बाद वाले वर्षों में पति के रूप में कौन सा उपयुक्त होगा, वर्ष भर में यही एक समय था, और लड़कों पर नजर डालने का मतलब था कि उसमें खुद में भी उन्हें आकर्षित करने का कुछ हो–पहनावा, ये उचित कपड़े होने चाहिए, उसके बाल याक के घी के साथ, अच्छी तरह कंघी किये हुए होने चाहिए, उसके कपड़े, सबसे सुंदर चमेली के साथ साफ किये जाने चाहिए। उसको, जिससे वह आशा करती है, भविष्य में एक अच्छा पति होगा, आकर्षित करने के लिए, हर संभव चीज करनी चाहिए, परंतु उसकी माता, माताऐं कभी नहीं समझीं, वे गुजरे जमाने की थीं, वे नहीं समझतीं थीं कि कुल मिलाकर नौजवान लड़कियों को आजकल कैसे जाना होता हैं, वे ऐसी चीजों को भूल चुकी थीं। यशोधरा पीछे पड़ी थी और उसने सोचा, और सोचा, और योजना बनाई कि क्या वह यहॉ एक रिबन लगाये या कि फूल, वह अपने प्रदर्शन को कैसे सुधार सकती थी?

जैसे ही रात बढ़ी, गहरी, और गहरी हुई और नया भोर, नये दिन की नई सुबह, पैदा होने को तैयार थी। शंखों और तुरहियों की गूंज की आवाज ने, अनियमित रूप से सोने वाले घर के लोगों को, जगा दिया। सबसे छोटे रंपा ने एक सोती हुई धुंधली सी ऑख को खोला, बड़बड़ाया और उठने की गतिविधि पूरी होने से पहले, फिर से गहरी नींद में लुढ़क गया।

नीचे, चल सम्पत्ति प्रबन्धक के कार्यालय के पास, रात के चौकीदार अपनी ड्यूटी छोड़कर जा रहे थे, जबकि एक ताजी पारी अपना स्थान ले रही थी। सबसे निम्न श्रेणी के नौकर, समीपवर्ती मंदिरों से गूंज की आवाज के प्रारम्भ पर ही जग गये, और अधजमे कपड़ों से संघर्ष करते हुए, उछलकर अपने पैरों पर खड़े हो गये। ये देखना कि सुगलती हुई आग तैयार रखी हों, और उनको फिर से ताजा जीवन दिया जाये, उनका काम था। उनका काम, इससे पहले कि परिवार, पूरी रात के फूहड़पन की अवस्था को देखने के लिए नीचे उतरे, कमरे में पॉलिश करना, जगह को साफ करना था।

अस्तबल में, जहॉ अनेक घोड़े रखे गये थे, और पीछे खेत की इमारतों में, जहॉ याक रखे गये थे, नौकरों ने, वहॉ इकट्ठे हुए जानवरों के द्वारा रात भर में किये गये गोबर को इकट्ठा करते हुए, चप्पा चप्पा खोज मारा। थोड़े सी लकड़ी की कतरन और बुरादे के साथ मिलाने और सुखाने पर, ये तिब्बत को सहायक ईंधन प्रदान करेगा।

रसोइये, अनिच्छापूर्वक, दूसरे दिन का सामना करने के लिए लौटे, वे थके हुए थे, और वे कई पिछले सप्ताहों से कल्पनातीत मात्राओं में खाना तैयार करने, और खाने को, हल्की उंगुलियों वाले छोटे बच्चों तथा हल्की उंगुलियों वाली छोटी लड़कियों की भी लूटपाट से बचाकर रखने के प्रयास करते हुए अतिरिक्त कार्य में व्यस्त रहे थे। वे थके हुए, वे पूरे मामले से परेशान थे। वे एक दूसरे से कह रहे थे, ''ये चीज क्यों नहीं शुरू और खत्म होती, ताकि हमें फिर से कुछ शांति मिले। गृहस्वामिनी, सभी तैयारियों से, अपने सिर से बाहर, और भी अधिक खराब हो गई थी।''

घर की मालकिन, लेडी रंपा, वास्तव में व्यस्त रही थी। कई दिनों तक, वह, ल्हासा में रहने वाले और कुछ चुनिन्दा दूसरे समीपवर्ती केन्द्रों के सभी महत्वपूर्ण लोगों की सूचियॉ प्रदान किये जाने के लिए,

उसके सचिवों को कष्ट देते हुए, अपने पति के कार्यालय में थी। साथ ही साथ, उसने ये कठोर मांग भी रखी कि, उपयुक्त विदेशी, जो लाभदायक प्रभाव के हो सकते हैं, बाद में भी आमंत्रित किये जायें, परंतु यहाँ फिर, शिष्टाचार और वरिष्ठता, कि कौन किससे पहले आता है, के क्रम का एक प्रश्न था। इस स्थिति में, जब वे महसूस करें कि उनको उस स्थान पर होना चाहिए था, किसका अपमान होगा। ये बहुत बड़ा कार्य, एक गहरी जॉच, एक गहरी पीड़ा थी, और सेवक, एक दिन, एक सूची प्राप्त करते हुए और अगले दिन, ये पाते हुए कि एक ताजा सूची, पिछली वाली, जो एक दिन पहले जारी की गई थी, का स्थान ले लेगी, थक चुके थे।

पूरा स्थान, कई दिनों तक रगड़कर साफ किया गया, युगों से खराब हुए पत्थर के काम को चमकाने के लिए, महीन किसकिसी धूल (fine gritty sand), का उपयोग किया गया था। मजबूत नर सेवक, अपने पैरों के चारों ओर कपड़ा लपेटे हुए, और कपड़ों में बड़े पत्थर लपेटे हुए, अपने पत्थर के भार को धकेलते हुए, घर भर में, फर्शों पर, जो पहले से दर्पण जैसे चमक रहा था, पर पैदल चलते थे।

बागों में, गरीब माली, जमीन से खरपतवार निकालते हुए, छोटी छोटी कंकड़ियों, जो गलत रंग की हों, को भी निकालते हुए, अपने हाथों और घुटनों पर झुके। घर की स्वामिनी, वास्तव में, एक बड़ी कठोर मालकिन थी। ये उसके जीवन का सबसे ऊँचा मुद्दा था। उसका बेटा और ल्हालू परिवार का वारिस, जो राजकुमार हो सकता था, या क्या? प्रक्षेपित किया जाना था, और केवल ज्योतिषी लोग बतायेंगे कि उसके जीवन में क्या था, परंतु ज्योतिषियों ने कोई संकेत दिया था, और न ही चेतावनी की पूर्व सूचना कि उनका पठन क्या बतायेगा।

घर की स्वामिनी, तिब्बत के सामान्यजनों में सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति की पत्नी, ने आशा की, और आशा की कि, उसका बेटा देश को छोड़ जायेगा और कहीं दूसरी जगह पढ़ेगा। उसने आशा की कि वह अपने पति को समझाने में सफल होगी कि वह दूसरे देश में पढ़ने वाले, अपने बेटे के पास जल्दी जल्दी यात्रा कर सके। वह विभिन्न देशों, जिन्हें वह लंबे समय से, भ्रमणशील व्यापारियों के द्वारा ल्हासा में लाई गई कुछ पत्रिकाओं में, अंधविश्वासपूर्वक, देख चुकी थी, में यात्रा करने की आशा रखती थी। उसकी अपनी योजनायें थी, उसके अपने सपने और अपनी महत्वकांक्षायें थीं, परंतु हर चीज, प्रमुख ज्योतिषी के निर्णय पर निर्भर करती थी और हर आदमी जानता था कि, ज्योतिषी लोग, किसी की सामाजिक स्थिति की कैसे अनदेखी करते थे।

अब समय, जबकि ये महान पार्टी होने वाली थी, तेजी से पास आता जा रहा था। व्यापारी पश्चिमी द्वार से प्रवेश कर रहे थे, और ल्हालू निवास की ओर, तेज कदम उठा रहे थे, होशियार लोग, या जो अधिक व्यापारिक सूझबूझ वाले थे, जानते थे कि लेडी रंपा, शीघ्र ही उनकी चालाकियों के लिए चारा बन जायेगीं, यदि वे कोई नई चीज, कुछ चीज, जो ल्हासा में इससे पहले नहीं देखी गई हो, कुछ चीज, जो उसके पड़ौसियों और सामाजिक प्रतियोगियों को झूठे आनंद और भय के साथ, विस्मित कर दे, जो वास्तव में छिपा हुआ अवसाद और ईर्ष्या होती, कि वे उसे पाने वाले पहले नहीं बने, प्रस्तुत कर सकें।

अनेक व्यापारियों ने, घर की मालकिन को अनजान आकर्षक चीजों, जिनसे वह अपने मेहमानों का मनोरंजन कर सकती थी और उन्हें चकित कर सकती थी, के साथ बेवकूफ बनाने का प्रयास करने के लिये, पश्चिमी द्वार से लिंगखोर सड़क के साथ साथ, पोटाला के पिछवाड़े के आसपास, सर्पमंदिर के बाद, ल्हालू निवास तक के धीमे रास्ते को अपनाया। कुछ अपने याकों की श्रृंखला को ले गये और व्यापार के अपने पूरे माल को निवास तक लाये ताकि, लेडी, स्वयं भलीभॉति देख सके कि उनके पास बेचने के लिये क्या था, और वास्तव में, ऐसे महत्वपूर्ण अवसर के लिए, कीमतें बढ़ी होनी चाहिए, क्योंकि कोई महिला, जो वास्तव में एक महिला थी, मांगी गई कीमत पर, इस डर से कि व्यापारी इसको पड़ौसियों को बता देंगे कि लेडी रंपा, उचित कीमत नहीं दे सकी, बल्कि कुछ कटौती, कुछ रियायत

और नमूने, चाहती थीं, मोलभाव करने का दुस्साहस नहीं करेगी या कीमतों पर बाल की खाल नहीं निकालेगी।

दिनोंदिन याकों के काफिले आते गये, दिनोंदिन लोग अस्तबल में से याकों के उपहार का कूड़ा उछालते गये, और ईंधन के ढेर में, जो इतनी तेजी से बढ़ रहा था, जोड़ते गये, और वास्तव में, खाना पकाने और गर्म करने के लिए, और खुले में अलाव जलाने के लिए, अधिक अतिरिक्त ईंधन की आवश्यकता होगी, क्योंकि बिना एक अच्छे अलाव के, कौन एक अच्छी पार्टी मना सकता है?

जमीन से सभी खरपतवारों को संतोषपूर्वक साफ कर लेने के साथ, बागवानों ने अपना ध्यान, ये सुनिश्चित करने के लिए पेड़ों की ओर बदला, कि उनमें कोई टूटी शाखाऐं नहीं थीं, कि उसमें कोई मरी हुई शाखायें नहीं थीं, जो देखने पर भद्दी लगें, और एक खराब रखरखाव वाले बगीचे की शिकायत की ओर ले जा सकें। ये और भी अधिक खराब विनाशकारी होता, यदि कोई छोटी शाखायें टूटकर, किसी भद्र महिला के ऊपर गिरी होतीं, तो एक विशिष्ट लाख की पॉलिश किये हुए लकड़ी के ढांचे पर किया गया केशविन्यास अव्यवस्थित होता, जो घंटों में संवारा जा सकता था। इसलिए बागवान, पार्टियों से थक गये थे, कार्य से थक गये थे, और फिर भी वे सुस्त होने का दुस्साहस नहीं कर सकते थे, क्योंकि, लेडी रंपा हर जगह नजर रखती प्रतीत होती थी, जैसे ही कोई आदमी, दुखती हुई पीठ पर, एक क्षण के लिए विश्राम करने के लिए बैठता, बैसे ही वह गुस्से से चीखती हुई प्रकट हो जाती कि वह चीजों को देर करा रहा था।

अंत में वरीयता का क्रम निर्धारित किया गया और स्वयं महान स्वामी रंपा द्वारा, जिसने हर निमंत्रणपत्र पर, चूंकि वे भिक्षु–लेखकों के द्वारा सावधानीपूर्वक तैयार किये गये थे, व्यक्तिगतरूप से, अपनी मुद्रा लगाई थी, अनुमोदित किया गया। इस अवसर के लिए, कागज, विशेषरूप से बनाया गया था; ये रफ किनारे वाला मोटा कागज था, वास्तव में, लगभग, रुई धुनने वाले डैकल के किनारे जैसा। हर पन्ना लगभग बारह इंच चौड़ा, तथा दो फीट लंबा था। ये निमंत्रणपत्र सामान्य आकार या नमूने के, जैसे कि लामामठों में उपयोग में लाये जाते थे, नहीं थे; लामामठों में, कागज लंबाई की तुलना में, चौड़ा अधिक होता है, परंतु जब अत्यंत महत्वपूर्ण आमंत्रण होते, वे संकरे कागज पर लिखे जाते थे, जो चौड़ाई की तुलना में, लगभग दुगने लंबे होते थे, क्योंकि जब आमंत्रण स्वीकार कर लिया जाता था, तो कागज को बांस की दो खप्पचियों, जो किनारे पर काफी सजी होती थीं, के बीच बांधा जाता था, और तब निमंत्रण को, सावधानीपूर्वक एक डोरी से लटकाया जाता था, और ये दिखाने के लिए कि प्राप्तकर्त्ता कितना महत्वपूर्ण था, सजावट के रूप में उपयोग किया जाता था।

स्वामी रंपा, ल्हासा के दस उच्च्च परिवारों में से एक था, वास्तव में, स्वामी रंपा स्वयं, ऊपर के पांच में था परंतु लेडी रंपा ऊपर के दस में थी, अन्यथा उनकी शादी नही हो सकती थी। इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए कि उनमें से प्रत्येक का ओहदा इतना बड़ा था, प्रत्येक निमंत्रणपत्र पर दो मुद्रायें, एक उसकी लॉर्डशिप की, और दूसरी उसकी लेडीशिप की, लगाई गयीं और तब, चूंकि वे विवाहित थे और उनके पास इतनी विस्तृत संपदा थी कि, उनके पास एक तीसरी मुद्रा, जिसे संपदा मुद्रा के रूप में जाना जाता था, भी थी, और वह भी सभी दस्तावेजों के साथ लगती थी। हर सील अलग रंग की थी और लेडी रंपा और स्टीवार्ड सनक की एक अवस्था में थे, और संदेशवाहक अनाड़ी थे, और ऐसा कुछ कर सकते थे, जिससे कि चटखने और टूटने योग्य मुद्रायें, चटककर, टूट सकती थीं।

विशेष संदेश–छड़ियॉं (message-sticks) तैयार की गईं। वे सभी एकदम ठीक लंबाई की, और लगभग समान मोटाई की होनी थीं। प्रत्येक के एक सिरे पर एक खास तरह का खांचा था, जो संदेश को प्राप्त करता और पकड़ कर रखता था, तब खांचे के ठीक नीचे, एक चीज जड़ी थी, जिसके ऊपर परिवार का कुलचिन्ह लगा था। कुलचिन्ह (coat of arms) के नीचे, एक बहुत कड़े कागज की संकरी लड़ियॉं थीं, जिन पर, संदेशवाहक के बचाव की आशा करते हुए, ये आशा करते हुए कि

प्राप्तकर्त्ता निमंत्रण को स्वीकार करने योग्य होगा, और संदेशों की सुरक्षित प्रस्तुति (delivery) के लिए, प्रार्थनायें छपी थीं।

कुछ समय के लिए, संदेशवाहकों को, एक सर्वाधिक प्रभावशाली ढंग से, सावधानीपूर्वक घुड़सबारी करने और संदेशों को पहुॅचाने के लिए, व्यायाम कराया गया। वे अपने संदेश की डंडियों को हवा में हिलाते हुए, अपने घोड़ों पर बैठे, मानो कि वह भाले (spears) हों, तब संकेत (signal) पर, वे आगे बढ़े और एक–एक करके प्रहरियों के कप्तान, जो उन्हें व्यायाम करा रहा था, के पास पहुॅचे। वह गृहस्वामी या गृहस्वामी का सहायक होने का नाटक करते हुए, संदेश की छड़ी, जो झुकाकर उसकी ओर बढ़ाई गई थी, से शानदार ढंग से संदेश का स्वीकार करता। वह तब अत्यधिक आदर के साथ उस संदेश को लेता और संदेशवाहक, जो कुल मिलाकर, ''उस परिवार'' का प्रतिनिधि था, के सामने झुकता। संदेशवाहक वापस झुकता, अपने घोड़े को घुमाता, और जहॉ वह आया था, वहीं को सरपट दौड़ जाता।

जब सभी संदेश या आमंत्रण तैयार थे, उन्हें शिष्टता के क्रम में रखा गया और सर्वाधिक आकर्षक संदेशवाहक को, सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति के पास भेजा गया और इसप्रकार वे सभी आमंत्रणों को पहुॅचाने के लिए सरपट दौड़ गये।

दूसरे संदेशवाहक आगे आये, हरएक संदेश लेता, और छड़ी की दरार में फंसाता और सरपट दौड़ जाता। शीघ्र ही, वे लौटेंगे और पूरी प्रक्रिया दोबारा फिर होगी, जबतक कि काफी लंबे समय के बाद, सभी निमंत्रण बाहर न चले जायें, और अब ये परीक्षा की घड़ी थी, जबकि सहायक और दूसरे लोग वापस बैठते और प्रतीक्षा करते, और प्रतीक्षा करते, और अनुमान लगाते कि कितने लोग निमंत्रणों को स्वीकार करेंगे। क्या उनके पास अत्यधिक खाना है, क्या उनके पास पर्याप्त नहीं है? ये नाड़ियों को जमा देने वाला था।

अतिथियों में से कुछ, बागों में रुकने पर ही संतुष्ट थे, विशेषरूप से यदि वे स्वयं के घर में रखे जाने के योग्य पर्याप्त सामाजिक स्थिति के नहीं होते, परंतु दूसरे, ठीक है, वे अधिक महत्वपूर्ण थे और उनको घर में प्रवेश देना पड़ेगा और पुरोहित वर्ग (clergy) के प्रतिनिधि, मठिया (chapel) को भी देखना चाहेंगे। इसलिए वेदियों और वेदियों की रेलिंग पर से पूरी लाख उधेड़ दी गई और लोगों ने, पूरे कपड़ों भरे हाथों से, जो गीली बालू और बुरादे में डुबाये गये थे, रगड़ा, और रगड़ा, और रगड़ा, जबतक कि लाख के नीचे की लकड़ी चमकदार और नई जैसी न हो गई। तब एक विशेष प्रमुख अस्तर चढ़ाया गया, और जब वह अस्तर सूख गया, तब वेदियों और रेलिंगों पर, अधिक सावधानीपूर्वक पेन्ट की दूसरी अनेक परतें चढ़ाई गईं, ताकि अंत में, एक धूप भरे दिन में सतह, शांत पानी की सतह की भांति, चमकने लगे।

बेचारे दीन सेवकों में से हर एक को, घर की स्वामिनी और सहायक के सामने बुलाया गया, और वे सावधानीपूर्वक, ये देखने के लिए कि उनके कपड़े उपयुक्त थे, और ये देखने के लिए कि हर एक साफ था, निरीक्षित किये गये। यदि उनके कपड़े नमूने के हिसाब से ठीक नहीं लगे, तब उसे सावधानीपूर्वक धोया जाना था। इस उद्देश्य के लिए गर्म पानी के बड़े बड़े कढ़ाव तैयार किये गये थे। अंत में, जब तनाव अपने उच्च शिखर पर पहुॅच रहा था, सभी आमंत्रणों का उत्तर आया, सभी सेवकों को निरीक्षित किया जा चुका था, और उनके सभी विशेष कपड़े, उस दिन तक न पहने जाने के लिए, एक तरफ उठा कर रख दिये गये थे। इसप्रकार, घर का थका हुआ लबाजमा, देर शाम को, अगले दिन की भोर का इंतजार करते हुए, जबकि भाग्य का खुलासा किया जायेगा, वापस बैठा।

धीमे धीमे, सूर्य, सर्वोच्च शिखरों से उठते हुए, सर्वदा उपस्थित फैन (spume) से, प्रकाश के चमकते हुए असंख्य बिन्दुओं को भेजते हुए, पश्चिमी पर्वतों के नीचे डूबा; बर्फ खूनी लाल (blood red) चमकी, और तब गहरी होकर नीली, और तब जामुनी होगई। अंत में, वहॉ केवल आकाश का धुंधला सा

अंधेरा, और प्रकाश के चमकते हुए बिन्दु थे, जो तारे थे।

ल्हालू निवास पर, अच्छी तरह देखभाल किये गये पेड़ों के बीच से, लिंगखोर रोड के साथ, प्रकाश के रहस्यमय बिन्दु प्रकट हुए। लिंगखोर रोड के साथ, संयोगवश चलने वाले यात्री ने, अपने कदम धीमे कर दिये, सकुचाया, दिखाया मानो कि उसे फिर चलते जाना हो, और तब मुड़ा और वापस चला, ताकि वह देख सके कि पैदल क्या था, या अधिक सही ढंग से, क्या वह पेड़ था!

बगीचों में से उत्तेजित आवाजें आईं, और पथिक, मामले को और आगे बढ़ाने और यह पता करने का, कि वह क्या था, जो इतनी ऊँची आवाजें पैदा कर रहा था, और वह कलह, स्पष्टतः क्या थी, लोभ संवरण नहीं कर सका। जितना शांति से वह कर सकता था, उसने खुरदरे पत्थर की दीवार को चमकाया और अपनी छाती को अपनी बांहों के साथ उसे समर्थन देते हुए, शिखर पर टिकाया, तब वह अपनी बांहों के साथ उसे समर्थन देते हुए, वास्तव में, एक सुंदर दृश्य देख सकता था। वहॉ घर की स्वामिनी, मोटी, छोटी, वास्तव में, लगभग चौकोर, लेडी रंपा थी। उसके हर ओर, दो लंबे सेवक, हर एक, एक जलते हुए मक्खन के दीपक को ले जाता हुआ, और कंपकंपाती लौ को बचाने का प्रयास करता हुआ, थे ताकि ये बुझे नहीं और उसके लेडीपने के क्रोध को भड़का न सके।

असंतुष्ट बागवान, मक्खन के छोटे दीपकों को, पेड़ों की कुछ निचली शाखाओं पर, रखते हुए निराशापूर्ण ढंग से चले और तब चकमक पत्थर और स्टील की चिंगारियों से टहनियों से जलाया। काफी अधिक फूंकने के बाद, एक लौ पैदा हुई और ज्वाला में से आग को जलाने के लिए, मक्खन में अच्छी तरह डुबोयी हुई बत्ती उपयोग में लाई गई। लड़का बिल्कुल भी आश्वस्त नहीं था कि वह दीपकों का कहॉ चाहती थी; वहॉ आसपास, अंधेरे में छोटे लपलपाते प्रकाश के साथ, जामुनी रात को मात्र तेज करते हुए, अनंत अनिश्चितता थी। अंत में, वहॉ हलचल हुई और एक बहुत बड़ी आकृति, क्रोध से चिल्लाते हुए, उछलकूद करते हुए बाहर आई : ''तुमने मेरे पेड़ों का सत्यानाश कर दिया, मेरे पेड़, मेरे पेड़, तुम मेरे पेड़ों का सत्यानाश कर रहे हो, मुझे ये बदमीजी नहीं चाहिए। उन दीपकों को तत्काल बुझा दो। लॉर्ड रंपा अपने आश्चर्यजनक पेड़ों के ऊपर बहुत अधिक गर्व करते थे, पेड़ और बगीचे, जो पूरे ल्हासा में प्रसिद्ध थे। वह वास्तव में, उन्माद में पागल था, यदि उगते हुए पेड़ों पर लगे हुए, कुछ नये कलीदार फूलों को कुछ नुकसान पहुँचता।

उसकी पत्नी, उसकी लेडीशिप, कठोर आवाज और चालढाल के साथ उस पर पलटी और उसने कहा, ''वास्तव में, तुम नौकरों के सामने, अपने आपका तमाशा बना रहे हो, माई लॉर्ड। क्या तुम नहीं समझते कि मैं इस मामले की व्यवस्था करने के, इस काम को करने में सक्षम हूँ? ये जितना तुम्हारा है, उतना ही मेरा भी घर है। मुझे परेशान मत करो।'' बेचारा लॉर्ड, एक सांड की तरह से हांफा, कोई उसके नकुओं में से आती हुई आग का, केवल अनुमान लगा सकता है। वह गुस्से से अपने पैरों पर मुड़ा, बहुत तेजी से, घर की ओर, पीछे लौटा, वहॉ दरवाजे की धड़ाम की इतनी तेज और इतनी भारी आवाज हुई, कि कोई कम वजनदार दरवाजा, उसके झटके से टूट ही चुका होता।

''अगरदान, तिम्मन, सुगंधित अगरों को जलाने वाली अंगीठी। क्या तुम निरे बेवकूफ हो? इसे वहॉ रखो, इसे जलाने की चिंता मत करो, अभी इसे वहॉ रखो।'' घर के नौकरों में से एक, बेचारे गरीब तिम्मन ने भारी अगरदान के साथ संघर्ष किया, परंतु ये एक अगरदान से अधिक था, वहॉ अनेक थे। रात अंधेरी होती गई, और अंधेरी होती गई, और फिर भी, घर की स्वामिनी संतुष्ट नहीं हुई। परंतु अंत में, ठंडी हवा बही और चंद्रमा प्रकट हुआ और तैयारियों पर, एक धुंधला प्रकाश डाला। दीवार के ऊपर से झांकता हुआ आदमी, स्वयं में मंद मंद मुस्कराया और अपनी यात्रा जारी रखने के लिए, अपने आपसे बुदबुदाते हुए, सड़क पर गिरा, ''ठीक है! ठीक है! यदि एक भद्र पुरुष होने की यही कीमत है, तो मैं वास्तव में, केवल एक अदना सा व्यापारी होकर खुश हूँ।'' उसके कदम अंधेरे में गुम हो गये, और बगीचे में मक्खन के दीपक, एक एक करके बुझ गये। कर्मचारी और गृह स्वामिनी चले गये। बाद में,

रात की एक चिड़िया ने, एक अजीब सी असामान्य गंध सूंघी, जो मक्खन के दीपकों में से एक में से, जिसकी बत्ती अभी भी धधक रही थी, आई थी, और विरोध की एक भौंचक्की चीख के साथ उड़ गई।

घर में सहसा पदचाप हुए; लड़का गायब हो गया था, रियासतों का वारिस, नौजवान राजकुमार अब वह कहाँ था? वह अपने बिस्तर पर नहीं था। भगदड़ मच गई। मां ने सोचा, वह अपने पिता की सख्ती से डरा होने के कारण भाग गया होगा। पिता ने सोचा, वह अपनी मां के गुस्से से डरा होने के कारण भाग गया होगा, क्योंकि उस दिन, लड़के ने जो कुछ भी किया, वह सही नहीं था।

वह, पहले अपने कपड़ों को पाने के कारण, तब अपने कपड़ों को फाड़ने के कारण, तब वहाँ न होने के कारण, जहाँ उसे निश्चित समय पर होना चाहिए था, तब खाने के लिए निष्ठापूर्वक समय पर उपस्थित न होने के कारण, पूरे दिन परेशानी में रहा था; उसकी हर चीज गलत थी।

नौकर जग गये थे, मैदानों को खोजा गया, मक्खन के दीपक जलाये गये, चकमक पत्थर और जलावन ने धुंआ दिया। नवयुवक बालक को पुकारता हुआ नौकरों का जुलूस, बगीचों के चारों ओर गया परंतु कोई फायदा नहीं, उसे नहीं मिलना था। बहन यशोधरा को, उससे पूछने के लिए कि वह क्या अपने भाई की गतिविधियों के सम्बंध में कुछ जानती है, जगाया गया, परंतु नहीं, उसने अपने हाथ के पिछले भाग से अपनी धुंधली आंखों को पोंछा, फिर से लेट गई और नींद में चली गई, जबकि वह अभी भी बैठी हुई थी।

नौकरों ने, अंधेरे में, ये देखने के लिए कि कहीं लड़का भाग तो नहीं गया, नीचे सड़क पर जाने की जल्दी की। दूसरे नौकरों ने घर को ऊपर से नीचे तक तलाशा। अंत में, लोबसांग एक भंडारगृह में, अपने दोनों बगल से एक एक बिल्ली के साथ, अनाज की एक बोरी के ऊपर सोता हुआ पाया गया, और सभी तीनों जोर से खर्राटे भर रहे थे, परंतु लंबे समय तक नहीं! पिता क्रोध की दहाड़, जो लगभग दीवार को फाड़ती दिखाई दी, के साथ आगे आये। निश्चितरूप से, इससे अनाज की बोरियों में से धूल झड़ी और हवा में नाची। नौकरों के द्वारा लाये गये दीपक टिमटिमाये और एक या दो बुझ गये। बेचारे लड़के को गर्दन से कसकर पकड़ लिया गया, जबकि एक दूसरे शक्तिशाली हाथ ने उसे ऊपर उठा लिया। मां समझाती हुई आगे बढ़ी, ''रुको! रुको! एकदम सुनिश्चित हो जाओ, तुम उसे मारो नहीं, क्योंकि वह कल ल्हासा की सभी ऑखों के आकर्षण का बिन्दु होगा। अभी उसे बिस्तर पर भेज दो।'' इसलिए बेचारे लड़के को, इतने हिंसकरूप से, एक हार्दिक थपकी देकर आगे धकेला गया, कि वह अपने मुँह के बल गिरा। नर सेवकों में से एक ने उसे पकड़ा और दूर ले गया। बिल्लियों का, वहाँ कोई नामोनिशान नहीं था।

परंतु महान पोटाला में, ज्योतिषियों को दिये गये स्तर पर, गतिविधियाँ अभी भी, जारी थीं। मुख्य ज्योतिषी, सावधानीपूर्वक, अपने आंकड़ों की जाँच कर रहे थे, अपने चार्टों को सावधानीपूर्वक देख रहे थे, जो वह कहने वाले थे, उसका अभ्यास कर रहे थे, स्वर के उतार–चढ़ाव, जो आवश्यक होगा, का अभ्यास कर रहे थे। उसके आसपास, दूसरे दो लामाओं के साथ यह जाँच करते हुए कि हर एक पन्ना, अपने ठीक क्रम में रखा जाये, लामा ज्योतिषी, कागज के हर पन्ने को लिए हुए थे, ताकि यहाँ गलती होने की कोई संभावना, गलत पेज से पढ़ने की कोई संभावना और ज्योतिषियों के विद्यालय को बदनामी लाने वाली कोई संभावना नहीं बचे। जैसे ही हर पुस्तक पूरी हुई, उसका लकड़ी का आवरण सबसे ऊपर रखा गया और पुस्तक को, दोगुने परम्परागत फीतों की संख्या के साथ, केवल इसलिए साथ रखा गया ताकि हर चीज दोहरी पक्की हो जाये। भिक्षु, जिन्हें प्रमुख ज्योतिषी का निजी सहायक होना था, अपनी सर्वाधिक अच्छी पोशाक को, ये सुनिश्चित करते हुए कि वह राशि चिन्ह, जिसके साथ इसे सजाया गया था, चमकीला हो और पक्के तौर से जमाया गया हो, ब्रुश से साफ कर रहा था। तब, चूंकि वह एक वृद्ध आदमी था, उसने दो बत्तियाँ प्रयोग कीं और ये दोनों बत्तियाँ, किसी भी संदेहयुक्त कमी, या चटकन के लिए, सावधानीपूर्वक जाँची गईं, जिसके बाद, उन्हें एक पॉलिश करने वाले भिक्षु की

ओर आगे बढ़ा दिया गया, जिसने उन्हें, जबतक कि वे चमकते हुए तांबे की तरह नहीं चमकीं, तबतक पॉलिश किया।

मंदिर के क्षेत्रों से घड़ियाल गूंजे, तुरहियॉ गूंजीं, और जैसे ही धार्मिक भिक्षु अपनी पहली रात्रि सेवा के लिए गये, वहॉ तेजी से भागते हुए पैरों की सरसराहट हुई। ज्योतिषी भिक्षुओं को, उन्हें सौंपे गये कार्य के महत्व के कारण, उनकी हाजिरी से माफ कर दिया गया था, क्योंकि वे, सेवा में जाने के लिए, और तब कल पाते हुए कि कुछ गलती छूट गई, हर चीज को छोड़ने की जोखिम नहीं ले सकते थे। इसलिए, अंत में, मक्खन के दीपक, एक एक करके बुझा दिये गये। शीघ्र ही, वहॉ, आकाशीय प्रकाश को छोड़कर, कोई प्रकाश नहीं था, तारों का प्रकाश, और चांदनी, परंतु तारों का प्रकाश और झीलों और नदियों से प्रखर परावर्तनों के द्वारा संबर्धित की गयी चांदनी, जिसने ल्हासा के पठार में हो कर यात्रा तय की और ल्हासा के पठार को आड़ा–तिरछा बुना। जैसे ही कोई बड़ी मछली हवा गटकने के लिए पानी की सतह की ओर दौड़ती, अक्सर हर बार, पानी की चकाचौंध करने वाली एक चादर, पिघली हुई चांदी की तरह, चमकदार चांदी के एक झरने के रूप में फूट पड़ती।

नर मेंढकों के टर्राने, और दूरी पर, रात्रि की चिड़ियों के कर्कश आवाज में चीखने के सिवाय, सब कुछ शांत था। जैसे ही भारत से आने वाले बादलों ने अपनी चमक रोकी, चंद्रमा, भव्य एकांत के जामुनी आकाश के धुंधली प्रकाश, के आरपार चला।

देश में रात्रि छा चुकी थी, और रात के प्राणियों को छोड़कर, शेष सभी निद्रा में चले गये।

अध्याय –3

नुकीले पूर्वी क्षितिज पर प्रथम धुंधला प्रकाश प्रकट हुआ। महान पर्वतीय श्रंखलायें, नितान्त काली (पृष्ठभूमि) में खड़ी हुई और उनके पीछे, आकाश चमकदार होता जा रहा था।

बौद्धमठों के शिखर तल पर, भिक्षु और लामा, नये दिन का स्वागत करने के लिए तैयार खड़े थे। शिखर तल, हर मामले में छत, पर एक विशेष प्लेटफार्म या प्राचीर थी, जिस पर बड़े शंख और कुछ पन्द्रह से बीस फुट लंबी तुरहियॉ, आधारों (stands) पर खड़े थे।

ल्हासा की घाटी, स्याही जैसे काले रंग का तालाब थी। चंद्रमा काफी पहले छिप चुका था, और पूर्वी पर्वतों के परे, आकाश की घेराबंदी के द्वारा, तारे भी बुझ चुके थे। परंतु ल्हासा की सोई हुई घाटी, जबतक कि सूर्य, पर्वतों से काफी ऊपर नहीं उठ जाता और गहराई में छिपे हुए मठ और घर दिन के प्रकाश का स्वागत नहीं करते, रात के गहनतम अंधेरे में, अभी जीवित थी।

चूँकि किसी लामा या रसोइये या गड़रिये को अपने काम पर जाने के लिए बहुत जल्दी ही तैयार होना था, पूरी घाटी में, प्रकाश के, यहॉ वहॉ बेतरतीब छितराये हुए, अजीब छिद्र बिन्दु (pin holes), प्रकट हुए। मंद, मंद किरणों ने, मखमली कालेपन को, इतने कालेपन को, कि पेड़ का तना भी, पहचाना नहीं जा सकता था, केवल सुस्पष्ट करने का,कार्य किया।

पूर्वी पर्वतों के परे, प्रकाश बढ़ा। पहले वहॉ प्रकाश की एक सजीव चमक थी, और तब उसके तुरंत बाद ही, एक लाल किरण फूटी, जो एकदम हरे प्रकाश की किरण, जो भोर के सूर्योदय और रात में विलंबित सूर्यास्त के लक्षणों में से एक थी, दिखाई दी। शीघ्र ही वहॉ, प्रकाश की एक चौड़ी किरण आई और मिनटों के अंदर, वहॉ ऊॅची चोटियों का खाका बनाते हुए, सदैव उपस्थित रहने वाली बर्फ को दिखाते हुए, ऊॅचे हिमनदों में से परावर्तित करते हुए, और नीचे घाटी में प्रथम चिन्हों को, कि दिन प्रकट हो चुका है, प्रक्षेपित करते हुए, चकाचौंध करने वाली सुनहरी आभा प्रकट हुई। सूर्य के प्रथम दर्शन के साथ, सर्वोच्च शिखर के किनारों पर, पर्वतों के लामाओं ने, जोर से अपनी तुरहियों में फूंक मारी, और दूसरों ने शंखों को बजाया, जिससे हवा, ध्वनि के साथ हिलती हुई प्रतीत हुई। यद्यपि, शोर के प्रति कोई तात्कालिक प्रतिक्रिया नहीं हुई, चूंकि घाटी के लोग, तुरहियों और शंखों की आवाजों के प्रति, भलीभांति अभ्यस्त थे और उन्हें, ठीक वैसे ही, जैसे कि, शहरों के लोग, हवाईजहाज की गरज, कूड़ा इकट्ठा करने में होने वाली टकराहटों की आवाज, ''सभ्यता'' की सभी शेष आवाजों को अनसुना कर सकते हैं, अनसुना कर सकते थे।

यद्यपि रात्रि की एक उनींदी चिड़िया ने, यहॉ–वहॉ, अपने पंखों के नीचे फिर से अपना सिर रखते हुए और नींद से बाहर निकलते हुए, चहचहाने की चौंकाने वाली आवाज निकाली। अब दिन के प्राणियों का समय था। धीमे से, दिन की उनींदी चिड़ियायें, चीं–चीं करती हुईं, और तब अपने पंखों को फड़फड़ाती हुईं, जगीं। तब उन्होंने, अपनी रात्रि की शांति से छुटकारा पाया। यहॉ–वहॉ, एक पंख नीचे गिरा और खानाबदोश हवा की सनक में उड़ा दिया गया।

क्यी चू के पानी में, और सर्प मंदिर पर, मछलियॉ आलस के साथ, रात के समय की अपनी सतह के पास से हिलडुल रहीं थीं। तिब्बत में मछलियॉ हमेशा सतह के पास तक उठ सकतीं हैं, क्योंकि बौद्ध मतावलंबी जीवन नहीं लेते, और तिब्बत में मछुआरे विलकुल नहीं थे।

बूढ़ा आदमी, उभरती आवाज और शंखों के दहाड़ने पर, कसमसाया और औंघता हुआ सीधा होकर बैठ गया। उसने अपने कम झुकाव से ऊपर की ओर देखा, और तब उसमें अचानक एक विचार कौंधा, और वह चटकते हुए पैरों से खड़ा हुआ। उसकी हड्डियॉ पुरानी थीं, उसकी मांसपेशियॉ थकी हुईं थीं, इसलिए वह सावधानी के साथ खड़ा हुआ और उसने खिड़की की तरफ अपना रास्ता लिया और बाहर देखा, अब जागते जा रहे ल्हासा के शहर के आरपार, बाहर देखा। चूंकि मक्खन के दीपक जलाये जा रहे थे, उसके नीचे, श्यो के गॉव में, एक के बाद दूसरी, छोटी रोशनियॉ प्रकट होना प्रारंभ हो रहीं

थीं, ताकि अधिकारी, जो आज के दिन व्यस्त होने वाले थे, उन्हें अपनी तैयारियों के लिए काफी समय मिल सके।

वृद्ध ज्योतिषी प्रांरभिक भोर की ठंड में कांप गया, और उसने अपनी पोशाक को, और अधिक कसकर अपने चारों ओर लपेट लिया। अपरिहार्यरूप से, उसके विचार ल्हालू जागीर, जो उसके सहूलियत के स्थान से नहीं देखी जा सकती थी, की ओर घूम गये, क्योंकि उसने बाहर की तरफ, श्यो के गॉव और ल्हासा के शहर के ऊपर देखा था। ल्हालू निवास, गढ़ी हुई (carved) आकृतियों के साथ दीवार के सामने, पोटाला के दूसरी तरफ था, जो घूमने वाले तीर्थयात्रियों के लिए, एक बहुत बड़ा आकर्षण था।

बूढ़े आदमी ने, फिर से, धीरे से अपने आपको, अपने कम्बलों में नीचे किया, और तबतक आराम किया, जबतक कि वह दिन की घटनाओं के ऊपर विचार कर रहा था। दिन, उसने सोचा, उसकी आजीविका के उच्चतम बिन्दुओं में से एक, शायद उसकी आजीविका के समापन वाला बिन्दु होगा। बूढ़ा आदमी, पहले से ही, उस पर आने वाले मृत्यु के हाथ को, अनुभव कर सका था, वह अपने शरीर की प्रक्रियाओं को मंद होते हुए, अनुभव कर सकता था। वह अनुभव कर सकता था कि उसकी रजत तंतु, पहले से ही पतली हो रही थी। परंतु वह प्रसन्न था, कि अभी एक उत्सव और था, जिसको वह कर सकता था और तिब्बत के प्रमुख ज्योतिषी के कार्यालय को उसका श्रेय दिला सकता था। और ऐसा सोचते हुए, वह कमरे में हड़बड़ाते हुए, चीखते चिल्लाते हुए एक लामा के रूप में, कुछ प्रारंभ करने के लिए जगाये जाने के लिए सो गयाः ''आदरणीय ज्योतिषी, हमारा दिन प्रारंभ हो गया है, हमारे पास खोने के लिए समय नहीं है, हमें फिर से अपनी जन्मपत्री और क्रम, जिसमें बिन्दु प्रस्तुत किये जाने हैं, की जॉच करनी है। मैं आपको उठने में मदद करूंगा। आदरणीय ज्योतिषी।'' ऐसा कहते हुए, वह नीचे झुका, उसने बूढ़े आदमी के कंधों पर एक भुजा रखी और धीमे से, उसे अपने पैरों पर उठाया।

अब तक, दिन तेजी से बढ़ रहा था, सूर्य, पूर्वी पर्वतश्रंखला के ऊपर निकल चुका था और वह घाटी के पश्चिमी सिरे तक प्रकाश को परावर्तित कर रहा था; जब कि वे घर और मठ, जो पूर्वी श्रृंखला के ठीक नीचे थे, अभी भी, अंधकार में थे, वे जो सामने वाली तरफ थे, दिन के लगभग पूरे उजाले में थे।

पोटाला जगता जा रहा था। वहॉ एक अजीब खलबली थी, जिसे मानव, जब वे अपने आपको, दिन के प्रारंभ में, गतिशील होता हुआ पाते हैं, हमेशा करते हैं; वहॉ जागरुकता, कि मानव यहॉ जीवन में कई बार, किसी समय कठोर कार्य को करने के लिए तैयार थे, का एक अहसास था। चांदी की छोटी घंटियॉ टुनटुना रहीं थीं, अक्सर, जल्दी जल्दी, वहॉ शंख के रंभाने, या शायद तुरही की कर्कश गूंज आती थी। बूढ़ा ज्योतिषी और उसके आसपास के दूसरे लोग, प्रार्थनाचक्रों को घुमाये जाने और उनकी झंकार के प्रति सजग नहीं थे। ये उनके रोजमर्रा के अस्तित्व का एक ऐसा बड़ा भाग था कि वे लंबे समय से, शोर, जिसे प्रार्थनाचक्र करते थे, को समझने में वैसे ही असफल रहे थे, जैसे कि प्रार्थना ध्वजों पर, जो पोटाला की ऊंचाईयों में, सुबह की ठंडी हवा में, ऊपर फड़फड़ा रहे थे, किसी ने अधिक ध्यान नहीं दिया। इन आवाजों का बंद होना, केवल भौंचक्के लोगों के द्वारा देखा जा सकता था।

वहॉ गलियारों में, पैरों के तेज चलने की आवाज हुई; वहॉ भारी दरवाजों का चलना हुआ। कहीं से, फिर से, एक नये दिन का स्वागत करते हुए, भजन स्तोत्रों, धार्मिक गीतों के गाये जाने की आवाज आई।

परंतु बूढ़े ज्योतिषी के पास, इन जैसी चीजों पर ध्यान देने का समय नहीं था, क्योंकि अब पूरी सजगता के साथ आने का और उन उत्सवों में शामिल होने का कार्य था, जो एक रात की नींद के बाद, इतने आवश्यक हैं। शीघ्र ही, वह सुबह का खाना, त्सम्पा और चाय ले रहा होगा और तब उसे जाना होगा और उसे वाचन, जो उस दिन होना था, के लिए तैयार होने की रीति रिवाज में उपस्थित

होना होगा।

ल्हालू परिवार के निवास पर नौकर जग गये थे। लेडी रंपा भी जगी हुई थी और लॉर्ड रंपा, जल्दी के साथ एक नाश्ते के बाद, प्रसन्नतापूर्वक अपने घोड़े पर सवार हुआ और अपने सेवकों के साथ श्यो गॉव में सरकारी कार्यालयों की ओर गया। वह, वास्तव में, अपनी पत्नी से दूर जाता हुआ, उसकी दौड़धूप भरी अनाधिकारिता, और घटनाओं का मुकाबला करने की उसकी अत्यधिक ईर्ष्यालु पहुॅच, से दूर जाते हुए प्रसन्न था। उसे अपने कार्य को जल्दी प्रांरभ करना था, क्योंकि बाद में, दिन में, भव्य मेजबान, जो ल्हासा का राजकुमार था, की भूमिका को निभाने के लिए, उसका लौटना पूर्णतः आवश्यक हो जायेगा।

रंपा साम्राज्य का उत्तराधिकारी जगा हुआ था और अत्यधिक अनिच्छापूर्वक जीवन में आ गया था। आज का दिन ''उसका'' दिन था, फिर भी, उसने कुछ भ्रम के साथ सोचा, ये दिन उसका कैसे हो सकता है, जबकि मां उससे ऐसे सामाजिक लाभों की योजना बना रही थी। यदि उसके पास उसका तरीका होता, तो वह विचार को भूल चुका होता और नदी के किनारों की ओर भाग गया होता, ताकि वह नाविकों को, लोगों को नदी के पार उतारते हुए देख सके, शायद, वहॉ नाव से पार जाने वाले लोग अधिक नहीं थे, वह उन्हें, हमेशा इस बहाने के साथ, कि वह वास्तव में, स्वतंत्र रास्ता देने के लिए, पीछे और आगे की ओर, नाविक को, ध्यानपूर्वक देखने की व्यवस्था कर सकता था, नाव को खेने में मदद करेगा।

बेचारा दीन बच्चा, उस कठोर दिल वाले पुरुष सेवक पर सबसे अधिक अप्रसन्न था, जो तब, एक कड़ी चोटी बनाते हुए, और तब, कड़ी पिग–टेल (pig tail) में, उत्सुक ऐंठनों के साथ, लटें डालते हुए, उस पर अच्छी तरह से, याक के मक्खन की कीचड़ चुपड़ रहा था। पिग–टेल में, जबतक कि वह इतनी कड़ी नहीं हो गई, जैसे कि फर की लकड़ी, याक का मक्खन गूंथा गया।

सुबह, लगभग दस बजे के करीब, वहॉ घोड़ों की टापों की आवाज हुई और आदमियों का एक दल, सवार होता हुआ, आंगन में आया। लॉर्ड रंपा और उसके सेवक, सरकारी कार्यालयों से लौट चुके थे, क्योंकि ये आवश्यक था कि आज के दिन, जो भी रहस्य खोले जाने वाले थे, उनके प्रति धन्यवाद देने के लिए, और वास्तव में, सदैव ये विश्वास करने के लिए तत्पर, कि काले सिर वाले अधार्मिक थे, पुजारियों को दिखाने के लिए कि वे विशेषरूप से धार्मिक ''काले सिर वाले'' थे, परिवार को ल्हासा के विहार में जाना चाहिए। तिब्बत में भिक्षु घुटे सिर रखते हैं, जबकि सामान्य लोग, जनसाधारण, लंबे बाल रखते हैं, अधिकांश बार, ये बाल काले होते थे, और काले बालों के कारण, उनको काले सिर वालों के रूप में संदर्भित किया जाता था।

आंगन में लोग, लेडी रंपा और उसकी पुत्री यशोधरा, पहले से ही एक पौनी के ऊपर प्रतीक्षा कर रहे थे। अंतिम क्षण में, परिवार के उत्तराधिकारी को झपटा गया और उत्सवहीन ढंग से एक पौनी, जो समान रूप से अनिच्छुक दिखाई दिया, के ऊपर चढ़ाया गया। दरवाजे फिर से खोले गये और पार्टी, सबसे पहले लॉर्ड रंपा के साथ, चढ़कर बाहर आई। लगभग तीस मिनट के लिए, वे अजीब खामोशी में सवारी करते रहे, जबतक कि वे अंत में, छोटे घरों, और दुकानों की ओर, जो ल्हासा के विहार को घेरती थीं, नहीं आ गये। विहार, जो यहॉ अनेक सहस्त्रों वर्षों से, पवित्र लोगों के लिए पूजा का स्थान सह सकने के लिए खड़ा था। पत्थर के मूल फर्श, गहराई के साथ गड्ढे वाले थे और तीर्थयात्रियों और दर्शकों के कदमों के द्वारा खरोंचे गये थे। विहार की प्रविष्टि के एकदम साथ, जहॉ प्रार्थना चक्रों की पंक्तियॉ–वास्तव में, बड़ी चीजें–थीं और जैसे ही हर व्यक्ति उनके पास से गुजरा, जैसा कि रिवाज था, उन्होंने चक्र को घुमाया, ताकि सर्वाधिक उत्सुकतापूर्ण किट–किट की आवाज स्थापित हो गई, जिनका कि लगभग, सम्मोहनकारी प्रभाव होता था।

विहार का आंतरिक भाग, अगरबत्तियों की खुशबू से, और अगरबत्तियों, जो पिछले 1300 या

1400 वर्षों की अवधि में जलाई गई थीं, की स्मृति से, अपने भारीपन में, अत्यन्त मोहित करने वाला था। छत की भारी बीमें (beams), उनमें से नीले से धुंए, स्लेटी धुंए, और कभी–कभार भूरे रंग के धुंए को निकालती हुई, खुशबुओं के बादलों को रखती हुई प्रतीत हुईं।

वहॉ सुनहरी आकृतियों, लकड़ी की आकृतियों और चीनी मिट्टी की आकृतियों में प्रस्तुत किये गये, विभिन्न देवी देवता थे, और प्रत्येक के सामने तीर्थयात्रियों के चढ़ावे थे। उन्हें तीर्थयात्रियों से बचाने के लिए, अक्सर हर बार, चढ़ावा धातु की जाली के पीछे खिसका दिया जाता था। जिनकी धर्मनिष्ठा, देवताओं की सम्पदा में सहभागिता करने की इच्छा के द्वारा, विजयी होती थी।

भारी भारी मोमबत्तियॉ जलीं और उन्होंने मंद प्रकाशित पूरी इमारत में, लहराती हुई छायायें बनाईं। एक छोटे बच्चे के लिए भी, जो अभी सात साल की आयु का भी नहीं है, ये प्रतिबिम्बित करना कि ये मोमबत्तियॉ, मक्खन से लगातार 1300 या 1400 वर्षों तक जलती हुई रखीं गईं हैं, एक संयत कर देने वाला विचार था। बेचारा लड़का चौड़ी ऑखों से घूरता हुआ ''ये दिन समाप्त हो जाने दें, और शायद, मैं इस सारी पवित्रता से दूर, किसी दूसरे देश को जाने के योग्य हो जाऊॅगा।'' वह थोड़ा सा ही जानता था कि उसके लिए भंडार में क्या था!

एक बड़ी बिल्ली, अलसाते हुए विचरती हुई आगे आई और उसने रंपा परिवार के उत्तराधिकारी की टांगों के विरुद्ध रगड़ा। उस बड़ी बिल्ली को, जो प्रसन्नता के साथ गुर्रायी, दुलार करने के लिए लड़के ने सिर झुकाया और अपने घुटनों पर झुका। ये मंदिर की रखवाली करने वाली बिल्लियॉ थीं, मानव प्रकृति की घाघ विद्यार्थी, जो एक नजर में ये बता सकतीं थीं कि उनमें से कौन चुराने का प्रयास करेगा और कौन है, जिसके ऊपर विश्वास किया जा सकता है। सामान्यतः ऐसी बिल्लियॉ, अपने खुद के विशेष रक्षक के अलावा किसी के भी पास, कभी नहीं, कभी नहीं, पहुॅचतीं हैं। एक क्षण के लिए, वहॉ देखने वालों के बीच, स्तंभित शांति थी और कुछ भिक्षु, जैसे ही उनकी ऑखें, बड़ी बिल्ली के पास अपने घुटनों पर झुके हुए लड़के की नजर की ओर घूमीं, अपने जाप में अटक गये थे। तथापि, क्योंकि लॉर्ड रंपा, जिसका चेहरा गुस्से से तमतमा गया था, नीचे झुका और उसने लड़के को उसकी गर्दन से उठा लिया। जैसे एक गृहणी धूल पोंछने के झाड़न को हिलाती है, उसे हिलाया, उसके कान पर चांटा मारा, जिसने लड़के को ये समझा दिया कि यह एक तूफान था, और तब उसे सिर से, अपने पैरों पर फेंक दिया। बिल्ली अपने मालिक की तरफ आगे बढ़ी और उसने एक बड़ी, और जोर की चीत्कार निकाली, और तब शिष्टता के साथ मुड़ी और लंबे डग भरती हुई बाहर चली गई।

परंतु अब, चूॅकि शीघ्र ही मेहमान पहुॅचने शुरू हो जायेंगे, ल्हालू निवास को वापस लौटने का समय आ गया था। अनेक मेहमान जल्दी आ गये थे, ताकि वे बाग में सर्वोत्तम स्थान को सम्मिलित करते हुए, उसे पकड़ सकें, जो उन्हें पेश किया गया था। इसलिए दल ने विहार की सीमाओं को छोड़ दिया और फिर से सड़क पर बाहर गये। लड़के ने अपनी ऑखें उठाईं और ध्वजों को सड़क, जो भारत की ओर जाती थी, के ऊपर लहराते हुए देखा और उसने सोचा, ''क्या जल्दी ही ऐसा होगा कि मैं दूसरे देश के लिए, इस सड़क पर दोबारा आऊॅगा। मैं समझता हूॅ कि मैं शीघ्र ही जान जाऊॅगा, परंतु मेरे भगवान, मैं कुछ चीज खाना चाहूॅगा।

दल अपने कदमों को वापस करता हुआ सवार हुआ, और पच्चीस से तीस मिनट के बाद, वे फिर से, घर के आंगन में प्रवेश कर रहे थे, जहॉ उनका स्वागत, उत्सुक प्रबंधक के द्वारा किया गया, जिसने सोचा कि शायद कुछ देर हो सकती है, और उसे क्रोधित मेहमानों को जवाब देना होगा कि मेजबान और महिला मेजबान, विहार (cathedral) में, बेहिसाब रूप से विलंबित हो गये थे।

वहॉ जल्दी से खाने का समय था, और तब साम्राज्य का वारिस, सड़क से आती हुई अनपेक्षित आवाजों पर, खिड़की की तरफ दौड़ा। संगीतज्ञ–भिक्षु (musician-monks) पहुॅच रहे थे, जैसे ही वे पौनियों पर, सड़क के साथसाथ चले, उनके संगीत वाद्य, आपस में टकराने की धात्विक आवाज से बज

रहे थे। अक्सर एक भिक्षु, ये पक्का करने के लिए कि उसकी धुन क्या थी, अपनी तुरही या शहनाई में एक प्रयोगात्मक फूंक मारता। अब और दोबारा, कोई भिक्षु, एक तबले के ऊपर ये सुनिश्चित करने के लिए कि खाल सही तरीके से खिंचाव में थी, एक हार्दिक चोट मारता। अंततः वे, अपने वाद्ययंत्रों को सावधानीपूर्वक जमीन पर जमा करते हुए, आंगन में प्रविष्ट हुए और पैदल रास्तों से बगीचों में गये। वाद्ययत्रों को जमा करने के बाद, वे प्रसन्नतापूर्वक शराब की ओर गये। वहॉ, उन्हें उदास सुगम संगीत बजाने के बजाय, प्रसन्न संगीत बजाने के लिए, तैयार करने के लिए, उन्हें सही मनःस्थिति में लाने के लिए, बीयर कुछ प्रचुरता में (उपलब्ध) थी।

परंतु वहॉ संगीतज्ञों से व्यवहार करने का, कोई समय नहीं था। पहले अतिथि, पहुॅच रहे थे। वे एक जनसमूह में आये। ऐसा लगा मानो कि, पूरा ल्हासा ल्हालू निवास की ओर जा रहा हो। यहॉ घोड़े की पीठ पर सवार आदमियों की एक छोटी सेना आई। सभी भारी भरकम हथियारों से सुसज्जित थे। ये कुछ कुछ, ब्रिटिशों के द्वारा भेजी गई, अतिक्रमण करने वाली सेना लगी, परंतु ये सेना हथियारों से केवल इसलिए सुसज्जित की गई थी, क्योंकि, उत्सव और शिष्टाचार इसकी मांग करता था। वे बाहर की तरफ, आदमियों के साथ सवार हुए, और आदमियों और औरतों की पंक्तियों के बीच से, जहॉ वे पर्याप्त रूप से, किसी काल्पनिक आक्रमण से बचाये जा सकें, गुजरे। हथियारबंद नौकरों के पास, झंडों और पताकाओं से सजाये हुए, अपने भाले और बल्लम थे। यहॉ वहॉ, चूॅकि कोई भिक्षु पार्टी में था, प्रार्थना ध्वज, एक लाठी से लहराये जाते थे।

स्वयं आंगन में, वहॉ नौकरों की दो पंक्तियॉ थीं, एक तरफ परिचारक के नेतृत्व में और दूसरी तरफ, घरेलू पुजारी के नेतृत्व में। जैसे ही अतिथि अंदर प्रवेश करते थे, वहॉ नमन करने में, नमन को लौटाने में, और फिर से झुकने में अधिक कष्ट होता था। हर मेहमान को, उसके घोड़े से उतारने में मदद दी जाती थी, मानो कि गृहस्थी का वारिस सोचता कि वे सभी, एक तरह से पूरे के पूरे, लकवा मारे हुए बुत हैं। उनके घोड़ों को आगे ले जाया जाता और उन्हें काफी चारा दिया जाता। तब अतिथि के ओहदे के ऊपर निर्भर करते हुए, या तो उन्हें बाग में उन्हें अपने आप जुगाड़ करने के लिए छोड़ दिया जाता था या घर में, जहॉ वे इस या उस चीज के ऊपर विस्मय करेंगे, दिखाया जाता था। चीजें, जो विशेषकर अतिथियों को प्रभावित करने के लिए, बाहर निकाल कर रखी गईं थीं! वास्तव में, तिब्बत में दुपट्टे दिये और प्राप्त किये जाते हैं, और चूंकि आने वाले अतिथि, दुपट्टे उपहार में देते थे, और बदले में दुपट्टे प्राप्त करते थे, वहॉ काफी भ्रम था। कई बार वहॉ खराब घटनायें भी हुईं, जब किसी आंनदित नौकर को, बिना विचारे ही अतिथि का दुुपट्टा दे दिया गया, जो उसने अभी अभी उपहार में लिया था। तो वहॉ स्तब्धित मुस्कान और उच्चारित की गई क्षमायाचना होती, परंतु शीघ्र ही मामले को सुलझा लिया जाता।

लेडी रंपा का चेहरा लाल हो रहा था, और मुक्तरूप से पसीना निकल रहा था। वह भयभीत थीं कि बूढ़ा ज्योतिषी, तिब्बत का प्रमुख ज्योतिषी, मर न गया हो, या नदी में न गिर गया हो, या ठोकर खाकर अपने घोड़े से न गिर गया हो, या समान प्रकार की कोई गड़बड़ी, क्योंकि उसके वहॉ आने का किसी प्रकार का कोई चिन्ह नहीं था, और पूरी पार्टी का उद्देश्य, घर के वारिस के बारे में भविष्य कथन का वाचन सुनना था। प्रमुख ज्योतिषी के बिना ये नहीं किया जा सकता था।

दौड़ते हुए घर के सबसे ऊंचे बिन्दु पर चढ़कर, पोटाला की ओर देखने के लिए, ये देखने के लिए कि वहॉ, आती हुई शोभायात्रा का, जो कि ज्योतिषी के आने की पूर्व घोषणा कर सकती, कोई चिन्ह था, एक सेवक भेजा गया। नौकर गया, और जल्दी से घर की सबसे ऊॅची छत पर गया। वह अपनी भुजाओं से इशारा कर रहा था, और उत्तेजना में थोड़ा टेढ़ामेढ़ा नाच रहा था।

लेडी रंपा आगबबूला थी, एकदम परेशान, उसे कोई ख्याल नहीं था कि, सेवक क्या बताने का प्रयास कर रहा था, ऐसा लगा मानो कि वह किसी भी दूसरे की तुलना में, अधिक पिये हुए हो। इसलिए

उसने जल्दी से, एक दूसरे नौकर को सूचना लाने के लिए भेजा कि क्या हो रहा था। शीघ्र ही, दोनों नौकर साथसाथ पहुँचे, और बताया कि ज्योतिषी का जलूस, अभी अभी, क्यी चू के पठार को पार कर रहा था। ये बढ़े हुए उत्साह का संकेत था। लेडी रंपा ने, घर के बाहर और बाग में, हर एक को अपना स्थान लेने के लिए कहते हुए, ये बताते हुए कि अतिथि, प्रमुख ज्योतिषी, किसी भी क्षण पहुँच रहे थे, सभी से भेंट की। भिक्षु संगीतज्ञ सीधे खड़े हो गये और उन्होंने उत्तेजना के साथ, जो उन्होंने दृश्य में भर दी थी, हवा को हिलाते हुए, और कंपन कराते हुए, बजाना शुरू कर दिया।

ल्हालू रियासत के बाग बड़े और भलीभांति रखरखाव किये हुए थे। वहाँ पूरे तिब्बत से, कुछ भारत, भूटान और सिक्किम से भी, लाये गये पेड़ थे। ऑखों को खिलती, चटकती हुई झाड़ियाँ भी, अधिकता में उगी हुई थीं। परंतु अब, प्रदर्शन की एक आश्चर्यजनक वस्तु, बाग में, जीवंत दर्शकों की एक भीड़ थी। लोग, जिनको उद्यान के बारे में, कोई ज्ञान नहीं था, लोग, जो सनसनी के लिए वहाँ थे। महान लॉर्ड रंपा, क्रोध और पीड़ायुक्त अवसाद के साथ अपना सिर धुनते हुए (chewing on his knuckles), और साथ ही साथ, उन लोगों के साथ, जिन्होंने उसे महसूस कराया कि उसे उन पर मुस्कराना चाहिए, स्नेहपूर्वक मुस्कराने का प्रयास करते हुए, निराशापूर्ण ढंग से, आसपड़ौस में घूमा फिरा।

लेडी रंपा, जो कुछ वह कर रही थी, उसके लिए दौड़ने के कारण, स्वयं का, लगभग, क्षय कर रही थी; वह, ये देखने का प्रयास करते हुए कि लॉर्ड रंपा अत्यधिक कठोर न हों, ये देखने का प्रयास करते हुए कि उनकी संपत्ति का वारिस क्या कर रहा था, नौकर क्या कर रहे थे, और प्रमुख ज्योतिषी के पहुँचने के ऊपर ऑख गढ़ाये रखते हुए, लगातार हड़बड़ी में थी।

तब वहाँ घोड़ों की टापों की आवाज आई। सहायक ने मुख्य द्वार, जो उनके पीछे सावधानीपूर्वक बंद था, को खोलने की जल्दी की। वह अधिकतम प्रभाव उत्पन्न करने के लिए, ठीक समय पर खोलने के आदेश के लिए, तत्पर खड़ा था।

अतिथियों ने घोड़ों को सुन लिया था, और अब बाग में से, बहुत बड़े कमरे में, जो इस अवसर के लिए, भोजनालय स्वागत (refectory-reception) कक्ष में बदल दिया गया था, जा रहे थे। यहाँ उन्हें मक्खन वाली चाय, और भारत से लाये गये, वास्तव में, अच्छे अच्छे स्वाद, बहुत मीठी चिपचिपी टिकियाऐं, जो प्रभावी रूप से, उन्हें चिपका देतीं थीं और बात करने से एकदम रोक देतीं थीं, प्रतीक्षा करती हुई मिलीं।

तब गहरे सुर वाले एक घड़ियाल, कुछ पॉच फुट ऊँचे एक शक्तिशाली घड़ियाल, जो केवल अत्यंत विरले अवसरों पर ही उपयोग में आता था, उस इमारत के आसपास गूंजती हुई, और प्रतिध्वनि करती हुई आवाज आई। अब एक उच्च पदधारी नर सेवक, उसे विशेष चोट देने के लिए, जिसका वह पिछले कई दिनों से छोटे घड़ियाल पर अभ्यास करता रहा था, इसके पास खड़ा था।

घड़ियाल गूंजा, द्वार को पूरा खोल दिया गया और नौजवान भिक्षुओं, लामाओं और प्रमुख ज्योतिषी का जुलूस, चलकर आंगन में आया। वह एक बूढ़ा व्यक्ति था, झुर्रीदार, छोटा, कुछ अस्सी वर्ष की आयु का। उसके एकदम बगल से, वास्तव में, लगभग टांग से टांग मिलाते हुए, दो लामा चढ़े, जिनका एकमात्र कर्त्तव्य, ये सुनिश्चित करना था, कि बूढ़ा आदमी गिरे नहीं, और पैरों तले कुचला न जाये।

घोड़े, अच्छी तरह से जानते हुए कि यात्रा का अंत आ चुका है, और उन्हें अब अच्छा खिलाया जायेगा, रुक गये। दोनों लामा–सेवक, कूदकर अपने घोड़ों पर से उतरे और (उन्होंने) सावधानी से ज्योतिषी को उठा लिया। तब लॉर्ड रंपा आगे आये, और वहाँ के रिवाज के अनुरूप, परम्परागत नमन और प्रत्युत्तर में नमन करते हुए, दुपट्टों का आदान प्रदान हुआ। प्रमुख ज्योतिषी और लॉर्ड रंपा स्वागतकक्ष में प्रविष्ट हुए, जहाँ सभी उपस्थित हुए लोगों ने उन्हें नमन किया।

कुछ क्षणों के लिए, वहाँ कुछ सीमा तक भ्रम हुआ, और उथलपुथल हुई। तब प्रमुख ज्योतिषी ने, नम्रतापूर्वक निवेदित की हुई मक्खन वाली चाय को चखने के बाद, दोनों लामाओं को संकेत किया, जो टिप्पिणियों और चार्टो को लाये।

गंभीर सुर वाला घड़ियाल, फिर से गूंजा, बूम बूम बूम बूम। स्वागतकक्ष का दूर वाला सिरा एकदम खोल दिया गया और प्रमुख ज्योतिषी तथा उसके दो लामा सहायक, दरवाजे में से बाहर बगीचे में, जहाँ विशेषरूप से, भारत से आयात किया गया एक बड़ा शामियाना लगाया गया था, आगे बढ़े। शामियाने का एक पार्श्व खुला हुआ था, ताकि अधिकतम संख्या में लोग, जो चल रहा था, उसे देखने में सफल हो सकें।

अंदर, मंच के शामियाने को, रेलों के द्वारा तीन तरफ से उठाया गया था और अग्रभाग के सामने के पास, बैठक के चार स्थान (seats) थे।

प्रमुख ज्योतिषी और उसके दो सहायक लामा, मंच पर पहुँचे और तब सीधे उठाये हुए खंबों या जलती हुई मशालों (flamebeau) को ले जाते हुए, चार नौकर प्रकट हुए, क्योंकि कहीं वहाँ, दूरवर्ती सिरे पर, ये प्रदर्शित करते हुए कि लोग पहचान रहे थे कि इस शामियाने में ज्ञान की ज्वालायें थीं, बड़ी लपटें थीं।

आगे, चार तुरही बजाने वाले प्रकट हुए। उन्होंने तुरही का नाद बजाया। ये लॉर्ड और लेडी रंपा का ध्यान आकर्षण करने के लिए था, क्योंकि जैसा कि एक दर्शक ने कहा, उनका पुत्र, ल्हालू रियासत का वारिस, इस सब हलचल का कारण था। लॉर्ड और लेडी, धीमे से मंच पर चढ़े और चार कुर्सियों के पीछे खड़े हुए।

दूसरी दिशा से, अपने खुद के लबाजमे के साथ, राज्य के ज्योतिष मठ (state oracle) से, दो बहुत बहुत बूढ़े लोग वहाँ आये। नेचुंग (Nechung) के मठ से, ये दो बूढ़े आदमी, प्रमुख ज्योतिषी के बाद, देश के सर्वाधिक अनुभवी ज्योतिषी थे, वे प्रमुख ज्योतिषी के सहयोगकर्त्ता थे, उन्होंने आकड़ों, और चार्टों तथा गणनाओं को किया था, और जन्मपत्री के हर पन्ने के ऊपर, इनमें से प्रत्येक के अनुमोदन की मुद्रा अंकित की थी।

प्रमुख ज्योतिषी खड़े हुए। दूसरे बैठे। सहसा ही, वहाँ इकट्ठे हुए जनसमुदाय में खामोशी छा गई। प्रमुख ज्योतिषी ने भीड़ को घूरा और कुछ क्षणों के लिए पूरी खामोशी के द्वारा, असमंजस पैदा किया, तब एक संकेत पर दो लामा, उसके दोनों तरफ एक एक, आगे बढ़े। एक जो दायीं ओर था जन्मपत्री की पूरी किताब को पकड़े हुए था, और दूसरा जो बायीं ओर था, उसने सावधानीपूर्वक, शीर्ष की लकड़ी की पट्टी को हटाया, और प्रमुख ज्योतिषी ने अपनी टिप्पणी को पढ़ा। लोगों में तनाव होना था, क्योंकि उम्र के साथ, ज्योतिषी एक पतला ऊँचा स्वर रखते थे, जो पृष्ठभूमि में पक्षियों के साथ, जो ऊँची ऊँची शाखाओं में चहचहा रहे थे, मिलजुल गया।

उनकी प्रारंभिक टिप्पणियाँ, ऐसे अवसरों पर रस्मों रिवाज की टिप्पणियाँ थी; ''देवता, दैत्य और मनुष्य, सभी एक ही प्रकार से व्यवहार करते हैं।'' उन्होंने कहा ''इसलिए भविष्य को पहले से बताया जा सकता है, परंतु भविष्य अटल (immutable) नहीं होता।'' कुछ सीमाओं के अंदर, भविष्य को बदला जा सकता है। इसलिए ऐसा है, हम केवल संभावनाओं का भविष्यकथन कर सकते हैं, और संभावनाओं का कथन करते हुए, भले और बुरे की भविष्यवाणी करते हैं और तब वास्तव में, हमको शेष को, उसके ऊपर, जिसकी जन्मपत्री हम पढ़ रहे हैं, छोड़ देना चाहिए। वह रुके और अपने आसपास देखा, और बायीं ओर के लामा ने, दूसरे पन्ने को अनावरित करते हुए, शीर्षस्थ पन्ने को हटाया। ज्योतिषी ने लंबी सांस ली और कहना जारी रखा, ''यहाँ हमारे पास, एक अत्यंत उल्लेखनीय जन्मपत्री है, जिसकी हम तीनों ने कभी गणना की हो।'' वह मुड़े और अपने दो सहयोगियों की तरफ थोड़े झुके। तब, अपने गले को साफ करते हुए उन्होंने कहना जारी रखा, ''ये मात्र छै वर्ष की आयु के एक नौजवान लड़के की

जन्मपत्री है। ये सबसे अधिक कठिन जन्मपत्री और कठोरतम जीवन है, जिससे हमारा सामना हुआ।''

लॉर्ड और लेडी रंपा बैचेनी से हिले। निश्चितरूप से, ये वैसा नहीं निकलने वाला था, जैसा वह उम्मीद करते थे, वे बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं थे। परंतु, अपनी जाति के प्रशिक्षण के साथ, उन्होंने एक रहस्यमय अभिव्यक्ति बनाये रखी। उनके पीछे, इस सब परेशानी का कारण, रियासत का वारिस लोबसांग रंपा, वास्तव में उदास महसूस कर रहा था। ये सब समय का बरबाद करना था। कितने लोग नदी को पार कर रहे होंगे? नाविक क्या कर रहा होगा? क्या बिल्लियॉ ठीक थीं? उसने अनुभव किया कि उसे वहॉ एक भूसे से भरे पुतले की तरह खड़े रहना है, जबकि तीन पुरातन, लगभग जीवाश्म बने हुए आदमियों ने तय किया कि उसे अपने जीवन में क्या करना है। निश्चित रूप से, उसने सोचा कि उसे, जो वह करने जा रहा था, के बारे में कुछ कहने का हक होना चाहिए। लोग उसे बताते रहे थे कि ऐसी बड़ी रियासत का वारिस होना, कितना अद्भुत था, यह कहते हुए कि वह अपने मां बाप के लिए कितना श्रेयस्कर हो सकता था। ठीक है, उसने सोचा, वह एक नाविक बनना चाहता था, वह कहीं अपनी बिल्लियों की देखभाल करना चाहता था; निश्चितरूप से, वह काम नहीं करना चाहता था।

परंतु ज्योतिषी भिनभिनाता जा रहा था, और वहॉ श्रोताओं में, पूरी तरह से शांति थी, वास्तव में, वे सम्मोहित थे। इस बच्चे को चाकपोरी के चिकित्सीय मठ में जाना चाहिए। उसे प्रवेश की आज्ञा मिल सकने से पहले, अपनी तपस्या और श्रद्धांजलि (अर्पित) करनी चाहिए और प्रवेश होने के बाद, उसे निम्न में से भी निम्न के रूप में शुरू करना चाहिए और अपने कामों को विकसित करना चाहिए। उसे तिब्बत की सभी चिकित्सीय कलाओं को सीखना चाहिए, उसे थोड़े समय के लिए उसे भी, जो वास्तव में, अकथनीय है, करना चाहिए; उसे लाश को ठिकाने लगाने वाले लोगों के साथ काम करना चाहिए, जहॉ लाशों को काटते हुए, वह मनुष्य शरीर की संरचना को सीख सकता है। इसे कर चुकने के बाद, वह चाकपारी लौटेगा और फिर भी आगे पढ़ेगा। उसे हमारे देश के गहनतम रहस्यों, हमारे विश्वास, और हमारे विज्ञान को दिखाया जायेगा।''

बूढ़े आदमी ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, और एक सेवक ने जल्दी से उसे किसी द्रव से भरा हुआ, चांदी का एक छोटा गिलास दिया, जिसको उसने देखा और तब उसे गले से उतार दिया। सेवक ने सावधानी से चांदी के गिलास को वापस लिया और उसे फिर से भर दिया, अगली मांग के लिए तैयार।

ज्योतिषी चलता गयाः ''तब समय आयेगा, जब वह हमारे इस देश में और अधिक नहीं रह सकेगा, बदले में उसे पश्चिमी शैली के अनुसार चिकित्सा का अध्ययन करने के लिए, चीन की यात्रा करनी चाहिए, क्योंकि, वहॉ चुंगकिंग में, पश्चिमी चिकित्सा का एक स्कूल है। चिकित्सा के उस स्कूल में, वह इसे नहीं जानने देने के लिए कि ल्हालू का वारिस, लाशों के साथ व्यवहार करेगा, एक नया नाम लेगा। बाद में, वह कुछ सीखेगा, जो वर्तमान में हमारी समझ के परे है; ये कुछ ऐसी चीज है, जो अभी सामने नहीं आई है, कुछ ऐसी चीज, जो अभी तक, ठीक ढंग से खोजी नही गई है। हमारे अनुभवी दिमाग के अनुसार, ऐसा लगता है कि वह कुछ करेगा, जो हवा में उड़ना अपरिहार्य बनाती है, फिर भी, वह लेविटेशन (levitation) नहीं है, जिसे हम में से कुछ लोग, यहॉ ल्हासा में कर सकते हैं। इसलिए इस विशिष्ट पहलू के ऊपर मैं अनजान रहना चाहूँगा, क्योंकि, वास्तव में, ये हम तीनों के लिए अत्यंत दुरुह है। लड़के को, जो तब नौजवान होगा, स्वयं ही इसका हल निकालना होगा; किसी तरीके से वह हवा में उड़ेगा। हमारे चित्र बताते हैं कि वे कुछ कुछ पतंगों जैसी है, जिनके साथ हम परिचित हैं, परंतु ये विशिष्ट पतंग, रस्से के द्वारा जमीन से बंधी नहीं है। इसके बजाय, ऐसा लगता है कि ये उनके द्वारा नियंत्रित होगी, जो इस पर सवारी करते हैं।''

वहॉ, काफी फुसफुसाहट, और भीड़ में तत्काल कानाफूसी हुई। यह आश्चर्यो पर आश्चर्यो का ढेर होगा, इन चीजों के बारे में, पहले कभी नहीं कहा गया था। क्षण भर के लिए, वहॉ बैचेनी भरे पैरों

का थोड़ा सा हिलाना हुआ और तब ज्योतिषी ने दूसरा पेय लिया और अबतक घटते हुए कागज के पन्नों पर, वापस लौटा।

''उसे अत्यधिक पीड़ायें, अत्यधिक कठिनाईयॉ प्राप्त होंगीं, वह दुष्ट ताकतों के विरुद्ध, एक युद्ध में प्रविष्ट होगा, कुछ वर्षों के लिए, वह नजरबंद होगा और ऐसी पीड़ाओं से होकर गुजरेगा, जिनमें से केवल कुछ ही गुजरे होंगे, जिसका उद्देश्य शुद्ध करना और किसी प्रकार की विषयासक्ति की तलछट हटाना, और दिमाग की शक्ति को, बर्दाश्त करने के योग्य बनाना होगा। बाद में, वह किसी बड़े भारी विस्फोट के बाद, जो पूरे देश को, या हो सकता है, पूरे विश्व को, भ्रम में झोंक दे, वह अपने बंदीकर्त्ताओं से मुक्त होगा।

वह ऐसे साधनों से यात्रा करेगा, जिन्हें हम पहचान नहीं सकते, एक बड़े महाद्वीप के पार, और उस यात्रा के अंत में, वह अन्यायपूर्वक, फिर से बंदी बना लिया जायेगा, और अंत में, वहॉ उस पर, कम से कम उतने बड़े रूप में, जैसा कि उसने दूसरी नजरबंदी में किया था, पीड़ा आयेगी। अंत में, उसे अज्ञात लोगों के हस्तक्षेप के द्वारा मुक्त कर दिया जायेगा, और बलपूर्वक उसे उस महान महाद्वीप से निकाल दिया जायेगा। वह अनेक लोगों से मिलते हुए, अनेक सभ्यताओं को देखते हुए, अनेक चीजों को सीखते हुए, अनेक देशों में घूमेगा, और तब अंत में, वह एक देश में जायेगा, जहॉ एक बार फिर, भिन्न होने के कारण, उसका स्वागत नहीं किया जायेगा। पीड़ायें उसको एकदम बदल देंगी, जिससे वह अपने प्रकार का नहीं, परंतु भिन्न प्रकार का दिखेगा।

और जब मनुष्य किसी ऐसी चीज से, जो उनसे अलग है, मिलते हैं तो वे उस चीज से डरते हैं, और जिससे वे डरते हैं, उससे वे घृणा करते हैं और उसे नष्ट करने का प्रयास करते हैं।

बूढ़ा आदमी थका हुआ दिख रहा था। अंत में वरिष्ठ सेवक ने आगे कदम बढ़ाये, ज्योतिषी को कुछ फुसफुसाया, और तब कहा, ''इस वाचन के दूसरे अर्द्ध भाग के लिए, जबतक कि हमारे प्रमुख ज्योतिषी संभलते हैं, हम कुछ मिनटों का विश्राम लेंगे। तब, हम कुछ क्षणों के लिए, जो कहा जा चुका है, उस पर ध्यान केन्द्रित करें, ताकि हम उसे आसानी से जोड़ सकें, जो आगे आने वाला है।'' प्रमुख ज्योतिषी नीचे बैठे, उनके लिए नाश्ते लाये गये और उन्होंने लोगों की भीड़ को देखा। और जैसे ही वे, लोगों की भीड़ को देखते हुए बैठे, उन्हें अपने लड़कपन का ख्याल आ गया, उन्होंने उन समयों पर सोचा, जब वे रात के गहनतम भाग में, ऊॅचे पहाड़ों पर चढ़े थे, ताकि वह ऊॅचे आकाश में, नक्षत्रों की पंक्तियों को देख पायें। उन्होंने तारों, और वे लोगों के ऊपर क्या प्रभाव डालते हैं, का अध्ययन किया? उन्होंने पता करने का निश्चय किया। अनेक तरीकों के द्वारा, और उनका ऐसा करना, शायद, भाग्य में ही था। उन्होंने राज्य के ज्योतिष मठ में प्रवेश किया और उनको ज्योतिष विज्ञान में अपनी असामान्य दक्षता वाला पाया गया, वास्तव में, ज्योतिष, जो पश्चिमी ज्योतिष की तुलना में बहुत अच्छा और काफी हद तक पूर्ण है, और काफी दूर दूर तक एकदम सही है। इसमें अधिक चर (variables) शामिल हैं, और उन्हें बड़ी गहराइयों तक प्रक्षिप्त किया जा सकता है। नौजवान ने, जिसके भाग्य में, संपूर्ण तिब्बत का प्रमुख ज्योतिषी बनना था, अध्ययन करते हुए, अध्ययन करते हुए, अध्ययन करते हुए, तेजी से उन्नति की। उन्होंने भारत के पुराने ग्रंथ, चीन के ग्रंथ प्राप्त किये, और तिब्बत में ज्योतिष के विज्ञान को, लगभग दोबारा लिखा। जैसे जैसे उनकी दक्षतायें बढ़ीं, वैसे वैसे उनकी प्रसिद्धि बढ़ी, जिससे उन्हें ल्हासा के बड़े घरानों के प्रमुखों द्वारा और तब तिब्बत के दूसरे शहरों में बुलाया गया। शीघ्र ही, उन्हें राज्य, और महान तेरहवें के स्वयं के भविष्यकथन के लिए बुलाया गया। वह हमेशा ही अपनी शक्तिभर ईमानदार रहते। यदि उन्हें नहीं मालूम होता, वह कह देते कि वे नहीं जानते थे। उसने ब्रिटेन के अतिक्रमण की भविष्यवाणी की, उन्होंने महान तेरहवें के दूसरे देश में जाने, और उसके सुरक्षित लौटने की भविष्यवाणी की, और उन्होंने ये भी भविष्यकथन किया था कि तेरहवें के परिवर्तन के बाद की इस अवस्था में, कोई वास्तविक दलाईलामा नहीं होगा; कोई दूसरा होगा, परंतु उसे चीनियों की क्षेत्रीय

महत्वकांक्षाओं को संतोष देने के प्रयास में, एक राजनीतिक औचित्य के रूप में चुना गया होगा। उन्होंने भविष्यकथन किया था कि साठ या कुछ ऐसे ही वर्षो में तिब्बत, जैसा कि वह तब जाना जाता था, का अंत होगा। एक पूरी तरह से नई व्यवस्था प्रभावशील होगी, जो अत्यधिक कठिनाइयॉ और पीड़ा उत्पन्न करेगी, परंतु यदि इसे ठीक से हल किया जाये, हो सकता है, इसका प्रभाव, एक गयी गुजरी प्रणाली की सफाई करने का हो, और सौ या ऐसे ही कुछ वर्षों बाद, तिब्बत के लिए लाभ लाने वाला होगा।

प्रमुख ज्योतिषी ने अपनी मक्खन वाली चाय की चुस्की ली और अपने सामने के लोगों को देखा। उसने उस ढंग को देखा, जिससे कुछ नौजवान लोग, नौजवान औरतों को देख रहे थे, और जिस तरीके से, नौजवान औरतें नखरे से आमंत्रित करती हुई, उन्हें देख रहीं थीं। उसने लगभग अस्सी वर्ष पहले, एक ब्रह्मचारी भिक्षु के रूप में, अपने पुराने वर्षों को देखा, उसने सोचा और वह मुश्किल से ही समझ पाया कि किस तरीके से कोई औरत, आदमी से भिन्न होती है। उसका ज्ञान नक्षत्रों, नक्षत्रों के प्रभाव, और आदमियों और औरतों का, जैसे वे नक्षत्रों के द्वारा प्रभावित किये जाते हैं, था। उसने सुदर्शना नौजवान औरतों को देखा, और आश्चर्य किया कि क्या भिक्षुओं के लिए ब्रह्मचारी रहना ठीक था। उसने सोचा, मानवता, निश्चित रूप से, दो भागों की होनी चाहिए, नर और मादा सिद्धान्त, और जबतक कि दोनों भाग संयुक्त न किये जायें, वहॉ आदमी पूरा नहीं हो सकता। उसने उन सब कहानियों के बारे सोचा, जो उसने सुनी थीं कि औरतें शासन करने के लिए, कैसे अधिक कष्टकर और अधिक अहंकारी होती जा रहीं थीं। उसने कुछ बूढ़ी औरतों को, उनके कठोर चेहरों के साथ देखा, और उनके दबंग रवैये पर ध्यान दिया। और तब उसने सोचा, ठीक है, शायद ऐसा है कि आदमियों और औरतों को पूर्ण होने के लिये संयुक्त होने का, संपूर्ण अस्तित्व होने का, समय अभी परिपक्व नहीं हुआ है। परंतु वह आयेगा, यद्यपि, अस्तित्व के इस चक्र के अंत तक नहीं। ऐसा सोचते हुए, उसने अपना कप एक सेवक को दे दिया, और संकेत दिया कि वह आगे जारी रखने के लिए तैयार था।

सभा पर, फिर से एक चुप्पी छा गई; लोग मंच की ओर, ऊपर देख रहे थे। जैसे ही बूढ़े आदमी को सहारा देकर अपने पैरों पर खड़ा किया गया, फिर उसके सामने किताबें रखी गईं। उसने एकबार फिर, अपने चारों ओर देखा और कहा, ''कुछ अनुभव, जो इस वाचन के जातक के ऊपर घटित होंगे, वे हमारे खुद के अनुभव से इतने परे हैं कि लाभप्रद होने के लिए, उनकी पर्याप्त सही ढंग से घोषणा नहीं की जा सकती। ये निश्चितरूप से ज्ञात है कि यह व्यक्ति एक महान कार्य को करने वाला है; यह वह कार्य है, जो केवल तिब्बत के लिए नहीं, वल्कि संपूर्ण मानवता के लिये सर्वाधिक महत्व का है। ये ज्ञात है कि कुछ दुष्ट शक्तियॉ, वास्तव में, अत्यंत दुष्ट शक्तियॉ होती हैं, जो इसको, जो उसे करना चाहिये, उसे नकारने का कठिन परिश्रम कर रहीं हैं।

''वह घृणा का सामना करेगा, वह प्रत्येक प्रकार की कठिनाई और पीड़ा का सामना करेगा और वह जानेगा कि मृत्यु के बिन्दु पर क्या होना है, और दूसरे शरीर में आत्मा के प्रवेश के द्वारा, उसे कठिन परीक्षा से गुजरना पड़ेगा, ताकि काम आगे बढ़ सके। परंतु इस दूसरे शरीर में नई समस्यायें खड़ी होंगी। वह राजनीतिक लाभ के कारण, जिसका मैंने पहले ही उल्लेख किया है, अपने ही लोगों के द्वारा नकार दिया जायेगा। संपूर्ण जनता के लाभ के लिए, ये विचार किया जायेगा कि उसे नकारा जाये, कि उसे उन लोगों के द्वारा, जिनको समर्थन देना चाहिए, समर्थन न दिया जाये, उनके द्वारा, जो उसे समर्थन दे सकते थे, और मैं फिर कहता हॅू कि ये संभावनायें हैं, क्योंकि हमारे खुद के लोगों को उसे समर्थन देना, और उसे विश्व के राष्ट्रों के सामने एक अवसर देना संभव है, ताकि पहला, तिब्बत को बचाया जा सके, और दूसरा, वह महान कार्य, जिसकी एकदम सही प्रकृति उल्लेखित नहीं की जा सकती, हो सकता है अधिक तेज गति के साथ प्राप्त किया जा सके। परंतु संक्षिप्त अस्थाई अधिकार वाले कमजोर लोग, उसे सहायता करने के लिए, पर्याप्त शक्तिशाली नहीं होंगे, इसलिए दुष्ट शक्तियों के विरुद्ध, और परवाह न करने वाले लोगों, जिनको वह मदद करने का प्रयास कर रहा है, के विरुद्ध,

वह अकेला ही संघर्ष करेगा।''

बूढ़े ने अपने चारों ओर देखा और बायीं ओर के सेवक को, अगला पन्ना हटाने के लिए इशारा दिया। स्मरण दिलाने के लिए, सेवक थोड़ा सा लजा गया, और तेजी से, उसने, जैसा कहा गया था, वैसा किया। ज्योतिषी चलता गयाः ''एक विशिष्ट संयोजन या समूह है, जो लोगों को, विश्व की हमारी सीमाओं के परे, सूचना देता है। वे कार्य, जिसे पूरा किया जाना है, को समझने के लिए, अपर्याप्त आध्यात्मिक कद के लोग हैं, और उनकी सनसनीपूर्ण घृणा, कार्य को न नापे जा सकने योग्य सीमा तक, कठिन बना देगी। साथ ही साथ, लोगों का एक छोटा समूह है, जो ज्वलंत घृणा से भरा रहेगा, और इस जन्मपत्री के जातक को बरबाद करने के लिए और उसे हर परेशानी पैदा करने के लिए, हर संभव चीज को करेगा।''

बूढ़ा आदमी रुका और उसने ये संकेत देने के लिए कि उसने पुस्तकों को समाप्त कर लिया है, अपना हाथ सबसे ऊपर के पन्ने पर रखा, तब वह मुड़ा और उसने सभा को संबोधित किया, ''वर्षों के अनुभव के साथ, मैं आपको ये कहता हूँ; कोई बात नहीं, कितना भी महान संघर्ष हो, कोई बात नहीं, कितनी भी गंभीर पीड़ा हो, यह कार्य करने योग्य है। केवल मात्र युद्ध, जिसका कोई अर्थ होता है, वह है अंतिम युद्ध। इसका कोई प्रभाव नहीं होता कि जीतता कौन है, और हारता कौन है, युद्ध जो अंतिम युद्ध तक जारी रहते हैं, और अंत में अंतिम युद्ध को अच्छी शक्तियों के द्वारा जीता जायेगा, और जो किया जाना है उसे किया जायेगा।'' उसने तीन बार लोगों को नमन किया और तब वह मुड़ा और उसने तीन बार लॉर्ड और लेडी रंपा को नमन किया। तब आराम करने के लिए वह, अपनी टांगों पर, जो वर्षों के बोझ से कांप रहीं थीं, नीचे बैठा।

श्रोतागण, आपस में फुसफुसाते हुए, शीघ्र ही तितरबितर हो गये और मनोरंजन की तलाश में, बगीचों में गये और वहॉ काफी मनोरंजन प्रस्तुत किया गया था—संगीत, नट की कलाबाजियॉ, मायाजाल, और वास्तव में, खाना और पीना। ज्योतिषी और उसके दो सहयोगियों के थोड़े समय आराम के बाद, वे उठे और महान घर में गये, जहॉ उन्हें लोबसांग रंपा के माता पिता को अधिक बताना था। साथ ही साथ, उन्हे लोबसांग को भी, निजी रूप से, उसके साथ अकेले में कुछ कहना था।

शीघ्र ही, प्रमुख ज्योतिषी अपने रास्ते पर पोटाला वापस चले गये और उसके दो सहयोगी राज्य के ज्योतिष मठ की ओर अपनी यात्रा पर चले गये।

दिन बीतता गया। शाम आई, और शाम की चेतावनी पर, इकट्ठे हुए लोग, बड़े दरवाजे में से बाहर सड़क पर, अपने रास्ते पर चलने लगे। ताकि वे रात होने, और उससे आने वाली आपदायें आने पायें, से पहले, अपने घरों तक पहुॅच सकें।

अंधेरा घिरा और बाहर सड़क पर, महान द्वार के परे, एक अकेला छोटा बच्चा, अंतिम जाने वाले अतिथियों और छककर पीने वाले, जो वे बन रहे थे, को सड़क पर नीचे देखता हुआ खड़ा रहा। वह अपने हाथ जोड़कर, पीड़ा के जीवन को, जो कहा गया था, सोचते हुए, युद्ध के आतंक, जिसे वह नहीं समझ पाया, के ऊपर विचार करते हुए, अचेतन भविष्य के ऊपर विचार करते हुए, खड़ा रहा। वहॉ वह अकेला, विश्व में अकेला खड़ा रहा, और किसी दूसरे को ऐसी समस्या नहीं थी। वह वहॉ खड़ा रहा और रात गहरी होती गयी, और और वापस घर ले जाने के लिये, उसको ढूंढ़ने वाला कोई नहीं आया। और अंत में, जैसे ही चांद सिर के ऊपर हुआ, वह सड़क के किराने लेट गया, कैसे भी, दरवाजा बंद कर दिया गया और मिनटों में दुलारने की एक आवाज आई, उसके सिर के बगल से, एक बड़ी बिल्ली, उसके बगल से लेटी। बच्चे ने अपनी बांहें बिल्ली के चारों और डाल दीं, और बिल्ली ने जोर से दुलारा। शीघ्र ही बच्चा एक दुख भरी नींद में डूब गया, परंतु बिल्ली, निगरानी करते हुए, पहरा देते हुए, सजग थी।

इस प्रकार पहली पुस्तक, जैसा प्रारंभ में था, उसकी पुस्तक समाप्त होती है।

पुस्तक दो

पहला युग

अध्याय – चार

''ओ लोबसांग,'' मां ने पुकारा, उसका चेहरा गुस्से से पीला हो गया। ''तुम हमारे लिए एकदम खराब अपमान लाये हो, मुझे तुम पर शर्म आती है। तुम्हारे पिताजी तुम्हारे लिए शर्मिंदा हैं, वे तुम्हारे ऊपर इतने ज्यादा गुस्सा हैं, कि कार्यालय चले गये हैं, और पूरे दिन वहीं रहेंगे, इसने मेरी सारी नियुक्तियों को गड़बड़ कर दिया है, और ये सब कुछ तुम्हारी वजह से है लोबसांग!'' ऐसा कहते हुए वह सहसा मुड़ी, जल्दी, और जल्दी जाते हुए, मानो कि, वह मेरे चेहरे पर, और अधिक लम्बे समय तक नहीं देख सकती थी।

मेरे कारण शर्मिन्दा? वह मेरे कारण शर्मिन्दा क्यों हो? मैंने भिक्षु नहीं बनना चाहा; मैंने उन भयानक चीजों को बिल्कुल नहीं चाहा, जिनकी मेरे लिये घोषणा की गई। कोई भी, जिसके पास रत्ती भर भी समझदारी है, इसे समझ लेगा। कल की घोषणाओं ने मेरे अंदर आतंक भर दिया है। ये ऐसा रहा है, मानो कि, बर्फ के दैत्य ने, मेरी रीढ़ में, अपनी उंगलियॉ ऊपर–नीचे चलाई हैं। इसलिए वह मेरे लिए इतनी शर्मिन्दा थी, क्या वह थी?

दृश्य में, बूढ़ा त्सू, लगभग, एक गतिमान पहाड़ की तरह से उभरा, वह इतना बड़ा (large) था। उसने मुझे देखा और कहा, ''ठीक है, नौजवान, तुम एक कठिन जीवन जीने वाले हो, क्या तुम नहीं हो? मैं सोचता हूॅ तुम इसे कर लोगे। यदि तुम सभी प्रकार के लालचों और तनावों के विरुद्ध खड़े नहीं रह सकते होते, तो तुमको ऐसे कार्य के लिए नहीं चुना गया होता। शिल्पी, अपने औजारों को, किये जाने वाले काम के अनुरूप चुनता है। शायद, कौन जानता है? शिल्पी ने, जिसने तुम्हें अपना औजार बनने के लिये चुना, अधिक अच्छा चुन सकता था, जितना वह जानता था।'' मैंने कुछ प्रसन्नता के साथ, बूढ़े त्सू को देखा, परंतु केवल ''कुछ'' हद तक, और तब मैंने कहा, ''परंतु त्सू, मैंने अपनी मां का अपमान कैसे किया है, मैंने अपने पिता का अपमान कैसे किया है? मैंने कोई चीज नहीं की, मैं भिक्षु नहीं बनना चाहता था। मैं केवल ये नहीं समझता कि उनका आशय क्या है। आज हर आदमी, मेरे प्रति घृणा से पूरा भरा दिखाई देता है। मेरी बहन मुझसे नहीं बोलती, मेरी मां मुझे झिड़कती है, और मेरे पिताजी मेरे साथ घर में रुके तक नहीं, और मैं नहीं जानता क्यों।''

बूढ़े त्सू ने, अपने आपको कष्ट के साथ फर्श पर पालथी मारकर बैठने के लिए झुका लिया; ब्रिटेन के लोगों द्वारा दिये गये उसके घाव, उसको बुरी तरह से कष्ट दे रहे थे। उसके कूल्हे की हड्डी को नुकसान हुआ था और अब ठीक, पूरे समय उसको दर्द होता रहता था। परंतु वह फर्श पर बैठा और उसने मेरे साथ बात की।

''तुम्हारी मां,'' उसने कहा, ''एक बड़ी सामाजिक महत्वाकांक्षा वाली महिला है। उसने सोचा था कि तिब्बत के राजकुमार के पुत्र के रूप में, बाद में अपने पूर्ण अधिकार के साथ एक राजकुमार, तुम भारत के एक बड़े शहर को चले गये होते, और वहॉ तुम, विश्व के मामलों को काफी अधिक सीखते। तुम्हारी मां ने सोचा था कि तुम उसके लिए सामाजिक पूंजी बनोगे; उसने सोचा था कि यदि तुम भारत और शायद दूसरे देशों में गये, तब वह भी यात्राओं पर जा सकती थी और वह भी वर्षों तक, तुम्हारे जन्म के वर्षों पहले से भी, ये उसकी पूरी तरह हावी होने वाली महत्वाकांक्षा थी। अब तुम्हारा चयन एक विशेष कार्य के लिए हुआ है, परंतु ये वह नहीं है जिसे वह चाहती थी, ये वह नहीं है, जिसे तुम्हारे पिताजी चाहते थे। उन्हें राजनीतिक अखाड़े में चमकता हुआ एक उच्चवर्गीय चेहरा चाहिए था, कोई भिक्षु नहीं, जो पूरे जीवन के लिए संघर्षरत होने वाला है, कोई वह व्यक्ति नहीं, जो पृथ्वी की सतह पर एक अवतार की तरह घूमेगा, अपने साथियों के द्वारा सत्य कहने के लिए अनदेखा किया जायेगा,

नकारा जायेगा, अपने आसपास के लोगों के द्वारा बहिष्कृत किया जायेगा, क्योंकि वह एक कार्य करने का प्रयास कर रहा था, जिस पर दूसरे लोग असफल हो चुके थे।'' बूढ़े त्सू ने जोर से खर्राटे भरे।

विश्वास करने के लिए, ये सब, पूरी तरह से अत्यधिक अजीब दिखाई दिया। किसी चीज के लिए, जो मैंने नहीं की है, और जिसको मैंने करना भी नहीं चाहा, मुझे क्यों दण्डित किया जाना चाहिए, शिकार बनाया जाना चाहिए? जो कुछ मैं चाहता था, वह था नदी के तट पर अटका रहना और नाविकों को उनकी खाल की नावों के साथ, अपने तरीके से, पानी के पार खेते हुए देखना। सबकुछ, जो मैं चाहता था, वह था अपनी बैसाखियों के साथ अभ्यास करना, और अपनी पतंगों को उड़ाना। परंतु अब ठीक है, मैं अभी ये नहीं जानता कि चीजों को कैसे किया जाये, मैं ये नहीं जानता कि क्यों मुझे, मैं बनना पड़ा।

दिन तेजी से गुजरते चले गये, और अंत में जैसा कहा गया था, मुझे अपना घर छोड़ना पड़ा और ऊपर पहाड़ी पर, चाकपोरी लामामठ में जाना पड़ा। वहॉ मुझे प्रतीक्षा, सभी आंखों के आकर्षण बिन्दु के बाहर प्रतीक्षा, की कठिन परीक्षा में होकर गुजरना पड़ा। ज्यों ही मैं, बड़े दरवाजों के बाहर, धूल में पालथी मारकर बैठा, छोटे बच्चे मेरे आसपास झुंड बनाकर खड़े हुए। दिन, न झेल पाने योग्य लंबे थे, परंतु मैंने उन्हें झेला। रातें असहनीयरूप से कठिन थीं, परंतु जबतक कि अंत में, कठिन परीक्षा समाप्त नहीं हुई, मैंने उन्हें झेला। मठ में, मुझे, एक नये लड़के को, कोई वह जो अच्छा खिलाड़ी था, और कोई वह, जो वहॉ उसके ऊपर किसी प्रकार से मजाक किये जाने के लिये पकड़ा जाना था, निम्नतम से भी निम्न श्रेणी में प्रवेश दिया गया। निम्नतम से भी निम्न।

समय रेंगता गया, और मैं गृहातुर (homesick) था। मुझे अपने घर की याद आ रही थी, मुझे त्सू की याद आ रही थी, मुझे अपनी बहन यशोधरा की याद आ रही थी; मां के लिये, जिसे मुझसे उतना अधिक प्यार नहीं था, ठीक है, मुझे उसके प्रति अनजान सनसनी हुई। स्पष्टरूप से, मुझे उसकी याद आई, और भी अधिक स्पष्टरूप से मानते हुए, मैंने स्वयं को दोषी महसूस किया। मैं कैसे असफल हुआ था? वे मेरे साथ इतने अधिक निराश क्यों थे? मैं उसमें, जो ज्योतिषी ने कहा था कि, मुझे जाना चाहिए और इस पीड़ा को झेलना चाहिए और उसे झेलना चाहिए, कैसे मदद कर सकता था? ये मेरा चुनाव नहीं था, मैंने सोचा, कष्टों के ऐसे भार को, जैसा कि मुझे आवंटित किया गया था, कोई भी, अपने संज्ञान में (जानबूझ कर), नहीं ले सकता था।

मैंने अपने पिता के लिए, जब मैंने उन्हें घर छोड़ने से पहले, अंतिम बार देखा था, सोचा। उन्होंने मुझे जमे हुए चेहरे (frozen face) के साथ देखा, उन्होंने मुझसे रूखेपन से बात की, मानो कि, अब मैं एक अजनबी था, अपने खुद के घर के साथ और अधिक नहीं, और अपने खुद के मां बाप के साथ और अधिक नहीं। उन्होंने मुझसे, उसकी तुलना में, जो दरवाजे पर खाने की भिक्षा मांगने के लिए आता है, जो वह एक कैदी के साथ कर सकते थे, अधिक कठोरता के साथ व्यवहार किया। उन्होंने मुझे कहा कि मैंने ऐसे कर्म धारण करने वाला होकर, कि मुझे एक भिक्षु, एक लामा, एक घूमंतू, जिसकी नकल बनाई जायेगी, छींका जायेगा और जिस पर विश्वास नहीं किया जायेगा, बनना पड़ा, परिवार का अपमान किया है।

यशोधरा, ठीक है, मैं अभी नहीं जानता था कि उसके रवैये का क्या किया जाय। वह बदल गई। हम एक सामान्य भाई–बहन की तरह, साथ साथ खेला करते थे, हम जैसे तैसे, ठीक मिलजुल कर रहते थे, वास्तव में, ठीक सामान्य भाई–बहनों की तरह, जो जैसे तैसे, ठीक मिलजुल कर रहते हैं। परंतु अब उसने मुझे ऐसी अनोखी नजर से देखा, मानो कि मैं एक आवारा कुत्ता हूँ, जो घिसिट कर घर में आ गया था, और किसी कोने में अवांछित उपहार (मलमूत्र) छोड़ गया। नौकरों ने मुझे और अधिक समय तक इज्जत, जो ल्हालू रियासत के वारिस को दी जानी थी, नहीं दी। उनके लिए, ये कुछ ऐसी चीज थी, जो कुछ दिनों के लिए, जबतक कि सातवीं वर्षगांठ न आ जाये, वहॉ हुई। तब सातवें

जन्मदिन पर, मैं किसी के भी द्वारा, अलविदा के एक शब्द के बिना, व्यवसाय, जो मेरे सबसे खराब दुश्मनों के द्वारा भी अभिलाषित नहीं किया जायेगा, की ओर ले जाते हुए, लंबे और ऊपर की ओर के अकेले रास्ते पर, अकेला घूमंतू हो जाऊँगा।

चाकपोरी में, वहॉ सूखती हुई जड़ीबूटियों की, जड़ीबूटियों वाली चाय की निरंतर चाबुक की मार, एक निरंतर दुर्गंध होती थी। यहॉ जड़ीबूटियों सम्बंधी आचार संहिता (code) पर अधिक, और धार्मिक अनुशासन पर कम समय दिया जाता था। परंतु हमारे पास बहुत अधिक अच्छे शिक्षक थे, सभी अधेड़ व्यक्ति; उनमें से कुछ, वास्तव में, बहुत दूर, भारत जैसे देश में भी रह चुके थे।

मुझे एक अधेड़ भिक्षु, या मुझे कहना चाहिए लामा, याद है जो हमें व्याख्यान दे रहा था, और वह परकाया प्रवेश के विषय पर आया। ''काफी लंबे, गुजरे दिनों में,'' उसने कहा, ''वास्तव में, लिखित इतिहास प्रारंभ होने से काफी पहले, दैत्याकार लोग, पृथ्वी पर गुजरते फिरते थे। वे पृथ्वी के बागवान थे, वे जो यहॉ, इस ग्रह पर जीवन के विकास का निरीक्षण करने के लिये आये थे, क्योंकि हम यहॉ, अस्तित्व के प्रथम चक्र के नहीं हैं, तुम जानते हो, परंतु भूमि के खंड पर बागवानों के सफाई करने की भांति, सभी जीवन मिटा दिये गये थे और तब हमें, मानव जाति को, अपना रास्ता खुद चुनने के लिए, अपना खुद का विकास करने के लिए, यहॉ छोड़ा गया था,'' वह रुका और उसने यह देखने के लिए कि उसके शिष्य कुल मिलाकर इस विषय में, जिसे वह पढ़ा रहा था, रुचि ले रहे थे, आसपास देखा। अपने भव्य आश्चर्य के लिए, उसने पाया कि, लोग वास्तव में, उसकी टिप्पणियों में रुचि रखते थे।

''दैत्यों की प्रजाति,'' वह चलता गया, ''पृथ्वी जीवन के लिए बहुत अधिक उपयुक्त नहीं थी, इसलिये दैत्यों की प्रजाति, जबतक कि वे मानवों की भॉति, उसी आकार के नहीं हो गये, जादुई ढंगों से सिकुड़ गई। इसप्रकार, वे बागवानों के रूप में न पहचाने जाते हुए, मानवों के साथ घुलने–मिलने में सफल हुए। परंतु एक भिन्न वरिष्ठ बागवान के लिए अक्सर आना और विशेष कार्यो को सम्पन्न करना आवश्यक था; उसने एक औरत से एक बच्चा पैदा करने और तब उसके बालपन और बचपन और किशोरपन की वर्षों तक प्रतीक्षा करने में बहुत अधिक लंबा समय लिया। इसलिए पृथ्वी के बागवानों के विज्ञान की, एक भिन्न प्रणाली थी; उन्होंने कुछ बच्चों को पैदा किया और ये सुनिश्चित किया कि ये बच्चे, उन आत्माओं के साथ, जो बाद में यहॉ बसेंगे, अनुशीलित (compatible) होंगे।''

सामने बैठा हुआ एक लड़का अचानक ही बोल पड़ा, एक आत्मा दूसरे व्यक्ति के अंदर कैसे रह सकती है। लामा शिक्षक उसके ऊपर मुस्कराया और उसने कहा, ''मैं तुम्हें बताने ही वाला था। परंतु पृथ्वी के बागवानों ने कुछ आदमियों और औरतों को मिलने की आज्ञा दी, जिससे हर एक से एक बच्चा पैदा हुआ, और उस बच्चे की बढ़त, पूरे समय, शायद, जीवन के पहले पंद्रह या बीस या तीस सालों तक, अत्यधिक सावधानी के साथ पर्यवेक्षित (supervise) की गई। तब एक समय आयेगा, जब एक उच्च स्थिति वाले बागवान को, कुछ ही घंटों के समय में, पृथ्वी पर आने की आवश्यकता होगी, इसलिए सहायक, उस प्रशिक्षित शरीर को तंद्रा (trance), ठहराव (stasis), या यदि तुम चाहो, निलंबित सजीवन (suspended animation) की एक स्थिति में रखेंगे। सूक्ष्मलोक के सहायक, उस अस्तित्व के साथ, जो अपने इस विशिष्ट ज्ञान के साथ, कि वे रजततंतु को पृथक कर सकते हैं, और इसके बदले में, पृथ्वी के बागवान, जो पृथ्वी पर आ रहा था, के अस्तित्व के रजततंतु को जोड़ सकते हैं, पृथ्वी पर जाना चाहते थे, जीवित शरीर में आयेंगे। मेजबान, तब पृथ्वी के बागवान का, वाहन हो जाता है, और मेजबान का सूक्ष्मशरीर, ठीक वैसे ही जैसे वह, एक व्यक्ति, जो मर चुका था, के मामले में करता, सूक्ष्मलोक में चला जाता है।

''इसे परकाया प्रवेश, एक अस्तित्व का, दूसरे शरीर में प्रत्यावर्तन (transmigration), कहते हैं। धारण किया गया शरीर मेजबान कहलाता है, और ये पूरे इतिहास में ज्ञात रहा है। मिस्र में इसका जमकर अभ्यास किया गया, और इसने उसे जन्म दिया, जिसे शरीर पर लेपन (enbalming) कहा

जाता है, क्योंकि उन दिनों में, मिस्र में, निलंबित सजीवन (suspended animation) की स्थिति में रखी हुई लाशें, बड़ी संख्या में थीं, वे जीवित परंतु गतिहीन थे, वे ठीक वैसे ही, जैसे कि हम, किसी भिक्षु या लामा की सवारी के लिए और कहीं जाने के लिए, पोनियों को प्रतीक्षा में रखते हैं, वे उच्च अस्तित्वों के द्वारा घेरे जाने के लिए तैयार थे।''

''ओह मेरे भगवान!'' एक बच्चे ने विस्मय किया, ''मैं आशा करता था कि मेजबान के दोस्त, जब शरीर, जिसे वे भूतकाल में सभी ज्ञान को धारण करता हुआ अपना मित्र सोचते थे, जगता, शक्तिभर अचंभित होते। मेरे भगवान! मैं मेजबान नहीं बनना चाहूँगा; किसी दूसरे को किसी के शरीर का लिया जाना, ये एक भयानक भावना होगी।''

शिक्षक हँसा और उसने कहा, ''निश्चितरूप से, ये एक अद्वितीय अनुभव होगा। लोग अभी भी, इसे करते हैं। शरीर अभी भी तैयार किये जाते हैं, विशेषरूप से पाले जाते हैं, ताकि यदि आवश्यकता पड़े, यदि पूरे विश्व की भलाई के लिए, ये आवश्यक हो, तो एक भिन्न अस्तित्व ताजे शरीर को ले सकें।''

कई दिनों बाद बच्चों ने इस पर चर्चा की, और उनमें से कुछ ने, बच्चों के तरीके से नाटक किया कि उनके शरीर लिये जाने वाले थे। परंतु मेरे लिए, उस डरावने भविष्यकथन पर वापस विचार करते हुए, ये कोई मजाक नहीं था, ये मुझे आनंद देने वाला नहीं था, इसके सम्बंध में सोचना भी एक कठिन परीक्षा थी। ये प्रणाली के लिए लगातार सदमा था, इतना बड़ा सदमा कि कई बार मैंने सोचा मैं पागल हो जाऊँगा।

एक शिक्षक, विशेषरूप से, मेरे बिल्लियों के प्यार के प्रति, और बिल्लियों के मेरे प्रति स्पष्ट प्रेम के लिए साजिश कर रहा था। शिक्षक अच्छी तरह जानता था कि मैं और बिल्लियाँ, आपस में दूरानुभूति से बातचीत करते थे। एक दिन स्कूल के समय के बाद, वह वास्तव में, बहुत अच्छी मनःस्थिति में था और उसने मुझे, मंदिर की अपनी चार–पाँच बिल्लियों को अपने ऊपर बिठाये हुए, जमीन पर लेटे हुए देखा। वह दृश्य पर हँसा और मुझे अपने कमरे में साथ आने का आदेश दिया, जो मैंने डर के साथ किया, क्योंकि, उन दिनों में लामा के क्वार्टर में बुलाये जाने का सामान्य अर्थ होता था, किसी की गई, या न की गई, चीज के लिए एक डांट, या किसी अतिरिक्त कार्य का दिया जाना। इसलिए एक सम्मानजनक दूरी बनाते हुए, मैं उनके साथ गया, और एक बार उसके कमरे में पहुँचने पर, जबतक उन्होंने बिल्लियों के सम्बंध में मुझसे बात की, उन्होंने मुझे बैठने के लिए कहा।

''बिल्लियाँ'' उसने कहा, ''अब छोटे जीव हैं, और वे मनुष्यों की भाषा में बात नहीं कर सकते परंतु अब केवल दूरानुभूति से बात कर सकते हैं। अनेक अनेक वर्षों पहले, इस अस्तित्व के इस विशेष चक्र के पहले, बिल्लियाँ इस पृथ्वी को आबाद करती थीं, वे बड़ी थीं, लगभग इतनी बड़ी, जैसे कि हमारे पोनी होते हैं। वे एक दूसरे से बात करती थीं, वे अपने पंजों से, जिन्हें तब हाथ कहा जाता था, काम कर सकती थीं। वे उद्यानों में काम करती थीं, प्रमुखरूप से वे शाकाहारी बिल्लियाँ थीं। वे पेड़ों में रहती थीं, और उनके घर बड़े पेड़ों में थे। कुछ पेड़ उनसे बड़े अलग थे, जिन्हें हम अब पृथ्वी पर जानते हैं, उनमें से कुछ, वास्तव में, गुफाओं जैसी खोखली बड़ी जगह रखते थे, और उन खोखलों और गुफाओं में बिल्लियाँ अपना घर बनाती थीं। वे गर्म थीं, वे पेड़ों के सजीव अस्तित्व के द्वारा सुरक्षित थीं, और इसके साथसाथ वे एक अनुकूल समुदाय थीं। परंतु किसी भी प्रजाति में, कोई भी, पूर्णता को धारण नहीं कर सकता क्योंकि, जबतक वहाँ कोई प्रतियोगिता न हो, जबतक कि वहाँ उभरने के लिए, कुछ असंतोष न हो, ऐसे सुखानुभूति वाले प्राणी अवनति को प्राप्त होते हैं।''

वह बिल्लियों पर, जो मेरे पीछे आ गई थीं, और अब मेरे आसपास बैठी थीं, मुस्कराया, और तब चलता चला गया, ''हमारे भाई और बहन बिल्लियों के साथ ऐसा हुआ। वे अत्यधिक प्रसन्न, अत्यधिक संतुष्ट थे, उन्हें अपनी महत्वाकांक्षा बढ़ाने का कोई कारण नहीं था, उनको उच्चतर ऊँचाईयों तक चलाने

के लिए कुछ नहीं था। उनके पास, सिवाय इसके कि वे प्रसन्न थे, कोई विचार नहीं थे। वे उन बेचारे लोगों की तरह थे, जिनको हमने अभी हाल में देखा, जो बुद्धिहीनता के कारण पागल थे, वे केवल पेड़ों के नीचे लेटे रहने में संतुष्ट थे, और दैनिक मामले अपने आप होते जाते थे। वे स्थिर हो गये थे, इसलिए अचल होने के कारण, वे असफल हो गये। पृथ्वी के बागवानों ने उन्हें वैसे ही (ज्यों का त्यों) समूल नष्ट कर दिया, मानो वे खरपतवार हों और पृथ्वी को कुछ समय के लिए बंजर छोड़ दिया गया। और समय की अवधि में, पृथ्वी, परिपक्वता की एक ऐसी स्थिति में पहुँच गई कि इसे भिन्न प्रकार के अस्तित्व के साथ, फिर से नहीं बसाया जा सकता था। परंतु बिल्लियॉ, ठीक है, उनका दोष ये था कि उन्होंने कुछ नहीं किया था, न अच्छा न बुरा। वे अस्तित्व में थीं और केवल वे ही अस्तित्व में थीं। इसलिए उन्हें, छोटे जीवों के रूप में, जैसे कि हम यहॉ हम देखते हैं, फिर नीचे भेजा गया। उन्हें एक पाठ सीखने के लिए भेजा गया। उन्हें आंतरिक ज्ञान के साथ भेजा गया कि किसी समय में वे, यहॉ वर्चस्व वाली प्रजाति रही हैं, इसलिए वे आरक्षित (resevered), उन लोगों के प्रति अत्यधिक सावधान हो गईं, जो उन्हें मित्रता प्रदान करते थे। उन्हें एक काम के लिए, मनुष्यों की चौकीदारी करने के काम से और मनुष्यों के प्रगति या असफलताओं को सूचित करने के लिए भेजा गया था, ताकि जब अगला चक्र आये, बिल्लियों के द्वारा अधिक जानकारी दी जा सके। बिल्लियॉ कहीं भी जा सकती हैं, वे कुछ भी देख सकती हैं, वे कुछ भी सूंघ सकती हैं, और झूठ बोलने में सक्षम नहीं होती, वे हर चीज को सही सही शुद्धता के साथ, जैसे वह घटी, अभिलेखित कर सकती हैं।

मैं जानता हूँ कि मैं, कुछ समय के लिए, पूरी तरह डरा हुआ था! मैंने आश्चर्य किया कि बिल्लियॉ, मेरे सम्बंध में क्या रिपोर्ट कर रही होंगीं। परंतु अनेक लड़ाइयों के एक विजेता, बूढ़े टॉम ने, एक ''रररररररररर'' दिया, और मेरे कंधों पर कूदा, और अपने सिर को मेरे सिर से टकराया, इसलिए मैंने जाना कि हर चीज ठीक थी, और वे मेरे बारे में अधिक खराब सूचित नहीं करेंगे।

कुछ समय बाद, मैं अस्पताल के फर्श पर, अपने कंबल पर, मुँह के बल, (औंधा) लेटा था, क्योंकि, मैं अपनी बायीं टांग के ऊपर बुरी तरह जल गया था, उसकी गूथें और दुष्क्रिया, जो जलने के बाद पैदा हुई, जिससे मैं अभी भी पीड़ित रहता हूँ, अभी भी, मेरे साथ हैं। मैं अपने मुँह के बल लेटा, क्योंकि मैं अपनी पीठ के बल लेट नहीं सकता था, और एक अत्यंत प्रिय लामा ने प्रवेश किया और कहा ''बाद में, लोबसांग, जब तुम ठीक हो जाआगे और चलने लगोगे, तो मैं तुम्हें पहाड़ों में निश्चित चोटियों पर ले जाने वाला हूँ। मुझे वहॉ तुम्हें कुछ दिखाना है, तुम जानते हो कि पृथ्वी अनेक परिवर्तनों में होकर गुजरी है, पृथ्वी बदली हुई है, और सागर बदले हुए हैं, पहाड़ पैदा हुए हैं। मैं तुम्हें उन चीजों को दिखाने जा रहा हूँ, जिन्हें पिछले सौ वर्षों में, पूरे तिब्बत के दस से ज्यादा लोगों ने नहीं देखा है। इसलिए जल्दी करो और स्वस्थ हो जाओ, तुम्हारे सामने कुछ दिलचस्प चीज है।''

ये कुछ महीनों बाद था, जब मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप (Lama Mingyar Dondup), जिनका मेरे लिए इतना अधिक अर्थ था, और जो मेरे लिए माता पिता और भाई से अधिक थे, ने मुझे एक पथ पर नेतृत्व दिया। वह एक मजबूत घोड़े पर कुछ फुट आगे, और मैं उनके पीछे, एक पोनी पर सवार होकर चले। वह (पोनी) मेरे लिए इतना सावधान था, जितना कि मैं उसके लिए था। उसने मुझे, एक बुरे सवार के रूप में पहचान लिया था, और मैंने उसे पहचान लिया था, एक घोड़ा, जिसने बुरे सवार को पहचान लिया हो। बाद के कुछ वर्षों में हम, जिसे मैंने सैनिक उदासीनता कहा होता, में थे। एक प्रकार से अच्छा, यदि आप कुछ नहीं करें, तो मैं भी नहीं करूंगा, कैसे भी हमें साथसाथ जीना है। परंतु हम सवार हुए, और काफी देर बाद, अंत में, मेरे शिक्षक रुके। मैं झुका और पोनी के बगल से खिसका। रासें (trail ropes) गिरा दी गईं और तब घोड़ा और पोनी दूर तक नहीं घूमेंगे, वे अत्यधिक अच्छी तरह प्रशिक्षित थे।

मेरे शिक्षक ने आग जलाई, और हम विरले रात्रिभोज के लिए नीचे बैठे। कुछ समय के लिए,

वहाँ, हमारे ऊपर फैले हुए आकाश के आश्चर्यों के सम्बंध में असीमित बातचीत हुई। हम पर्वतों की छाया में थे, और जैसे ही सूर्य पश्चिमी श्रंखला के परे डूबा, अंधकार के गहरे जामुनी धब्बे, ल्हासा की घाटी के आरपार गुजर रहे थे। अंत में, असंख्य घरों और मठों से कुछ मंद टिमटिमाते हुए मक्खन के दीपों और ऊपर आकाश की भव्यता, जिसने अपने मंद टिमटिमाते हुए धब्बों को, प्रकाश के आगे भेजा था, के सिवाय, सब कुछ अंधकारमय हो गया।

अंत में, मेरे शिक्षक ने कहा, ''अब हमें सोना चाहिए, लोबसांग, आज रात को तुम्हें परेशान करने के लिए, रात्रि की कोई मंदिर–सेवा नहीं है, तुम्हें जगाने के लिए, सुबह की कोई मंदिर सेवा नहीं है। ठीक से सोओ, क्योंकि, कल हम उन चीजों को देखेंगे, जो तुमने पहले कभी भी, स्वप्न में भी संभव नहीं सोची होंगीं।'' ऐसा कहते हुए, उन्होंने अपने आप को, अपने कंबल में लपेट लिया, करवट बदली और वैसे ही, सोने को चले गये। चट्टान में एक छेद खोदने का प्रयास करते हुए, मैं थोड़े समय के लिए लेटा, क्योंकि, और जब मैं अपने मुंह के बल लेटा, मेरे कूल्हे की हड्डी, आगे बढ़ने से इंकार करती हुई दिखाई दी क्योंकि, मेरी गूंथें अभी भी, दर्द कर रहीं थीं, और तब मैं अंत में, मैं भी सो गया।

सुबह चमकदार भोर हुई। पहाड़ों में, हमारी ऊँचाई से ये देखना मोहित करता था कि, भोर सुबह की सूर्य की किरणें, गोली की तरह क्षैतिज रूप से कैसे घाटी के आरपार छूटती दिखाई देती थीं और पश्चिमी क्षितिज पर चोटियों को प्रकाशित करती थीं, जिसके साथ वे आग की सुनहरी उंगलियाँ प्रतीत होती थीं। वास्तव में, कुछ समय के लिए ये ऐसा दिखा, मानो कि, पूरी पर्वत श्रंखला आग में थी। हम खड़े हुए और ध्यान से देखा और तब हम साथसाथ मुड़े और एक दूसरे पर मुस्कराये।

हल्के नाश्ते के बाद, नाश्ता मुझे हमेशा हल्का ही दिखाई देता था! एक छोटे पर्वतीय झरने पर, हमने घोड़ों को पानी पिलाया और तब, उन्हें काफी चारा, जो वास्तव में, हमारे साथ लाया गया था, देते हुए हमने उन्हें, उन दोनों के बीच लगभग तीस फुट का स्थान रखते हुए, आपस में बांध दिया। उनके पास घूमने फिरने के लिए, और छुटपुट घास को चरने के लिए, काफी जगह थी।

लामा मिंग्यार डोंडुप ने, पगडंडी रहित पर्वतों के बगल से रास्ता दिखाया। वे एक बड़े पत्थर के पास, जो पहाड़ी के चेहरे पर, अचल रूप से जमा हुआ दिखाई दिया, मुड़े और उन्होंने कहा, ''लोबसांग, अपनी यात्राओं में तुम काफी कुछ ऐसा देखने वाले हो, जो जादू जैसा दिखता है। यहाँ इसका पहला नमूना है।'' तब वह मुड़े, और मेरे भयानक आश्चर्य के लिए, वह अब वहाँ नहीं थे! वह अभी–अभी, मेरी आँखों के सामने से गायब हुए। तब कहीं से, आगे बढ़ने का आदेश देते हुए, उनकी आवाज आई। जैसे ही मैंने ऐसा किया, मैंने पाया कि जो चोटी के चेहरे पर लटकती हुई, मॉस (moss) की पट्टी दिखाई देती थी, वह, वास्तव में, कुछ ढीली (liands) थी। मैं समीप पहुँचा, और लामा ने, मेरे लिए, गिरे पड़े पत्तों को एक बगल से किया, ताकि मैं प्रवेश कर सकूँ। वह मुड़े और मैंने डर में अपने आसपास घूरते हुए, उनका पीछा किया। ये एक चौडी, सुरंग दिखाई दी और किसी स्रोत से, जिसे मैं नहीं समझ पाया, प्रकाश आ रहा था। स्वयं को अपनी शिथिलता के लिए फटकारते हुए, मैंने उनके दूर जाते हुए कदमों का पीछा किया, क्योंकि मैंने ठीक से महसूस किया, कि यदि मैं अत्यधिक धीमा जा रहा होऊं, तो मैं इस पर्वतीय सुरंग से, उनकी नजर से गुम हो सकता हूँ।

कुछ समय के लिए, कई बार हम गुप्प अंधेरे में, जो मुझे एक हल्के हाथ से दीवार को एक बगल से रगड़ते हुए महसूस करना था, चलते गये। मैं गड्ढ़ों के बारे में, या नीचे लटकती हुई चट्टानों से परेशान नहीं था, क्योंकि मेरे शिक्षक मुझसे बहुत बड़े थे और यदि उन्हें जगह मिल सकती थी, तब ठीक है, मेरे लिये भी जगह होगी ही।

लगभग, कुछ तीस मिनट के चलने के बाद, कईबार, एक दमघोंटू, मृत हवा के वातावरण में, और कईबार पर्वत की हवाओं का आलिंगन करते हुए, हम आये, तो हमें एक प्रकाशित क्षेत्र दिखाई दिया। मेरे शिक्षक रुक गये। मैं भी रुका, और जब मैं उनके पास पहुँचा, और मैंने आश्चर्य में अपनी

ओर देखा, तो मैंने अपनी सांसें थाम लीं। ये एक बड़ा सा प्रकोष्ठ दिखाई दिया, मैं समझता हूँ, पचास या साठ फुट का, आरपार, और दीवारों पर वहाँ अजीब सी नक्काशियाँ थीं, नक्काशियाँ, जिन्हें समझने में, मैं असफल रहा। ये बहुत अनजान लोग दिखाई दिये, उल्लेखनीय कपड़ों को पहने हुए, जो उन्हें सिर से पैर तक, या, अधिक सत्यता के साथ, गर्दन से पैरों तक ढकते हुए दिखाई दिये, क्योंकि उनके सिरों पर, एक पारदर्शी प्रतीत होने वाला, प्रतीकात्मक ग्लोब था। हमारे ऊपर, जैसे ही मैंने ऊपर देखा, एक बड़ा घन और उसके अंत में, जो मैं समझ सका, पड़ौस में ऊन के समान तैरता हुआ बादलों का एक गोला प्रतीत हुआ।

मेरे शिक्षक ने मेरे विचारों को तोड़ाः ''ये बहुत भयानक क्षेत्र है, लोबसांग,'' उन्होंने मुझे बताया, ''हजारों, हजार साल पहले, एक शक्तिशाली सभ्यता, इस पृथ्वी पर थी। इसे एटलांटिस का समय जाना जाता है। पश्चिमी जगत, जिसमें कुछ वर्षो बाद तुम जाओगे, के कुछ लोग एटलांटिस को एक किवंदती (legend) के रूप में, किसी महान कहानीकार के सपनों के द्वारा बनाया गये एक काल्पनिक स्थान के रूप में समझते हैं। ठीक है, वे प्रफुल्लित हुए, ''खेद के साथ'' मुझे तुम्हें बताना है कि अनेक लोग सोचेंगे कि तुमने अपने खुद के सत्य अनुभवों का स्वप्न देखा है परंतु कभी ध्यान मत देना, तुम्हारे ऊपर कितना भी शक क्यों न किया जाये, कभी ध्यान मत देना, कितना भी अधिक अविश्वास तुम्हारे प्रति क्यों न किया जाये, तुम सत्य को जानते हो, तुम सत्य के साथ जिओगे। और तुम्हारे पास, यहाँ इस प्रकोष्ठ में प्रमाण हैं, कि एटलांटिस था।''

वे मुडे, और इस अनजान सुरंग में और आगे का रास्ता दिखाया। एक बार के लिए, हम स्याही जैसे परम अंधकार में चले, पुरानी, मृत वायु में, हमारी सांस नीरस और कठिन हो गई। तब फिर ताजगी आई, कहीं से एक सुखद ठंडी हवा चल रही थी। मृत्यु का भाव गायब हो गया, और शीघ्र ही, हमने अपने सामने एक प्रकाश की चमक देखी। मैं सुरंग में, अपने सामने, अपने शिक्षक की, प्रकाश के द्वारा फूली हुई, चमकती हुई, आकृति को देख सकता था। अब अपने फेफड़ों में ताजी हवा के साथ, मैंने उनका साथ पकड़ने की जल्दी की। फिर से, वह बड़े प्रकोष्ठ में रुक गये।

यहाँ काफी अनजान चीजें थीं। किसी ने, स्पष्टरूप से, चट्टान में कुछ बड़े खाने (shelves) बनाये थे, और उन खानों में कुछ अजीब सी कलाकृतियाँ (artifacts) थीं, जो कुछ भी हों, मेरे लिए, निरर्थक थीं। मैंने उन्हें देखा और धीमे से उनमें से कुछ को छुआ। वे मुझे मशीनें दिखाई दीं। वे बड़ी चक्कतियाँ थीं, उन पर बड़े बड़े अजीब खांचें बने हुए थे। कुछ चक्कतियाँ पत्थर की दिखाई दीं, और वे उनकी सतह पर लहराती हुई तरंग, और चक्ती के केन्द्र में एक छेद के साथ, शायद, छः फीट आरपार वाली थीं। इसका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था। इसलिए मैं फलहीन अनुमान से (बाहर) निकला, और मैंने चित्रों और नक्काशियों की, जो दीवारों को सजाती थीं, की जाँच की। वे अनोखे चित्र थे, बड़ी बिल्लियाँ, जो दो पैरों पर चलती थीं, अंदर सिकुड़ी हुई बिल्लियों के साथ, पेड़ों के घर। वहाँ चीजें थीं, जो हवा में तैरती हुई लगीं, और नीचे, जिस पर स्पष्टरूप से, जमीनी मानव, ऊपर की ओर, इन चीजों पर इशारा कर रहे थे। ये सब मुझसे इतना ऊपर था कि इसने मेरे सिर में दर्द कर दिया।

मेरे शिक्षक ने कहा, ''ये वे रास्ते हैं, जो पृथ्वी के अंत तक पहुँचते हैं। जैसे कि हमारे पास होती है, लोबसांग, वैसे ही पृथ्वी की भी एक रीढ़ (spine) है, परंतु पृथ्वी की रीढ़, चट्टानों की है। हमारी रीढ़ में एक सुरंग होती है, जो हमारे मामले में, द्रव से भरी होती है, और हमारी सुषुम्ना नाड़ी (spinal cord), उसके बीच में से जाती है। ये पृथ्वी की रीढ़ है, और एटलांटिस के दिनों में, जब वे जानते थे कि चट्टानों को, ऊष्मा के उत्पादन के बिना, पानी की तरह कैसे बहाया जाये, ये सुरंग मानव–निर्मित थी। ''इस चट्टान को देखो,'' उन्होंने मुड़ते हुए, और दीवार पर धौल जमाते हुए कहा। ''ये चट्टान, लगभग पूरी कठोरता से जुड़ी हुई है। यदि तुम एक बड़ा पत्थर लो और इस चट्टान पर मारो, तो तुम, सिवाय पत्थर को, जो चूर चूर हो सकता है, इसे किसी भी प्रकार का, कोई नुकसान नहीं पहुँचाओगे।

मैंने बहुत विस्तार से यात्रायें की हैं और मैं जानता हूँ कि ये चट्टानी रीढ़, उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक विस्तारित है।''

उन्होंने इशारा किया कि हमें बैठना चाहिए, इसलिए हम छेद, जो खुली हवा तक विस्तारित होता था, और जिसमें होकर हम आकाश के अंधकार को देख सकते थे, के नीचे फर्श पर पालथी मारकर बैठ गये।

लोबसांग, मेरे शिक्षक ने कहा, ''इस पृथ्वी पर अनेक चीजें हैं, जिन्हें लोग नहीं समझते। इस पृथ्वी के अंदर भी बहुत चीजें हैं, क्योंकि सामान्य विश्वास के विपरीत, वास्तव में पृथ्वी खोखली है, और वहाँ पृथ्वी के अंदर रहने वाले लोगों की दूसरी प्रजाति है। वे हमारी तुलना में अधिक विकसित हैं और कई बार उनमें से कुछ विशेष वाहनों में, पृथ्वी के बाहर आ जाते हैं। वे रुके, और उन्होंने चित्रों में से अनोखी चीज की ओर इशारा किया, और तब उन्होंने कहना जारी रखा, ''ये वाहन पृथ्वी में से बाहर आते हैं और वे पृथ्वी की बाहरी सतह पर यह देखने के लिए कि लोग क्या कर रहे हैं, आसपास उड़ते हैं, और ये सुनिश्चित करने के लिए कि उन लोगों की मूर्खता के कारण, जिन्हें वे ''बाहर वाले'' कहते हैं, उनकी खुद की सुरक्षा तो जोखिम में नहीं पड़ रही।

पृथ्वी के नीचे, मैंने सोचा, रहने के लिए कितना अजीब स्थान है। नीचे वहाँ, भयानक रूप से अंधेरा होना चाहिए, मैं अंधेरे में रहने के विचार को पसंद नहीं करता, मक्खन का दीपक कितना अधिक सुखदायक होता है। मेरे शिक्षक, जैसे ही उन्होंने मेरे विचारों को पकड़ा, मेरे ऊपर हँसे और उन्होंने कहा, ''ओह, पृथ्वी के अंदर, अंधेरा नहीं है, लोबसांग। उनके पास, लगभग हमारे जैसा एक सूर्य है, परंतु उनका (सूर्य) अत्यधिक छोटा और अत्यधिक शक्तिशाली है। उनके पास, हमारी तुलना में बहुत ज्यादा है; वे बहुत अधिक बुद्धिमान हैं। परंतु अपने सामने के दिनों में, तुम पृथ्वी के अंदरूनी भाग के लोगों के बारे में अधिक जानोगे। आओ!''

वह अपने पैरों पर खड़े हुए और सुरंग, जो मैंने नहीं देखी थी, में होकर दूर गये, एक सुरंग दायीं ओर को बंटी हुई, इसमें नीचे ढाल था, नीचे। अंधेरे में, हम अनंत रूप से चलते हुए लगे। तब मेरे शिक्षक ने जहाँ मैं था, वहीं रुकने का आदेश दिया। मैं उन्हें खेलते हुए, और आसपास टटोलते हुए सुन सकता था और वहाँ, एक चट्टान चलाये जाने के समान, एक खटपटाहट हुई, जो सुनाई दी। तब जैसे ही उन्होंने चकमक को स्टील के ऊपर घिसा, वहाँ कुछ चिनगारियाँ हुईं। जैसे ही एक जलावन जला, वहाँ एक धुंधली सी चमक हुई, उन्होंने इसे फूंका और तब जैसे ही जलावन छोटी लपटों में फूटा, उन्होंने किसी प्रकार के डंडे के सिरे से, इसे ज्वाला में खिसकाया, जहाँ ये जोरदार प्रकाश के साथ फूट पड़ा।

उन्होंने अपनी मशाल को, अपने से थोड़ा सा ऊपर, एक भुजा की लंबाई पर रखा और मुझे अपने बगल से आने के लिए कहा। मैंने ऐसा किया और उन्होंने अपने सामने की दीवार की ओर इशारा किया। सुरंग समाप्त हो गई और हमारे सामने एकदम चिकनी अभेद्य सतह थी, जो ज्वाला की लपलपाती लौ में, तेजी से चमक रही थी। ''लोबसांग, वह'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''इतनी कठोर है, हीरे जैसी, वास्तव में, हम में से कुछ, वर्षों पहले, एक हीरे के साथ यहाँ आये थे, और हमने सतह को खुरचने का प्रयास किया था, और हमने हीरे को बरबाद कर लिया। ये एक रास्ता है, जो एक अंदर की दुनियाँ को ले जाता है। हमारा विश्वास है, ये अंदर के विश्व के लोगों के द्वारा, एक बड़ी बाढ़ के बीच, जो इस पृथ्वी पर आई थी, अपनी सभ्यता को बचाने के लिए बंद किया हुआ था। हमारा विश्वास है कि यदि ये खुला होता, अर्थात् इसे खोला जा सकता होता, तो लोग उमड़ते हुए बाहर आ जाते, और हमको उनकी अपनी निजता में घुसपैठ करने का दुस्साहस करने के लिए, अभिभूत कर देते। उच्च लामा वर्ग में से हम, अक्सर इस स्थान पर यात्रा करते हैं, और नीचे वाले उन लोगों से, दूरानुभूति द्वारा संप्रेषण करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने हमारा संदेश सुन लिया है, परंतु वे हमारे साथ कुछ नहीं

करना चाहते, वे हमें बताते हैं कि हम युद्ध प्रिय हैं, कि हम विश्व को विस्फोटित करने का, शांति को बरबाद करने का, प्रयास करते हुए, अज्ञान बच्चे हैं। वे हमें दुरानूभूति से बताते है कि वे हमारे ऊपर नियंत्रण रख रहे हैं, और यदि आवश्यक हुआ, तो वे हस्तक्षेप करेंगे। इसलिए हम यहॉ से आगे नहीं जा सकते, ये समाप्ति है, ये ऊपर वाले और नीचे वाले विश्वों के बीच, बंद रेखा है, ठीक है, हम प्रकोष्ठ में, वापस जायेंगे।''

उन्होंने सावधानीपूर्वक ज्वाला को बुझाया और हमने अपने वापिसी का रास्ता अनुभव किया, जहॉ छत के छेद में होकर, ऊपर के आकाश से, नीचे की ओर चमकती हुई रोशनी आ रही थी।

उस प्रकोष्ठ में, लामा ने फिर से, एक दूसरी दिशा में इशारा किया और कहा, ''यदि हमारे पास शक्ति और समय होता, तो हम उस सुरंग में होते हुए, सीधे दक्षिणी ध्रुव की ओर जा सकते थे। हम में से कुछ, अपने साथ काफी खाना ले जाते हुए और रात में, या जिसको हमने रात समझा, शिविर लगाते हुए, मीलों तक गये हैं। हम छः महीनों से अधिक तक, लगातार असीम मीलों तक चलते रहे और कई बार, हम एक सुरंग में होकर ऊपर आये और हमने पाया कि वास्तव में, हम एक अनजान देश में हैं, परंतु हमने अपने आपको प्रकट करने का दुस्साहस नहीं किया। निकास, हमेशा ही, बड़ी–बड़ी सावधानीपूर्वक, छद्‌म आवरण में छिपाये हुए थे।''

हम नीचे बैठे और अपना थोड़ा सा खाना खाया। हम लंबे समय तक चलते रहे थे और मुझ में थकान होती जा रही थी, यद्यपि, मेरे शिक्षक थकान, और सामान्य थकान से भी, प्रभावशून्य (immune) दिखाई देते थे। उन्होंने मुझसे बात की, और सब प्रकार की चीजों को बताया। उन्होंने कहा, ''जब मुझे तुम्हारी तरह प्रशिक्षण दिया जा रहा था, जैसे कि तुम्हें अभी दिया जा रहा है, मैं भी छोटी मृत्यु के उत्सव में से होकर गुजरा था, और मुझे आकाशीय अभिलेख दिखाये गये थे। मुझे वे चीजें दिखाई गईं, जो हो चुकी थीं। तापक्रम गर्म था, शायद अधिक ही गर्म, और वहॉ अत्यधिक वनपस्तियॉ, और खजूर के पेड़ और सभी प्रकार के अजीब अजीब फल थे, जो उस समय मेरे लिये कोई अर्थ नहीं रखते थे, परंतु आकाशीय अभिलेख से मैंने एक सत्यतापूर्ण आश्चर्यजनक सभ्यता को देखा। मैंने आकाश में, एक अजीब जहाज देखा, मैंने उल्लेखनीयरूप से, लोगों को शंकु के आकार वाले सिरों के साथ देखा, जो आसपास चल रहे थे, जो अपना मनोरंजन कर रहे थे, जो प्यार कर रहे थे, परंतु युद्ध भी कर रहे थे। तब जैसा मैंने इस अभिलेख में देखा, पूरा देश हिला और आकाश काला हो गया और बादल इतने काले थे, जैसे कि रात, उनकी अंदर की तरफ चमकी और खेल के साथ लहरायी। पृथ्वी कांपी और खुल गई। ऐसा लगा कि हर चीज आग थी। तब समुद्र नयी खुली भूमि में दौड़ा, और वहॉ अत्यधिक विस्फोट हुए, विस्फोट के बाद विस्फोट, ऐसा लगा कि सूर्य स्थिर हो गया और चंद्रमा और नहीं उगा। लोग अत्यधिक पानी की बाढ़ से, अभिभूत होते जा रहे थे, मौत के लिए ज्वालाओं से झुलस रहे थे, जो मैं जानता हूँ, कहीं से प्रकट होती नहीं दिखती थीं, परंतु ज्वालायें, एक अधम जामुनी सी चमक से लपलपा रहीं थीं, और जैसे ही उन्होंने लोगों को छुआ, उनकी हड्डियों से, मांस, एक आवाज के साथ जमीन पर गिरने के लिए, अस्थिपंजर को छोड़ते हुए, गिर गया।

''दिन के बाद दिन गुजरते गये और खलवली बढ़ती गयी, यद्यपि किसी ने कहा होता कि ऐसी कोई चीज असंभव थी, और तब वहॉ एक शानदार, बहुत कठोर विस्फोट हुआ और हर चीज अंधेरे में बदल गई। हर चीज इतनी काली थी जैसे कि काजल, जो न काटी गई बत्तियों के जलाने पर, मक्खन के अनेक दीपकों से आता है।

''कुछ समय बाद, जिसकी मैं गणना नहीं कर सका,'' उन्होंने कहा, ''उदासी हल्की होती गई, अंधेरा गायब हो रहा था, और जब अंततः दिन का प्रकाश प्रकट हुआ, मैं नहीं जानता, अत्यधिक आतंक के साथ, कितने लंबे समय बाद, मैंने उस चित्र को देखा। अब मैंने पाया कि अब मैं एकदम दूसरे

भूपरिदृश्य को देख रहा हूँ, अब वहॉ समुद्र नहीं था, पर्वतों की एक वलय, अंधेरे में उछल चुकी थी, और उसने उसे, जो पहले से सर्वाधिक उच्च सभ्यता का शहर था, घेर लिया। मैंने स्वयं के आसपास मोहित हुए आतंक में देखा, समुद्र जा चुका था, समुद्र, ठीक है, अब वहॉ कोई समुद्र नहीं था, बदले में वहॉ पहाड़ थे, पर्वतों की वलय के ऊपर वलय। अब मैं बता सकता था कि हम हजारों फुट ऊँचे थे और यद्यपि, मैं आकाशीय अभिलेखों को देख रहा था, मैं उन्हें ठीक से अनुभव भी कर रहा था। मैं हवा के विरलेपन को जान सका, यहॉ जीवन का कोई चिन्ह, कोई चिन्ह कैसा भी क्यों न हो, नहीं था, और जैसे ही मैंने चित्र को गायब होते देखा और अपने आपको वहॉ वापस पाया, जहॉ से मैं शुरू हुआ था, पोटाला के पर्वतों के गहनतम स्तरों पर, जहॉ मैं छोटी मृत्यु के उत्सव में होकर गुजर रहा था और मुझे अधिक जानकारी दी गई थी।''

कुछ समय के लिए, हम वहॉ भूतकाल पर ध्यान लगाकर बैठे, और मेरे शिक्षक ने मुझे कहा, ''मैं तुम्हें ध्यान लगाते हुए, या ध्यान लगाने का प्रयास करते हुए देखता हूँ। अब यहॉ ध्यान लगाने की दो अच्छी विधियॉ हैं, लोबसांग। तुमको संतुष्ट होना चाहिए, तुमको शांत होना चाहिए। तुम विक्षुब्ध मन से ध्यान नहीं लगा सकते और तुम लोगों की भीड़ में ध्यान नहीं लगा सकते थे। तुमको अकेला या केवल एक आदमी के साथ होना चाहिए, जिसे, तुम प्यार करते हो।''

उन्होंने मेरा सम्मान किया और तब कहा, ''तुमको सदैव ही किसी काली चीज को, या किसी चीज को, जो सफेद है, देखना चाहिए। यदि तुम जमीन पर देखोगे, तो तुम्हारा ध्यान कंकड़ी के एक दाने से विचलित हो जायेगा या तुम किसी कीट के द्वारा दुगने परेशान हो सकते हो। सफलता पूर्वक ध्यान लगाने के लिए तुमको सदैव ही उसपर नजर टिकानी चाहिए, जो ऑखों को कोई आकर्षण प्रस्तुत नहीं करती हो और या तो पूरी काली या शुद्ध सफेद हो। तुम्हारी ऑखें तब पूरे मामले से परेशान हो जाती हैं, और मानो कि वे मस्तिष्क से अलग हो जाती हैं, इसलिए तब मस्तिष्क के पास, परेशान करने वाला कुछ भी न होने के कारण, ये प्रकाशीयरूप से जो तुम्हारा अवचेतन चाहता है, उसके प्रति आज्ञापालन के लिए मुक्त होता है और इस प्रकार यदि तुमने अपने अवचेतन को निर्देशित किया है कि तुम ध्यान लगा रहे हो, तुम लगा लोगे। उस प्रकार के ध्यान में तुम पाओगे कि तुम्हारे संज्ञान अधिक प्रखर और दृष्टियॉ अधिक पैनी हो गयी हैं, और वही ध्यान वास्तव में, नाम लेने लायक है। आने वाले वर्षों में, जो तुम तक आयेंगे, तुम कुछ मूल्य पर प्रस्तावित ध्यान की अनेक प्रकार की विधियों का सामना करोगे, परंतु, वह ध्यान नहीं है, जैसा हम इसे समझें और न ही वह ध्यान है, जिसे हम चाहते हैं, ये कुछ वैसा है जिसके साथ सभ्यतावादी खिलवाड़ करते हैं, और इसका कोई मूल्य नहीं है।''

ऐसा कहते हुए वह विस्मय करते हुए, अपने पैरों पर खड़े हुए, ''हमको वापस जाना चाहिए क्योंकि दिन काफी निकल आया है। हमें दूसरी रात भी पहाड़ों में बितानी पड़ेगी क्योंकि ये चाकपोरी जाना प्रारंभ करने के लिए अत्यधिक विलंबित है।''

उन्होंने सुरंग में नीचे ओर यात्रा प्रारंभ की और मैं अपने पैरों पर उछला और तेजी से उनके पीछे चला।

इस स्थान में, जहॉ आंतरिक विश्व के लोग, या जो कुछ भी वे अपने आपको कहना चाहें,

शायद, अचानक नजर आ सकते थे, और मुझे अपने साथ ले जा सकते थे, छोड़े जाने की, मेरी कोई इच्छा नहीं थी। मैं नहीं जानता था कि कैसा होगा, मैं नहीं जानता था कि वे मुझे किस प्रकार पसंद करेंगे, और निश्चितरूप से, मैं वहाँ, अंधेरे स्थान में, अकेला नहीं रुकना चाहता था। इसलिए मैंने जल्दी की और अंत में, हम फिर से प्रवेशद्वार पर, जिससे हम प्रविष्ट हुए थे, पहुँच गये।

घोड़ा और पोनी शांति के साथ आराम कर रहे थे, हम उनके बगल से बैठ गये और अपने खाने के लिए सामान्य तैयारियाँ कीं। प्रकाश पहले से ही दूर जा चुका था, घाटी का अधिकांश भाग अंधेरे में था। पश्चिमी सूर्य, हमारी ऊँचाई पर, अभी भी, हमारे ऊपर चमक रहा था, परंतु गोलाकार वस्तु, हमारे पास लौटने से पहले, विश्व के दूसरे हिस्से को जगमगाने के लिए, हमेशा की अपेक्षा अधिक गहराई में, पर्वतों की गहराई में, अपने निचले रास्ते पर, स्वयं डूब रही थी। कुछ छोटी बातों के बाद, हमने अपने आपको फिर से कम्बलों में लपेट लिया, और फिर अपने आपको नींद में सुला लिया।

अध्याय–पॉच

चाकपोरी में जीवन चहलपहल भरा था। चीजों की मात्रा ने, जो मुझे सीखनी पड़ीं, मुझे वास्तव में, झटका दिया; जड़ीबूटियॉ–जहॉ वे उगती थीं, जब हम उन्हें इकट्ठा करते थे, और सुनिश्चित होते थे, कि यदि उन्हें गलत समय पर इकट्ठा किया गया, तो वे पूरी तरह से निरर्थक होंगी। वह, जो मुझे पढ़ाया गया था, जड़ीबूटी विज्ञान के महान रहस्यों में से एक था। पौधे, या पत्तियॉ या छालें, या जड़ें केवल दो या तीन दिनों के समय में ही, दक्षतापूर्वक इकट्ठी जा सकती थीं। चंद्रमा सही होना चाहिए, नक्षत्र सही होने चाहिए और तब समय भी सही होना चाहिए। इन जड़ीबूटियों को इकट्ठा करते समय, किसी को शांत महसूस करना चाहिए, क्योंकि मुझे ऐसा बताया गया था कि कोई, जिसने जड़ीबूटियों को इकट्ठा किया था, यदि वह खराब मनोदशा में था, तो जड़ीबूटियॉ लेने लायक नहीं रहेंगीं।

तब हमें चीजों को सुखाना पड़ता था। ये काफी भारी काम था। जड़ीबूटियों के केवल कुछ भाग ही उपयोगी होते थे। कुछ में केवल पत्तियों के ऊपरी किनारों को ही हटाया जाना था, दूसरों में केवल छाल या डंडियों की आवश्यकता होती थी, और हर पौधे या जड़ीबूटी के साथ, उसके अपने खास तरीके से व्यवहार किया जाता था, और आदर के साथ सम्मान दिया जाता था।

हमने छालें लीं और उन्हें इस उद्देश्य के लिये, विशेषरूप से साफ किये गये हाथों के बीच उनकी स्वयं की कठिन परीक्षा के उद्देश्य से रगड़ा, ताकि छाल कुछ घटकर छोटी, एक निश्चित आकार की, एक प्रकार का दानेदार चूर्ण रह जाये, और तब हर चीज को, धब्बारहित, साफ फर्श के ऊपर डालना पड़ता था। इस फर्श पर कोई पोलिश नहीं, केवल रगड़ना, रगड़ना, रगड़ना जबतक कि वहॉ धूल बिल्कुल साफ न हो जाये, कोई धब्बा नहीं, कोई चिन्ह नहीं। तब हर चीज, जड़ीबूटियों के मूल्य, जैसे पहले थे, उसके अंदर वैसे ही बने रहने देने, और ''सुखाने तथा बंद करने'' के लिए, प्रकृति के लिए छोड़ दी जाती थी।

हमने जड़ीबूटी वाली चाय बनाई, अर्थात् तर की हुई जड़ीबूटियों को डाला, और मैं कभी नहीं समझ सका कि लोग अप्रिय चीजों को अपने गले के नीचे कैसे उतार सकते थे। ये एक सूक्ति जैसी दिखाई दी कि सबसे खराब स्वाद और सबसे जबरदस्त गंध वाली दवा, उतनी ही अधिक लाभकारी होगी, और मैं अपने खुद के निरीक्षण से कहूँगा कि यदि कोई दवा पर्याप्तरूप से खराब स्वाद वाली है, तो बेचारा दुखी मरीज, उस दवा को लेने के बजाय, डर के कारण अच्छा हो जायेगा। ये वैसा ही है, जैसे कि जब कोई दंत चिकित्सक के पास जाता है, तो उसका दर्द गायब हो चुका होगा, ताकि कोई सीढ़ियों पर आश्चर्य करते हुए कि क्या किसी को इसमें होकर जाना चाहिए, संकोच करे। ये मुझे, हाल ही के एक दूल्हे, एक कमजोर और आशंकित नौजवान, जो अपनी बहुत बहुत गर्भवती वधू को, ''क्योंकि उसका समय पूरा हो चुका था,'' अस्पताल के लिये, साथ में जाने का ध्यान दिलाता है। जैसे ही वह स्वागत मेज की ओर मुड़ा, उसने कहा, ''ओह जी, मधु, क्या तुम सुनिश्चित हो कि तुम वास्तव में, इसमें से गुजरना चाहती हो?''

एक विशेष विद्यार्थी, एक वह, जिसे तेजी से, अधिक पढ़ना था, के रूप में, मैं मात्र चाकपोरी तक सीमित नहीं था। मेरा समय पोटाला में अध्ययन के लिए भी समर्पित था। वहॉ सब प्रकार के अत्यधिक प्रबुद्ध लामा मिलते थे, उनमें से हर एक मुझे अपनी विशेषता को सिखाता था। मैंने भिन्न भिन्न प्रकार की चिकित्साओं को सीखा। मैंने सूचीवेध (acupuncture) चिकित्सा को सीखा, और बाद के वर्षों में, अनेक वर्षों के अनुभव के भार के साथ, मैं अनिवार्यतः इस निष्कर्ष पर पहुॅचा कि पूर्व के उन लोगों के लिये, जो लंबे समय तक सूचीवेध चिकित्सा की परिस्थितियों में ढाले गये हैं, वास्तव में, सूचीवेध चिकित्सा, एक आश्चर्यजनक चीज थी। परंतु जब, जैसा मैंने चीन में पाया, दुर्भाग्यवश, आपको व्यवहार करने के लिए, शंकालु पश्चिमी लोग मिलते हैं, वे किसी चीज, जो उनके ''अपने स्वयं के भगवान की भूमि से'' यहॉ नहीं आई हो, के प्रति अपनी खुद की अनास्थाओं के द्वारा सम्मोहित किये गये थे।

वहाँ पोटाला के पहाड़ों में नीचे, गहरे, गहराई में देखे जाने वाले कुछ पवित्र मार्ग थे। वहाँ काफी नीचे, एक बड़ी गुफा थी, जो एक अंतर्देशीय समुद्र दिखाई देती थी। वह, मुझे बताया गया था कि, बहुत लंबे समय पहले का अवशेष थी, जब तिब्बत, समुद्र के बगल से, एक किसानी क्षेत्र था। निश्चितरूप से, उस बड़ी गुफा में, मैंने अजीब अवशेष, कल्पनातीत प्राणियों के अस्थिपंजर देखे, जिनको मैंने अपने जीवन में, बहुत बहुत बाद में, उनका मास्टोडोंस (Mastodons)[4], डायनोसोर (dinosaurs) और दूसरे असाधारण विदेशी जंतु (exotic fauna) होना पहचाना।

तब अनेक स्थानों में, कोई, प्राकृतिक क्रिस्टल के बड़े बड़े खंड पाता, और कोई प्राकृतिक क्रिस्टलों में विभिन्न प्रकार की समुद्री खरपतवार, और यदाकदा, एक स्पष्ट क्रिस्टल के अंदर ठीक तरह से संरक्षित की गई, पूरी तरह से जुड़ी हुई एक मछली को देख सकता था, ये वास्तव में, भूतकाल के संदेशों के रूप में, पवित्र वस्तुऐं मानी जाती थीं।

पतंग उड़ाना एक कला थी, जिसमें मुझे महारत हासिल थी। वर्ष में एकबार, हम विरली जड़ीबूटियों को इकट्ठा करने, और सामान्यतः मठ के दुष्कर जीवन से पूरी तरह अलग, मनोरंजन के लिए ऊँचे पर्वतों में गये। हम में से कुछ, अधिक अक्खड़, आदमियों को उठाने वाली पतंगों में उड़े, और मैंने सोचा कि यहाँ वह था, जो भविष्यवाणियों में पहले ही वर्णित किया जा चुका था, परंतु तब ये मेरी समझ में आया और मैंने अनुभव किया कि ये आदमी को उठाने वाली पतंगें नहीं हो सकतीं, क्योंकि, ये पतंगें रस्सों के द्वारा पृथ्वी से जुड़ी रहती थीं, और यदि रस्सा टूट जाये या अनेक भिक्षुओं की पकड़ से छूट जाये, तो पतंग गिर पड़ेगी और इसमें सवार व्यक्ति की मृत्यु हो जायेगी।

अंतरतम, हमारे तेरहवें दलाईलामा, के साथ काफी संख्या में मेरे साक्षात्कार हुए, और मैंने उनसे ऐसा प्यार और आदर अनुभव किया। वह जानते थे कि कुछ अधिक वर्षों में, तिब्बत एक गुलाम राज्य होगा, परंतु ''देवताओं ने भविष्यवाणी कर दी थी'' और देवताओं को माना जाना चाहिए। वहाँ प्रतिरोध की कोई यथार्थ आकृति नहीं बन सकी, क्योंकि तिब्बत में, कोई वास्तविक हथियार नहीं थे। आप एक रायफल वाले किसी आदमी का विरोध नहीं कर सकते थे, जबकि आपके पास एक प्रार्थनाचक्र या मनकों की माला हो।

मैंने महान तेरहवें से, अपने निर्देश, अपने पवित्र आदेश प्राप्त किये। मैंने मार्गदर्शन और सलाह, तथा प्रेम और समझदारी, जिस के लिये मेरे खुद के मातापिता ने पूरी तरह से मना कर दिया था, प्राप्त की और मैंने तय किया कि जो आता है, उसे आने दो, मैं अपना सर्वोत्तम करूँगा।

वहाँ समय रहे थे, जब मैंने अपने पिता को देखा था। हर बार वह, जमे हुए चेहरे के साथ दूर मुड़ गये, मानो कि मैं निम्नों से निम्न, उनके अपमान के पीछे था। एकबार, पोटाला में अपने रुकने की समाप्ति के लगभग करीब, मैं अपने मां–बाप के घर गया था। मां ने, शुद्ध रूप से एक आगंतुक लामा के रूप में, अपनी अधिकतर औपचारिकता के साथ, उस तरीके के द्वारा, जिस तरह से उसने मेरे साथ व्यवहार किया, मुझे परेशान कर दिया। अपने विश्वास के सच्चे पिता ने मेरा स्वागत नहीं किया और अपने आपको अपने अध्ययनकक्ष में बंद कर लिया, यशोधरा, मेरी बहन ने मुझे देखा, मानो मैं कोई एक सनकी या किसी विशेष दुस्वप्न से उठायी गयी मनगढ़त कहानी होऊं।

अंततः मुझे, फिर से अंतरतम के घरों में बुलाया गया और मुझे अधिक बताया गया, जो कि मैं यहाँ दोहराना नहीं चाहता। एक चीज, जो उन्होंने मुझे बताई वह थी कि, ठीक अगले हफ्ते मैं एक चिकित्सा विद्यार्थी के रूप में, चुंगकिंग विश्वविद्यालय, चीन में जाऊँगा परंतु मुझे निर्देश दिये गये थे कि मैं एक दूसरा नाम ले लूं, मैं अपने खुद के नाम, रंपा का उपयोग नहीं कर सकता था, अन्यथा चीनी

---

4 अनुवादक की टिप्पिणी : मास्टोडोंस (Mastodons) एक लुप्त प्राणी प्रजाति है, जो हाथियों की दूर की संबंधी है, जो उत्तरी और मध्य अमेरिका में रहती थी और यह लगभग 10 से 11 हजार वर्ष पूर्व लुप्त हो गई। मास्टोडोंस मुख्यतः जंगल में रहने वाले जानवर थे और झुण्ड में रहते थे। इसका भोजन, बहुत कुछ आजकल के हाथियों जैसा था।

विद्रोहकारियों के निश्चित तत्व, मुझे पकड़ लेते और मोलभाव के एक हथियार के रूप में मेरा इस्तेमाल किया जाता। उस समय, वहॉं चीन में, सरकार को समूल उखाड़ देने के लिये समर्पित, एक उपद्रवी दल अस्तित्व में था और जो अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, किसी भी तरीके को स्वीकार करने के लिए तैयार था। इसलिए मुझे एक नाम लेने के लिए कहा गया था।

अब, कोई बेचारा तिब्बती लड़का, एक जो पुरुषत्व की ओर बढ़ रहा है, स्वीकार्यरूप से (admittedly), वह एक चीनी नाम कैसे ले सकता है, जबकि वह चीन के बारे में कुछ भी नहीं जानता? मैंने उस भयकारी प्रश्न के ऊपर चिंतन किया, और तब बिन बुलाये, बिना आशा के, एक नाम मेरे दिमाग में प्रकट हुआ। मैं अपने आपको को क्यूओन सुओ (Kuon Suo) कहूॅंगा, जिसका चीन की एक जुबान में अर्थ होता है, पहाड़ का पुजारी। निश्चितरूप से ये एक उचित नाम था। परंतु ये एक नाम था, जिसे पश्चिमी लोग पुकारने में मुश्किल अनुभव करते थे, अर्थात् और इसलिये (that is or so), शीघ्र ही क्यूआन के नाम से संक्षिप्त हो गया।

ठीक है, नाम तय हो गया, मेरे सभी कागजात व्यवस्थित थे। मुझे पोटाला से, अपनी स्थिति और मानकों की, जहॉं मैं पहुंचा था, प्रशंसा करते हुए, विशेष कागजात दिये गये थे। जैसा मुझे बताया गया था, और जैसा बाद में, मैंने एकदम सही पाया, पश्चिमी लोग किसी चीज का विश्वास नहीं करेंगे, जबतक कि वह ''कागज में (लिखित में)'' न हो या महसूस किया जा सके, या टुकड़ों में फाड़ा जा सके। इसलिए मेरे कागजात तैयार किये गये और मुझे महान समारोह के साथ दिये गये।

शीघ्र ही वह दिन आया, जबकि मुझे पूरे रास्ते सवार होकर, चुंगकिंग (Chungking) जाना पड़ा। मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप और मैंने, एक अत्यंत दुखद विदाई ली। मैं जानता था, मैं उन्हें फिर नहीं मिल पाऊॅंगा, जबकि वह शरीर में हों। उन्होंने मुझे अनेक आश्वासन दिये, कि मैं उनसे अक्सर, सूक्ष्मशरीर में मिलूंगा।

मेरे साथ, चीनी डाकुओं से मेरी सुरक्षा के लिए, और चुंगकिंग में मेरी सुरक्षित पहुॅंच को सूचित करने योग्य बनाने के लिए, मेरे साथ जाने वाले लोगों का एक दल था। हमने यात्रा प्रारंभ की, और लगातार साथसाथ सवार होकर, ल्हासा के पठार के उच्चदेशों (highlands) में होते हुए, हम नीचाई वाले स्थानों में एक स्थान, जो असाधारण विदेशी वनस्पति (exotic flora), आश्चर्यजनक सदाबहार में लगभग भूमध्यरेखीय (tropical) था, उतरे। हम अनेक मठों में होकर गुजरे, और यदि वे हमारे रास्ते पर, किसी उपयुक्त समय में होते, हमने काफी जल्दी जल्दी (frequently), उनमें रातें गुजारीं। मैं एक लामा था, वास्तव में, मैं एक मठाअध्यक्ष, और एक मान्यता प्राप्त अवतार था। इसप्रकार जब हम एक मठ में जाते, हमें वास्तव में, एक विशेष व्यवहार दिया जाता, परंतु, मैं ऐसे विशेष व्यवहारों का स्वागत नहीं करता था, क्योंकि, हर बार ये मुझे, अपने आगामी जीवन में झेले जाने वाली कठिनाइयों को याद दिलाता था।

अंत में, हमने तिब्बत की सीमाओं को छोड़ दिया, और चीन में प्रवेश किया। यहॉं, चीन में, हर एक बड़ा गॉंव, रूसी साम्यवादियों–श्वेत मनुष्यों से दूषित दिखाई दिया, जो सामान्यतः कार्यकर्त्ताओं को साम्यवाद के आश्चर्यों को बताते हुए और उन्हें कैसे उठ खड़ा होना चाहिए और उन लोगों का नरसंहार करना चाहिए, जो भूमिस्वामी थे, उन्हें ये बताते हुए कि चीन कैसे जनता का था, एक बैलगाड़ी पर खड़े होते थे। ठीक है, अब स्पष्टरूप से ऐसा है, और उन्होंने इसका कैसा मटियामेट किया।

दिन गुजरते गये, और हमारी अनंत प्रतीत होने वाली यात्रा छोटी होती गई। कुछ चीनी किसानों द्वारा, जिन्होंने मुझे घूरा, क्योंकि मैं कुछ–कुछ पश्चिमी लोगों जैसा दिखता था, टोका जाना, काफी परेशान करने वाला था। कत्थई (brown) के बजाय, मेरी ऑंखें स्लेटी (gray) थीं, और मेरे बाल गहरे काले थे, परंतु फिर भी चमकदार काले नहीं, इसलिए आसपास ये कहानी फैल गई कि मैं छद्म वेष में रूसी (Russian) था! आजकल, चूंकि पश्चिम में मेरा जीवन, मेरे बारे में कहीं गई सबप्रकार की

अजीब कहानियॉ मेरे पास है; एक कहानी, जिसने मुझे बहुत अधिक आनंदित किया, इस प्रभाव की थी, कि मैं, वास्तव में, एक जर्मन था, जो हिटलर द्वारा ल्हासा भेजा गया था, ताकि मैं गूढ़ विज्ञान के सभी रहस्यों को सीख सकूँ और तब मैं वापस बर्लिन जाऊँ, और जादुई तरीकों से, युद्ध को, हिटलर के पक्ष में जीतूँ। ठीक है, उन दिनों में, मैं ये भी नहीं जानता था कि वहॉ हिटलर जैसा कोई आदमी था। ये अत्यधिक उल्लेखनीय चीज है कि कोई पश्चिमी व्यक्ति, सिवाय उसके, जो एकदम सत्य है, हर चीज का विश्वास करेगा; कोई चीज जितनी अधिक सत्य है, किसी पश्चिमी व्यक्ति के द्वारा उस पर विश्वास किया जाना, उतना ही मुश्किल है। परंतु हिटलर और तिब्बतियों के विषय में, ये तथ्य है कि युद्ध की अवधि में, नाजियों द्वारा तिब्बतियों के छोटे समूह पकड़े गये थे, और उन्हें बर्लिन जाने के लिए मजबूर किया जाता था, परंतु निश्चितरूप से, जैसा कि इतिहास सिद्ध करता है, वे युद्ध को जीतने में उसे मदद करने के लिये, कुछ नहीं करते थे।

अंत में, हम सड़क के एक कोने की ओर मुड़े, तब हम चुंगकिंग के पुराने शहर की नजर में आये। ये शहर ऊॅची पहाड़ियों पर बना था, और काफी नीचे नदी बहती थी। नदियों में से एक, विशेषरूप से मुझे परिचित थी, और वह शियालिंग (Chialing) थी। इसलिए चुंगकिंग का ऊँचा शहर, पत्थर के फर्श वाली, अपनी अनेक सीढ़ियों वाली, गलियों के आधार पर, अपनी दो नदियों यंगत्से (Yangtse) और शियालिंग द्वारा धोया जाता था। जहॉ दोनों मिलती थीं, एक नई शाखा बन जाती थी, इसलिए दूर से शहर एक द्वीप जैसा दिखता था।

खुद शहर तक, हमने सात सौ अस्सी सीढ़ियॉ चढ़ीं। और हमने दुकानों को, जो हमको भंडारित चीजों से, जो पूरी तरह से हमारी समझ के परे थीं, पूरी तरह कचरे से भरी हुई दिखाई दीं, गंवार की तरह घूर कर देखा। खिड़कियों में चीजें चमकती थीं, अनेक दुकानों से, दड़बों में से, एक दूसरे के साथ बात करते हुए विदेशियों के शोर आये, और तब वहॉ दूसरे दड़बों में से संगीत का विस्फोट हुआ। हमारे लिए, ये सब पूरी कल्पना थी, और मैं ये जानते हुए कि मुझे लंबे समय को, ऐसी परिस्थितियों में, यहॉ व्यतीत करना पड़ेगा, इस विचार पर डर से लगभग, कांपने लगा।

मेरा लबाजमा (retinue), मुझे उस तरीके पर, जिसमें वे घूरते थे, स्तब्ध अनुभव कर रहा था। हर आदमी हताशा में कांप रहा था, और उनमें से प्रत्येक का मुँह खुला हुआ था, और ऑखें भी एकदम चौड़ी खुली हुई थीं। मैंने सोचा, इस तरह घूरते हुए हम, गंवारू देश के खेदजनक समूह दिखते होंगे। परंतु तब मैंने सोचा, कुल मिलाकर, हम यहॉ इसके लिए नहीं थे। मुझे विश्वविद्यालय में पंजीकरण कराना था, और इसलिए हमने अपना रास्ता उधर लिया। मेरे साथियों ने बाहर मैदानों में प्रतीक्षा की, जबकि मैं प्रविष्ट हुआ और मैंने, लिफाफा, जिसको ल्हासा से पूरे रास्ते भर, इतनी अधिक सावधानी से सुरक्षित रखा था, देते हुए, मैंने अपनी औपचारिक उपस्थिति बताई। मैंने विश्वविद्यालय में कठोर परिश्रम किया। मेरी शिक्षा का तरीका, उससे जो कि, विश्वविद्यालय की प्रणाली द्वारा मुझसे अपेक्षित था, एकदम अलग था, और इसलिए मुझे कम से कम दुगने परिश्रम से काम करना पड़ा। विश्वविद्यालय के प्राचार्य ने मुझे चेतावनी दी कि परिस्थितियॉ कठिन होंगीं। उन्होंने बताया कि उन्होंने नवीनतम अमेरिकी प्रणालियों में योग्यता प्राप्त की थी, और वे अपने अधिक योग्य कर्मचारियों के साथ, विद्यार्थियों के लिए, चीनी और अमेरिकी चिकित्सा और शल्य चिकित्सा की मिश्रित प्रणाली ला रहे थे।

क्योंकि मैं विद्युत के बारे में कुछ नहीं जानता था, शैक्षणिक कार्य कठिन था, परंतु शीघ्र ही, मैंने सीख लिया! शरीर विज्ञान आसान था; उसे मैंने ल्हासा में लाश तोड़ने वालों से, पूरे विस्तार के साथ पढ़ लिया था, और जब हमें चीरफाड़ वाले कमरों में, जहॉ अनेक विद्यार्थियों की बारी आने पर, उन्हें पीले हरे और हिंसकरूप से बीमार करने के लिये, लाशें आसपास पड़ीं थीं, ले जाया गया, जबकि दूसरे केवल फर्श पर बेहोश हुए थे, इसने मुझे बहुत अधिक आनंदित किया। ये इसे अनुभव करने के लिए, कि ये मृतशरीर, हमारे उन पर अनाड़ीपन के साथ किये गये प्रयासों पर, कुछ भी महसूस नहीं करेंगे, इतना

अधिक सरल मामला था; वे मात्र पुराने कपड़े के सूट, जिसे त्याग दिया गया है, और जिसे शायद, दूसरे परिधान बनाने के लिए काटा जाता है, की तरह से थे। नहीं, शैक्षणिक मामला पहले मुश्किल था, परंतु अंततः मैं कक्षा में, शिखर के काफी समीप, अपना स्थान पाने में सफल हुआ।

लगभग इसी समय मैंने ध्यान दिया कि वहाँ एक बहुत बहुत बूढ़ा बौद्ध पुजारी था, जो विश्वविद्यालय में व्याख्यान दे रहा था, और मैंने कुछ पूछताछ की और मुझे बताया गया, ''ओह, तुम उसके बारे में चिंता नहीं करना चाहते, वह मात्र एक बूढ़ा पागल है, वह दीन है!'' ठीक है, उसने मुझे राजी किया कि मुझे कुछ अतिरिक्त कार्य करना पड़ेगा, और बूढ़े पागल के व्याख्यानों को सुनना पड़ेगा। ये इसके लिए ठीक लायक था।

मैंने औपचारिकरूप से, कक्षा में उपस्थित होने के लिये आज्ञा पाने की प्रार्थना की और वह प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर ली गई। कुछ व्याख्यानों के बाद, हम सब नीचे बैठे थे, और हमारे व्याख्याता के प्रवेश किया। जैसा कि रिवाज था, हम खड़े हुए, और जबतक कि उन्होंने हमें बैठने के लिए नहीं कहा, खड़े रहे। तब उसने कहा, ''मृत्यु कुछ नहीं होती।'' कोई मृत्यु नहीं, मैंने सोचा, ओह यहाँ गूढ़ विज्ञान पर व्याख्यान होने जा रहा है, वह मृत्यु को ''संक्रमण'' बताने जा रहा था, जो, कुछ मिलाकर, वह है, जो है। परंतु बूढ़े व्याख्याता ने हमको खुद के अधैर्य पर धीमेधीमे पकने दिया, और तब वह मंद मंद मुस्कुराया और चलता गया, ''मेरा शब्दशः यही आशय है। यदि हम केवल जानते कि हम जीवन को किस प्रकार अनंतकाल तक लंबा बना सकते हैं। हम वार्धक्य (aging) की प्रक्रिया को देखें और मुझे आशा है कि तब तुम देखोगे कि मेरा आशय क्या है।''

उसने कहा, ''एक बच्चा पैदा होता है, और बढ़ाव के एक निश्चित तरीके से चलता है। बदलती हुई आयु में, ये हर व्यक्ति के अनुसार बदलता है, वास्तविक विकास रुका हुआ कहा जाता है, वास्तविक कहने लायक बढ़त रुक जाती है, और तब से आगे वह होता है, जिसे वृद्धावस्था का विघटन (degeneration), जहाँ हम एक लंबे आदमी को छोटा होता हुआ पाते हैं, क्योंकि, उसकी हड्डियाँ सिकुड़ जाती हैं, कहा जाता है। उसने, ये देखने के लिए कि हम समझ रहे थे, आसपास देखा और जब उसने मेरी विशेष दिलचस्पी देखी, उसने हाँ में सिर हिलाया और अत्यधिक स्नेहशीलता से मुस्कराया। उसने कहना जारी रखाः

''किसी व्यक्ति को, कोशिका दर कोशिका (cell by cell) दोबारा बनना पड़ता है, ताकि यदि हमें कहीं चीरा लग जाये, तो मस्तिष्क के एक हिस्से को, मांस के उस प्रादृश (pattern) को याद रखना पड़ता है, और तब खराबी की मरम्मत करने के लिए, वैसी ही, या लगभग वैसी ही, कोशिकाओं की आपूर्ति करनी पड़ती है। अब, हर बार जब हम चलते हैं, हम कोशिकाओं के जीर्णशीर्ण होकर नष्ट करने का कारण बनते हैं, और वे सभी कोशिकायें फिर से बनाई जानी पड़ती हैं, विस्थापित करनी पड़ती हैं। बिना किसी सही स्मृति के, हम शरीर को दोबारा ठीक वैसा नहीं बना सकते जैसा कि वह था।''

उसने फिर से आसपास देखा, तब अपने होठों को बंद किया और तब कहा, ''यदि शरीर या गोया कि यदि मस्तिष्क, असली नमूने को भूल जाता है, तब कोशिकायें बेतरतीब तरीके से उगती हैं, वे पिछले किसी प्रादृश के अनुसार नहीं बढ़तीं और इसप्रकार की वे बेतरतीब कोशिकायें, कैंसर की कोशिकायें कहलाती है। इसका मतलब ये है कि ये वे कोशिकायें है, जो मस्तिष्क के उस भाग के नियंत्रण से बाहर हो गयी हैं, जिसको उनके असली प्रादृश से नियंत्रित करना चाहिए था। इसलिए ऐसा है, कि आपको उसके शरीर पर बड़ी वृद्धि के साथ, कोई ऐसा व्यक्ति मिलता है। ये बेतरतीब तरीकों से उगती हुई कोशिकाओं, जो दिमाग के नियंत्रण से बाहर हो चुकीं हैं, के द्वारा पैदा किया जाता है।

वह पानी का एक घूंट लेने के लिए रुका और तब उसने कहना जारी रखा, ''हम में से अधिकांश लोगों की तरह, कोशिकाओं के बढ़ने और विस्थापित करने का केन्द्र, एक दोषयुक्त स्मृति रखता है। कोशिकाओं को कुछ हजार बार पुर्नउत्पादित करने के बाद, ये असली प्रादृश को भूल जाता

है, और बाद वाली हरेक कोशिकाओं की उपज के लिए, थोड़ा अंतर होता जाता है, ताकि, अंततः हम वह पाते हैं, जिसे हम बूढ़ा होना कहते हैं। अब, यदि हम मस्तिष्क को, बदले जाने वाली प्रत्येक कोशिका की एकदम सही आकृति और आकार का लगातार ध्यान दिला सकें, तब शरीर हमेशा उसी आयु का दिखाई देगा, हमेशा उसी अवस्था में होने की मांग करेगा। संक्षेप में, हमें अमरत्व, इस मामले में अमरत्व कि, पूरे शरीर का नाश, या पूरी कोशिकाओं की हानि न हो, प्राप्त हो जायेगा।''

मैंने इस पर विचार किया, और तब मुझमें ये कौंधा कि मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोन्डुप ने, इसी चीज को कुछ भिन्न शब्दों में मुझे बताया था और मैं उसे समझने के लिए, जो उनका वास्तव में आशय था, उस समय बहुत छोटा या बहुत मूर्ख, या दोनों था।

हमारे व्याख्यान दिलचस्प थे। हमने पश्चिम में नहीं पढ़े जाने वाले अनेक विषयों को पढ़ा। सामान्य पश्चिमी प्रकार के दवाओं और शल्यचिकित्सा के अलावा, हमने सूचीवेध (acupuncture) चिकित्सा और जड़ीबूटी (herbal) के इलाज को भी पढ़ा, परंतु ये पूरा काम था, खेल नहीं, यद्यपि लगभग वैसा था।

एक दिन, जब मैं एक मित्र के साथ बाहर था, हम नदियों के किनारे टहल रहे थे, और हमने, वहॉ खड़े किये गये, और किसी कारण से, थोड़े समय के लिए छोड़ दिये गये, एक हवाईजहाज को देखा। इंजन घड़ी के समान टिकटिक कर रहा था और नोदक (propeller) मात्र घूम रहा था। मैंने पतंगों को, जो मैंने उड़ाई थीं, सोचा और मैंने अपने मित्र से कहा, ''मैं शर्त लगाता हूँ, कि मैं इन चीजों को उड़ा सकता हूँ।'' वह हॅसी उड़ाता हुआ गरजा, और इसलिए मैंने कहा, ठीक है, मैं तुम्हें दिखाऊॅगा। मैंने, ये देखने के लिए कि आसपास कोई नहीं था, आसपास देखा और मैं उस जुगत (contraption) में अंदर घुस गया और अपने खुद के और दूसरे अनेक तमाशबीनों के आश्चर्य के लिए, मैंने मशीन को उड़ाया, परंतु निर्धारित तरीके से नहीं, मेरे हवाई करतब (aerobatics) पूरी तरह अनैच्छिक (involuntary) थे, और केवल इसलिए कि मैं प्रतिक्रियाओं (reflexes) में, अधिकांश दूसरों की अपेक्षा अधिक तेज था, मैं जिन्दा बच गया और धरातल पर सुरक्षित उतरा।

उस अत्यंत खतरनाक उड़ान से, मैं इतना मोहित था कि मैंने उड़ान को अधिकृतरूप से सीख लिया और चूॅकि एक हवाई उड़ाके के रूप में, मैंने औसत से अधिक प्रदर्शित किया, मुझे चीनी सेनाओं में कमीशन प्रस्तावित किया गया। शैली (style) और स्थिति (rank), जो मुझे दी गई थी, पश्चिमी मानकों के अनुसार, एक सर्जन कैप्टन की थी।

वायुयान चालक के रूप में मेरे स्नातक होने के बाद, कमान अधिकारी ने मुझसे अपने अध्ययनों को, जबतक कि मैं एक डॉक्टर और शल्यचिकित्सक के रूप में भी स्नातक न बन जाऊॅ, जारी रखने के लिए कहा। ये शीघ्र ही हो गया, और अंत में, तमाम अधिकृत दिखते हुए कागजातों से सुसज्जित, मैं चुंगकिंग छोड़ने के लिए तैयार था। परंतु तभी, मेरे संरक्षक तेरहवें दलाईलामा, अंतरतम, से सम्बंधित, एक बड़ा दुखदायी संदेश आया, और इसलिए बुलावे को मान्यता देते हुए, मैं एक अत्यंत संक्षिप्त समय के लिए ल्हासा लौटा।

तथापि, भाग्य ने बुलाया, और मुझे अपने से ऊपर के अधिकारियों के आदेशों का पालन करना पड़ा और इसलिए मैंने अपने कदम, चुंगकिंग की ओर, और तब शंघाई की ओर वापस बढ़ाये। एक समय के लिए, मैं चीनी सेनाओं में एक अफसर के रूप में आरक्षित कर लिया गया। चीनियों का समय बहुत कठिन था, क्योंकि जापानी, चीन में घुसपैठ करने का बहाना ढूंढने का प्रयास कर रहे थे। इस आशा में कि विदेशी, चीन की सरकार के लिए परेशानी खड़ी करेंगे, विदेशियों पर अशिष्टता के सभी तरीके इकट्ठे किये जा रहे थे। जापानी सैनिकों के द्वारा, जो कहते थे कि उन्हें शक है कि विदेशी लोग संदेश ले जा रहे थे, आदमी और औरतें, खुलेआम नंगे किये जा रहे थे, और उनकी तलाशी ली जा रही थी। मैंने एक नौजवान औरत को, जिसने प्रतिरोध किया था, देखा; उसे उघाड़कर नंगा कर दिया गया

और एक व्यस्त सड़क के केन्द्र पर घंटों खड़ा रखा गया। उसे वास्तव में दौरा पड़ गया, परंतु हर बार जब उसने भागने का प्रयास किया, किसी संतरी ने उसे बंदूक की नोंक से, अभद्र तरीके से कोंचा।

चीनी लोग देखते हुए भी कुछ नहीं कर सकते थे; वे इसे अंतराष्ट्रीय घटना नहीं बनाना चाहते थे। परंतु तब एक बूढ़ी चीनी औरत ने, एक कोट फेंक कर जवान औरत को दिया ताकि वह अपने आपको ढंक सके; एक संतरी उसके ऊपर झपटा और एक झटके के साथ उसकी भुजा, जिससे उसने कोट फेंका था, काट दी।

ये अब मुझे अचंभित करता है; कुल मिलाकर मैंने (ये सब) देखा है, कुल मिलाकर मैंने पीड़ा झेली है, जो कि विश्व भर के लोग अनुमानतः, क्योंकि वे बदले में सस्ता श्रम उपलब्ध कराते हैं, जापानियों की ओर दौड़ते हुए, उन्हें अपनी मित्रता इत्यादि, प्रस्तावित करते हुए, दिखाई देते हैं। वर्चस्व बनाने की अपनी पागल वासना के कारण, जापानी लोग पृथ्वी पर अभिशाप हैं।

शंघाई में, डॉक्टर के रूप में, मेरा खुद का व्यवसाय था, और काफी सफल भी। शायद यदि जापानी युद्ध शुरू नहीं हुआ होता, तो मैंने अपना निवास शंघाई में ही बना लिया होता, परंतु सात जुलाई उन्नीस सौ सेंतीस में वहॉ मार्को पोलो ब्रिज (Marco Polo bridge) पर, एक घटना[5] हुई। वास्तव में, उस घटना ने ही युद्ध को प्रारंभ किया। एक बहुत बड़े तीन इंजन वाले हवाईजहाज, जो वहॉ एक प्रतिष्ठान, जिसने एक यात्री हवाई सेवा प्रस्तावित की थी, के द्वारा प्राप्त करने के लिए तैयार रखा गया था, को जोड़ने के काम का निरीक्षण करने के लिए, मुझे बुलाया गया और शंघाई गोदी में भेजा गया।

मैं एक मित्र के साथ गोदी में गया, और तब हमने हवाईजहाज को टुकड़ों में पाया। धड़ (fuselage) और पंख (wings), सभी अलग अलग थे, निचला ढांचा (under carriage) भी नहीं जोड़ा गया था, और केन्द्र में तीन इंजन अलग अलग रखे गये थे। मनोमापन (psychometry) की अधिक सामर्थ्य और सामान्य बुद्धि के उपयोग के अधिक प्रयासों के द्वारा, मैं अत्यंत बड़े खुले स्थान पर, कामगारों को, हवाईजहाज को जोड़ने के, दिशानिर्देश देने की व्यवस्था कर सका। जहॉतक मैं हर चीज की पूरी पूरी, जॉच कर सका, मैंने इंजनों की जॉच की और सुनिश्चित किया कि उनमें ठीक ईंधन और ठीक तेल हो। एक एक करके, मैंने इन इंजनों को चालू किया और मैंने उन्हें बाहर ही जॉचा, उनको फालतू चलने दिया, और गरजने दिया, और अनेक सुधारों के बाद, जब मैं संतुष्ट हो गया कि वे चलते रह सकते हैं, मैंने तीन इंजन वाले हवाईजहाज को, जमीन के उस बड़े हिस्से पर, ऊपर और नीचे

---

5 अनुवादक की टिप्पिणी : जून 1937 से जापानियों ने मार्कोपोलो पुल (Marcopolo bridge) के पश्चिमी सिरे पर, अपने गहन प्रशिक्षण प्रारम्भ किये। अक्सर ये रात को होते थे। चीनी सरकार ने जापानियों से निवेदन किया कि वे इनकी पूर्वसूचना उन्हें दे दिया करें, ताकि वहॉ के स्थानीय निवासियों को असुविधा न हो। जापानियों ने यह शर्त स्वीकार कर ली। सात जुलाई की रात को, जापानियों द्वारा बिना किसी पूर्वसूचना के ये उद्यम प्रारम्भ कर दिये गये। चीनियों ने इसे हमले की तैयारी मानते हुए, रायफल से हवाई फायर किये। रात लगभग 11:00 बजे, दोनों और से गोलियाँ चलीं। जब एक जापानी सैनिक अपने ठिकाने पर नहीं पहुँचा, तब जापानियों ने उच्चाधिकारियो की सहमति से उसकी खोज–खबर लेना शुरू किया। उन्होंने चीनी अधिकारियों से सहयोग की माँग की, जिसे चीनियों ने पूर्वसूचना न होने के कारण ठुकरा दिया। आठ जुलाई को प्रातः लगभग 3:30 बजे जापानी अपनी फौज को लेकर पुल पर हमला करने पहुँचे। चीनी फौज भी तैयारी के साथ वहाँ आ गई। लगभग 4:50 बजे वेंपिग में तलाश करने की इजाजत मिली। 5:00 बजे जापानियों ने मार्कोपोलो पुल के ऊपर तोप के हमले प्रारम्भ कर दिये। लगभग 1000 फौजियों के साथ चीनियों ने पुल को किसी भी कीमत पर बचाये रखने के आदेशों के साथ जबाबी कार्रबाई की। दोपहर के करीब कुछ जानें गवांकर जापानियों ने पुल पर कब्जा कर लिया। 9 जुलाई को कुहरे और वर्षा का लाभ उठाते हुए, चीनियों ने लगभग 6:00 बजे तक फिर से पुल को अपने कब्जे में ले लिया। ंइस बीच जापानी और चीनी अधिकारियों के बीच बातचीत चली। चीनियों ने खेद व्यक्त किया और दोषियों के प्रति कार्रबाई करने का आश्वासन दिया। जापानियों की ओर से संधि का विरोध किया गया और उन्होंने उच्चाधिकारियों के आदेशों के विरुद्ध 3 घंटों तक गोलीबारी की।

यदि दोनों सेनाओं की अपने–अपने क्षेत्रों में वापसी के साथ, संधि और युद्धविराम, जारी रखे गये होते, तो मार्कोपोलो पुल की यह घटना छुटपुट घटना हो कर रह जाती, तथापि नौ जुलाई की अर्द्धरात्रि से दोनों पक्षों द्वारा, युद्धविराम का उल्लंघन किया गया। दोनों पक्षों द्वारा फौजों का भारी जमावड़ा किया गया। 11 जुलाई की शाम से जापानियों ने अपनी सेनाओं को वापस बुलाना शुरू किया। 20 जुलाई को फिर से दोनों तरफ से पूरी तैयारियों के साथ युद्ध हुआ। 'जापानी चीनियों का सहयोग चाहते हैं, उनकी जमीन नहीं' इस कथन के साथ फिर च्यांग काई शेख (Chiang Kai Shek) के साथ वार्ता शुरू हुयी, जो असफल रही। अंत में 9 अगस्त 1937 को शंधाई में एक जापानी नोसेनिक अधिकारी को गोली मार दी गई और यही द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण बना।

उड़ाया, ताकि मैं उस चीज के स्पर्श का अभ्यस्त हो जाऊँ, क्योंकि, तीन इंजन वाले हवाईजहाज में, कोई बहुत लंबे समय तक, खतरनाक करतब (stunt) नहीं करता।

अंत में, मैं संतुष्ट हुआ कि मैंने नियंत्रण को सीख लिया और मैं उन्हें ठीक से कर सकता हूँ। तब एक मित्र के साथ, जिसे मेरे ऊपर अगाध विश्वास था, हम हवाईजहाज में अंदर गये और उसे बड़े खुले स्थान में परले सिरे तक उड़ाया। मैंने कुलियों को, इन निर्देशों के साथ कि जैसे ही मैं अपना दायां हाथ ऊपर उठाऊँ, रोकों (chokes) को तुरंत हटा दिया जाय, पहियों के सामने बड़े बड़े ओट लगाने को कहा। तब मैंने तीनों नोदकों को खोल दिया, जिससे जहाज गरजा और हिला। अंत में, मैंने अपना हाथ उठाया। रोकों को खींच दिया गया और हम मैदान के ऊपर, पागल की तरह से उछलकूद करने लगे। अंतिम क्षण में, मैंने नियंत्रण को वापस खींचा और हम ऊपर गये, जिसपर मैंने सोचा कि वह एक वास्तविक अपरम्परागत कोण था, परंतु हम उड़ रहे थे, और हम उस चीज का अनुभव पाने के लिए, एक या दो घंटे तक, आसपास उड़ते रहे। अंत में, हम उतरने के स्थान पर वापस आये, और मैं धुंए की दिशा को देखने के लिए सावधान था। मैं धीमे से अंदर आया और मैंने हवा में जहाज को उतारा, और मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं पसीने में नहा गया था; मेरे ऊपर अपने पूरे विश्वास के बावजूद भी, मेरा दोस्त भी पसीने में नहाया हुआ था!

बाद में, मुझे जहाज को दूसरे क्षेत्र में, जहाँ इसकी दिन–रात सुरक्षा की जा सके, हटाने के लिए कहा गया, क्योंकि अंतराष्ट्रीय बिग्रेड बहुत सक्रिय होती जा रही थी, और इन विदेशियों में से कुछ ने सोचा कि वे चीनी लोगों की संपत्ति के साथ, जो वे चाहें, कुछ भी कर सकते हैं। हम अपने बड़े हवाईजहाज का नुकसान नहीं होने देना चाहते थे। अतः एक एकांत से स्थान पर जहाज में बदलाव किये गये। अधिकांश बैठक व्यवस्था हटा दी गई, और खानों में रोगीशायिकायें (stretchers) लगाई गईं। जहाज के एक सिरे पर, एक धातु की मेज फिट की हुई थी और ये शल्यक्रिया थियेटर (operation theater) होने वाला था। हम आकस्मिक शल्यक्रिया करने जा रहे थे, क्योंकि 1938 के अंत में, दुश्मन शंघाई के शहर के बाहरी किनारों पर पहुँच रहा था, और मुझे अपनी प्रेक्टिस, जिसे मैं अभी भी अंशकालीन रूप से चला रहा था, बंद करने के निर्देश मिले थे। मुझे जहाज को, जबतक कि इस पर, फिर से रेडक्रास के चिन्ह के साथ, और पूरा सफेद रंग पोता जा सके, सुरक्षित क्षेत्र में ले जाने के लिए कहा गया था। इसे, इस पर चीनी और जापानी अक्षरों में रोगीवाहन, लिखा हुआ वायुयान होना था।

परंतु जब रंग पोत दिया गया, रंग के भाग्य में बहुत अधिक लंबे समय तक बने रहने नहीं लिखा था। शंघाई के ऊपर बम गिराये जा रहे थे, हवा, विस्फोटकों की कड़वी गंध से, बजरी के कणों, से जो नाक में चिपक जाते थे, और पुराने एबी (abby), जैसा कि हम अपने हवाईजहाज को कहते थे, के पोते हुए रंग से भरी हुई थी, और आँखों में जलन करती थी। शीघ्र ही, वहाँ एक बड़ा तीव्र विस्फोट हुआ और एबी हवा में उछला और धड़ के अंदर की तरफ टकराकर सपाट हो गया, एक समीपी बम विस्फोट ने निचले ढाँचे को जला दिया था। अत्यधिक परिश्रम और विचारणीय पटुता के साथ, जैसे कि टूटे हाथ पर खप्पचियों को लगाया जाता है, हमने फटे हुए बांस की लंबाईयों से वाहन की मरम्मत की, मैंने सोचा। परंतु खप्पचियों को पक्का बांधने के साथ, मैंने उसे, बम के गड्ढों से बने हुए मैदान को देखने के लिए कि जहाज कैसे व्यवस्था करेगा, जमीन पर ऊंचे और नीचे चलाया; निश्चितरूप से, वह एकदम सही प्रतीत हुआ।

जब हम जहाज में बैठे हुए थे, वहाँ बड़ी पदचाप हुई, और पूरी तरह वैभव और आत्म आश्वासन के साथ, अपने अधीनस्थ कर्मचारी सदस्यों से घिरा हुआ एक क्रोधित चीनी जनरल, हमारे हवाई अड्डे पर आया। रूखेपन से, उसने हमें एक निश्चित ठिकाने तक जहाज उड़ाने का आदेश दियाः उसने हमारा बयान, कि जहाज, जबतक आगे की मरम्मत और न कर ली जाये, वास्तव में, उड़ने के लिए ठीक नहीं

था, नहीं सुना। उसने हमारे कथन, कि हम एक रोगीवाहिका जहाज हैं, और अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के अनुसार, हमें फौजी आदमियों को ले जाने की आज्ञा नहीं है, को स्वीकार नहीं किया। हमने बहस की, परंतु उसके तर्क अधिक प्रबल थे; उसे केवल ये कहना था, ''इन लोगों को ले जाओ, और सैनिक आदेशों के पालन में असफल रहने के कारण, इनको गोली मार दो,'' और वह हमारा अंत हुआ होता। हम उसके बिना ही उड़ रहे होते!

सेना के आदमी, चिकित्सीय उपकरणों को उछालते हुए, उसे खुले दरवाजे में से बाहर छितराते हुए, अपने आरामों के लिए जगह बनाते हुए, हवाईजहाज में चढ़े। हमारी रोगी शायिकायें बाहर चली गईं, हमारी शल्यक्रिया की मेज, हमारे उपकरण, हर चीज बाहर चली गई। वे केवल उछालकर दूर फेंक दिये गये, मानो वे कचरा थे, और दोबारा, फिर कभी, उनकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। जैसे ही ये हुआ, वे नहीं थे।

हमने उड़ान भरी, और अपने ठिकाने की ओर रुख किया, परंतु जब हमारे रवाना होने के बिन्दु से कोई दो घंटे के बाद, जापानी लड़ाकू विमान, और धूप में मच्छरों के झुण्ड के समान, लाल दैत्य आये, पंखों पर से, तेजी से घृणात्मक लाल संकेत चमका। उन्होंने प्रखररूप से प्रदर्शित, रेडक्रास के चिन्ह लगे हुए, हमारे रोगी वाहिका जहाज के चक्कर लगाये, और तब वे हमारे अंदर गोलियॉ दागने के लिए संवेदनहीन ढंग से मुड़े। उस समय से, मैंने कभी जापानियों को पसंद नहीं किया, परंतु मेरी अपनी नापसंदगी को आने वाले दिनों में लपट बनाने के लिए, मुझे अधिक ईंधन चाहिए था।

हमें गोली मार कर नीचे गिरा दिया गया, और मैं जिन्दा बचा रह गया। मैं चीन में, लगभग सर्वाधिक खराब स्थान–सीवर के एक गड्ढ़े में गिरा, जहॉ सभी कूड़ा–कचरा इकट्ठा किया गया था। और इसप्रकार मैं सीवर के गड्ढे में गिरा और सीधा नीचे तली में गया और उस घटना में मेरे दोनों घुटने टूट गये।

जापानी सैनिक आ पहुॅचे, और मुझे घसीटकर अपने मुख्यालय ले गये और क्योंकि मैंने उन्हें, सिवाय इसके कि मैं चीनी सेवाओं में एक अधिकारी था, कोई सूचना देने से मना कर दिया था, वास्तव में, मेरे साथ बहुत बहुत बुरी तरह से व्यवहार किया गया। ये उन्हें, विचारणीयरूप से बुरा लगता दिखाई दिया, क्योंकि, उन्होंने मेरे दांतों पर ठोकर मारी, मेरे नाखूनों को खींचा, और दूसरी खराब चीजें की, जिनसे मैं अभी भी पीड़ित हूॅ, उदाहरण के लिए, मेरे शरीर में पाइप अंदर घुसाये गये और उनमें से सरसों और मिर्च, पानी डाला गया और तब नल चालू कर दिये गये और मेरा शरीर बुरी तरह फूल गया और अंदर भयंकर नुकसान हुआ। ये उन कारणों में से एक है कि मैं इतने सालों बाद भी, अभी भी, इतना पीड़ित रहता हूॅ।

परंतु विस्तार में जाने का कोई मतलब नहीं है, क्योंकि, दिलचस्पी रखने वाला व्यक्ति, इस सब को ''ल्हासा का डॉक्टर (Doctor from Lhasa)'' में पढ़ सकता है। मेरी इच्छा है कि अधिक लोग इस पुस्तक को पढ़ें, ताकि वे देख सकें कि जापानी किस तरह के लोग हैं (ठीक है, जो आप जानते हैं)।

परंतु मुझे औरतों के एक युद्धबंदी शिविर में भेजा गया, क्योंकि, इसे पदावनति माना गया। हांगकांग जैसे स्थानों में से कुछ औरतें पकड़ ली गईं थीं। उनमें से कुछ, लगातार बलात्कारों के कारण, वास्तविक रूप से सदमे की हालत में थीं।

ये उल्लेखनीय है कि इस समय वहॉ कुछ निश्चित जर्मन अधिकारी थे, जो जापानियों को ''सलाह'' दे रहे थे, इन अधिकारियों को, हमेशा सबसे अच्छी दिखने वाली औरतें और आचारभ्रष्ट चीजें दी जाती थीं, मैंने इस तरह की कोई चीज कभी नहीं देखी। ऐसा प्रतीत होता है कि जर्मन लोग, न केवल युद्ध में, परंतु दूसरी चीजों में भी, उसी प्रकार अच्छा करते हैं।

एक समय बाद, जब मेरे घुटने ठीक हो चुके थे और मेरे नाखून दोबारा उग आये थे, मैंने पलायन की व्यवस्था की, मैंने चुंगकिंग के लिए, अपना धीमा कष्टपूर्ण रास्ता लिया। अभीतक ये

जापानियों के हाथों में नहीं था, और मेरे चिकित्सा सहयोगियों ने वहॉ मेरे स्वास्थ्य को, आश्चर्य सहित पुनः स्थापित किया। मेरी नाक टूट गई थी। टूटने से पहले, ये पश्चिमी मानकों के अनुसार कुछ कुछ चपटी थी, परंतु अब शल्यचिकित्सा की अनिवार्यता के कारण काफी लंबी हो गई, जो किसी भी पश्चिमी व्यक्ति को श्रेय दिला सकती थी। परंतु युद्ध, जापानियों के कब्जा करने का हिंसक युद्ध, चुंगकिंग तक आ गया था। मुझे एकबार फिर पकड़ा गया, और प्रताड़ित किया गया, और अंततः मुझे फिर से, एक बंदी शिविर का प्रभारी बना दिया, जहॉ मैंने रोगियों के साथ अपना सबसे अच्छा व्यवहार किया। दुर्भाग्यवश, किसी दूसरे क्षेत्र से एक वरिष्ठ अधिकारी वहॉ स्थानांतरित होकर आया, और उसने मुझे भगोड़े कैदी के रूप में पहचान लिया। सभी कष्ट, फिर से प्रारंभ हो गये। मुझे न भागने का सबक सिखाने के लिए, मेरी दोनों टांगें दो स्थानों पर तोड़ दी गईं। तब उन्होंने मुझे एक शिकंजे (rack) में डाल दिया और मेरी बांहों और टांगों को वास्तव में, बहुत कसकर खींचा। इसके अतिरिक्त, मुझे रीढ़ के निचले हिस्से में ऐसा जबरदस्त झटका लगा, जिसने मुझ में गंभीर जटिलतायें पैदा कर दीं, जिनसे अभी भी, मेरी रीढ़ ने इतना अधिक विघटित होना शुरू कर दिया है, कि मैं लंबे समय तक सीधा खड़ा नहीं रह सकता।

अपने घाव भर जाने के बाद, एक बार फिर, मैंने उस क्षेत्र में, जहॉ से मैं अच्छी तरह परिचित था, भागने की व्यवस्था की। मैंने अपना रास्ता निश्चित मिशनरियों, जो टुट–टुट (tut-tut) और दुखों के बड़े विस्मय आदि के साथ, कामों की करुणा के साथ, पूरे भरे हुए थे, की ओर बनाया। उन्होंने मेरे घावों का इलाज किया, मुझे नींद लाने वाला पदार्थ दिया, और मुझे जापानी बंदी रक्षकों के पास भेज दिया क्योंकि जैसा उन्होंने कहा था, वे अपने खुद के मिशन को बचाना चाहते थे और मैं ''उनमें से एक'' नहीं था।

बंदी शिविर में वापस आने पर, मेरे साथ इतना बुरा व्यवहार किया गया कि ये भय हुआ कि मैं जीवित नहीं रहूँगा। वे मुझे जीवित रखना चाहते थे, क्योंकि, उन्हें ये निश्चित था कि मेरे पास वह जानकारी है, जिसे वह चाहते थे, सूचना जिसको मैंने देने से मना कर दिया था।

अंत में, ये तय किया गया कि मैं बहुत आसानी से दूर भागा था, इसलिए मुझे जापान की मुख्य भूमि पर, हिरोशिमा (Hiroshima)[6] नामक शहर के पास, समुद्र के समीप एक गॉव में भेज दिया गया। मुझे फिर से औरतों के बंदी शिविर का प्रभारी डॉक्टर बना के रख दिया गया, औरतें जो हांगकांग, शंघाई, और दूसरे शहरों से लाई गई थीं और जिन्हें वहॉ जापानियों के कुछ धुंधले ख्याल के साथ कि, जब बाद में सौदेबाजी हो, उन्हें बंधक के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है, रखा जा रहा था। अब जापानियों के लिये, युद्ध बहुत खराब होता जा रहा था, और नेताओं को बहुत अच्छी तरह मालूम था कि उन्हें जीतने की कोई आशा नहीं थी।

एक दिन वहॉ हवाईजहाज के इंजनों की आवाज हुई, और धरती हिली, और दूरी पर एक बहुत बड़ा खम्बा, लुढ़कते हुए बादलों के साथ कुकुरमुत्ते (mushroom) के आकार का खम्बा, आकाश में बहुत ऊँचा उठता हुआ दिखाई दिया। हमारे आसपास एकदम भगदड़ हुई, सुरक्षाप्रहरी, आतंकित चूहों की तरह से तितरबितर हो गये और मैं, ऐसे किसी भी अवसर के लिए हमेशा सजग, एक बाड़ के ऊपर से कूद गया और अपना रास्ता पानी के सिरे पर नीचे की ओर लिया। वहॉ मछुआरों की एक नाव

---

6 अनुवादक की टिप्पिणी : हिरोशिमा (Hiroshima), जापान का एक बड़ा शहर और हिरोशिमा प्रीफेक्चर (Hiroshima Perfecture) की राजधानी और जापान के सबसे बड़े द्वीप, पश्चिमी होन्सु (Honsu) के चुगोकू (Chugoku) क्षेत्र में सबसे बड़ा शहर है। हिरोशिमा का शाब्दिक अर्थ है, विस्तृत द्वीप। इसे 1 अप्रेल 1889 को शहर का दर्जा दिया गया। अगस्त 2016 की अनुमानित जनसंख्या के अनुसार, इसकी जनसंख्या, लगभग 12 लाख है। इतिहास में हिरोशिमा को पहली बार अणुबम गिराये जाने के कारण जाना जाता है। शहर पर, अमेरिका के द्वारा, 6 अगस्त 1945 को सुबह लगभग 8 बजकर 15 मिनट पर, जबकि द्वितीय विश्वयुद्ध अपनी समाप्ति पर था, परमाणु बम गिराया गया, जिससे पूरा शहर बरबाद हो गया। उसी समय जापान के दूसरे शहर नागासाकी पर भी बम गिराया गया था, उसके बाद ही जापान ने कभी भी, परमाणु बम न बनाने की नीति स्थापित की है।

खाली थी। मैंने उस पर चढ़ने की व्यवस्था की, और एक खंबे की सहायता से, बची हुई पर्याप्त शक्ति के साथ, नाव को गहरे पानी में धकेल दिया। तब मैं बदबूदार गंदे पानी में बेहोश होकर गिर पड़ा। नाव समुद्र में ज्वार, जो घट रहा था, के ऊपर चली, परन्तु मैं अपनी गरदन तक पानी में, नाव के तले में पड़ा हुआ, जबतक कि अंत में, मैं आलस के साथ जगा और मुझे एक प्रारंभ के साथ पता लगा कि मैं एकबार फिर भाग चुका था, इस सम्बंध में कुछ नहीं जानता था।

कष्ट के साथ, मैंने अपने आपको ऊपर, थोड़ा सा ऊपर, पानी के बाहर खींचा, और शंका के साथ आसपास देखा। मैंने सोचा, जापानी, कई बार भागने वाले (मुझ) को पकड़ने के लिए, तेज चलने वाली नावों को भेज रहे होंगे। परंतु नहीं, दृष्टिक्षेत्र में कोई नावें नहीं थीं, परंतु हिरोशिमा शहर की क्षितिज रेखा के ऊपर, एक धुंधली, खराब, लाल चमक थी और आकाश काला था, और उस कालेपन में से कुछ ''चीजें'' खूनी लाल रंग के धब्बे, काजल जैसी चीजें, काली चिकनाईयुक्त वर्षा गिरी।

मैं भूख के मारे दुख रहा था। मैंने आसपास देखा और एक दीवार के बगल से कमान की तरफ एक लॉकर पाया और उस लॉकर में सड़ी मछलियों के कुछ टुकड़े थे, जो मैं समझता हूॅं चारे के रूप में रखे गये थे। वे मेरे अंदर निश्चित मात्रा में जीवन डालने के लिए पर्याप्त थे, और मैं मछुआरे का, जिसने उन्हें वहां छोड़ा था, सर्वाधिक आभारी था।

मैं नाव की सीटों के आरपार, पीठ के बल लेटा रहा और बड़ी असुविधा अनुभव की क्योंकि, नाव बड़े खराब तरीके से नाच रही थी, स्वयं समुद्र अजीब दिखा, वहॉ एकप्रकार की तरंगें थीं, जो मैंने पहले नहीं देखीं थीं, मानो कि वहॉ पानी के नीचे, लगभग भूचाल आ गया हो।

मैंने अपने आसपास देखा और प्रभाव भयानक था। वहॉ जीवन का कोई चिन्ह नहीं था। सामान्यतः, ऐसे किसी दिन वहॉ आसपास असंख्य मछलीमार नावें नहीं होतीं क्योंकि, दुरानूभूतिपूर्ण और परोक्षदर्शी होने के कारण, मैं इतने भ्रमित और इतने अधिक उल्लेखनीय प्रभावों को प्राप्त कर रहा था, कि मैं उन्हें कुछ नहीं समझ सका।

सिवाय हवा के अजनबी आह भरने के, पूरा विश्व शांत प्रतीत हुआ। तब मैंने अपने ऊपर एक हवाईजहाज को देखा। ये आसपास चक्कर काट रहा था, और निगरानी करते हुए मैं एक एरियल कैमरे के बड़े लैंसों को नीचे की तरफ करते हुए देख सका। स्पष्टरूप से, किसी कारण से, जिसे मैं नहीं जानता था, क्षेत्र के फोटोग्राफ लिये जा रहे थे।

शीघ्र ही हवाईजहाज मुड़ा और मेरी दृष्टि की परास के परे, दूर चला गया और मैं फिर से अकेला हो गया। वहॉ कोई चिड़िया भी दृष्टि में नहीं थी; अजीब, मैंने सोचा, क्योंकि समुद्री चिड़ियायें हमेशा मछलीमार नावों के पास आ जाती हैं। परंतु वहॉ आसपास कोई दूसरी नाव नहीं थी। वहॉ जीवन का कोई चिन्ह कहीं नहीं था, और मैंने इन विशिष्ट छापों को अपने असाधारण संज्ञानों में आते देखा। अंत में, मैं समझता हूॅं मैं बेहोश हो गया, क्योंकि, हर चीज काली हो गई। मेरी अचेत अवस्था के साथ, नाव अज्ञात स्थान में खिसक चली।

अध्याय –6

जो अंतहीन दिन दिखाई दिये, उनके बाद और वास्तव में, मुझे कोई ख्याल नहीं है कि ये कितना लंबा समय था, परंतु इस बेहिसाब अवधि के बाद, मैंने अचानक ही कठोर विदेशी स्वर सुने और मुझे हाथों और पैरों से उठाया गया, और एक चाप में झुलाया गया और फेंक दिया गया। मैं एक छपाक के साथ, पानी के ठीक एक किनारे पर गिरा और अपनी ऑखों को, ये देखते हुए कि मैं किसी अंजान समुद्र तट पर आ पहुँचा हूँ, धुंधलेपन के साथ खोला।

मैंने अपने सामने दो लोगों को नाव को पागलपन से धकियाते हुए, और तब अंतिम क्षण में दूर उछलते हुए देखा। तब नींद, या कोमा (coma) ने मुझे फिर से घेर लिया।

मेरे संज्ञान मानो कि विशिष्ट प्रकार के थे, क्योंकि सहसा ही मुझे हिलने के, और तब गति के समाप्त होने के प्रभाव मिलते। पॉच दिन बाद, मुझे जब मैं जीवित लोगों के क्षेत्र को लौटा, और अपने आपको एक धब्बारहित साफ झोपड़ी में पाया, जिसे एक बौद्ध पुजारी का घर बताया गया था। मुझसे आशा की जाती थी, उसने मुझे रुक रुक कर बताया, क्योंकि हमारी भाषायें समान, परंतु फिर भी एक नहीं थीं, और हमें अपने आपको समझाने में परेशानी हुई।

पुजारी एक बूढ़ा आदमी था, और उसे स्वप्न हुआ था (कैसे भी, वह इसे स्वप्न कहता था) कि उसे रुकना है, "एक महान, जो बहुत दूर से आयेगा," को मदद पहुॅचानी है। वह भूख और आयु के कारण मृत्यु के करीब था। उसका भूरा पीला सा चेहरा, लगभग पारदर्शी दिखाई दिया, वह इतना कम पोषित था, परंतु उसने कहीं से खाना प्राप्त किया और कई दिनों तक मेरी ताकत को बनाया गया। अंत में, जब मैं सोच रहा था कि मुझे अपने जीवन के सीधे रास्ते पर अपना रास्ता पकड़ना चाहिए, मैं सुबह ये देखने के लिए कि बूढ़ा भिक्षु, मेरे बगल से पद्मासन में बैठा हुआ और मृत था, जगा। वह पत्थर की तरह ठंडा था, इसलिए वह रात के पहले भाग में ही मरा होगा।

मैंने उस छोटी बस्ती में से, जिसमें झोपड़ी थी, कुछ लोगों को बुलाया और हमने उसके लिए एक कब्र खोदी और पूरी बौद्ध रीति से उसका उत्तम संस्कार किया।

इस काम को पूरा करने के बाद, मैंने खाने की जो कुछ भी अत्यल्प आपूर्ति थी, उसे ले लिया और अपने रास्ते पर यात्रा प्रारंभ की।

चलना आश्चर्यजनक था। उसकी तुलना में, जो मैंने कल्पना की थी, मैं काफी अधिक कमजोर रहा होऊॅगा, क्योंकि, मैंने अपने आपको बीमार और संभ्रमित पाया। परंतु पीछे नहीं लौटना था। मैं नहीं जानता था कि क्या हो रहा था, मैं नहीं जानता था कि कौन दुश्मन है और कौन दोस्त, ऐसा नहीं कि मेरे अपने जीवन में अनेक दोस्त थे। इसलिए मैंने दबाव दिया।

जो अंतहीन मील दिखाई दिये, उनके बाद, मैं एक सीमान्त के पार आया। एक सीमावर्ती चौकी के सशस्त्र मनुष्य वहॉ उपस्थित थे और चित्रों से, जो मैंने देखे थे, मैंने उनके गणवेश को पहचान लिया; वे रूसी थे, इसलिए अब मैं अपनी स्थिति को समझ सका, मैं सूदूरपूर्व के समुद्री बंदरगाहों में से एक बड़े रूसी बंदरगाह, व्लाडीवोस्टक (Vladivostok)[7], जाने वाली सड़क पर था।

मेरे दिखने पर, सीमा सुरक्षा प्रहरियों ने बड़े–बड़े झबराले मास्टिफ (Mastiff)[8] कुत्ते खुले छोड़

---

7 अनुवादक की टिप्पिणी : व्लाडीवोस्टक (Vladivostok), जिसका रूसी भाषा में शाब्दिक अर्थ होता है, पूर्व का शासक (rular of the East), प्रिर्मोस्की क्राई (Primorsky Krai), रूस का एक शहर और प्रशासनिक केन्द्र है, जो चीन और उत्तरी कोरिया की सीमाओं से बहुत दूर नहीं, गोल्डन होर्न बे (Golden Horn Bay), के आसपास स्थित है। वर्तमान में इसकी जनसंख्या लगभग छै लाख है, ये रूसी प्रशान्त बेड़े (Russian Pacific Fleet) का मुख्यालय, और प्रशान्त महासागर का प्रमुख बन्दरगाह है। इसे रूस का सेनफ्रान्सिसको (Sanfransisco) भी कहा जाता है। शहर में मुख्य व्यापार जहाजरानी उद्योग, मछलीमारी, और नौ सैनिक बेड़े का है। यहॉ जापानी कारों का बहुत बड़ा बाजार है। यहॉ अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है, जहॉ से मुख्य उड़ानें उत्तरी तथा दक्षिणी कोरिया, चीन, जापान, वियतनाम, फिलिप्पीन्स को जाती हैं। प्रसिद्ध मैक्सिम गोर्की एकेडेमिक थियेटर (Maxim Gorky Academic Theatre), यहीं है।

8 अनुवादक की टिप्पिणी : मास्टिफ (Mastiff), एक विशाल शरीर, बड़ी खोपड़ी और सिर, तथा आमतौर पर वर्गाकार आकृति वाला ये

दिये, और वे लुढ़कते और लार टपकाते हुए, मुझ पर आये, परंतु तब, सुरक्षा प्रहरियों के आश्चर्य के लिए, उन्होंने मेरे ऊपर प्यार के साथ उछाल मारी, क्योंकि, उन्होंने और मैंने, एक दूसरे को, मित्रों के रूप में पहचाना। उन कुत्तों से, इससे पहले कभी दूरानूभूति से बात नहीं की गई थी, और मैं समझता हूँ, कि उन्होंने सोचा कि मैं उनमें से ही एक हूँ। कैसे भी, वे मेरे आसपास कूदे और उन्होंने तीखी आवाजों से भौंकते हुए और आनंद के साथ मेरा स्वागत किया। सुरक्षा प्रहरी अत्यधिक प्रभावित हुए, उन्होंने सोचा कि मैं उनमें से ही एक होऊँगा और उन्होंने मुझे अपने सुरक्षाकक्ष में ले लिया, जहाँ उन्होंने मुझे खाना दिया। मैंने उन्हें बताया कि मैं जापानियों से भागा हुआ हूँ, इसलिए चूंकि वे जापानियों के विरुद्ध युद्ध में थे, मैं स्वतः ही ''उनके पक्ष वाला'' हो गया।

अगले दिन, मुझे एक सवारी का प्रस्ताव दिया गया, ताकि, मैं कुत्तों की, जो वापस शहर को ले जाये जा रहे थे, क्योंकि वे प्रहरियों के लिए अत्यधिक तीखे हो गये थे, देखभाल कर सकूँ। मैंने प्रस्ताव को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया और कुत्ते और मैं, एक ट्रक के पीछे चढ़े। हम एक झटकों भरी सवारी के साथ, व्लाडीवोस्टक पहुँचे।

फिर से, मैं अपने आप में हो गया, परंतु व्लाडीवोस्टक में, जैसे ही मैं सुरक्षा कक्ष (guard room) में से बाहर मुड़ रहा था, चीखों और भौंकने और हवा में गुर्राते हुए भौंकने हुए का एक भयंकर शोर हुआ। एक बड़े घेरे (enclosure) में कुछ कुत्ते, अचानक ही खून पीने की इच्छा के साथ आक्रामक हो गये थे और प्रहरियों पर, जो उन्हें नियंत्रित करने का प्रयास कर रहे थे, आक्रमण कर रहे थे। एक कैप्टन आया और जो उसके सीमा के सिपाहियों ने उसे बताया, उसे सुनने के बाद, उसने मुझे कुत्तों को नियंत्रित करने का आदेश दिया। सौभाग्यवश, मैंने उसे ठीक से व्यवस्थित किया और दूरानुभूति के द्वारा मैंने कुत्तों को समझा दिया कि उन्हें ठीक से व्यवहार करना पड़ेगा।

मुझे एक महीने के लिए, जबतक कि कुत्तों को दोबारा प्रशिक्षण दिया जा रहा था, उस शिविर में रखा गया और जब महीना पूरा हुआ, मुझे फिर से अपने रास्ते पर जाने की इजाजत मिली।

अब मेरा काम, अपने चलते रहने, चलते जाने की उस भयानक इच्छा को संतुष्ट करने का था। कुछ दिनों के लिए, मैं व्लाडीवोस्टक में घूमता–फिरता लटका रहा कि मास्को के मुख्य शहर तक कैसे पहुँचा जाये। अंत में, मैंने ट्रांस साइबेरियन रेलवे (Trans Siberian Railway)[9] के बारे में जाना। परंतु यहाँ एक खतरा था, कि तमाम भगोड़े मास्को जाना चाहते थे और काफी दूरी तक, साइडिंग के बगल से गड्ढ़े थे, जिनमें प्रहरी प्रतीक्षा करते हुए लेटे रहते थे, ताकि वे रेलों के नीचे देख सकें और छड़ों के

कुत्ता, विशालता के मामले में, सबसे बड़ी नस्लों में से एक है। संभवतः मास्टिफ का रंग काला होता है परंतु नीले चितकबरे और चॉकलेट की छाया वाले रंग भी इनमें मिलते हैं। ये शांत और अपने मालिक के प्रति स्नेही, परंतु सुरक्षा के लिये सक्षम होते हैं। मास्टिफ आमतौर पर बेहद वफादार नस्ल और अपने परिवार के लिये असाधारण रूप से समर्पित, और बच्चों व छोटे कुत्तों के साथ अच्छा बर्ताव करने वाला होता है। इनका संभावित जीवनकाल 7 से 14 वर्ष के बीच होता है। बिल्ली की प्रजाति में जिस तरह शेर होता है, उसी तरह कुत्ते की प्रजाति में मास्टिफ होता है। आजकल शुद्ध मास्टिफ कुत्ते कम होते जा रहे हैं। बदले में, इन्हें वर्णसंकर बनाकर अन्य विभिन्न नस्लें बनाई जा रहीं हैं। तिब्बती मास्टिफ की ऊंचाई 2 फुट से 2 फुट 2 इंच तक जबकि वजन 75 से 120 पौंड तक होता है। तिब्बती मास्टिफ, मूलतः तिब्बत, चीन, भारत, मंगोलिया और नेपाल के क्षेत्र में पाया जाता है, और घर की सुरक्षा तथा भेड़ों की, भेड़ियों, तेंदुओं और भालुओं से सुरक्षा करने में उपयोग में लाया जाता है। इसे तिब्बत में नोमाड का कुत्ता कहा जाता है, नेपाली में भोते कुकुर कहते हैं, यहाँ भोते का अर्थ होता है, तिब्बती।

9 अनुवादक की टिप्पिणी : ट्रांस साइबेरियन रेल्वे (Trans-Siberian railway), मास्को से लेकर जापान के समुद्रतट तक, 9289 किलोमीटर लम्बा, सोबियत संघ का रेल पथ है। ये दुनियाँ में सबसे लम्बी रेल लाइन है, इसकी सम्पर्क लाइनें मंगोलिया, चीन और उत्तरी कोरिया तक जाती हैं। 1916 से, इसे मास्को और व्लाडीवोस्टक के बीच बिछाया गया था, और तब से लगातार विस्तारित होती रही है। ये सौ बड़े और छोटे शहरों को यूरोपीय और एशियाई भाग से, जिसमें समय के साथ, रूस के क्षेत्र आते हैं, जोड़ती है और इसे आदि से अन्त तक यात्रा पूरी करने में 8 दिन का समय लगता है। रूसी, जापानी युद्ध (1904–05) में इसने सेन्य परिवहन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इकहरी लाइन होने के कारण, इस युद्ध में रूस को मात खानी पड़ी थी। 1917 में रूसी क्रान्ति के बाद, यह रेलवे, परिवहन का जीवन्त क्रम है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय में, यूरोप में शक्ति युद्ध में आपूर्ति करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसने जर्मनी और जापान के बीच, एक आवश्यक कड़ी के रूप में कार्य किया। वर्तमान में, ये रूस के आवागमन का बहुत महत्वपूर्ण साधन है। रूस के आयात का लगभग 30 प्रतिशत, इस रेल से जाता है। इस रेलवे के द्वारा, मंगोलिया और साइबेरिया में होते हुये, बीजिंग (Biejing) से हामबर्ग (Hamburg) तक का रास्ता 15 दिन में तय हो जाता है, जबकि जलमार्ग से, इससे 2 या 3 गुना तक अधिक समय लगता है।

साथ चिपके हुए किसी को भी गोली मार सकें।

अंत में, व्लाडीवोस्टक की सीमा का गश्त लगाने वाले एक आदमी, जिसके साथ मैं पिछले महीने रहा था, ने मुझे बताया कि सुरक्षा प्रहरियों को चकमा कैसे दिया जाये, और यही वह था जिससे मैं वोरोशिलोव (Voroshilov) गया, जहॉ रेल पर कोई निगरानी नहीं होती है। मैंने कंधे के बैग में, अपने साथ खाना लिया और उचित ट्रेन की प्रतीक्षा के लिए लेटा। अंततः, मैं ट्रेन पर चढ़ने की व्यवस्था कर सका और पहियों के बीच में, नीचे लेट गया, वास्तव में, मैंने रेल–रोड कार के तले में फर्श पर, बगल से प्रयास किया, ताकि मैं धुरियों से काफी ऊँचा और ग्रीस के डिब्बों (greese boxes) से छिपा हुआ रहूँ, और जबतक कि मैंने ये तय नहीं कर लिया कि, रेल–रोड कारों में से एक पर चढ़ना सुरक्षित था, लगभग छे मील के लिये मैंने रस्सों को पकड़ते हुए झेला। अंधेरा, काफी अंधेरा था, चंद्रमा अभी नहीं चढ़ा था। अत्यधिक प्रयास के साथ, मैंने रेल–रोड कार के दरवाजों को खिसका कर खोलने की व्यवस्था की और कष्टपूर्वक अंदर चढ़ गया।

कुछ चार हफ्तों के बाद, रेल मास्को से लगभग चालीस मील दूर, एक छोटे स्थान नोगिंस्क (Noginsk)[10] आई। मैंने सोचा कि उतरने के लिए यहॉ सबसे अच्छा स्थान था, इसलिए मैंने तबतक इंतजार किया, जबतक कि रेल एक मोड़ के लिए धीमी नहीं हुई, और तब मैं जमी हुई धरती पर, सुरक्षा के साथ उतर गया।

मैं चलता गया और चलता गया। वास्तव में, सड़क के बगल से लाशों को देखना, एक परेशान करने वाला दृश्य था। एक प्रौढ़ आदमी, मेरे सामने डगमगाया, जमीन पर गिरा। अंतप्रेरणा से, मैं लगभग झपटने और देखने वाला था कि मैं उसके लिए क्या कर सकता था, तभी फुसफुसाती हुई एक आवाज मुझ तक आई, ''रुको दोस्त, यदि तुम उस पर झुके तो पुलिस समझेगी कि तुम एक लुटेरे हो और तुम्हें एक गोली मार देगी। आगे बढ़ना जारी रखो!''

समय पर, मैं मास्को के केन्द्र में पहुॅचा, और मैं लेनिन के स्मारक (Lenin's Monument)[11] को देख रहा था, तभी अचानक मैं समीप ही जमीन पर गिरा दिया गया, मैने रायफल के बट का एक झटका पाया। मुझे ठोकरें मारते हुए और बारबार ठोकरें मारते हुए, मुझे अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए, सोवियत प्रहरी मेरे ऊपर खड़े थे। उन्होंने मुझसे पूछताछ की परंतु उनका लहजा इतने ''बड़े शहर'' का था, जिसे समझने में, मैं पूरी तरह असमर्थ था कि वे किस सम्बंध में बात कर रहे थे, और

10 अनुवादक की टिप्पिणी : नोगिंस्क (Noginsk), एक रूसी शहर है, जो क्लाज्मा नदी (Klyazma river) के किनारे पर, मास्को रिंग रोड से 34 किलोमीटर पूर्व में है। इसकी आबादी लगभग 1 लाख है। इसे 1939 में बसाया गया था और इसका मूल नाम रोगोजी (Rogozhi) था, जिसे बदलकर बोगोरोडस्क (Bogorodsk) किया गया। 1930 में इसका नाम बदलकर नोगिंस्क किया गया। बीसवीं शताब्दी में, ये सूती मिलों के केन्द्र के रूप में उभरा है। यहॉ सूती, रेशमी और ऊनी कपड़े की मिलें है। नोगिंस्क में चीनी मिट्टी, खाद्य, शराब और मकान बनाने की सामग्री बनाने वाले अनेक कारखाने हैं।

11 अनुवादक की टिप्पिणी : लेनिन का स्मारक (Lenin's Monument) या लेनिन की प्रतिमा (Lenin's statue) ब्लादिमिर लेनिन (Vladimir Lenin) को समर्पित है। रूस में इस 11.32 फुट ऊँची प्रतिमा को, 5 दिसम्बर 1946 को यूक्रेन (Ukraine) की राजधानी कीव (Kiev), में स्थापित किया गया था। लेनिन की प्रतिमायें, अफ्रीका, इथोपिया, क्यूबा, मंगोलिया, वियतनाम, जर्मनी, हंगरी, पोलेंड, अमरीका, रूस के अलावा, विश्व के अनेक साम्यवादी देशों में है। भारत में भी, कलकत्ता, विजयवाड़ा, नई दिल्ली एवं अन्य स्थानों में लेनिन की प्रतिमायें हैं। लेनिन (1870–1924), एक साम्यवादी विचारक, क्रान्तिकारी और रूस की साम्यवादी पार्टी का राजनेता था। वह 1917 से 1924 तक रूसी गणराज्य तथा सोवियत संघ का राष्ट्रपति रहा। लेनिन कार्ल मार्क्स की पुस्तक ''कैपीटल (The Capital)" से प्रभावित था। जनवरी 1905 में रूस में महान क्रान्ति हुई, जिसे रूस की खूनी क्रान्ति कहा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप, जार निकोलस द्वितीय (Tsar Nicholas II) ने अपने अक्टूबर घोषणापत्र (October Manifesto) में, अनेक उदारवादी सुधारों को लागू करना स्वीकार किया। 23 जून 1925 को सोवियत संघ में, लेनिन के नाम पर लेनिन पुरुस्कारों की स्थापना की गई, जो सोवियत संघ का, विज्ञान, साहित्य, कला, स्थापत्य, तथा तकनीकी क्षेत्रों में दिया जाने वाला, सर्वोच्च पुरुस्कार है।

1 दिसम्बर 2013 को, नकाबपोशों के एक समूह ने, प्रतिमा को तोड़कर नष्ट करने का प्रयास किया, जिसे पुलिस ने रोकने का प्रयास किया। उसके बाद 8 दिसम्बर 2013 को कीव की लेनिन प्रतिमा धराशायी कर दी गयी। प्रतिमा को गिराने के बाद, जनता ने यूक्रेन का राष्ट्रगीत गाया। इसके बाद अन्य लेनिन प्रतिमाओं को गिराने के आन्दोलन ने जोर पकड़ा, और देश में अनेक लेनिन प्रतिमायें गिरा दीं गईं। 15 मई 2015 को यूक्रेन के राष्ट्रपति पैट्रो पोरोशेंको (Petro Poroshenko) ने छै माह में सभी साम्यवादी स्मारकों को ढहाये जाने के कानून पर हस्ताक्षर कर दिये हैं।

अंत में, मुझे एक–एक दोनों ओर, दो लोगों की निगरानी में, और एक बड़ी रिवाल्वर को मेरी रीढ़ में घुसाते हुए, एक तीसरे आदमी के साथ, मुझे चलाकर दूर ले जाया गया। हम एक अंधेरी इमारत में पहुँचे और मुझे एक छोटे कमरे में ठेल दिया गया। यहाँ विचारणीय रूखेपन के साथ, मुझसे प्रश्न पूछे गये, और मैंने समझ लिया कि मास्को में जासूसों का आतंक है, और मुझे क्रेमलिन (Kremlin)[12] में घुसने का प्रयास करते हुए, किसी प्रकार का जासूस समझा गया!

कुछ घंटों खड़े रहने के बाद, मुझे झाडू की आलमारी के आकार की एक छोटी सी कोठरी में में रखा गया, एक कार आ कर पहुँची और मुझे लुबिआंका (Lubianka)[13] जेल ले जाया गया। ये रूस की सबसे खराब जेल है, ये प्रताड़नाओं की, मृत्यु की जेल है, एक जेल, जिसमें उनका खुद का कब्रगाह बनाया गया है, जिससे किसी कटी फटी लाश के सभी साक्ष्य जलाये जा सकते थे।

लुबिआंका के प्रविष्टि द्वार पर, या एक छोटे गलियारे में, मुझे अपने जूते उतारने पड़े और नंगे पैर जाना पड़ा। मेरे साथ वाले प्रहरियों ने अपने जूतों के ऊपर मोटे ऊनी मोजे डाल लिये और तब मुझे एक अंधियारे गलियारे में, एक गलियारा जो मीलों लंबा प्रतीत हुआ, एकदम मृत खामोशी में पैदल चलाया गया। वहाँ कोई ध्वनि नहीं थी। पैरों के खिसने की एक अजीब सी आवाज हुई और प्रहरियों ने, मेरा चेहरा दीवार के विरुद्ध करते हुए, मुझे पीछे से धक्का दे दिया। मेरे सिर के ऊपर कुछ चीज डाली गई, ताकि कोई प्रकाश नहीं देखा जा सके। मेरे संज्ञान लिया, मानो कि मैंने अपने पास से कुछ गुजरता हुआ अनुभव किया, और कुछ मिनटों के बाद, मेरे सिर के ऊपर का कपड़ा, खराब तरीके से झटक कर अलग कर दिया गया, और एकबार फिर, मुझे आगे की ओर धकेल दिया गया।

जो असंभव समय प्रतीत हुआ, के कुछ समय बाद, एकदम शांति में, एक दरवाजा खोला गया और मुझे पीठ में बहुत जोर का घातक धक्का दिया गया। मैं आगे की तरफ लुढ़क कर गिरा। वहाँ तीन सीढ़ियाँ थीं, परंतु कोठरी के एकदम गहरे अंधेरे में, मैं उन्हें नहीं देख सका; और इसलिए मैं गिरा और ठोकर खाकर अचेत हो गया।

समय अविश्वसनीय मंद गति से गुजरा। कांपती हुआ हवा में, अंतरालों पर, रोने की दहाड़ों की और गड़गड़ाहट के साथ समाप्त होती हुई आवाजें आईं।

कुछ समय बाद, प्रहरी मेरे प्रकोष्ठ में आये। उन्होंने मुझे अपने साथ जाने का इशारा किया। मैं बोलना चाहा और मुझे गालों पर से कुचल दिया गया, जबकि एक दूसरे प्रहरी ने, "कोई बात नहीं" के सार्वत्रिक चिन्ह के रूप में, अपने होठों पर उंगुली रखी। मुझे उन अंतहीन गलियारों में, फिर से ले जाया गया और अंततः मैंने अपने आपको, एक अत्यधिक प्रकाशित, पूछताछ वाले कमरे (interrogation room) में पाया। यहाँ प्रश्नों की झड़ी, अलग अलग समय पर एक ही प्रश्न, मुझसे पूछी गई और जब

---

12 अनुवादक की टिप्पिणी : क्रेमलिन का शब्द सबसे पहले 1331 में प्रचलन में आया। क्रेमलिन का अर्थ होता है शहर के अंदर एक छोटा किला। सामंतवादी युग में रूस के विभिन्न नगरों में बनाये गये दुर्ग, क्रेमलिन (Kremlin) कहलाते हैं। मास्को क्रेमलिन, जिसे सामान्यतः क्रेमलिन कहा जाता है, मास्को शहर के बीच एक बड़ा स्थल है। इस स्थल पर ग्रांड क्रेमलिन पेलैस (Grand Kremlin Palace) है। पास में ही रेड स्क्वायर (red square) है। ये रूसी प्रशासन में लगभग वैसी ही हैसियत रखता है, जैसा कि अमेरिका में व्हाइट हाउस। इसी के आधार पर क्रेमोनोलॉजी (Kreminology) नामक शब्द गढ़ा गया है, जिसका अर्थ होता है, रूस और रूस की राजनीति का अध्ययन। 14वीं शताब्दी तक इस स्थल को ग्रेड ऑफ मास्को (Grad of Moscow) कहा जाता था। रूसी सरकार 12 मार्च 1988 को पेट्रोग्राड (Petrograd) से मास्को चली गई। ब्लादिमिर लेनिन ने क्रेमलिन सीनेट को अपना निवास स्थान बनाया। क्रेमलिन में, जोसेफ स्टालिन (Joseph Stalin) के निजी कमरे भी थे। वर्तमान राष्ट्रपति ब्लादिमिर पुतिन ने क्रेमलिन में हैलीपेड बनबाया, जो 2013 में पूरा हुआ।

13 अनुवादक की टिप्पिणी : लुबिआंका (Lubianka), मूलतः वास्तव में, 1898 में, आलॅ रसिया इंश्योरेंस कम्पनी (All-Russia Insurance Company), के मुख्यालय के रूप में स्थापित किया गया था। बोलशेविक क्रान्ति (Bolshevic Revolution), के बाद उस अधोसंरचना को रूसी सरकार ने खुफिया पुलिस के मुख्यालय के लिये अधिग्रहीत कर लिया। ये मास्को की सबसे ऊँची बिल्डिंग के रूप में संदर्भित किया जाता था क्योंकि, इसके आधारतल से साइबेरिया को देखा जा सकता था। वर्तमान में, लुबिआंका को केजीबी के मुख्यालय (KGB Headquarters) और लुबिआंका स्क्वायर से संबद्ध जेल के लिये जाना जाता है। केजीबी के विघटन के बाद ये रूसी बार्डर गार्ड सर्विस (Border Guard Service of Russia) का मुख्यालय बना दिया गया। ये अपनी जेल और उसमें दी जाने वाली प्रताड़नाओं के लिये बनाई गयी विशेष संरचनाओं के लिये प्रसिद्ध है।

मैंने अपनी कहानी को नहीं बदला, तो दो प्रहरियों को विशेष निर्देश दिये गयेः मुझे लुबिआंका की एक संक्षिप्त यात्रा कराई गई। मुझे गलियारों में होकर ले जाया गया, और मुझे, आदमी और औरतें दोनों, दुर्भाग्यशाली बेचारों को, दैत्यों की प्रताड़ना झेलते हुए, प्रताड़ना कक्ष दिखाये गये। मैंने ऐसी प्रताड़नायें, ऐसी पाश्विक यातनायें देखीं हैं, कि मैं उन्हें दोहराने का दुस्साहस नहीं कर सकता, क्योंकि, पश्चिमी लोगों को जानते हुए, मैं जानता हूँ कि मुझ पर अविश्वास किया जायेगा।

मुझे पत्थर के एक कमरे को दिखाया गया, जिसमें वह था, जो घुड़सालों जैसा दिखाई देता था। एक खाली दीवार से, पत्थर वाली घुड़सालें, दीवार से लगभग तीन फुट तक विस्तारित होती थीं, और प्रहरियों ने मुझे दिखाया कि किसी आदमी या औरत को, उसके हाथ दीवार पर सामने की ओर रखते हुए, किस प्रकार नंगा करके घुड़साल में धक्का दे दिया जाता था। तब कैदी को, गरदन के पीछे से, गोली मारी जाती और वह आगे की ओर गिरता, और सारा खून एक नाली में बह जाता, जिससे कि कोई अनावश्यक घपला पैदा नहीं होता।

कैदी नंगे थे, क्योंकि, रूसी विचार के अनुसार, कपडों पर, कपड़े, जो कि जीवित लोगों द्वारा पहने जा सकें, खर्च करने की कोई तुक नहीं थी।

उस स्थान से, मुझे जल्दी से एक दूसरे गलियारे में, बाहर किया गया और एक स्थान में जो बकरीघर (bake-house) जैसा दिखता था। शीघ्र ही मैंने देखा कि ये बकरीघर नहीं था, क्योंकि, लाशें और लाशों के टुकड़े जलाये जा रहे थे। जैसे ही मैं पहुॅचा, एक बहुत जला हुआ हड्डियों का ढांचा, एक भट्टी में से हटाया जा रहा था और उसे एक बड़ी चक्की में, जो घूमती थी और हड्डियों के ढांचे को भयानक आवाज के साथ पीस देती थी, पीसा जा रहा था। हड्डियों का चूरा, और वैसे ही राख भी, मैं समझता था किसानों को खाद के रूप में भेज दिया जाता था।

परंतु इन सभी प्रताड़नाओं, जिनमें होकर मैं गुजरा, के सम्बंध में चलते रहने का कोई बिन्दु नहीं था, परंतु ये कहना पर्याप्त होगा कि काफी लंबे समय के अंत में, मुझे खींचकर, तीन उच्च्य अधिकारियों के सामने लाया गया। उनके हाथ में कागजात थे, जो उनके अनुसार, इस तथ्य को प्रमाणित करते थे कि मैंने व्लाडीवोस्टक में प्रभावशाली व्यक्ति की मदद की, और दूसरा यह कि मैंने उसकी लड़की को जापानी–युद्धबंदी–शिविर में से भगाने में मदद की। उन्होंने मुझे बताया कि मैं मारा जाने वाला नहीं हूँ, परंतु मुझे पोलेंड के एक शहर, स्ट्रीज (Stryj)[14] भेजा सकता है। सेना की टुकड़ियॉ, रूस से वहॉ जा रहीं थीं, और मैं उनके साथ कैदी के रूप में जाऊॅगा और तब स्ट्रीज में, मुझे पोलेंड से भी निष्कासित कर दिया जायेगा।

अंततः, काफी अधिक बिलम्ब से, क्योंकि मैं हटाये जाने के लिए, वास्तव में, अत्यधिक बीमार था इसलिए मुझे पुनः स्वास्थ्य लाभ करने के लिए समय देना पड़ा। अंततः मुझे एक सिपाही (corporal), जिसके साथ में दो सैनिक थे, को दे दिया गया। मुझे मास्को की गलियों में होकर रेलवे स्टेशन तक चलाया गया। मौसम जमा देने वाला ठंडा था, एकदम ठंडा, परंतु कोई खाना नहीं दिया गया, यद्यपि तीनों सैनिक, एक ही समय में खाना ढूंढ़ने के लिये टहल गये। रूसी सैनिकों की एक बड़ी टुकड़ी (detachment) स्टेशन पर आई, और एक सार्जेंट यह कहता हुआ कि आदेश बदल दिये गये हैं, और बदले में मुझे ल्वोव (Lwow)[15] जाना है, सामने आया। मुझे रेल पर लाद दिया गया, जो अनेक झटकों

---

14 अनुवादक की टिप्पिणी : स्ट्री (Stryi), पश्चिमी युक्रेन के ल्वीव ओब्लास्ट क्षेत्र में, स्ट्री नदी के वायें किनारे, लगभग साठ हजार आबादी वाला गॉव है, जो पोलिस भाषा में स्ट्रीज (Stryj), कहलाता है, और पूर्वी पोलेंड के लुबनिन (Lubnin) शहर के उत्तर–पश्चिम में लगभग 75 किलोमीटर दूर है।

15 अनुवादक की टिप्पिणी : पोलिस भाषामें ल्वोव (Lwow) अथवा रूसी भाषा में ल्वीव (Lviv), पश्चिमी यूक्रेन का सबसे बड़ा और देश का सातवॉ सबसे बड़ा नगर है, जिसकी आबादी लगभग सात लाख तीस हजार है। ये यूक्रेन के प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, इसे सोवियत संघ का भाग बना दिया गया था, तथा पोलेंड और सोवियत संघ के बीच आबादी का आदान–प्रदान हुआ था। नगर के ऐतिहासिक केन्द्र को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूवी में शामिल किया गया है।

और हिचकोलों के बाद गई, और काफी देर बाद, अंत में, कीव शहर पहुँची।

यहाँ मैं और कुछ सैनिक, एक सैनिक वाहन में प्रविष्ट हुए, और अधिक सच्चाई के साथ, चालीस सैनिक और मैं, एक में ठूंस दिये गये।

और तब सैनिक वाहन दौड़ा, परंतु हमारा ड्राइवर अत्यधिक तेज और अत्यधिक अनाड़ी था, वह दीवार से टकराकर पीछे उछला, और सैनिक वाहन, टूटे हुए ईंधन के टेंक की आग में विस्फोटित हो गया, मैं काफी समय तक अचेत रहा। जब चेतना में मेरी पुनर्वापिसी हुई, मुझे फिर अस्पताल में ले जाया गया। यहाँ मेरा एक्सरे किया गया, और ये पाया गया कि मेरी तीन पसलियाँ टूटी थीं, टूटे हुए एक सिरे ने मेरे बायें फेफड़े में छेद कर दिया था। मेरी बायीं भुजा, दो स्थानों पर टूटी थी, और मेरी बायीं टांग घुटने पर और टखने पर टूटी थी, और सैनिक की बंदूक का टूटा हुआ बोनट, एक महत्वपूर्ण अंग मात्र को छोड़ते हुए, मेरे बायें कंधे में घुसा हुआ था।

मैं, एक मोटी महिला डॉक्टर के, मुझे वापस होश में लाने के लिए, मेरे चेहरे पर थपकियाँ मारने से, एक शल्यक्रिया से जगा। मैंने देखा कि मैं चालीस या पचास दूसरे लोगों के साथ, एक वार्ड में था। दर्द, जो मुझे था, वह अविश्वसनीय था, वहाँ दर्द से आराम दिलाने को कुछ भी नहीं था, और काफी लंबे समय तक, मैं जीवन और मृत्यु के बीच मंडराता रहा।

मेरे अस्पताल में रुकने के बाइसवें दिन, पुलिस के दो सिपाही वार्ड में आये, उन्होंने मेरे पलंग से कंबल को फाड़ दिया और मुझ पर जोर से चिल्लायेः ''जल्दी करो, तुमको निष्कासित किया जा रहा है, तुमको तीन हफ्ते पहले चले जाना चाहिए था!''

मुझे ल्वोव ले जाया गया और बताया गया कि मुझे एक साल तक काम करते हुए, पोलेंड की सड़कों की मरम्मत करते और उन्हें दोबारा बनाते हुए, अस्पताल को अपने इलाज का खर्चा देना पड़ेगा। सड़क के बगल से बैठकर पत्थरों को तोड़ते हुए, एक महीने तक मैंने ऐसा किया, और तब चूंकि मेरे घाव ठीक से नहीं भरे थे, मैं खून की उल्टी करता हुआ गिर पड़ा इत्यादि, और फिर से अस्पताल ले जाया गया। यहाँ डॉक्टर ने मुझे बताया कि मुझे अस्पताल के बाहर जाना पड़ेगा, क्योंकि मैं मर रहा था, और वह किसी परेशानी में नहीं पड़ेगा, यदि कोई और कैदी उस महीने में मरे, क्योंकि ''उसका कोटा पूरा हो चुका था।''

इसलिए ऐसा था कि मुझे निष्कासित कर दिया गया, और एकबार फिर, मैं आवारा बन गया। अनेक समयों में से पहली बार, मुझे बताया गया कि मेरा जीवन केवल थोड़ा सा ही बचा है, परंतु तब से कईबार की भाँति, मैं नहीं मरा।

एक सड़क पर चलते हुए, मैंने एक कार को परेशानी में देखा। इसके बगल से, एक अत्यंत डरा हुआ आदमी खड़ा हुआ था। ठीक है, मैं कारों और हवाईजहाजों के इंजनों के बारे में काफी कुछ जानता था। इसलिए मैं रुका, और मैंने पाया कि कार के साथ कुछ अधिक बड़ी खराबी नहीं थी, कैसे भी, ऐसा कुछ नहीं, जिसे मैं नहीं सुधार सकूँ। इसलिए मैंने इसे चालू कर पाने की व्यवस्था की, और जाते हुए वह इतना अधिक आभारी हुआ कि उसने मुझे एक काम का प्रस्ताव दिया। अब, वह इतना अजीब नहीं है, जैसा कि दिखाई पड़ सकता है क्योंकि, कार कुछ समय पहले ही मुझसे आगे निकली थी। हम ठीक वहाँ से पार करते हुए, जहाँ सीमा सुरक्षाप्रहरी पड़ाव डाले हुए थे, साथसाथ, एक नदी का पुल पार कर रहे थे। उसे लंबे समय के लिए रोका गया था, और मैं समझता हूँ कि वह पैदलों और घुमक्कड़ों को देखता रहा था कि वे क्या कर रहे थे, किन्हीं फुरसत के क्षणों को गुजारने के लिए, वे कहाँ जा रहे थे। मैंने सीमा को, बहुत कम समय में, लगभग अपने जीवन के मात्र समय में, जो मुझे मिला, पार किया! परंतु, उसने मुझे एक नौकरी का प्रस्ताव दिया और मैं उसके प्रभामंडल से देख सकता था कि तर्कपूर्ण ढंग से, वह एक ईमानदार आदमी था, दूसरे शब्दों में, उतना ईमानदार, जितना होना वह बर्दाश्त कर सकता था। उसने मुझे बताया कि उसे कारों को विभिन्न स्थानों पर ले जाने की लिए आवश्यकता

पड़ती है, इसलिए मैंने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, और उसने मुझे यूरोप देखने का, एक वास्तविक, आश्चर्यजनक मौका दिलाया।

वह अवस्थिति (location) को अच्छी तरह जानता था और उसके ''संपर्क'' थे। उसने मेरे कागजात देखे, और उनको देखकर, मुझे ये बताते हुए कि यदि ''निष्कासित'' लिखे हुए कागजात मेरे पास थे, तो सिवाय जेल के, मैं शायद, कहीं नहीं जा सकता था, कंधे उचकाये। इसलिए उसने मुझे सड़क के बगल से छोड़ दिया, जिसके बाद वह मेरे लिये वापस आया और कार चलाकर, मुझे एक स्थान, जिसे मैं नहीं बताऊँगा, को ले गया, जहॉ मुझे ताजा कागजातों, एक जाली पासपोर्ट और सभी आवश्यक यात्रा दस्तावेजों से युक्त कर दिया गया।

इसलिए मैंने उसके लिये कार चलाई। वह कार चलाने से परेशान दिखाई दिया और यह मेरे लिए सौभाग्यजनक था, कि वह ऐसा था। मैंने ब्रातिस्लावा (Bratislava)[16] और उससे आगे वियाना (Vienna)[17] तक कार चलाई; मैं देख सकता था, वास्तव में, वियाना, एक अत्यंत आश्चर्यजनक शहर रह चुका था परंतु अब युद्ध के परिणाम के कारण, ये काफी ठोक दिया गया। हम वहॉ दो या तीन दिन रुके, और मैंने शहर के आसपास, जितना अधिक मैं देख सकता था, देखा, यद्यपि, ये आसान नहीं था क्योंकि लोग विदेशियों के प्रति असाधारण रूप से शंकालु थे। अक्सर, हर बार कोई व्यक्ति, दुबक कर पुलिस से मिलता और वहॉ कानाफूसी में वार्तालाप होता, और तब पुलिस का सिपाही ये सुनिश्चित करता कि उसकी बंदूक ठीकठाक थी, और वह मेरे पास पहुँचता, और ''कागजात!'' मांगता, इसने मुझे ये जॉच करने का कि, मेरे कागजात पूरी तरह ''अधिकृत'' थे, काफी अच्छा अवसर दे दिया, क्योंकि, उनके सम्बंध में, वहॉ कभी भी, किसी प्रकार की पूछताछ बिल्कुल नहीं हुई।

वियाना से हम क्लागेनफर्ट (Klagenfurt)[18] गये। यहॉ केवल थोड़ी सी देर हुई, मैंने लगभग आठ घंटे प्रतीक्षा की और बूंदाबांदी, जो कुलबुलाती हुई नीचे आई, में पूरी तरह से जम गया। मुझे बहुत भूख भी लगी थी क्योंकि, वहॉ राशनिंग (rationing) थी और मेरे पास ठीक प्रकार के कूपन नहीं थे। परंतु भूख एक ऐसी चीज थी, जिसका मैं अच्छी तरह अभ्यस्त था, इसलिए मैंने इसके साथ टिके रहने की व्यवस्था कर ली।

---

16 अनुवादक की टिप्पिणी : ब्रातिस्लावा (Bratislava), स्लोवाकिया (Slovakia) की राजधानी है। इसकी आबादी लगभग साढ़े चार लाख है, जो यूरोप की सबसे छोटी राजधानियों में से एक है। परंतु फिर भी, ये अपने देश का सबसे बड़ा शहर है। शहर को अपना वर्तमान नाम 1919 में मिला, तबतक इसे जर्मन नाम प्रेसवर्ग (Pressburg) के नाम से जाना जाता था।

17 अनुवादक की टिप्पिणी : वियना (Vienna), आस्ट्रिया की राजधानी तथा एक बड़ा शहर, एवं आस्ट्रिया के नौ राज्यों में से एक राज्य है। ये शहर, आस्ट्रिया के पूर्वी भाग में, चैकोस्लोवाकिया तथा हंगरी की सीमाओं के निकट स्थित है। 18 लाख आबादी वाला यह शहर, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक यह, विश्व भर में जर्मन भाषा भाषी सबसे बड़ा शहर था। आज विश्व भर के जर्मन भाषा भाषी शहरों में, बर्लिन के बाद इसका नम्बर दूसरा आता है। वियना, संयुक्त राष्ट्र (UNO) तथा तेल उत्पादक एवं निर्यातक देश (OPEC) जैसे अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की मेजवानी करता है। 2001 में इसे, यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत के रूप में मान्यता दी गयी है। संगीत का नगर ''(city of music)'' कहे जाने के साथ–साथ, विश्व के प्रथम मनोविश्लेषक (Psychoanalyst)- सिगमंड फ्राइड (Sigmund Freud) का जन्म स्थान होने के कारण, इसे ''स्वप्नों का नगर (the city of dreams)'' भी कहा जाता है। वियना को, विश्व भर में उसके उच्च जीवनस्तर के लिये जाना जाता है, जिसके लिये, 2005 में वंकोवर (Vancouver) के साथ–साथ (tie), इसे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था। संयुक्त राष्ट्र बसाहट (UN habitat) द्वारा 2012–2013 में इसे विश्व का सर्वाधिक संपन्न (most prosperous) शहर के रूप में वर्गीकृत किया गया। 2005 से 2010 की अवधि में यहॉं, अनेक अंर्तराष्ट्रीय संगठनों एवं सम्मेलनों का आयोजन किया गया। यहॉं लगभग 37 लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं।

18 अनुवादक की टिप्पिणी : आस्ट्रिया (Austria) की राजधानी वियना के उत्तर–पूर्व में स्थित, क्लागेनफर्ट (Klagenfurt), दक्षिणी , के कैरिंथिया (Carinthia), राज्य की राजधानी है। लगभग एक लाख की आबादी वाला, ये शहर देश का छठवॉ सबसे बड़ा शहर है। इसका क्षेत्रफल 120 वर्ग किलोमीटर, समुद्रतल से ऊँचाई 446 मीटर है। शीत और बसंत ऋतु में यहॉ घना कोहरा छाया रहता है। 1514 की भीषण आग ने इसे पूरी तरह बरबाद कर दिया था। 1809 में नैपोलियन (Napoleon) के नेतृत्व में फ्रासीसी सेनाओं ने शहर की दीवारों को नष्ट कर दिया था। शहर का विकास 1863 के बाद से, जब वियना–ट्रीस्टी (Vienna-Trieste) रेल लाइन डाली गयी, ही शुरू हो पाया, जिसका केन्द्रीय स्टेशन द्वितीय विश्वयुद्ध में नष्ट हो गया था। यहॉ एक छोटा सा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, और एक विश्वविद्यालय है।

हमने रात भर इटली के लिए कार चलाई, और वेनिस (Venice)[19] के लिए अपना रास्ता लिया। यहॉ भी, मेरे खेद के लिए, मुझे दस दिन रुकना पड़ा, वे नाखुशी के भी दस दिन थे, क्योंकि मुझे गंध के एक नितान्त असाधारण संज्ञान का उपहार या अभिशाप प्राप्त है, और, जैसा संभवतः हर व्यक्ति जानता है, वेनिस की नहरें खुले सीवर हैं। कुल मिलाकर, आप बंद सीवरों में कैसे रह सकते हैं, जबकि पूरे इलाके में खौफनाक बाढ़ हो? इसलिए, निश्चितरूप से, ये तैरने का स्थान नहीं था!

दस दिन खिंच गये, स्थान अमरीकियों, जो पैसे और शराब से भरे पूरे थे, से पूरा भरा हुआ दिखाई दिया। धन की तगड़ी भूमिका, जो अधिकांश इटलीवासियों को एक वर्ष तक रख सकती थी, को दिखाना, अमरीकियों का रोजमर्रा का दृश्य था।

अनेक अमरिकी, मुझे बताया गया था, अमेरिकी सेना या वायुसेना के भगोड़े थे, जिनके कालेबाजार के सामानों के काफी बड़े व्यापार थे।

वेनिस से हम, इतिहास में समृद्ध और भूतकाल के द्योतक एक स्थान, पादुआ (Padua)[20] गये। मैंने यहॉ एक हफ्ता गुजारा, मेरा नियोक्ता काफी बड़ी मात्रा में व्यापार करता प्रतीत हुआ, और मैं, उसकी भिन्न भिन्न कन्या मित्रों के द्वारा चकित हुआ, जो उसने ऐसे पकड़ीं जैसे कि दूसरे लोग, सड़क के किनारे से फूल चुनते हैं। निःसंदेह ये इस कारण से था, क्योंकि उसके पास एक बड़ा बैंक बैंलेस था।

पादुआ में, मेरे नियोक्ता को योजनाओं में सहसा परिवर्तन करना पड़ा, परंतु एक दिन वह आया, और मुझे इस सम्बंध में, ये कहते हुए कि उसे वापस उड़कर चेकोस्लोवाकिया जाना था, पूरा बताया। परंतु उसने बताया, वहॉ एक अमरीकी आदमी था, जो मेरे बारे में सबकुछ जानता था, जो मुझसे काफी अधिक मिलना चाहता था, इसलिए मुझे इस व्यक्ति से परिचित कराया गया। वह मोटे चरबीयुक्त होठों और एक कन्यामित्र के साथ, जो बिलकुल बुरा मानती नहीं दिखी, भले ही वह नंगी हो, या कपड़े पहने हुए, एक बड़ा मांसल व्यक्ति था। अमेरिकी, कारों, ट्रकों और दूसरे प्रकार की विभिन्न मशीनों में व्यवहार

---

19 अनुवादक की टिप्पिणी : वेनिस (Venice), इटली का एक शहर और उत्तर–पूर्वी वेनेटो क्षेत्र (North-eastern Veneto region), की राजधानी है। ये 400 में से 118 छोटे छोटे द्वीपों, जो नहरों के द्वारा एक दूसरे से अलग हैं, और पुलों के द्वारा एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, पर विस्तारित है। 2014 में शहर की आबादी लगभग दो लाख पैसठ हजार थी। शहर का तत्कालीन नाम, वेनिटी (Veneti), आदिवासियों, जो ईसापूर्व 10वीं शताब्दी में वहॉ रहते थे, के आधार पर उत्पन्न हुआ था। मध्ययुग में इसे वेनिस गणराज्य (Republic of Venice) कहा जाता था। 12 मार्च 1797 को, जब नेपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) ने इसको विजित किया, इसकी स्वायत्तता समाप्त हो गयी और यह आस्ट्रिया (Ausrria) का क्षेत्र बन गया। वेनिस प्राप्त करन वेनिस इटली का प्रमुख शहर है। मान्यता ये है कि इसका प्राकृतिक सौंदर्य एक कलाचित्र के समान दिखाई देता है। ये शहर इटली का सांस्कृतिक एवं व्यापारिक केन्द्र है। वेनिस के प्रसिद्ध बंदरगाहों में से एक है, वेनिसियल आर्सेनाल (Venicial arsenale), जो प्राचीन काल में जलसेना का केन्द्र था। वेनिस का कार्नीवाल (Venice Carnival), 5 अक्टूबर से प्रारंभ होकर क्रिसमस तक चलता है। यहॉ इस त्यौहार को विशेषरूप से बनाया जाता है। इस अवसर पर रंगबिरंगे मास्क पहने जाते हैं। रंगमंच पर नाटक कलाकार मास्क पहने रहते हैं। अप्रैल से लेकर सितम्बर तक, यहॉ नौकाओं आदि का आनंद उठा सकते हैं। अधिकांश स्थानीय लोग, ईसाई धर्म को मानते हैं। मार्बल गिरजाघर (Marble Church) या सैंटा मारिया (Sainta Maria) वेनिस में स्थित है। शिल्पकारों ने इसे सुंदर प्रकार से सुसज्जित किया है। यहॉ लोगों की शादियां धूमधाम से मनाई जाती हैं, और हर वर्ष रंगमंच प्रेमियों के लिये, रंगमंच पर नाट्य कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। पिज्जा एवं पास्ता, यहॉ के मनपसंद व्यंजन हैं। वेनिसीयन (Venicean) और स्पेनिश (Spanish) बोली जाने प्रमुख भाषायें हैं। नवंबर से जनवरी तक यहॉ का मौसम सामान्य रहता है, जो भ्रमण के लिये उपयुक्त है। प्रथम पश्चिमी व्यापारी और यात्री, मार्कोपोलो (Marco Polo), जो तेरहवीं शताब्दी में यूरेशिया के रेशम पथ (Silk road) से होता हुआ चीन, जापान और पूर्वी देशों की यात्रा पर आया था, वेनिस का निवासी था। शहर का लगून (Lagoon) और शहर का कुछ भाग विश्व धरोहरों (UNESCO World Heritage Sites) की सूची में शामिल है।

उदयपुर (राजस्थान, भारत) को पूर्व का वेनिस कहा जाता है।

20 अनुवादक की टिप्पिणी : वेनिस से लगभग चालीस किलोमीटर पश्चिम में स्थित पादुआ (Padua), उत्तरी इटली का, लगभग दो लाख बीस हजार की आबादी वाला, सबसे पुराना शहर, और पादुआ राज्य की राजधानी है। पादुआ 1405 में वेनिस गणराज्य के अन्तर्गत आया और 1797 में वेनिस गणराज्य के पतन तक वहीं रहा। 1814 में शहर आस्ट्रिया साम्राज्य के अन्तर्गत आया। 24 मई 1915 को, जब इटली प्रथम विश्वयुद्ध में कूदा, तो पादुआ इटली की सेना का मुख्यालय बना। इस पर अनेक बार बमबारी हुई। प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद, यहॉ तेजी से विकास हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध में इटली की हार के बाद, 8 सितम्बर 1943 को नाजी शासकों की कठपुतली, इटली के समाजवादी गणराज्य के अन्तर्गत आ गया। 1946 में शहर के पूर्वी भाग में औद्योगिक क्षेत्र का विकास किया गया। वर्तमान में लगभग 1300 उद्योगों के मुख्यालय यहॉ हैं, जिनमें लगभग पचास हजार कर्मचारी काम करते हैं। यहॉ का पादुआ विश्वविद्यालय 1222 में स्थापित किया गया था, जिसमें सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो गैलीलाई (Galileo Galilei), व्याख्याता थे। फुटबाल यहॉ का लाकप्रिय खेल है।

करने वाला, दूसरा व्यक्ति था। कुछ समय के लिए, मैंने पादुआ में एक बड़ा ट्रक चलाया, मेरा भार (load) उच्च श्रेणी के कुछ नाजियों और दूसरे फासीवादी अधिकारियों, जिन्होंने अपने जीवन और कारें, दोनों खो दीं थीं, से हथियायी गई, विभिन्न अधिकारियों की कारें थीं। ये कारें, ठीक है, मैं ये भी नहीं समझ सका कि उन्हें क्या हो रहा था, परंतु वे अमेरिका को निर्यात होती दिखती थीं, जहॉ वे मोटी कीमतें प्राप्त करती थीं।

मेरा नया नियोक्ता, अमेरिकन, मुझसे एक विशेष कार को चलवाकर स्विट्जरलैंड, और तब दूसरी को जर्मनी ले जाना चाहता था, परंतु जैसा मैंने स्पष्ट किसा कि उसके लिए, मेरे कागजात काफी ठीक नहीं थे। उसने मेरे तर्कों की उपेक्षा की, परंतु तब कहा, ''जी (Gee), मुझे तुम्हारे लिए ठीक चीज मिल गई है, मैं जानता हूँ, हम क्या कर सकते हैं। दो दिन पहले, एक पियक्कड़ अमेरिकी, कार चलाते हुए कांक्रीट के आधार में घुस गया था, और वह पूरे के पूरे स्थान पर छिटका दिया गया था। मेरे आदमियों ने उसके कागजात, इससे पहले कि वे खून, जो उसमें से निकला, के द्वारा छुए भी जाते, प्राप्त किये; वे ये हैं।'' वह मुड़ा और उसने अपने बड़े उभरे हुए ब्रीफकेस को छान मारा और कागजातों का एक बंडल निकाला। जब मैंने देखा कि वे पानी के जहाज के द्वितीय अभियंता (second engineer) के कागजात थे, मैं तात्कालिक सतर्कता के साथ उछला। हर चीज वहॉ थी, पासपोर्ट, समुद्री संघ का कार्ड (Marine Union Card), कार्यों की अनुज्ञाऐं (work permits), पैसा, हर चीज। केवल एक चीज गलत थी; फोटोग्राफ।

अमेरिकी हॅसा, मानो कि वह कभी नहीं रुकेगा और उसने कहा ''फोटोग्राफ''? मेरे साथ आओ, हम उसे अभी ठीक करा देंगे!'' उसने मुझे होटल के कमरे के बाहर दौड़धूप कराई, और हम एक विशिष्ट स्थान पर गये, जो पत्थर की अनेक सीढ़ियों से युक्त घुमावदार रास्ता था। दरवाजे पर गुप्त थपकी और एक प्रकार का पासवर्ड देकर, वहॉ सुस्ताते हुए आदमियों के एक गिरोह के साथ, हम एक घटिया से कमरे में प्रविष्ट हुए। मैं एक नजर में देख पाया कि वे जालसाज थे, यद्यपि, मैं नहीं बता सकता कि वे जालसाजी से किस प्रकार का धन बना रहे थे। परन्तु, इसका मुझसे कोई लेनादेना नहीं था। समस्या उन्हें समझाई गई और जल्दी से मेरा फोटोग्राफ लिया गया, साथ ही साथ, मेरे हस्ताक्षर लिये गये, और तब हम उस स्थान से बाहर ले जाये गये।

अगली शाम को, होटल के दरवाजे पर थपकी हुई, और मेरे कागजात लिये हुए एक आदमी प्रविष्ट हुआ। मैंने उनको देखा और वे इतने पूर्ण थे कि मैं मैं वास्तव में, विश्वास कर सका कि मैंने ही उन चीजों पर हस्ताक्षर किये थे, और सभी जानकारियॉ मैंने अपनी हस्तलिपि में लिखी थीं। मैंने स्वयं में सोचा, ''ठीक है, अब मेरे पास सभी कागजात हैं, मैं कहीं भी जलयान पर सवार होने के लिये, एक इंजीनियर के रूप में नौकरी पाने के लिए, और अमेरिका जाने के लिए, योग्य हूँ। अमेरिका, वह स्थान है, जहॉ मुझे होना है, इसलिए इस आशा में कि मैं किसी बड़े बंदरगाह पर पहुॅचूंगा, मैं वह करूँगा, जो ये आदमी चाहता है।

मेरा नया नियोक्ता, मेरे बदले हुए रवैये से प्रफुल्लित था, इसलिए पहली चीज, जो उसने की, वह था मुझे धन की एक बड़ी राशि देना, और एक मर्सीडीज कार, वास्तव में, एक बहुत शक्तिशाली कार से परिचित कराना, और मैं कार को चलाकर स्विट्जरलैंड ले गया। मैंने तटकर (custom) और आव्रजन (immigration) सम्बंधी व्यवस्थायें कर लीं और बिलकुल कोई कष्ट नहीं हुआ। और तब मैंने एक विशेष पते पर कार को बदला और जर्मनी के लिए, वास्तव में कार्लस्रूह (Karlsruhe)[21] के

---

21 अनुवादक की टिप्पिणी : कार्लस्रूह (Karlsruhe), राईन नदी के किनारे स्थित, दक्षिण पश्चिम जर्मनी का, दूसरा सबसे बड़ा शहर है। कार्लस्रूह का महल 1715 में बनाया गया था। ये जर्मनी का सबसे गर्म और सबसे अधिक समय तक चमकते सूर्य वाला शहर है। शहर में दो वानस्पतिक उद्यान हैं। कार्लस्रूह को जर्मनी की इंटरनेट राजधानी कहा जाता है क्योंकि, कार्लस्रूह विश्वविद्यालय ने 1990 के बाद तक ये सेवायें प्रदान की थीं। कार्लस्रूह, मशहूर शोध एवं अध्ययन केन्द्र है। कार्लस्रूह इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के पुस्तकालय ने सबसे पहले इंटरनेट साईट का विकास किया, जिसमें विश्व भर के शोधकर्ताओं को, निःशुल्क पुस्तकालयीन सुविधायें, विश्व भर में, उपलब्ध करायीं जाती हैं। प्रारम्भ से

लिए चलना जारी रखा, जहॉ मुझे बताया गया था कि मुझे लुडविगशाफेन (Ludwigshafen)[22] जाना है। मैंने वहॉ गाड़ी चलाई और अपने आश्चर्य के लिए, मैंने अपने अमेरिकी नियोक्ता को वहॉ पाया। वह मुझे देखकर प्रफुल्लित था क्योंकि, उसे अपने स्विट्जरलैंड के संपर्को से सूचना मिल गई थी कि मर्सीडीज कार, बिना किसी खरोंच के वहॉ पहुँचा दी गई थी।

मैं लगभग तीन महीनों के लिए, वास्तव में, तथ्यात्मकरूप से, तीन महीने से कुछ अधिक समय के लिए जर्मनी में रुका। मैंने भिन्न–भिन्न कारें, भिन्न–भिन्न ठिकानों के लिए चलाईं और स्पष्टतः, इस सब का मेरे लिए कोई मतलब नहीं था, मैं नहीं जानता था कि मैं इन कारों को क्यों चला रहा था। परंतु मेरे पास काफी खाली समय था, इसलिए मैंने इसका जलयान के इंजनों का अध्ययन करने और जहाजी इंजीनियर के कर्त्तव्यों के सम्बंध में पुस्तकें पढ़ने में, अच्छा उपयोग किया। मैं समुद्री संग्रहालयों (Maritime Museums) में गया और जहाजों के प्रादर्शों और जहाजों के इंजनों के प्रादर्शो को देखा। इसलिए तीन महीनों की समाप्ति पर, मैंने अपने आपको आत्मविश्वास से परिपूर्ण महसूस किया कि मैं अपने इंजीनियरिंग के ज्ञान को समुद्री इंजीनियरिंग में भी बदल सकता था।

एक दिन मेरा बॉस कार चलाकर, मुझे एक एकांत हवाई अड्डे की तरफ ले गया। हम एक अनप्रयुक्त (unused) हवाईजहाज के हैंगर के सामने खड़े हुए। आदमी दरवाजों को खोलने के लिए दौड़े और वहॉ अंदर, वास्तव में, एक अदुभुत जुगाड़ थी, जो पूरी पीली धातु के खंबे जैसी दिखाई देती थी, उस चीज में आठ पहिये थे, और उसके एक सिरे पर एक वास्तविक बड़ा कलचा (scoop) था। दूसरे सिरे पर, चालन विभाग (driving compartment) का एक छोटा कॉच वाला कैबिन जमाया हुआ था। मेरे नियोक्ता ने कहा, क्या तुम इस चीज को वैरडून (Verdun)[23] ले जा सकते हो?'' मैं नहीं समझता कि क्यों नहीं, (I don't see why not),'' मैंने उत्तर दिया। इसमें एक इंजन है, और इसमें पहिये हैं, इसलिए ये चलाने लायक कोई चीज होनी चाहिए।'' वहॉ उपस्थित मिस्त्रियों (mechanics) में से एक ने मुझे दिखाया कि इसे कैसे चालू करना है, और कैसे उपयोग करना है और उस अप्रयुक्त हवाईजहाज जैसी चीज, जो केवल रात को ही उपयोग में लाई जा सकती थी, और इसके साथ में, आने वाले आवागमन की निगरानी करने के लिए, पिछले सिरे पर एक आदमी होना आवश्यक था, मैंने ऊपर नीचे चलाने का अभ्यास किया। इसलिए जबतक कि दूसरा आदमी ढूंढा गया, मैंने अभ्यास किया। तब, जब मैं संतुष्ट हो गया कि मैं जानता हूँ कि मशीन को चलता हुआ कैसे किया जाये और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण था कि उस चीज को रोका कैसे जाये। मैंने तलाशा और मैंने वैरडून के लिए यात्रा शुरू कर दी। जर्मन और फ्रांसीसी सड़क नियामकों के कारण, हम केवल रात को ही चला सकते थे, और हम एक घंटे में बीस मील से अधिक नहीं चल सकते थे, इसलिए ये, वास्तव में, धीमी यात्रा थी। मेरे पास दृश्यों को देखने के लिए समय था। मैंने अत्यंत दुखी देहात को, ट्रेन को, हवाईजहाजों और तोपों के जले

जलाये टुकड़ों को देखा। मैंने बरबाद घरों को देखा, उनमें से कुछ में केवल एक दीवार ही बची थी। ''युद्ध'' मैंने सोचा, ''ये कितनी अजीब चीज है कि आदमी, आदमी के साथ ऐसा व्यवहार करता है। यदि लोग केवल हमारे नियमों का पालन करते तो कोई युद्ध नहीं होता। हमारा नियमः दूसरों के साथ

ही यहॉ यहूदी लोग बसे हुये थे। आजकल यहूदी समुदाय के लगभग 900 सदस्य यहाँ रहते हैं।

22 अनुवादक की टिप्पिणी : लुडविगशाफेन (Ludwigshafen) जर्मनी का एक शहर है, जो राईन (Rein) नदी के किनारे पर मानहाईन के एकदम सामने है। आजकल ये एक औद्योगिक शहर के रूप में जाना जाता है। यहां बी.ए.एस.एफ. नाम का अंर्तराष्ट्रीय स्तर का रासायनिक कारखाना है। ईसा पूर्व एक शताब्दी में रोमन लोगों ने इस क्षेत्र के ऊपर अपना अधिकार कर लिया था। इसकी वर्तमान आबादी लगभग 2 लाख है।

23 अनुवादक की टिप्पिणी : वेरडून (Verdun) फ्रांस का शहर और उसके मेयूस (Meuse) प्रान्त की राजधानी है। इसकी आबादी लगभग 20 हजार और क्षेत्रफल लगभग 31 वर्ग किलोमीटर है। ये शहर बादामों के लिये प्रसिद्ध है। इसने अनेक युद्ध देखे हैं। ये प्रथम और द्वितीय विश्व युद्धों में भी अछूता नहीं रहा।

वैसा व्यवहार करो, जो तुम उनसे अपेक्षा करते हो, एक नियम, जो प्रभावी रूप से, युद्धों को रोकेगा।

परंतु मैंने कुछ अत्यंत सुखद दृश्य भी देखे, परंतु मुझे दृश्यों की प्रशंसा के लिए पैसे नहीं मिलते थे, मैं, शोर करती मशीन को सुरक्षा के साथ बरडून लाने के लिए पैसे पा रहा था।

अंत में, हम उस शहर में पहुँचे और अधिक आवागमन होने से पहले, सुबह तड़के ही, मैंने इसे चलाकर, एक बड़ी संरचना के झाड़ में, जहाँ हम अपेक्षित थे, घुसा दिया था। यहाँ एक बहुत उदास सा दिखने वाला फ्रांसीसी आदमी, जो कमोवेश कम चौकोर दिखाई दिया, मेरी तरफ दौड़ा और उसने कहा, ''अब इस चीज को मैत्स (Metz)[24] ले जाओ'' मैंने जबाव दिया, ''नहीं, मैंने इसे यहाँ तक लाने का पैसा लिया है और इसे और आगे नहीं ले जाऊँगा।'' मेरे भयानक आश्चर्य के लिए, उसने अपने भयानक चाकुओं में से एक निकाला, जिसमें एक स्प्रिंग थी। तुम एक बटन दबाओ, और चाकू निकलकर बाहर आता और अपने स्थान में जाकर लॉक हो जाता। वह उस चाकू के साथ मेरी तरफ आया, परंतु मैं भलीभाँति प्रशिक्षित था। मैं फ्रांसीसी आदमी के द्वारा घायल किया जाने वाला नहीं था, इसलिए मैंने कराटे की हल्की फेंक मारी, जिसने उसे भयानक चट की एक आवाज के साथ, उसकी पीठ के बल नीचे पहुँचा दिया। उसका चाकू, उसके हाथ से छूटकर नाच रहा था। एक भयानक क्षण के लिये, वह घबराया हुआ वहाँ पड़ा रहा। तब गुस्से की गरज के साथ, वह अपने पैरों पर इतनी तेजी से उछला कि उसके पैर, जमीन को छूने से पहले चल रहे थे, और वह दौड़कर एक कार्यशाला (workshop) में घुस गया और क्रेटों (crates) को खोलने के काम में लाई जाने वाली, एक तीन फुट लंबी स्टील की छड़ के साथ बाहर आया। वह मेरे ऊपर दौड़ा, और छड़ को मेरे कंधों पर मारने का प्रयास किया। मैं अपने घुटनों पर झुक गया, और उसकी एक टाँग को पकड़ लिया, और मरोड़ दिया। मैंने, जितना मेरा आशय था, उससे थोड़ा अधिक जोर से मरोड़ा, क्योंकि उसकी टाँग, घुटनों पर से, काफी कड़कड़ाहट के साथ टूट गई।

ठीक है, मैं कम से कम पुलिस के द्वारा गिरफ्तार होने की आशा करता था। बदले में, मुझे उस आदमी के कर्मचारियों के द्वारा प्रसन्नता जताई गई, और तब वास्तव में, काफी सख्त दिखते हुए, पुलिस की एक कार, चलकर आई। जब उन्हें बताया गया कि क्या हुआ था, वे प्रसन्नता में शामिल हुए, और मेरे बड़े आश्चर्य के साथ, वे मुझे अच्छा खाना खिलाने ले गये!

खाने के बाद, उन्होंने मेरे लिये जगह तलाश की, और जब मैं उस स्थान में था, एक आदमी मेरे पास आया और मुझे बताया कि उसने मेरे बारे में सबकुछ सुन लिया है, और क्या मैं कोई दूसरा काम चाहता हूँ। वास्तव में, मैं चाहता था, इसलिए वह मुझे बाहर एक कैफे में ले गया, जहाँ दो अधेड़ महिलायें, स्पष्टतः मेरी प्रतीक्षा करती हुई बैठी थीं। वे बहुत–बहुत बूढ़ी और बहुत–बहुत स्वेच्छाचारी थीं। जबतक कि मैंने उन्हें ये नहीं बताया कि मैं उनका आदमी नहीं था, उन्होंने थोड़ी सी ''अपने आदमी'' वाली बातें कीं। वास्तव में, मैं उनके साथ कुछ नहीं करना चाहता था और तब उनमें से एक खुलकर हँसी और कहा कि वह, वास्तव में, जिन्दादिल व्यक्ति (man with a spirit) की प्रशंसा करती है।

वे मुझसे, अपने लिए, एक नई कार को चलवाकर पेरिस (Peris)[25] ले जाना चाहती थीं। मैं

---

24 अनुवादक की टिप्पिणी : मैत्स (Metz), मैत्सलो (Moselle), और सीली (Seille), नदियों के साथ–साथ, फ्रांस के उत्तर–पूर्वी भाग के ग्रांड ऐस्ट (Grand Est) क्षेत्र में, अत्यधिक उद्यानों और हरियाली वाला एक नगर है। प्राचीन काल में इसे मीडियो मेट्रिसी (Mediomatrici), नाम की जनजाति का स्थान होने के कारण, उसी नाम से जाना जाता था। रोमन साम्राज्य में शामिल होने बाद, इसे डिवोड्रम मैडियोमेट्रिक्स (Divodurum Mediomatrix), नाम से जाना जाता था। पाँचवी शताब्दी के मध्य में इसका नाम मैटिस (Matisse), हो गया, जो बाद में मैत्स हो गया। मैत्स का इतिहास 3000 वर्ष पुराना है। 2012 की जनगणना के अनुसार इसकी आबादी लगभग एक लाख बीस हजार है। इसका सबसे समीपी हवाई अड्डा लक्सैमबर्ग अंर्तराष्ट्रीय हवाई अड्डा (Luxembourg International Airport), है।

25 अनुवादक की टिप्पिणी : पेरिस (Paris), फ्रांस का सबसे बड़ा नगर और उसकी राजधानी है। यह 105 वर्गकिमी क्षेत्र में फैला हुआ है, और 2015 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या लगभग 2 लाख 30 हजार है। 17वीं शताब्दी में, पेरिस यूरोप का, वित्त, वाणिज्य, विज्ञान, फैशन, कला का प्रमुख केन्द्र बन गया था। इसे दुनियाँ के सबसे सुंदर नगरों में से एक, तथा दुनियाँ की फैशन और ग्लैमर राजधानी माना जाता है। लंदन के हीथ्रो विमान अड्डे (Heathrow Airport) के बाद, 2014 में 6 करोड़ 38 लाख यात्रियों के साथ, पेरिस का चार्ल्स डी गॉल

उसके लिए ठीक था, मैं पेरिस जाना चाहता था, इसलिए मैं उनके लिए, पेरिस तक कार ड्राइव करने के लिए सहमत हो गया, यद्यपि अनुबंध ये किया गया कि मुझे पैंतीस मील प्रतिघंटे की चाल से अधिक नहीं चलना चाहिये। ये मेरे लिये कोई समस्या नहीं थी, मैं लुडबिग शाफेन से, अभी बीस मील प्रतिघंटा की चाल से चलाकर आया था।

मैं दोनों बूढ़ी महिलाओं को सुरक्षा के साथ पेरिस लाया, और उन्होंने मुझे यात्रा के लिए बहुत अच्छा भुगतान किया, और मुझे मेरी ड्रायविंग के लिए काफी साधुवाद दिया, वास्तव में, उन्होंने मुझे अपनी सेवा में लेने का प्रस्ताव दिया। क्योंकि उन्होंने कहा, वे एक जिन्दादिल आदमी को, अपना शोफर होना, पसंद करती हैं, परंतु कुल मिलाकर ये वह नहीं था, जो मैं चाहता था। मेरा काम अभी पूरा नहीं हुआ था, और मैंने बूढ़ी महिलाओं के लिये लगभग पैंतीस मील प्रतिघंटा की चाल से कार चलाने के लिए नहीं सोचा था, इसलिए मैंने उनके प्रस्ताव को मना कर दिया और मैंने दूसरी नौकरी पाने का प्रयास करने के लिए, उसे छोड़ दिया।

लोग, जिनके साथ मैंने बूढ़ी औरतों की कार को छोड़ा था, ने मुझे, मेरे रहने के लिये, स्थान की सलाह दी, और मैंने वहाँ के लिये अपना रास्ता लिया, ठीक तभी, जब एक एंबूलेंस पहुंची। मैं हलचल को समाप्त होने की प्रतीक्षा करते हुए, बाहर खड़ा हुआ, और मैंने एक आदमी को पूछा कि ये सब किस सम्बंध में थी। उसने मुझे बताया कि एक आदमी जिसके पास फर्नीचर को कान (Caen)[26] ले जाने का एक महत्वपूर्ण कार्य था, अभी–अभी गिर गया है, और उसकी टॉग टूट गई है, और वह परेशान था, क्योंकि यदि वह नहीं जा पाया या अपने एवजी (substitute) को नहीं पा सका, तो उसकी नौकरी चली जायेगी। जैसे ही उसे एक शाविका (stretcher) पर बाहर निकाला गया, मैं आगे बढ़ा, और उसे बताया कि मैं उसके लिए काम कर सकता था। जब वह बात कर रहा था, रोगीवाहन (ambulance) के आदमी एक क्षण के लिए रुके। मैंने उसे बताया कि मैं उस शहर को जाना चाहता था और यदि वह तय करे, तो उसे यात्रा का भुगतान प्राप्त हो सकता था और मैं केवल यातायात का साधन पाकर चला जाऊँगा। अपनी टॉग में दर्द के बावजूद, वह अतिप्रसन्न दिखाई दिया, और उसने कहा कि वह अपने अस्पताल से मुझे एक संदेश भेजेगा, और उसके साथ उसे एंबुलेंस में लादा गया, और चलाकर दूर ले जाया गया।

मैंने विश्रान्ति गृह (lodging house) में कमरा बुक किया और उस रात को, बाद में, फर्नीचर हटाने वाले का एक मित्र आया और मुझे बताया कि, यदि मैं कान को जाऊँ और फर्नीचर को उतरवाने में, और एक नया लॉट लादने में मदद करूँ, तो काम मेरा है। आदमी ने, उसने मुझे बताया, मेरे प्रस्ताव, कि पैसा वह रखेगा और काम मैं करूँगा, को स्वीकार कर लिया था।

(Paris-Charles de Gaulle), हवाई अड्डा, यूरोप में दूसरा सबसे व्यस्त हवाई अड्डा है। शहर की मेट्रो प्रणाली, पेरिस मेट्रो (Paris Metro), जो लगभग 52 लाख यात्रियों को प्रतिदिन सेवायें देती है, यहाँ 1900 में स्थापित की गई थी। मास्को मेट्रो (Moscow Metro), के बाद, ये यूरोप की दूसरी व्यस्ततम मेट्रो प्रणाली है। यहाँ नॉट्रे डेम कैथेड्रल (Cathedral of Notre Dame de Paris), सैंट–चैपल (Sainte-Chapel), पूर्व यूनिवर्सल प्रदर्शनी, ग्रैंड पैलेस (Grand Palais), पेटिट पैलेस (Petit Palais), और आइफिल टॉवर (Eiffel Tower), सहित कई उल्लेखनीय स्मारक हैं। 2015 में 2 करोड़ 22 लाख पर्यटक पेरिस घूमने आये थे, इसके साथ ही ये दुनियाँ के शीर्ष पर्यटन स्थलों में से एक बन गया है। पेरिस का सकल घरेलू उत्पाद (GDP), फ्रांस में शीर्ष स्थान पर, तथा यूरोपीय संघ (European Union, EU), में तीसरे स्थान पर है। नगर का केन्द्र यूनेस्को (UNESCO) की वैश्विक धरोहर सूची में शामिल है। 1900 और 1924 के ओलम्पिक खेल (Olympics), तथा 1938 और 1998 के फीफा विश्वकप (FIFA World Cups), 2007 का रग्बी विश्वकप (Rugby World Cups), और 1960, 1984, तथा 2016 की यूरोपियन चेम्पियनशिप (European Championship) भी पेरिस में आयोजित किये गये थे। 2024 के आगामी ग्रीष्म ओलम्पिक (Summer Olympics) खेल भी पेरिस में आयोजित किये जायेंगे।

26 अनुवादक की टिप्पिणी : कान (Caen), उत्तर–पश्चिमी फ्रांस के नोरमेंडी (Normandy), क्षेत्र के कालवाडोस विभाग (Calvados department), की राजधानी और एक बन्दरगाह है, जो इंग्लिश चैनल से लगभग 15 किलोमीटर दूर, 2012 की जनगणना के अनुसार फ्रांस का एक लाख से अधिक आबादी और उच्च आर्द्रता (humidity), वाला एक नगर है। ओर्ने (Orne), नदी नगर के बीच से होकर गुजरती है। यहाँ के कान विश्वविद्यालय (Universite de Caen) में 25000 के लगभग छात्र अध्ययन करते हैं। यहाँ का मल्टीमीडिया स्मारक संग्रहालय (Multimedia Memorial Museum), द्वितीय विश्वयुद्ध (world war II), 1944 के नोरमेंडी के युद्ध (Battle of Normandy), तथा शीतयुद्ध (Cold war), को समर्पित है।

ठीक अगले दिन यद्यपि, मुझे फिर से छुट्टी रखनी पड़ी, हमको पेरिस के बड़े घरानों में से एक में जाना पड़ा और फर्नीचर लादने वाली बड़ी गाड़ी को लादना पड़ा। हमने, रियासत के बागवान और मैंने, ऐसा किया क्योंकि ड्राइवर बहुत आलसी था। उसने छोड़कर जाने के लिए, बहाने के बाद बहाने बनाये। अंत में फर्नीचर लादा गया और हम चले। जब हम लगभग एक मील या थोड़े कम चले होंगे, उसके बाद ड्राइवर रुका और उसने कहा, ''यहाँ से तुम से चलाओ, मैं थोड़ा सोना चाहता हूँ'' हमने स्थितियों को बदल लिया, और मैंने पूरी रात गाड़ी चलाई। सुबह में हम कान में थे। और उस रियासत तक पहुँचे जहाँ फर्नीचर और सामान उतारा जाना था। एकबार फिर, घरेलू कर्मचारियों में से एक, और मैंने सामान उतारा, क्योंकि ड्राइवर ने कहा कि उसे काम से दूसरी जगह जाना था।

देर शाम को, जब सारा काम हो चुका, ड्राइवर प्रकट हुआ और उसने कहा; ''अब हमें चलना चाहिए और ताजे माल का लॉट लादना चाहिए।'' मैं ड्राइवर की सीट पर बैठा, और रेलरोड (railroad) के मुख्य स्टेशन तक चलाकर ले गया। वहाँ अपने साथ के सारे सामान को लेते हुए, मैं कूदकर बाहर आया, और ड्राइवर से कहा, ''मैं पूरे समय तक काम करता रहा हूँ, अब बदलाव के लिए तुम कुछ करो! ''इसके साथ ही मैं स्टेशन में गया और शेरवर्ग के (Cherbourg)[27] लिए टिकट लिया।

उस शहर में पहुँचने पर, मैं थोड़ा सा आसपास घूमा और अंततः मैंने गोदी के क्षेत्र में, समुद्री लोगों के विश्रान्तिगृह में, एक कमरा ले लिया। जहाजी इंजीनियर के रूप में, और उनके साथ अपने आपको, उतना जितना मैं कर सकता था, सहमत बनाते हुए, मैंने बैठक के काफी बिन्दु बनाये। इसलिए अपनी तरफ से थोड़ा सा कुरेदने के बाद, मैंने उनके इंजन क़क्षों को उनके जलयानों पर बाहर देखने के लिए, अवसरों को प्राप्त कर लिया, और मैंने अनेक अनेक संकेत और सूचक पाये, जिन्हें पाठ्यपुस्तकों से आसानी से प्राप्त नहीं किया जा सकता था।

दिनोंदिन, अपने कागजातों को दिखाने के लिए, और संयुक्त राज्य जाने वाले जहाज पर सोने का एक स्थान प्राप्त करने के लिए, मैं जहाजरानी के अभिकर्त्ताओं के पास गया। मैंने उन्हें बताया कि मैं छुट्टी में यूरोप आया था, और मुझसे मेरा पैसा लूट लिया गया, और मुझे अब वापस जाने के लिए काम करना था। वहाँ सहानुभूति की अनेक अभिव्यक्तियाँ हुई, और अंत में, एक अच्छे पुराने स्कोटी (Scottish) इंजीनियर ने मुझे बताया कि वह मुझे, उस रात को न्यूयार्क जाने वाले जहाज पर, तीसरे इंजीनियर के रूप में, एक कार्य प्रस्तावित करेगा।

मैं उसके साथ जहाज पर, और लोहे की सीढ़ियों से नीचे इंजन कक्ष में गया। वहाँ उसने मुझे इंजन के संचालन और अभिलेखों और घड़ियों को दुरुस्त रखने के सम्बंध में, बहुत प्रश्न पूछे। अंततः, उसने अपने आपको पूरी तरह संतुष्ट व्यक्त किया, और कहा, ''मास्टर के क्वार्टर की तरफ ऊपर आओ, और तुम जहाज के अनुच्छेदों (articles) पर हस्ताक्षर कर सकते हो। हमने वह किया, और जहाज का मास्टर एक उदास किस्म का साथी दिखा; मैं उसे बिलकुल पसंद नहीं करता और वह भी मुझे पसंद नहीं करता, परंतु हमने अनुच्छेदों पर हस्ताक्षर किये और तब जहाज के प्रथम इंजीनियर ने मुझे बताया: ''अपना सामान लेकर जहाज पर आओ, पहली पारी तुम करो, हम आज रात को यात्रा करेंगे और वह इस तरह था। और इसप्रकार, तिब्बत के लामा, और उस पर चिकित्सीय लामा, के इतिहास में, शायद, पहली बार, अमेरिकी नागरिक की भूमिका में, अमेरिकी जलयान पर तीसरे इंजीनियर के रूप में, बाहर जाने का एक काम लिया।

आठ घंटे तक मैं इंजन कक्ष की निगरानी में खड़ा रहा। दूसरा पारी से छुट्टी पर था, और पहले इंजीनियर, को बंदरगाह के छोड़ने से संबंधित काम करने थे, इसलिए मुझे, खाना खाने या अपनी वर्दी

---

27 अनुवादक की टिप्पिणी : शेरबर्ग (Cherburgh) शहर, फ्रांस के उत्तर पश्चिमी हिस्से में है। इसमें लगभग 40 हजार लोग रहते हैं। बुधवार 10 अप्रेल 1912 को टाईटेनिक नामक जहाज, जो बाद में दुर्घटनाग्रस्त हुआ, इंग्लिश चैनल को पार करते हुए, यहाँ आया था। यह भी बन्दरगाह का शहर है।

को बदलने का भी कोई अवसर पाये बिना, तत्काल ही काम पर जाना पड़ा। परंतु बंदरगाह में, आठ घंटे की पारी, मेरे लिये आशीर्वाद थी। इसने मुझे उस स्थान के प्रति, तथा नियंत्रणों की जॉच करने के लिए, अभ्यस्त कराया, और इस प्रकार अप्रसन्न और दुखी होने के बजाय, इस सम्बंध में, जैसा कि प्रमुख (chief) मेरे होने के बारे में आशा रखता था, वास्तव में, मैं भलीभांति संतुष्ट था।

आठ घंटे बाद, मुख्य अभियंता, कटकटाता हुआ स्टील की सीढ़ी पर आया, और उसने मुझे, जाने की, और क्योंकि मैं भूख से बेजार दिख रहा था, अच्छा खाना खाने की कहते हुए, औपचारिक रूप से, कर्त्तव्य से मुक्त किया। ''और सुनिश्चित करो'' उसने आदेश किया, ''खानसामे को मेरे लिये कोक नीचे लाने के लिए कहना।''

ये किसी भी तरह से, कोई प्रसन्न जहाज नहीं था। कप्तान और प्रथम अधिकारी सोचते थे कि वे एक पिटे पिटाये पुराने मालवाहक स्टीमर के बजाय, प्रथम श्रेणी के मालवाहक जहाज का निर्देशन (commond) कर रहे है, तब उन्होंने, जहाज पर कोई असामान्य चीज नहीं, वल्कि वर्दी के ऊपर जोर दिया, उन्होंने किसी के केबिन का निरीक्षण करने पर जोर दिया, वास्तव में, ये कोई प्रसन्न जहाज नहीं था, परंतु हमने, उत्तरी एटलांटिक के मौसम में, लुढ़कते और हिलते हुए, एटलांटिक के आरपार कठोर ध्वनि की। अंत में, न्यूयार्क बंदरगाह पर पहुॅचने पर, हम हल्के जहाज तक पहुॅचे।

ये भोर की सुबह थी, और मैनहट्टन की मीनार, परावर्तित प्रकाश के द्वारा, ढीलीढाली चमकती हुई प्रतीत हुई। मैंने इससे पहले, इस तरह की कभी कोई चीज नहीं देखी थी। समुद्र से पहुॅचते हुए, मीनारें, किसी की बेताव कल्पना की भॉति, सीधी खड़ी हो गई, और हम हडसन में, एक बड़े पुल के नीचे की ओर भाप की शक्ति से चले। वहॉ मैंने विश्व प्रसिद्ध, स्वतंत्रता की प्रतिमा (statue of liberty) देखी, परंतु मेरे आश्चर्य के लिये, स्वतंत्रता अपनी पीठ न्यूयार्क की तरफ किये हुए थी, उसकी पीठ संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर थी। इसने मुझे सदमा पहुॅचाया। निश्चित रूप से, मैंने सोचा, जब तक कि अमेरिका कुछ विशेष व्यक्तियों के साथसाथ, सभी अन्यों को भी नहीं लेने वाला था, तब तक संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिए।

बहुत कुछ झेलने के बाद, और हम एक बड़े ''एम (M)'' कीप (funnel) पर छोटे रस्सों से खींचते हुए, अपनी शायिका (berth) पर पहुॅचे। तब वहॉ मोटरों के दहाड़ने की आवाज हुई, बड़े ट्रक आ पहुॅचे, जैसे ही समुद्रतट के बेड़े (crew) के लोग जहाज पर आये, क्रेनों ने काम करना शुरू कर दिया। मुख्य अभियंता आया, और मुझे द्वितीय अभियंता के रूप में उन्नत करने का प्रस्ताव देते हुए, मुझे हस्ताक्षर करने को कहा। परंतु नहीं, मैंने उसे बताया, मैंने उस जहाज पर बहुत बहुत पा लिया था। डैक के अधिकारियों में से कुछ, वास्तव में, काफी कुछ दुखी थे।

हम जहाजरानी कार्यालय (shipping office) में गये तथा बिदाई के हस्ताक्षर किये और मुख्य अभियंता ने मुझे, ये कहते हुए कि मैंने कर्त्तव्य के प्रति महान समर्पण प्रदर्शित किया था, कि मैं इंजन कक्ष के कार्य की सभी शाखाओं में दक्ष था, एक आश्चर्यजनक संदर्भ दिया और उसने विशेष उल्लेख किया जिसमें उसने मुझे अपने साथ किसी भी समय, फिर से कर्त्तव्य पर जाने के लिए आमंत्रित किया था, क्योंकि उसने लिखा, मैं ''महान जहाजीसाथी'' था।

मुख्य अभियंता से ऐसी विदाई पाने पर काफी गर्व महसूस करते हुए, और अपनी भारी पेटियों को लिये हुए, मैं गोदी से बाहर आया। यातायात का शोरगुल भयानक था। ये, चिल्लाते हुए लोग, और चिल्लाते हुए पुलिस के सिपाही थे, और पूरा स्थान, पूरी तरह से पागल दिखाई दिया। पहले हम जहाजों के एक हॉस्टल, या अधिक सही रूप से, इसे नाविकों का हॉस्टल कहा जाना चाहिए, में गये। यहॉ फिर से, सौहार्द्रता का कोई चिन्ह नहीं था, मित्रता का कोई चिन्ह नहीं, वास्तव में, अधिक औसत नम्रता के साथ मैंने सोचा, और मैंने कमरे की चाबियॉ मुझे सौंपने के लिए, उस व्यक्ति को धन्यवाद दिया। वह मेरे पीछे पड़ गया, ''मुझे धन्यवाद मत दो, मैं केवल अपना काम कर रहा हूॅ, अधिक

कुछ नहीं।''

चौबीस घंटे की सीमा थी जिसमें कि, कोई उस हॉस्टल में रुक सकता था, अड़तालीस, यदि कोई दूसरे जहाज पर जाने वाला था। इसलिए अगले दिन मैंने फिर से अपनी पेटियॉ उठाईं, स्वचालित सीढ़ियों से नीचे गया, निश्चितरूप से, स्वागत लिपिक को भुगतान किया और सड़कों पर निकल पड़ा।

अत्यधिक सतर्क रहते हुए, मैं सड़क के साथ चला, क्योंकि, साफ साफ कहने के लिए, मैं आवागमन से अत्यधिक डरा हुआ था। परंतु तभी, एक भयानक उपद्रव हुआ। अपने भोंपुओं को बजाती हुई कारें और अपनी सीटी बजाता हुआ पुलिस का एक सिपाही, और उस क्षण में पैदल पथ पर खड़ी हुई एक महान आकृति ने मुझे ठोकर मारी और मुझे नीचे गिरा दिया। मैंने हड्डियों का टूटना महसूस किया। शराब के नशे के प्रभाव में, एक चालक के द्वारा चलाई जाती हुई कार, एकांगी मार्ग वाली सड़क पर, नीचे आ गई, और टकराव से बचने के अंतिम प्रयास के रूप में, आपूर्ति ट्रक, पैदल पथ पर चढ़ गया और उसने मुझे ठोकर मारी।

अपने आपको अस्पताल में पाते हुए, मैं काफी देर बाद जगा। मेरे पास, एक टूटी हुई बायीं भुजा, टूटी हुई चार पसलियॉ, और कुचले हुए दोनों पैर थे। पुलिस आई और मुझ से कार चालक के सम्बंध में, जितना अधिक से अधिक वे कर सकते थे, पता लगाने का प्रयास किया और मानो कि मैं उसका अंतरंग मित्र रहा होऊॅ ! मैंने उनसे अपनी दो पेटियों के सम्बंध में पूछा और उन्होंने अत्यंत प्रसन्न होते हुए कहा, ''ओह नहीं, जैसे ही तुम नीचे गिरे, इससे पहले कि पुलिस तुम तक पहुॅच पाती, एक लड़का एक दरवाजे में से रेंगकर आया, तुम्हारी पेटियों पर झपटा और दौड़कर चला गया। हमारे पास उसे देखने के लिए समय नहीं था; हमें तुम्हें पैदलपथ से उठाना था क्योंकि, तुम रास्ते को रोक रहे थे।''

अस्पताल का जीवन जटिल था। पसलियों में चोट होने के कारण, मुझे डबल निमोनिया हो गया और वास्तव में, अत्यंत कम आरोग्य प्राप्ति के साथ, मैं उस अस्पताल में, नौ हफ्तों तक लंबा खिंचता चला गया। कुल मिलाकर, न्यूयार्क की हवा वैसी नहीं थी, जिसका मैं अभ्यस्त था और हर व्यक्ति, सभी खिड़कियों को बंद, और गर्मी को चालू रखता था। मैंने, वास्तव में, सोचा कि मैं दम घुटने से मरने वाला हूॅ।

अंत में, मैंने बिस्तर से बाहर आने के लिए, पर्याप्त स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। नौ सप्ताह बिस्तर में रहने के बाद, मैं भयानकरूप से कमजोर महसूस कर रहा था। तब अस्पताल की कोई अधिकारी आयी और उसने भुगतान के सम्बंध में जानना चाहा! उसने कहा, ''हमें तुम्हारे बटुये में दो सौ साठ डालर मिले थे, और हमें तुम से, तुम्हारे यहॉ रुकने के दो सौ पचास डालर लेने हैं। हमें, तुम्हारे लिये कानूनन दस डॉलर छोड़ने हैं। परंतु शेष भुगतान तुम्हें करना होगा।'' उसने मुझे एक हजार डॉलर से अधिक का बिल प्रस्तुत किया।

मैं अत्यधिक सदमे में था और मैंने दूसरे आदमी, जो उसके पीछे अन्दर आया था, एक आदमी जो कोई वरिष्ठ अधिकारी दिखाई दिया, से शिकायत की। उसने अपने कंधे उचकाये और कहा, ''ओह ठीक है, तुम्हें उस आदमी पर, जिसने तुम्हें गिराया था, मुकदमा चलाना पड़ेगा, हमें इससे कोई लेना देना नहीं।'' मेरे हिसाब से ये मूर्खता का प्रतीक था क्योंकि, मैं उस आदमी को कैसे ढूंढ सकता था,

क्योंकि मैंने उस आदमी को देखा नहीं था? जैसा मैंने कहा, मेरे पास पेटियों में अधिक पैसा था, और केवल मात्र उत्तर था ''ठीक है, आदमी को पकड़ो और उससे अपनी पेटियां वापस ले लो।'' नौ सप्ताह अस्पताल में रहने के बाद, और प्रकटरूप से, उसे पकड़ने में किसी प्रकार के लायक प्रयास करने में पुलिस के असफल रहने के बाद, आदमी को पकड़ो। मैं पूरी तरह सदमा खाया हुआ था, परंतु मुझे और भी अधिक सदमा खाना था। आदमी, वरिष्ठ अधिकारी ने एक कागज दिखाया और कहा, ''तुमको अस्पताल से छुट्टी दी जा रही है, क्योंकि, तुम्हारे पास आगे किसी इलाज के लिए पैसा नहीं है। जब तक कि भुगतान न करो, हम तुम विदेशियों को यहॉ रखना बर्दाश्त नहीं कर सकते। यहॉ हस्ताक्षर करो!'' मैंने उसे सदमे में देखा। मैं यहॉ था, नौ सप्ताह बिस्तर में रहने के बाद, पहले दिन, मेरी हड्डियॉ टूटी हुईं थीं, और डबल निमोनिया हो चुका था और अब मुझे अस्पताल से निकाला जा रहा था। वहॉ कोई सहानुभूति नहीं कोई, समझदारी नहीं, और इसके बदले में, मुझे शाब्दिकरूप से और इससे मेरा मतलब है, एकदम शाब्दिकरूप से, अस्पताल के बाहर निकाल दिया गया, और मेरे पास कुल मिलाकर कपड़ों का एक सूट, जो मैं पहने हुए था और दस डॉलर का एक नोट था।

सड़क पर एक आदमी, जिसको मैंने अपनी समस्या को समझाया, ने झटके से अपने अंगूठे को एक काम दिलाऊ एजेंसी की दिशा में दिखाया, और इसलिए मैं वहॉ गया और कई सीढ़ियों पर चढ़ा। अंत में, मुझे एक बहुत बहुत प्रसिद्ध होटल में, वास्तव में, एक इतना प्रसिद्ध होटल कि विश्व भर में, लगभग किसी ने भी इसके बारे में सुना होगा, एक नौकरी मिल गई, काम था–प्लेटों का धोना। वेतन बीस डॉलर प्रति सप्ताह, और दिन में एक बार खाना, और दिन में एक बार का वह खाना, अच्छा खाना, जो मेहमानों को दिया जाता था, नहीं था, परंतु मेहमानों द्वारा छोड़ दिया गया खराब खाना या जो अतिथियों के लिए ठीक नहीं समझा गया, होता था। बीस डॉलर प्रति सप्ताह पर, मैं कमरा नहीं झेल सकता था। इसलिए मैंने इस सम्बंध में चिंता नहीं की, दरवाजे के बाहर सोने का प्रयास करते हुए, किसी पुल के नीचे सोने का प्रयास करते हुए, या किसी मेहराब के नीचे, जहॉ कहीं भी मैं होता, वहीं मेरा घर होता, और अक्सर रात को, एक कर्कश स्वर में वहॉ से निकल जाने और चलते रहने का आदेश देते हुए पुलिस के सिपाही की छड़ी, मेरी पसलियों में कोंची जाती।

अंत में, भाग्य की एक चोट के द्वारा, मैंने रेडियो स्टेशन में एक नौकरी प्राप्त की। मैं एक रेडियो उद्घोषक बन गया। मैंने पूरे विश्व से लघु तरंगों (short waves) पर बात करते हुए, उसे छै महीनों तक किया और शंघाई (Shanghai)[28] से मैंने अपने कागजात और सामान, जो मैंने वहॉ अपने मित्रों के पास छोड़ दिये थे, प्राप्त कर लिये। कागजातों में, ब्रिटेन की रियायतों पर, ब्रिटेन के अधिकारियों द्वारा जारी किया गया एक पासपोर्ट शामिल था।

---

28 अनुवादक की टिप्पिणी : शंघाई (Shanghai) चीनी गणराज्य का सबसे बड़ा नगर और केन्द्रीय बंदरगाह है। ये देश के पूर्वी भाग में यांग्त्ज़े नदी के डेल्टा (Yangtze river delta), पर स्थित है। यह अर्थव्यवस्था और जनसंख्या दोनों ही दृष्टि से चीन का सबसे बड़ा नगर है। नगर की जनसंख्या 93 लाख है। शंघाई पहले मछुआरों का गॉव था। प्रथम अफीम युद्ध (first opium war), के बाद अंग्रेजों ने इस पर अपना अधिकार कर लिया, और यहॉ विदेशियों के लिये एक स्वायत्तशासी (autonomous) क्षेत्र का निर्माण किया और उसे तत्कालीन एक बड़ा अंतर्राष्ट्रीय नगर और वित्तीय केन्द्र बनाया, जो 1930 तक अस्तित्व में रहा। ये महानगर, चीन का एक प्रमुख सांस्कृतिक व्यवसायिक और औद्य गिक केन्द्र है। 1905 से शंघाई विश्व का सर्वाधिक व्यस्त बंदरगाह है। इससे पहले शंघाई का नाम हूटिंग (Hooting) था, जिसकी स्थापना 751 ईस्वी में हुई थी। इसको विभिन्न नामों, जैसे पर्ल ऑफ दी ऑरियन्ट (Pearl of the orient), और पेरिस ऑफ दी ईस्ट (Paris of the east), से भी पुकारा जाता है।

परंतु, जैसे ही मैंने अनुभव करना प्रारंभ किया, कि रेडियो उद्‌घोषक के रूप में, मैं अपना समय नष्ट कर रहा था, मेरे पास करने के लिए एक काम था, और जो कुछ मैं अब कमा रहा था, वह था एक सप्ताह में एक सौ दस डॉलर, जो बीस डॉलर प्रति सप्ताह और एक खाने की तुलना में, एक महान प्रगति थी। परंतु मैंने चलते रहने का निर्णय लिया। अपने बदले में एक उपयुक्त एवजी (subsitute) पाने के लिये, मैंने रेडियो स्टेशन को पर्याप्त समय दिया, और जब मैंने उसे दो सप्ताह के लिए प्रशिक्षित कर दिया, मैंने छोड़ दिया।

सौभाग्यवश, मैंने कारों को चलाने के लिए लोगों की आवश्यकता वाले एक विज्ञापन को देखा, इसलिए मैंने विज्ञापन का उत्तर दिया और पाया कि मैं एक कार को ले सकता था, और उसे सियाटेल (seattle)[29] ले जा सकता था। अब उस यात्रा को फिर से याद करने की कोई तुक नहीं है परंतु मैंने सुरक्षापूर्वक सियाटेल तक कार चलाई और सुरक्षित चालन के लिए और कार पर बिना किसी खरोंच के उसको सौंप देने के लिए प्रोत्साहन राशि प्राप्त की और तब मैंने कनाडा जाने की व्यवस्था की।

इस प्रकार पहले युग की दूसरी पुस्तक समाप्त होती है।

---

29 अनुवादक की टिप्पिणी : सियाटेल (Seatel), अमरीका के पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित बंदरगाह वाला एक शहर है, जिसकी आबादी लगभग 6 लाख 62 हजार है। सियाटेल, उत्तरी अमरीका के प्रशान्त महासागर के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र और वाशिंगटन राज्य का सबसे बड़ा शहर है, जो अमेरिका में सर्वाधिक तेजी से विकसित हुआ, बड़ा शहर है और चोटी के पॉच शहरों में से एक है। सियाटेल क्षेत्र, प्रारंभ में मूल अमरीकनों (native Americans) द्वारा लगभग 4 हजार वर्ष पहले बसाया गया था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ये शहर व्यापारिक और जहाज बनाने के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, आंशिक रूप से स्थानीय बोईग कंपनी जो हवाई जहाजों को बनाती है, के कारण, शहर की प्रगति की दर बहुत अधिक रही। तकनीकी केन्द्र के रूप में सियाटेल क्षेत्र 1980 के दशक में विकसित हुआ, जिसमें माइक्रोसॉफ्ट (Microsoft) जैसी कंपनियां वहॉ स्थापित हुई। 1994 में अमेजन, जो खुदरा व्यापार का सबसे बड़ा दैत्य है, सियाटेल में स्थापित हुआ। शहर मुख्यतः पहाड़ी इलाका है, यद्यपि सभी जगह ऐसा नहीं है। रोम की भाँति शहर को सात पहाड़ियों पर स्थित कहा जाता है, जिसमें केपीटोल हिल (Capitol hill), फर्स्ट हिल (First hill), वेस्ट सियाटेल (West Seatel), बेकन हिल (Bacon hill), क्वीन एनी (Queen Anne), मंगोलिया (Mangolia) और पूर्ववर्ती डेनी हिल (Danny hill) शामिल है।

पुस्तक–तीनः

परिवर्तनों की पुस्तक

''अपने दुखों को उन पर मत थोप, जो मनुष्यों के इस लोक को छोड़ गये हैं।''

किसी नाम को मत पुकारो, क्योंकि उनको पुकारना, जो इस साम्राज्य के परे चले गये हैं, उनकी शान्ति को भंग करना है।''

''कारण यह है कि जिनके लिये शोक किया जाता है, वे उनसे जो शोक करते हैं, अत्यधिक व्यथित होते हैं।''

''वहॉं शान्ति बनी रहने दो''

.........यह अच्छा आशय है, लिबेल (Libel) का नियम होने के कारण, जैसा यह है! कारण मैं कहता हूँ, जबतक कि तुम पुकारोगे नहीं, वे नहीं पुकारे जायेंगे।

PAX VOBISCUM

अध्याय–सात

ये वर्णन करना कि रॉकी (Rocky) पर्वतों में होकर और विनिपेग (Winnipeg)[30] से लेकर थंडर बे (Thunder Bay), मोन्ट्रियल (Montreal)[31] और क्यूबेक सिटी (Quebec City) तक कनाडा में होकर, मैंने अपना पूरा रास्ता कैसे बनाया, एक छोटा सा ही मुद्दा है। हजारों लोग, लाखों लोग उसे कर चुके हैं। परंतु मुझे कुछ असामान्य अनुभव हुए, जिनके सम्बंध में, मैं अभी लिख सकता हूँ, यद्यपि ये अभी इस क्षण के लिये नहीं है।

कनाडा से होकर, मेरी यात्रा में, ये मुझ पर जम चुका था कि मुझे अपना रास्ता इंग्लैंड के लिये लेना चाहिए। मैं सहमत था कि कार्य, जो मुझे अभी करना है, इंग्लैंड के एक छोटे स्थान, जिसे मैंने शेरबर्ग (Cherbourg) को छोड़ते हुए और इंगलिश चैनल (English Channel)[32] में से बाहर जाते हुए, संयुक्त राज्य की ओर घूमने से पहले, पानी के एक जहाज के छिद्र में से होकर, केवल दूर से देखा था, में ही प्रारंभ होना है।

क्यूबेक (Quebec)[33] में मैंने पूछताछ की, और सभी आवश्यक कागजातों, जैसे कि पारपत्र

---

30 अनुवादक की टिप्पिणी : ऐसिनिबॉइन (Assinboine) एवं रेड (Red) नदियों के संगम पर स्थित, सात लाख से अधिक आबादी वाला विनीपेग (Winnipeg) नगर, कनाडा के मेनीटोवा (Manitoba) प्रांत की राजधानी एवं प्रमुख नगर है। यह नगर संयुक्त राज्य अमेरिका के 96 किमी उत्तर में, तथा विनीपेग झील से 72 किमी दक्षिण में स्थित है। झील के नाम पर ही नगर का नाम विनीपेग पड़ा है। आबादी की दृष्टि से ये बनाडा का सातवॉं बड़ा शहर है। इसे पश्चिम का प्रवेश द्वार (Gateway of the west) भी कहा जाता है। विनीपेग में सौ से अधिक भाषाऐं बोली जाती हैं। विनीपेग में थोक एवं निर्यात व्यापार बहुत अधिक होता है। पश्चिमी कनाडा के गेंहू उत्पादन का 3/4 भाग विनीपेग में ही आता है। ये नगर अनाज की मंडी है, तथा यहॉ फर का व्यापार भी होता है। यहॉ के प्रमुख उत्पादन हैं, आटा और उससे तैयार होने वाले उत्पाद, कागज तथा कागज के डिब्बे, मांस और मांस से निर्मित पदार्थ, मछलियां, औजार और ईंट और जिप्सम (Gypsum)। 1976 में यहॉ शाही कैनेडियन टकसाल (Royal Canadian Mint) स्थापित की गयी थी, जो न केवल पूरे कनाडा के लिये वरन् विश्व के दूसरे देशों के लिये भी सिक्के ढालती है। 1877 में स्थापित मिनीटोवा विश्वविद्यालय, पश्चिमी कनाडा का प्रथम विश्वविद्यालय है। 2010 में विनीपेग को कनाडा की सांस्कृतिक राजधानी घोषित किया गया था। अपराध दर अधिक होने के कारण विनीपेग को ''कनाडा की हत्या की राजधानी (Murder Capital of Canada)'' भी कहा जाता है।

31 अनुवादक की टिप्पिणी : मॉन्ट्रियल (Montreal), कनाडा के दक्षिण पश्चिमी भाग के क्यूवेक राज्य का एक शहर है। ये राज्य का सबसे बड़ा शहर और कनाडा का दूसरा सबसे बड़ा शहर तथा उत्तरी अमरीका महाद्वीप का नौंवा सबसे बढ़ा शहर है। मूलतः इसको ''Ville Marie'' या ''मेरी का शहर'' कहा जाता था। इसे बाद में रॉयल पर्वत (mount royal), जिसकी तीन चोटियों वाली पहाड़ी, शहर के मध्य में स्थित है, के नाम पर, दोबारा नाम दिया गया। शहर, मॉट्रियल के द्वीप पर और कुछ छोटे–छोटे समीपवर्ती अन्य द्वीपों पर स्थित है।

2011 में इसकी आबादी लगभग 16 लाख थी। शहर की औपचारिक, अधिकारिक भाषा, फ्रांसीसी है। शहर को ''यूनेस्को सिटी ऑफ डिजाइन (UNESCO city of desine)" का नाम दिया गया, जो विश्व की तीन डिजाइन राजधानियों में से एक है ,बाकी दो हैं, बर्लिन और ब्यूनस आयरस। ऐतिहासिक रूप से ये कनाडा की व्यापारिक राजधानी थी, लेकिन 1970 में अपनी जनसंख्या और आर्थिक शक्ति के आधार पर, टोरोंटो इससे आगे निकल गया।

मॉट्रियल की जनगणना में लगभग 65.8 प्रतिशत ईसाई (christians), 18.4 प्रतिशत नास्तिक, 9.6 प्रतिशत मुसलमान, 2.2 प्रतिशत यहूदी, 2 प्रतिशत बौद्ध मताबलम्वी, 1.4 प्रतिशत हिन्दू और 0.03 प्रतिशत सिक्ख हैं।

मॉट्रियल सिनेमा और टेलीविजन निर्माण का केन्द्र है। आजकल ये व्यापार, वित्त, उद्योग, तकनीक, संस्कृति, तथा वैश्विक मामलों का केन्द्र और मॉट्रियल स्टोक एक्सचेंज का मुख्यालय है। 1976 में इसने ओलंपिक खेलों की मेजवानी की थी।

32 अनुवादक की टिप्पिणी : इंग्लिश चैनल (English Channel), अटलांटिक महासागर की एक शाखा हैं, जो ग्रेट ब्रिटेन को उत्तरी फ्रांस से अलग करती है, और उत्तरी सागर को एटलांटिक से जोड़ती है। ये चैनल लगभग 560 किलोमीटर लंबी और 240 किलोमीटर चौड़ी है। इंगलिश चैनल का नाम 18वीं शताब्दी के प्रारंभ से व्यापकरूप से किया जाता रहा है, जो संभवतः 16वीं शताब्दी के बाद से, डच समुद्री नक्शे में मौजूद ''इंगलिश कैनाल'' के नाम से प्रसिद्ध रहा है। इसे ब्रिटिश चैनल के रूप से भी जाना जाता रहा है। उससे पहले इसे ब्रिटिश सागर के नाम से जाना जाता था। द्वितीय विश्वयुद्ध में युद्ध के दौरान, यूरोपीय थियेटर में नौसेना की गतिविधियॉं, मुख्यरूप से अटलांटिक तक सीमित थीं परंतु बाद में, द्वितीय विश्वयुद्ध में, इस चैनल ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। ब्रिटिश चैनल के बीच में अनेक छोटे छोटे द्वीप भी हैं, जिनपर जर्मनी का कब्जा था और द्वीप के निवासियों को यूरोप में गुलामी के लिये ले जाया जाता था। इंगलिश चैनल के दोनों किनारों पर घनी आबादी बसी हुई है। जिस पर कई प्रमुख बंदरगाहों और रिसोर्ट्स को मिलाकर लगभग 35 लाख से अधिक आबादी रहती है। चैनल में होकर प्रतिदिन 400 जहाजों से अधिक का आवागमन होता है। भारतीय तैराक मिहिर सेन (जन्म 16 नवम्बर 1930; मृत्यु 11 जून 1997, पुरूलिया, कोलकाता) 1958 में इंगलिश चैनल तैरकर पार करने वाले प्रथम भारतीय ही नहीं, प्रथम एशियाई भी थे। इन्होंने साल्टवाटर तैराकी में अनोखी दक्षता हासिल करके पॉच महत्वपूर्ण रिकार्ड बनाये थे। इसके लिये भारत सरकार द्वारा, उन्हें 1959 में पद्मश्री और 1967 में पद्मभूषण पुरुस्कारों से सम्मानित किया गया था।

33 अनुवादक की टिप्पिणी : क्यूबेक (Quebec) शहर, केनेडा के क्यूबेक राज्य की राजधानी है। 1911 में शहर की आबादी लगभग 5 लाख 70 हजार थी, जो मॉट्रियल के बाद, इसे क्यूबेक राज्य का दूसरा बड़ा शहर होने का दर्जा प्रदान करती थी।

(passport), कार्य का परमिट और शेष सभी को प्राप्त करने की व्यवस्था की। मैंने नाविक यूनियन कार्ड (Seamen's Union Card) को प्राप्त करने की भी व्यवस्था कर ली थी। फिर, अब विस्तार में जाने की कोई तुक नहीं है, कि मैंने ये कैसे प्राप्त किया। भूतकाल में, मैंने अफसरों को बताया था कि उनकी लालफीताशाही की मूर्ख प्रणाली, केवल उन लोगों का दमन करती है, जिनके पास सभी वैधानिक कागजात होते हैं; अपने खुद के मामले में, मैं जोर देकर कहता हूँ कि एकमात्र समय, जब मुझे कुल मिलाकर किसी देश में प्रवेश करने में कोई परेशानी हुई, केवल तभी था, जब मेरे कागजात सही थे। यहॉं कनाडा में, जहॉं मैं अधिक गतिशील रहता हूँ, और संयुक्त राज्य को जा सकता हूँ, मेरे कागजातों के साथ हमेशा परेशानी हुई; या इस सम्बंध में आव्रजन अधिकारी (immigration officer) के सामने कुछ चीज का बहाना बनाने के लिए, हमेशा कुछ गलत हुआ। इसलिए, अफसरशाह परजीवी (parasites) होते हैं, जिनका उन्मूलन जुंओं की तरह से किया जाना चाहिए, हे! ये एक अच्छा विचार भी होता, क्या नहीं होता?

मैंने अपना रास्ता वापस मॉन्ट्रियल को लिया और वहॉं अपने पूरे कागजातों के सही होने के साथ, मैं डेकहैन्ड (deckhand) के रूप में किसी जलयान पर जाने के लिये सक्षम था। वेतन अधिक आश्चर्यजनक नहीं था, परंतु मेरा निजी विचार था कि मैं इंगलैंड में होना चाहता था, और मेरे पास टिकट के लिये कोई पैसा नहीं था, इसलिये खुद भुगतान करने की अपेक्षा, कोई भी वेतन अच्छा होता।

काम अत्यधिक कठिन नहीं था, ये केवल माल को पुर्नव्यस्थित करने और तब उनके आवरणों के ऊपर पच्चड़ों (wedges) को टॉकने का था। शीघ्र ही, हम इंगलिश चैनल की ओर बढ़ रहे थे, और अत्यधिक देर बाद नहीं, हम साउथएम्पटन (Southampton)[34] के रास्ते पर सोलेंट (Solent)[35] की ओर मुड़े। मैं समय पर कर्त्तव्य से मुक्त हो गया था, और जहाज के आगे के भाग में बैठने तथा दूरदूर तक इंगलिश परिदृश्य (scenery), जिसने मुझे विचारणीयरूप से आकर्षित किया, को देखने के लिये सक्षम था। उस समय इंगलिश परिदृश्य, मुझे हरों से भी और अधिक हरे (greener than the greenest) दिखाई दिये। मैंने आयरलैंड नहीं देखा था, जिसके परिदृश्य, किसी भी समय, इंगलिश परिदृश्यों को मात दे सकते हैं, और इसलिये मैं अत्यधिक सम्मोहित था।

नेटले (Netley)[36] के फौजी अस्पताल ने मुझ में बड़ा जबरदस्त कौतूहल उत्पन्न किया। परिस्थितियों से मैंने समझा कि ये शायद किसी राजा, या वैसे ही पदधारी किसी और का घर होगा परंतु जब जहाजी बेड़े के एक सदस्य ने बहुत जोर की हंसी के साथ, शीघ्र ही मुझे बताया कि ये एक अस्पताल था।

क्यूबेक का शाब्दिक अर्थ है "जहॉं नदी संकरी होती है (where the river narrows)।" इसे 1608 में बसाया गया। क्यूबेक को घेरते हुए एक प्राचीर के अवशेष अभी भी हैं, जिसमें एक छोटा किला भी है, जिसे यूनेस्को ने 1985 में 'विश्व विरासत स्थल' के रूप में घोषित किया है। ये उत्तरी अमरीका महाद्वीप में, यूरोपीय महाद्वीप के लोगों की सबसे पुरानी बसाहटों में से एक है। शहर में 1925 में एक भूकम्प आया था। अपनी मातृभाषा के रूप में, शहर के लगभग 95 प्रतिशत लोग फ्रेंच बोलते हैं। इसके अतिरिक्त एक तिहाई से अधिक आबादी फ्रेंच और अंग्रेजी दोनों बोलतीं हैं। 90 प्रतिशत से अधिक आबादी रोमन कैथोलिक है, थोड़ी सी आबादी प्रोटेस्टेन्ट, मुस्लिम, यहूदी लोगों की भी है।

34 अनुवादक की टिप्पिणी : साउथएम्पटन (Southampton), इंग्लेंड के दक्षिणी समुद्रतट पर स्थित सबसे बड़ा नगर है, ये लंदन से दक्षिण–पश्चिम में 121 किलोमीटर दूर, और पोर्टस् माउथ से उत्तर–पश्चिम में 31 किलोमीटर दूर, स्थित है। 1912 में टाइटेनिक जहाज ने यहीं से यात्रा प्रारंभ की थी। ये पाषाण काल का नगर है।

35 अनुवादक की टिप्पिणी : सोलेंट (Solent) सोलेन्ट, समुद्र में पानी की पट्टी है, जो व्हाइट के द्वीप को इंग्लैण्ड की मुख्य भूमि से अलग करती है। ये लगभग 20 मील लंबी है, जबकि इसकी चौड़ाई, स्थान–स्थान पर 1 मील से 4 मील तक बदलती है। सोलेन्ट, यात्री, मालवाही और नौ सेना के जहाजों के लिए, एक प्रमुख जहाजी मार्ग है। ये पानी के खेलों (water sports), विशेषकर एचिंग के लिए, मनोरंजन का महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

36 अनुवादक की टिप्पिणी : नेटले (Netley) इंग्लैंड में दक्षिणी हैम्पशायर के समुद्रीतट पर एक गॉव है। ये साउथएम्पटन नगर के दक्षिण–पूर्व में है। यहॉं कुछ पारम्परिक छोटी दुकानें और टेरेस वाली कुछ झोंपड़ियॉं हैं। नेटले स्टेशन से हर घंटे साउथएम्पटन और पोर्ट्समाउथ के लिये रेलें जाती हैं। यहॉं दो स्कूल और थोड़े से चर्च हैं। पहले यहॉं नेटले अस्पताल हुआ करता था, जो 1863 से लगाकर द्वितीय विश्वयुद्ध तक काफी उपयोग में आता था, बाद में इसे 1979 में बन्द कर दिया गया।

दायीं ओर वूल्स्टोन (Woolstone)[37], और बायीं ओर साउथएम्पटन, के गुजरने के बाद, हम ऊपर गये। मैं, सर्वोत्तम जलीय–उड़न नौकाओं (super-marine flying boats), जो सुदूरपूर्व में खुद के लिये अत्यधिक नाम कमा रहीं थीं, के गृह वूल्स्टोन को देखने में दिलचस्पी रखता था

शीघ्र ही, हम साउथएप्टन की गोदी में पहुॅचे, और अधिकारी जलयान पर आ गये, जहाज के कागजातों और बेड़े के क्वार्टरों की भी की जॉच पड़ताल की। अंततः हमको तट पर जाने का स्पष्ट संकेत दिया गया और मैं छोड़ने ही जा वाला था, परंतु तभी मुझे एकबार फिर, आव्रजन जॉच के लिये बुला लिया गया। अधिकारी ने मेरे कागजातों को देखा और वह अत्यंत मित्रवत् तथा अनुमोदन करने वाला था, जब उसके प्रश्न ''आप यहॉ कितने लंबे समय तक रहने वाले है?'' के जबाव में मैंने उत्तर दिया, ''मैं यहॉ रहने के लिए आया हूॅ श्रीमान्।'' उसने पारपत्र पर आवश्यक मोहरें लगाईं और मुझे नाविकों के ठिकानों की राह बताई।

मैं चलकर आव्रजन कार्यालय से बाहर आया और एक क्षण के लिये पुराने मालवाही जहाज, जिस पर मैं नवीन विश्व से, प्राचीन विश्व तक पहुॅचा था, के ऊपर नजर डालते हुए खड़ा हुआ। एक तटकर (customs) अधिकारी ने, अपने चेहरे पर मुस्कान के साथ, चलना प्रारंभ किया, और तब अचानक ही मेरी पीठ पर स्तब्धकारी धक्का लगा और अपने दो बक्सों को गिराते हुए, जैसा मैंने किया, मैं एक दीवार के विरुद्ध लुढ़क गया।

अपने फैले हुए सामान को इकट्ठा करते हुए, मैं पीछे घूम गया और एक आदमी को अपने पैरों के ऊपर बैठे हुए देखा। वह एक वरिष्ठ कस्टम अधिकारी था, जो काम पर जाने की जल्दी में था, और जिसने दरवाजे में जाने का प्रयास करते हुए, दूरी का गलत अंदाज लगाया था। मैं उसे मदद करने के लिए गया, और उसने घृणा की आग के साथ, मेरे फैलाये हुए हाथों को पकड़ लिया। मैं पूर्ण आश्चर्य के साथ टक्कर खाकर वापस हुआ था, दुर्घटना का दोष मेरा नहीं था, मैं अनाक्रामक भाव से केवल वहॉ खड़ा था। परंतु, जब वह मुझे रोकने के लिए गुर्राया, उसने मेरे बक्सों को चलने देने से रोक लिया। उसने मुझे रोकने के लिए दो संतरियों को बुलाया। तटकर अधिकारी, जिससे मैं कार्यालय में मिला था, जल्दी से बाहर आया और उसने कहा, ''ये एकदम ठीक है, श्रीमान्, एकदम ठीक। उसके कागजात व्यवस्थित हैं।'' वरिष्ठ अधिकारी, गुस्से के साथ, काले चेहरे में जाता हुआ दिखा, और उसके मुॅह से एक शब्द नहीं निकला। उसके आदेशों पर मुझे एक कमरे में ले जाया गया, जहॉ मेरी पेटियों को खोला गया और हर चीज को फर्श पर फेंक दिया गया। उसे यहॉ कोई गलत चीज नहीं मिली। इसलिए उसने मुझ से पारपत्र और दूसरे कागजात मांगे। मैंने उन्हें दे दिये और उसने उन्हें एक एक पन्ना पलटकर देखा और तब कर्कश स्वर में कहा कि मेरे पास एक वीजा और एक कार्य परमिट था, और मुझे उन दोनों की आवश्यकता नहीं थी। इसके साथ ही उसने मेरे पासपोर्ट को फाड़ दिया और उसे रद्दी की टोकरी में फेंक दिया।

सहसा वह झुका, उसने सारे कागज उठाये और उन्हें अपनी जेब में ठूंस लिया, ताकि, मैं समझता हूॅ, वह उन्हें कहीं दूसरी जगह नष्ट कर सके।

उसने घंटी बजाई और बाहर के कार्यालय से दो आदमी अंदर आये। ''इस आदमी के पास कोई कागजात नहीं हैं।'' वरिष्ठ अधिकारी ने कहा,'' उसे निष्कासित करना पड़ेगा।'' ''परंतु,'' उस अधिकारी, जिसने मेरे कागजातों पर मोहर लगाई थी, ने कहा। ''मैंने उन्हें देखा था, मैंने उन पर खुद मोहर लगाई

---

37 अनुवादक की टिप्पिणी : वूलस्टोन (Woolstone), दक्षिणी एम्पटन, हेम्पशायर का उपनगरीय इलाका है, जो इचेन (Itchen) नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है। यहाँ निवासियों के लिए, एक स्थानीय समूह के द्वारा, सहस्त्राब्दी उद्यान (millennium garden) बनाया गया था, जो 2002 में पूरा हुआ। इसका केन्द्र बिन्दु, 10 मीटर लंबी, धातु और पुर्नचक्रित (recycled) काँच की बनी हुई, पंख के आकार की एक संरचना है, जो 'बूलस्टोन के उड़ान और यान खेने के इतिहास' को महत्व देने के उद्देश्य से बनाई गई थी। उद्यान को तीन क्षेत्रों में, जो क्रमशः पृथ्वी, आकाश और सागर को निरूपित करते हैं, बनाया गया था। टाइटेनिक (Titenic) जहाज के बेड़े के अधिकांश लोग, बूलस्टोन के रहने वाले थे, इसलिए उद्यान की पगडण्डियों में लगाए गए रास्ते पर, उनके नाम की ईटें जड़ीं गई हैं।

थी।'' वरिष्ठ अधिकारी गुस्से में उसकी ओर मुड़ा और ऐसी बातें कहीं, जिनने बेचारे उस आदमी को पीला कर दिया। और इसलिए अंततः मुझे एक कोठरी में ले जाया गया और वहॉ छोड़ दिया गया।

अगले दिन, विदेश कार्यालय से, दांत निपोरता हुआ एक मूर्ख जवान आया, अपने बचकाने चेहरे को थपथपाया और मेरे साथ सहमत हुआ कि मेरे पास आवश्यक कागजात होने चाहिए थे। परंतु, उसने कहा, विदेश कार्यालय, आव्रजन कार्यालय से पंगा नहीं ले सकता, इसलिये मुझे बलि देनी ही होगी। सबसे अच्छी चीज, जो मैं कर सकता था, उसने बताया, ये मान लेना था कि मेरे कागजात जहाज में गुम हो गये थे, अन्यथा मुझे काफी लंबे समय के लिए जेल में डाल दिया जाना चाहिए और अपनी सजा के अंत में, मुझे फिर भी निष्कासित किया जाना चाहिए। जेल में दो वर्ष, एक ऐसा विचार था, जो मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। इसलिए मुझे, ये कहते हुए कि मेरा पासपोर्ट समुद्र में खो गया था, एक कागज पर हस्ताक्षर करने पड़े।

''अब'', नौजवान ने कहा, ''तुमको न्यूयार्क को निष्कासित किया जायेगा।'' ये मेरे लिये अत्यधिक था, क्योंकि मैं मॉन्ट्रियल और क्यूबेक से आया था, परंतु उत्तर तेजी से मिला; मुझे न्यूयार्क जाना पड़ा क्योंकि, यदि मैं क्यूबेक राज्य में जाता और अपनी कहानी बताता, तो ये संवाददाताओं की पकड़ में आ गई होती, और हलचल मच जाती, क्योंकि संवाद जगत, किसी ऐसी सनसनीखेज चीज के लिए, हमेशा उत्सुक रहता है। किसी आदमी का भला करने के उद्देश्य से नहीं, परंतु मात्र इसलिये कि सनसनी और तकलीफों पर, प्रेस फलती–फूलती, और सफल होती है।

कुछ समय के लिए, मुझे एक कोठरी में रखा गया, और एक दिन मुझे बताया गया कि मुझे अगले दिन निष्कासित कर दिया जायेगा। सुबह, मुझे कोठरी से बाहर निकाला गया, और वह वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्नता से खिलता हुआ वहॉ था कि उस, एक अदने से क्षुद्र अफसर ने, जो वह था, न्याय को अपनी खुद की इच्छाओं के अनुसार, उलट लेने की व्यवस्था कर ली थी।

दोपहर बाद, मुझे जहाज पर ले जाया और बताया गया कि मुझे काम करना पड़ेगा और बंकरों में कोयले को तोड़ना और उसे कोयले की सबसे पुरानी भट्टियों में झोंकना, ये जहाज पर सर्वाधिक कठोर कार्य होगा।

तब मुझे कोठरी में वापस ले जाया गया क्योंकि, जहाज अभी बंदरगाह छोड़ने के लिये तैयार नहीं था, और रवाना होने के एक घंटे पहले तक, कैप्टन मुझे जहाज पर नहीं ले सकता था। चौबीस घंटे बाद, मुझे जहाज पर ले जाया गया, और मुझे एक अत्यंत छोटी कोठरी में बंद कर दिया गया, जहॉ मुझे, जबतक कि जहाज ने समुद्री सीमा को नहीं छोड़ दिया, रखा गया।

कुछ समय बाद, मुझे कोठरी में से मुक्त कर दिया गया, क्योंकि ये छोटी कोठरी, इसीलिये ही थी, और तब मुझे मरम्मत किया हुआ बेलचा और एक कुदाली दे दी गयी, और तलछट इत्यादि को साफ करने के लिए कहा गया।

इसलिये मैं, फिर से, एटलांटिक की ओर, न्यूयार्क की ओर, वापस चला, और सुबह में पहली किरणों के आगमन के साथ ही, कैप्टन ने मुझे बुला भेजा और अकेले में बातचीत की। उसने मुझे बताया कि वह मानता है कि मेरे साथ गलत तरीके से व्यवहार किया गया था। उसने मुझे बताया कि मुझे गिरफ्तार करने के लिए, पुलिस सामने से आ रही थी, और मुझे अमरीका में अवैध प्रवेश के लिये सजा दी जायेगी, और तब सजा भुगतने के बाद, मुझे चीन के लिये निष्कासित कर दिया जायेगा। उसने अपने आसपास देखा, और तब अपनी मेज की एक दराज को ये कहते हुए खोला, ''तुम्हारे जैसा एक आदमी, यदि तुम भागना भी चाहो, आसानी से भाग नहीं सकता। सबसे बड़ी परेशानी हथकड़ियॉ हैं। ये एक चाबी है, जो अमरीकी हथकड़ियों में लग जायेगी, मैं पीछे मुड़ जाऊॅगा और तुम चाबी को ले लो। जैसा कि तुम समझ सकते हो कि मैं ये चाबी तुम्हें नहीं दे सकता, परंतु यदि तुम ले लो तो ठीक है, मुझे इसके बारे में जानने की कोई आवश्यकता नहीं है।''

ऐसा कहते हुए वह मुड़ गया, और मैंने जल्दी से चाबी जेब में रख ली। वास्तव में, कप्तान बहुत शालीन व्यक्ति था। जैसे ही अमरीकी पुलिस, अपनी हथकड़ियों की जॉच करते हुए, जहाज पर आई, उसने उन्हें बताया कि मैं कोई परेशानी खड़ी करने वाला नहीं था। उसने उन्हें बताया कि उसकी निजी राय में, मैंने कुछ गलत नहीं किया, और मुझे केवल एक अप्रसन्न आव्रजन अधिकारी के द्वारा, फंसाया गया है। वरिष्ठ सिपाही रूखेपन से हॅसा, और उसने कहा कि वह पूरी तरह से सहमत है, हर आदमी को, किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा फंसाया जाता है, और इसके साथ ही, उसने मेरी कलाइयों में हथकड़ियॉ डाल दीं और मुझे जैकब सीढ़ियों की ओर, सीढ़ियॉ जिनसे होकर चालक और पुलिस के सिपाही, अभी भी समुद्र में खड़े जहाज में, प्रवेश करते और निकलते हैं, तगड़ा सा धक्का दिया।

कुछ परेशानी के साथ मैंने सीढ़ी से नीचे उतरने की व्यवस्था की, यद्यपि, पुलिस अपनी आशा व्यक्त कर रही थी कि मैं गिर जाऊॅगा और उन्हें मुझे ढूंढकर निकालना पड़ेगा। मुझे पुलिस की नाव के पिछले भाग में, खराब तरीके से धक्का दे दिया गया। तब दो पुलिस वाले, एक रिपोर्ट भरने के लिए और अपनी नाव को किनारे की ओर मोड़ने के लिये, अपने काम पर गये।

जबतक गोदी समीप नहीं आई, मैंने अपने मौके की प्रतीक्षा की, और तब, जबकि पुलिस मेरी ओर नहीं देख रही थी, मैं बगल से कूद गया।

पानी भयानक था। वहॉ कुछ उथला था; सतह पर तेल की तलछट और कीचड़, कीचड़ जो वहॉ खड़े हुए जहाजों, और सवारी जहाजों का मैला थी, गंदगी, जो लहरों द्वारा बहाकर वहॉ लाई गई थी, तैरते हुए समाचारपत्र, तैरते हुए बक्से, कोयले के टुकड़े, आसपास तैरते हुए सभी प्रकार के लकड़ी के अजीब अजीब टुकड़े। मैंने गहरा गोता लगाया और चाबी को पकड़ने और हथकड़ियों, जिनको मैंने बंदरगाह पर तली में गिर जाने दिया था, को खोलने की व्यवस्था की।

मुझे हवा के लिए ऊपर आना पड़ा और जैसे ही मैंने सतह को तोड़ा, गोलियों की बौछार हुई, वहॉ मेरे एकदम समीप, इतना समीप कि गोलियों में से एक ने, मेरे चेहरे के ऊपर पानी उछाल दिया, जहाज का एक ढॉचा था। इसलिये हवा को तेजी से गटक लेने के साथ ही, मैं फिर से नीचे डूबा और इस विचार के साथ कि पुलिस मुझे यहॉ समीपवर्ती स्थान पर तैरते हुए पाये जाने की आशा करेगी, समीपवर्ती किसी ढेर के समीप नहीं, परंतु एक काफी दूर निकला।

धीमे से, मैंने जबतक कि मेरा मुॅह और ठोड़ी पानी के ऊपर नहीं रहे, अपने आपको सतह से ऊपर उठने दिया। तब फिर मैंने गहरी सांस ली, और दूसरी, और दूसरी। मेरे रास्ते में कोई गोली नहीं आई, परंतु मैं मात्र ये देख सका कि पुलिस की नौका, सामने, समीपवर्ती घाट (wharf) के आसपास, तलाश करती रही।

धीमे से, मैंने अपने आपको डूबने दिया, और मैं, अपनी सांस की आपूर्ति को बचाये रखने के लिए, गोदी में धीमे धीमे तैरा।

सहसा वहॉ एक उछाल हुआ, और अंतप्रेरणा से मेरे हाथ खुल गये और वहॉ बंध गये, जिसके साथ मैंने अपने सिर को टकराया था। ये आधे डूबे हुए लकड़ी के सामान का कबाड़ था, जो प्रकटतः मेरे ऊपर आंशिक रूप से बरबाद जैटी (wharf) से गिर गया था। मैं केवल अपने चेहरे को पानी से बाहर रखते हुए, उससे चिपक गया। धीमे–धीमे, चॅूकि मैं किसी आवाज को नहीं सुन सका, मैं बैठा और मैं दूरी पर, पुलिस नाव को देख सकता था, जिसके साथ दूसरी जैटी के ढेर के आसपास नीचे, तलाश करने के लिये दो और आ गईं थीं। गोदी के शिखर पर, हथियार बंद पुलिस, विभिन्न भवनों की तलाशी लेते हुए आसपास दौड़ रही थी।

मैं शांत बना रहा क्योंकि अचानक ही, एक नाव, उसमें तीन सिपाहियों के साथ आई। वे शांति से नाव खे रहे थे। एक सिपाही के पास, द्विनेत्री की एक जोड़ी (pair of binoculars) थी, और वह उस क्षेत्र की सभी गोदियों की जॉच कर रहा था। धीमे से, मैं फिसल गया और मैंने अपने आपको पानी

में डूब जाने दिया, ताकि केवल मेरी नाक और मुँह ही सतह के ऊपर रहें। अंततः मैंने अपना सिर थोड़ा सा उठाया, और अब नाव काफी दूरी पर थी। जैसे ही मैंने देखा मैंने एक शोर सुना, ''अनुमान है कि लड़का अब तक अकड़ गया होगा, हम उसकी लाश को बाद में उठा लेंगे।''

मैं अभी भी, अनियंत्रित रूप से नम कपड़ों और कठोर हवा, जो मेरे अंदर घुस रही थी, की ठंड में, बीम पर पड़ा हुआ फिर से कॉपता रहा। जब अंधेरा घिर रहा था, मैंने गोदी की चोटी पर जाने, और झटपट दौड़कर एक सायवान में शरण लेने की व्यवस्था की। एक आदमी समीप आ रहा था, और मैंने देखा कि वह एक पूर्व–भारतीय नाविक (Lascar) था, और वह काफी मित्रवत् दिखाई दिया, इसलिए मैंने हल्के से सीटी बजाई। वह उदासीनतापूर्वक घूमा और ऐसा लगा कि वह, बिना किसी उद्देश्य के, पूरी तरह से मेरे छिपने के स्थान तक आया। तब वह कागज के कुछ टुकड़ों को, जो आसपास पड़े थे, उठाने के लिए झुका। ''सावधानीपूर्वक बाहर निकलो।'' उसने कहा, एक ट्रक के साथ, एक रंगीन (coloured) व्यक्ति, तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है, वह तुम्हें यहॉ से बाहर ले जायेगा।

ठीक है, परंतु अंततः, मैं खेद की एक अवस्था में वहॉ से बाहर निकला। वास्तव में, मैं थकान और अनावरण (exposure) से पीड़ित था। मैं कूड़े के ट्रक में बैठा, और तारपोलीन मेरे ऊपर फैला दी गई, और उसके ऊपर शिखर तक, कूड़े करकट का पूरा ढेर लगा दिया गया!

रंगीन आदमी मुझे अपने घर ले गया, और मेरी अच्छी तरह देखभाल की गई, परंतु दो दिन और रातों के लिये, मैं बुरी तरह थके आदमी की नींद में सो गया। अपनी थकान के दौरान, जबकि भौतिक शरीर अपनी मरम्मत कर रहा था, मैंने एक सूक्ष्मशरीरी यात्रा की, और मैंने अपने प्रिय शिक्षक और मित्र, लामा मिंग्यार डोंडुप को देखा। उन्होंने मुझे कहा, ''तुम्हारी पीड़ायें बहुत महान रहीं हैं, बहुत महान। तुम्हारी पीड़ायें, मानवों की मानवों के प्रति अमानवीयता के खट्टे फल हैं, परंतु तुम्हारा शरीर घिसता जा रहा है, और शीघ्र ही, तुम्हें परकाया प्रवेश के एक उत्सव में से गुजरना होगा।''

मैं और मेरे साथी, सूक्ष्मलोक में मेरे साथ बैठे। मुझे और अधिक बताया गया।

''तुम्हारा वर्तमान शरीर, मरने की स्थिति में है, उस शरीर की आयु और लंबे समय तक नहीं जारी रहेगी। हमें डर था कि जंगली पश्चिमी विश्व में ऐसी अवस्थायें मिलेंगी, कि तुम अपंग हो जाओगे, इसलिये हम एक शरीर, जिसे तुम ले सकते हो और जो कुछ समय में, तुम्हारे सभी निजी लक्षणों का पुनरुत्पादन करेगा, के लिये देखते रहे हैं।''

हमने तय किया है कि वहॉ एक ऐसा व्यक्ति है। उसका शरीर, तुम्हारे खुद के कंपनों के अत्यंत अत्यंत निम्न संवादियों (harmonics) पर है, अन्यथा, वास्तव में, कोई परिवर्तन नहीं हो सकता था। शरीर अनुशीलन योग्य होने चाहिए, और इस व्यक्ति का शरीर ऐसा है, जो अनुशीलन योग्य है। हमने सूक्ष्मशरीर से उस तक पहुॅच की है, क्योंकि हमने देखा कि उसने आत्महत्या का विचार किया है। ये एक नौजवान अंग्रेज है, जो जीवन से बहुत बहुत असंतुष्ट है, वह अपने जीवन से बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं है, और कुछ समय के लिये, वह, जिसे वह ''आत्मविनाश (self-destruction)'' कहता है, के सर्वाधिक कष्टरहित तरीके के ऊपर निर्णय करने का प्रयास करता रहा है। वह इस शरीर को छोड़ने और यहॉ से सूक्ष्मलोक की यात्रा करने की, पूरी इच्छा रखता है, बशर्ते इससे उसका कोई नुकसान न हो!

''हमने उसको थोड़े समय पहले अपना नाम बदल कर, वह जो तुम अभी उपयोग में ला रहे हो, करने के लिए सहमत कराया है, इसलिए कुछ दूसरी चीजें और हैं, जिनकी व्यवस्था की जानी है, और तब ठीक है, तुमको शरीरों का परिवर्तन करना पड़ेगा।''

ये बहुत बहुत आवश्यक था, मुझे निर्देश दिया गया था कि इससे पहले कि मैं परकाया प्रवेश की आवश्यक प्रक्रिया में होकर गुजर सकूँ, मुझे तिब्बत लौटना चाहिए। मुझे सावधानीपूर्ण निर्देश दिये गये थे, और जब मैंने पर्याप्त ठीक समझा, मैं जहाजरानी के कार्यालय गया और मैंने बम्बई का रास्ता

पकड़ा। एकबार फिर, सभी प्रकार की प्रताड़नओं में होकर गुजरा, क्योंकि, मेरा सामान केवल एक बक्से का था। परंतु अंत में, मैं जहाज पर गया और जब मैं अपने केबिन में था, दो जासूस मुझसे मिलने आये कि मेरे पास मात्र एक पेटी क्यों है। विश्वस्त होते हुए कि भारत में मेरे पास काफी सामान था, वे प्रसन्नता से मुस्कराये और चले गये।

जहाज पर एक यात्री होते हुए मैं बहुत अनजान था। हर आदमी मुझसे बच रहा था, क्योंकि मैं एक अछूत था, जिसके पास सामान में केवल एक पेटी थी। दूसरे वास्तव में, एक पूरा भंडार भरने के लिए काफी सामान रखते हुए प्रतीत हुए, परंतु यात्रा, जैसी मैंने की, करने के लिए, मैं प्रकटरूप से, गरीबों से गरीब, कानून से भागा हुआ, या कोई वैसा ही कुछ, हो सकता था। इसलिए मुझसे हमेशा बचा गया।

जहाज न्यूयार्क से, पूरे रास्ते भर, अफ्रीका के समुद्रतट के साथसाथ और जिब्राल्टर की जलधाराओं में होकर चला। तब हमने स्वेज कैनाल में प्रवेश करने से पहले एलेक्जेंडरिया पर और तब लाल सागर की ओर, एक दूसरा विराम किया। लाल सागर भयानक था, गर्मी मार डालने वाली थी, और मुझे लगभग लू लग गई। परंतु अंत में, हमने इथोपिया के समुद्रतट को पार किया। अरब सागर और बम्बई की गोदी में आ गये। बम्बई में भयानक शोर और गंध थी, वास्तव में कल्पनातीत, परंतु मेरे कुछ मित्र थे, एक बौद्ध पुजारी और कुछ प्रभावशाली लोग, इसलिये बम्बई में मेरा एक सप्ताह का प्रवास दिलचस्प बन गया था।

एक सप्ताह बाद, जिसमें मैंने सभी प्रकार के सदमों और तनावों से, जो मेरे पास थे, उबरने का प्रयास किया। मुझे रेल में बैठाया गया, और मैं भारत को पार करके, कलिम्पोंग (Kalimgpong)[38] के नगर को गया। इससे पहले कि ट्रेन कलिम्पोंग में प्रवेश करे, मैंने ट्रेन से उतरने की व्यवस्था की, क्योंकि, मुझे चेतावनी दे दी गई थी कि ये स्थान, साम्यवादी जासूसों और समाचारपत्र के आदमियों से पूरी तरह से भीड़ भरा था, और नये पहुँचने वालों को रोका जाता था तथा समाचार पत्र के आदमियों के द्वारा प्रश्न पूछे जाते थे, जैसा कि मैंने इसे बाद में सही पाया। यदि कोई साक्षात्कार नहीं देता, तो समाचार पत्र के लोग, बिना किसी मतलब के किसी एक को "खोज लेते" जो कुछ भी सत्य होता।

मैं कलिम्पोंग को थोड़ा सा जानता था, निश्चितरूप से मैं कुछ मित्रों के संपर्क में आना पर्याप्त रूप से जानता था, इसलिये मैं, जासूसों और समाचारपत्र के लोगों से दूर, "भूमिगत हो गया।"

अब तक मेरा स्वास्थ्य बड़ी तेजी से गिर रहा था, और गंभीर आशंका थी कि मैं परकाया प्रवेश के उत्सव में होकर गुजरने के लिये, पर्याप्त लंबा नहीं जिऊँगा। एक लामा, जो चाकपोरी में प्रशिक्षित किया गया था, मेरे साथ कलिम्पोंग में था, और वह अत्यंत शक्तिवर्धक जड़ीबूटियों के साथ, मेरी सहायता को आया।

मैं इस चिकित्सीय लामा के संपर्क में चला, और दस सप्ताह की कठोर यात्रा के बाद, हम

---

38 अनुवादक की टिप्पिणी : कलिम्पोंग (Kalimgpong) या कलिंगपोंग भारत के पश्चिम बंगाल राज्य में एक पहाड़ी स्थान है। इसकी औसत ऊँवाई समुद्र तल से लगभग 4100 फुट है। कलिंगपोंग शहर, कलिंगपोंग जिले का मुख्यालय है। शहर के बाहरी क्षेत्रों (outskirts) में भारतीय सेना का 27 पर्वतीय विभाग (division) यहाँ रहता है। कलिंगपोंग को अपने अनेक शैक्षणिक संस्थानों के कारण जाना जाता है, जिन्हें अंग्रेजी राज्य के समय में स्थापित किया गया था। तिब्बत में चीन के अतिक्रमण और चीनी–भारतीय युद्ध से पहले, यह तिब्बत और भारत के बीच व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। कलिंगपोंग और उसके समीपवर्ती दार्जिलिंग क्षेत्र ने, 1980 के दशक में, और बाद में 2010 में, पृथक् गोरखा लैण्ड राज्य की मांग उठाई गई थी। कलिंगपोंग में फूलों की खेती बहुत महत्वपूर्ण है, इसें अपने फूलों के बागवानों के लिए और विभिन्न प्रकार के फूलों के व्यापार के लिए, जाना जाता है, जिसमें हिमालय में उत्पन्न होने वाले फूलों (flowers), शल्वों (bulbs), नलियों (tubes), और रीजोम्स (rhÁomes) को निर्यात किया जाता है, जो कलिंगपोंग की अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा भाग है। शहर बौद्धमत का प्रमुख धार्मिक केन्द्र है। जांग धोक पालरी खोदांग (Zang Dhok Palri Phodang), यहाँ का प्रमुख बौद्धमठ है, जिसमें तिब्बती बौद्धधर्म की बिरली पाण्डुलिपियाँ रखी हैं। कलिंगपोंग, भारत का अदरक उत्पादन करने वाला बहुत बड़ा क्षेत्र है। कलिंगपोंग और सिक्किम राज्य, दोनों मिला कर भारत के अदरक उत्पादन का लगभग 15 प्रतिशत पैदा करते हैं। अधिकांश चाय बागान दार्जिलिंग के शहर की तरफ, तीस्ता नदी के पश्चिमी किनारे पर हैं। 2011 में भारतीय जनगणना के अनुसार कलिंगपोगं की आबादी लगभग 43 हजार थी। यहाँ नेपाली,, हिन्दी, और बंगला, इस क्षेत्र में उपयोग में लाई जाने वाली विशेष उपभाषाऐं हैं।

ल्हासा की घाटी को अनदेखा करते हुए, एक लामामठ में पहुँचे। ये ऊँचा और पहुँच के बाहर था, ये अगम्य था, और साम्यवादी, ऐसे छोटे महत्वहीन स्थान की चिंता नहीं करेंगे। यहाँ फिर मैंने विश्राम किया, मैंने कुल मिलाकर कुछ सात दिन विश्राम किया। अगले दिन, मुझे एक दिन बताया गया कि मुझे सूक्ष्मलोक में यात्रा करनी चाहिए और उस व्यक्ति के, जिसके भौतिक वाहन को मैं लेने जा रहा था सूक्ष्मशरीर से मिलना चाहिए।

वर्तमान में, मैंने विश्राम किया और परकाया प्रवेश की समस्याओं पर चिंतन किया। इस व्यक्ति का शरीर, मेरे लिये अधिक उपयोगी नहीं था क्योंकि, ये **उसका** शरीर था और इसमें ऐसे तमाम कंपन थे, जो मेरे खुद के कंपनों के साथ अनुशीलन नहीं करते थे। कुछ समय में, मुझे बताया गया, कि वह शरीर, जब उस आयु पर होगा, एकदम मेरे खुद के शरीर के सदृश्य बन जायेगा और यदि पश्चिमी लोग इस पर विश्वास करना कठिन समझें, तो मुझे इसे इसप्रकार कहने दें; पश्चिमी विश्व विद्युत लेपन (elecro-plating) के सम्बंध में जानता है, और पश्चिमी विश्व, इलेक्ट्रो–टाइपिंग (elecro-typing) को भी जानता है। बाद की प्रणाली में, किसी चीज को किसी निश्चित तरल में डुबोया जा सकता है और चीज के सामने, एक विशेष प्रकार का ''सम्बंध जोड़ने वाला (connector)" उससे जोड़ा जाता है, और जब सही दर और एम्पियरेज (amperage) पर, विद्युत धारा चालू की जाती है, मूल चीज की एक एकदम सही नकल, बन जाती है, इसे इलेक्ट्रोटाइपिंग कहते हैं।

फिर, इलेक्ट्रोप्लेटिंग करना संभव है। कोई आदमी, तमाम तरह की धातुओं, जैसे निकिल (nickel), क्रोमियम (chromium), रोडियम (rhodium), तांबा (copper), चांदी (silver), सोना (gold), प्लेटिनम (platinum) इत्यादि की प्लेट बना सकता है। किसी को, केवल ये जानना होता है कि इसे कैसे किया जाये। परंतु विद्युत धारा, एक द्रव में होकर, एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव की ओर प्रवाहित होती है, और एक ध्रुव के अणु, दूसरे ध्रुव में हस्तातंरित हो जाते हैं। ये एक पर्याप्त सरल प्रणाली है, परंतु ये इलेक्ट्रोप्लेटिंग का संक्षिप्त वर्णन नहीं है। परकाया प्रवेश, और मेजबान की ''संरचना (fabric)'' के साथ, एक अणु का दूसरे अणु के द्वारा बदला जाना, जिसे मैं क्या कहूँ? नया कब्जाधारी, अत्यंत सत्य होता है; ये, उनके द्वारा, जो इसकी विधि को जानते हैं, समय समय पर किया जाता रहा है। सौभाग्यवश, वे जो जानते है, कि कैसे, वे हमेशा विश्वसनीय चरित्र के लोग रहे हैं, अन्यथा यदि कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति के शरीर को ले लेता, और नुकसान पहुँचाता, ये वास्तव में, बहुत भयानक चीज हो गई होती। मैंने मानो कि आत्मसंतुष्ट, शायद उतना ही मूर्खतापूर्ण अनुभव किया, जब मैंने इसको अच्छी तरह सोचा, मैं अच्छा करने जा रहा हूँ, मैं किसी भी दूसरे के बेवकूफ शरीर को नहीं लेना चाहता। सब, जो मैं चाहता हूँ, वह है शांति।

परंतु ऐसा लगता था कि मेरे जीवन में कोई शांति नहीं आनी थी।

गुजरते हुए, और एक ऐसे के रूप में, जिसने सभी धर्मों का अध्ययन किया है, मुझे बताना देना चाहिए कि कुशल व्यक्तियों ने इसको एक जीवन के बाद दूसरे जीवन में, लगातार किया है। स्वयं दलाईलामा ने ऐसा किया है, और जीसस का शरीर भी, एक देवता के पुत्र की आत्मा के द्वारा ले लिया गया था और जबतक इस पर रोक नहीं लगाई गई, ईसाई आस्था में भी ये सामान्यज्ञान था, क्योंकि इसने लोगों को अत्यधिक गाफिल (complacent) बना दिया था।

मैं, इस दूरस्थ पृथक्कृत (isolated) लामामठ में, अपने उच्च दृष्टिकोण से, ल्हासा के दूरस्थ शहर को, मुश्किल से ही देख पाता था; एक अत्यंत शक्तिशाली दूरदर्शी, कैसे भी, पोटाला से तस्करी कर लिया गया था, और यहाँ लाया गया था, इसलिये मेरे निष्क्रिय आनंदों में से एक, दूरदर्शी का उपयोग करना और निश्चिंततापूर्वक, चीनी सुरक्षा प्रहरियों को पार्गोकलिंग (Pargo Kaling) में देखना, था। मैंने सेनाओं को अपनी जीपों में आसपास दौड़ते हुए देखा। मैंने उस दूरदर्शी के माध्यम से, आदमियों और औरतों से की जा रही अकथनीय चीजों को देखा, और भयंकर आतंक के साथ, मुझे याद

आता है कि, मैं इन चीनियों की ओर से, जैसे कि दूसरे और लोग भी लड़े थे, लड़ा था, और अब चीनी लोग, अपने स्वीकृत सिद्धान्तों के अनुसार, अपने वादों के अनुसार व्यवहार नहीं कर रहे थे। वे केवल हिंसा की सोचते थे।

कॉच की खिड़कियों में से बाहर देखते हुए, ये विश्वास करना मुश्किल था, कि ये वही तिब्बत, वही ल्हासा था, जिसे मैं पहले जानता था। यहॉ पहाड़ों में खंदकों में होकर, सुनहरा सूरज अभी भी, चमकती हुई किरणों को टकराता था, चांदी वाला चंद्रमा, अभी भी, रात के आकाश के कालेपन में यात्रा करता था, और रंगीन प्रकाश के दूरस्थ बिन्दु, जो तारे थे, अभी भी, स्वर्ग की छत में होकर नीचे घायल करते थे। यद्यपि, गुजरे हुए समय की भांति, रात की चिड़ियायें नहीं पुकारती थीं, क्योंकि चीनी साम्यवादियों ने, दिखने वाली हर चीज को मार डाला। मेरे आतंक के लिये, मैंने पाया कि वे उन प्राणियों के जीवन को बुझा रहे थे, जिन्हें मैं इतना अधिक प्यार करता था। पक्षी, उनका कहना था, अनाज को खाते थे, जो मानवों को भूखा मार सकता था। बिल्लियॉ मार दी गईं थीं, इसलिए जैसा मुझे बताया गया, वहॉ कोई बिल्लियॉ, और अधिक नहीं, नहीं बची हुई थी। कुत्ते मारे गये थे और चीनियों के द्वारा खा लिये गये थे। ये चीनी स्वादिष्ट भोजन होता दिखाई देता है। इसलिए किसी भी मूल्यवान कारण के बिना, न केवल बेचारे आदमी, मौत की ओर जा रहे थे, वल्कि चीनी साम्यवादियों के हाथों, देवताओं के पालतू पशु भी मारे जा रहे थे। मैं हानिरहित, भोलेभाले लोगों को दोषी करार दिये जाने पर, उन्हें दिये गये सभी आतंकों पर, दिल से दुखी था। जैसे ही मैंने, गहरे होते हुए आकाश पर बाहर घूरा, मुझे भावना के द्वारा दबोच लिया गया, दुख के द्वारा दबोच लिया गया, और तब मैंने सोचा, ठीक है, मुझे ये काम करना है, मेरे जीवन में बुराइयों की काफी भविष्यवाणियॉ की जा चुकी है। मुझे आशा है कि मैं, इन सब भविष्यवाणियों को झेलने के लिए, जो पहले ही बताई जा चुकी हैं, काफी मजबूत हूँ।

कुछ समय के लिए, मैं अधिक उत्तेजना, आशा की अधिक वायु, के लिए, हल्का सा सजग रहा था, और मेरा ध्यान, फिर से, और फिर से, ल्हासा की ओर खींचा जाता रहा था। दूरदर्शी आश्चर्यजनक था। एक ऐसी कठिन चीज के द्वारा, दरार वाली किसी खिड़की में से बाहर की ओर देखना, मुश्किल था इसलिए मैं बीस आवर्धन वाले द्विनेत्रियों के एक जोडे की ओर मुड़ा, जिसे भी (पोटाला से) लाया गया था, और जिसने खिड़की में से दूरदर्शी के कोण के परे के दृश्यों के लिए, अपेक्षाकृत अधिक गतिशीलता प्रदान की।

बाहर देखते हुए, मेरा ध्यान अचानक ही विक्षुब्ध हो गया, क्योंकि तीन लोग, उनमें से दो अपने बीच वाले किसी को सहारा देते हुए, प्रविष्ट हुए। मैं घूमा और आतंक के साथ उसे देखा; वह अंधा था, लाल गड्ढ़ों को छोड़ते हुए, उसकी ऑखें निकाल ली गई थीं। उसकी नाक गायब थी। उसके साथ दो आदमी, उसे बैठाने की स्थिति में, धीमे से मदद कर रहे थे और मोहित करने वाले आतंक में, मैंने उसे, उनमें से एक जिन्हें मैं पहले से जानता था, एक वह जिसने चाकपोरी में मेरे अध्ययन में मेरी मदद की थी, के रूप में पहचाना। दो सहायकों ने नमन किया, और चले गये। लामा और मैं, एक दूसरे के आमने–सामने थे, और उसने धीमी आवाज में कहाः ''मेरे भाई,'' उसने मुझसे कहा, ''मैं अच्छी तरह से तुम्हारे विचारों को समझ सकता हूँ। तुम आश्चर्य करते हो कि, मैं इस जैसी अवस्था में कैसे पहुँच गया। मैं तुम्हें बताऊँगा। मैं अपने वैधानिक अवसर के लिए बाहर था, और मैं संयोगवश लोहपहाड़ी की ओर की झलकी ले रहा था। एक चीनी साम्यवादी अफसर, सहसा ही, वहॉ से, जहॉ वह अपनी कार में बैठा था, घूमा, और उसने मुझ पर, उसको घूरने और उसके प्रति दुष्ट विचारों पर विचार करने का दोषारोपण किया। स्वाभाविकरूप से, मैंने इस आरोप को मना किया, क्योंकि, ऐसा सत्य नहीं था। मैं केवल, अपने प्रिय घर को देख रहा था। परंतु नहीं, अधिकारी ने कहा कि सारे पुजारी झूठे और प्रतिक्रियावादी थे, और उसने अपने आदमियों को अचानक ही आदेश दे दिये गये। मुझे पकड़ लिया गया, और ठोकर मार कर नीचे गिरा दिया गया, और तब मेरी छाती की ओर रस्सा बांधा गया और मेरी

पीठ के पीछे गांठ लगाई, दूसरा सिरा, एक कार, जिसमें अफसर बैठा था, के पिछले हिस्से से बांधा गया। तब उसने मुझे खुशी की चीखों के साथ, सड़क पर औंधे मुँह घसीटा।''

बूढ़ा लामा रुका, और उसने अपनी पोशाक को उठाया। मेरा मुँह आतंक से खुला रह गया, क्योंकि सिर से पैर तक, पूरी खाल और अधिकांश मांस उधड़ चुका था, मांस के चिथड़े नीचे लटक रहे थे, और उसकी पोशाक के नीचे केवल खून से लथपथ घपला (mess) था। उसने, फिर से, सावधानी के साथ अपनी पोशाक को नीचे किया और कहा, ''हाँ, सड़क के खुरदरेपन ने मेरी नाक तोड़ दी। इसने दूसरी चीजें भी तोड़ीं, और अब मैं, परे के देश में गुजरने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। परंतु मैं वह मुक्ति पा सकूँ, उससे पहले, मेरे पास एक और काम करने को है।''

वह कुछ ऊर्जा वापस पाते हुए, एक या दो क्षण के लिये रुका, तब उसने कहा, ''परकाया प्रवेश का ये मामला, और ये संभावना कि हम इसका उपयोग कर सकते हैं, वर्षों से ज्ञात रही है, और मैं उस परियोजना का प्रभारी था, इसका पता लगाने के लिए, जितना अधिक से अधिक मैं इस सम्बंध में कर सकता था, मुझे प्राचीन हस्तलिपियों का अध्ययन करना पड़ा। मुझे आकाशिक अभिलेखों का परामर्श लेना पड़ा और मुझे, जितना मैं कर सकता था, अधिक से अधिक ज्ञान समेटना पड़ा।'' वह फिर से रुका, परंतु तब चलता गया, ''अंततः चीनियों ने मुझे मेरे बंधनों से मुक्त कर दिया, परंतु अधिकारी को अभी एक और दुष्कृत्य करना था। चूँकि धूल में, मैं अपनी पीठ पर लेटा था, उसने मुझे ठोकर मारी और कहा, ''तुमने मुझे घूर कर देखा और तुमने मेरे लिये बुराई की भावना की, इस के लिए अब तुम, और अधिक, नहीं घूर पाओगे।'' उसके आदमियों में से एक ने, सड़क के किनारे से एक नुकीला चकमक पत्थर उठाया, और मेरी आँख के गोलकों में मारा, एक के बाद दूसरा, और मेरी आँख के गोलक बाहर उछल पड़े, ताकि वे मेरे गालों पर लटक गये। तब वे एक हँसी के साथ चले गये, और मुझे, जैसा मैं था, वैसा ही छोड़ गये, मेरी नाक फटी हुई, मेरा शरीर छीला हुआ और फाड़ा हुआ, अब कोई आदमी कभी ये नहीं कह सकेगा कि मैं कभी आदमी या औरत था, क्योंकि ऐसे अंग फाड़ दिये गये थे, और मेरे गालों पर, फूटते हुए और मेरे कानों तक नीचे बहते हुए तरल के साथ, मेरी अंधी छेददार आँखें, आँख की पुतली के साथ टिकी थीं।

''सदमा खाये हुए लोग, जब वे सक्षम थे, मेरी सहायता को आये और मुझे उठाया गया और एक घर में ले जाया गया। मैं बेहोश हो गया था, और जब मैंने चेतना पुनः प्राप्त की, मैंने पाया कि मेरी आँखें हटा दी गयी थीं, और जड़ीबूटियों की पट्टियों (herbal packs) से भलीभांति मेरा इलाज किया गया था। रात को, तुम्हारे आने की प्रतीक्षा करने के लिये, मुझे छिपाकर, ऊपर, पर्वतों में ले जाया गया। अब मुझे तुम्हें काफी कुछ बताना है, और तुम्हारे साथ सूक्ष्मशरीर में यात्रा करनी है, जिसमें से मैं वापस नहीं लौटूंगा।''

उसने फिर थोड़ी देर के लिये विश्राम किया, ताकि वह अपनी थोड़ी सी शक्ति को पुनः प्राप्त कर सके, और तब, जब एक हल्का रंग उसके गालों पर लौट रहा था, उसने कहा, ''हमको सूक्ष्मलोक में जाना चाहिए।''

इसलिये हम फिर से, परिचित पथ पर गये। हम में से हर एक, पद्मासन की स्थिति, वह स्थिति जिसको हम पूर्व के लोग, बनाये रखने में सबसे आसान समझते हैं, में बैठा हुआ था। हमने अपने उपयुक्त मंत्रों को कहा, जिनके साथ हमारे कंपन इतने ऊंचे हो गये कि बिना किसी अव्यक्त झटके के, जो ऐसे परिवर्तनों में साथ आता है, हम अपने शरीरों से, मैं अस्थाई रूप से और मेरा साथी स्थाई रूप से, बाहर निकल गये।

पृथ्वी का स्लेटी रंग, और शाश्वत बर्फ का सफेद रंग, हमारी नजरों से चला गया। हमारे सामने एक पर्दा प्रकट हुआ, एक पर्दा जो नीला सा सफेद चमक रहा था, एक पर्दा, जो जब ये पहली बार पहुँचा, एक अभेद्य अवरोध लगा, परंतु वे जो जानते थे कि बिना बाधा के किस प्रकार प्रवेश कर सकते

थे। हमने ये किया, और अपने आपको, आनंद के प्रभावों के साथ, भव्य प्रकाश के क्षेत्र में पाया।

सूक्ष्मलोक के उस बिन्दु पर, जहॉ हम प्रविष्ट हुए, हम हरी घास के एक मैदान पर थे। घास जो छोटी और हमारे पैरों के नीचे उछाल देने वाली थी। ''आह!'' मेरे साथ के लामा ने सांस लीं, ''दोबारा देखना कितना आश्चर्यजनक था, कष्टरहित होना कितना आश्चर्यजनक था। शीघ्र ही, मेरा कार्य पूरा हो जायेगा, तब मैं कम से कम कुछ समय के लिये घर में रहूँगा।'' ऐसा कहते हुए उसने मुझे एक सुखद पथ पर अगुवाई की।

वहॉ आसपास पेड़ थे, सभी हरे, और लाल और पीले पत्ते वाले अनेक अनेक पेड़। वहॉ हमारे बगल से, पानी की सतह से ऊपर के आकाश का गहरा नीला परावर्तित होते हुए, एक शाही नदी थी। धुंधली ऊन के समान बादल, आलस के साथ आकाश के आरपार चले रहे थे, और वहॉ जानदार जीवन, शक्ति, स्वास्थ्य, प्रसन्नता का एक वातावरण था।

पेड़ों पर चिड़ियॉ गा रहीं थीं। एक प्रकार की चिड़ियॉ, जो मैंने पृथ्वी पर नहीं देखी थीं क्योंकि ये वास्तव में, भव्य प्राणी थे, विभिन्न रंगों वाली अनेक चिड़ियायें, विभिन्न पंखों वाली अनेक चिड़ियायें।

बूढ़ा आदमी और मैं, पेड़ों के बीच साथसाथ चलते गये, और तब हम एक खुले स्थान पर आये, जो वास्तव में, एक बगीचा था, चमकदार फूलों का एक बगीचा, उनमें से कोई भी ऐसे प्रकार का नहीं, जिसको मेरे द्वारा पहचाना जा सके। फूल हमारे साथ सहमत होते हुए लगे, मानो कि हमारा अभिनंदन कर रहे हों। मैं कुछ दूरी पर, लोगों को आसपास घूमते हुए देख सकता था, मानो कि वे भव्य बाग में मजे लूट रहे हों। अक्सर एक व्यक्ति झुकता, और एक फूल को सूंघता। कई बार, दूसरे लोग ऊपर आकाश की तरफ पहुँचते, और एक चिड़िया आती और उसके बाहर फैलाये हुए हाथ पर बैठ जाती। यहॉ कोई डर नहीं था, केवल शांति और संतोष।

हम थोड़ी देर के लिये चले, और तब हमने अपने सामने उसे, जो एक बड़ा सा मंदिर प्रतीत हुआ, देखा। इसमें एक चमकदार सुनहरा गुम्बज (cupola) और हल्के पीले से रंग की दीवारें थीं, जो इसको समर्थन देती थीं। दूसरी इमारतें, हर एक मटियाले रंगों (pastle colours) में, सभी सामंजस्य में, इससे दूर तक फैली थीं, परंतु मंदिर के प्रवेशद्वार पर लोगों का एक समूह प्रतीक्षा कर रहा था। उनमें से कुछ तिब्बत की पोशाकें पहने थे, और दूसरे मैं नहीं समझ सका कि वे क्या पहने थे। एक क्षण के लिये, ऐसा लगा मानो कि वह काला या कुछ बहुत गहरे रंग का पहने था। और तब, जैसे ही हम वहॉ पहुँचे, हमने देखा कि ये पश्चिमी विश्व का, पश्चिमी परिधानों में शोभित, एक व्यक्ति था।

हमारे पहुँचने पर, लामा मुड़े और उन्होंने हमारी दिशा में अपने हाथ फैलाये, स्वागत में अपने हाथ फैलाये। मैंने देखा कि उनमें से एक, मेरे शिक्षक और मार्गदर्शक लामा मिंग्यार डोंडुप थे, इसलिये मैं जानता था कि सब कुछ अच्छा ही होगा, क्योंकि ये आदमी अच्छा और केवल अच्छा ही था। दूसरी आकृति, जो मैंने देखी, और अधिक प्रवर थी, जबकि पृथ्वी के तल पर थी, परंतु अब वह हमारी प्रतीक्षा करने वाली, उस स्वागत ''समिति'' में से केवल एक थी।

हमारी सुखद शुभकामनायें शीघ्र ही आदानप्रदान कर ली गई, और तब जैसे ही हम, केन्द्रीय हॉल में से गुजरते हुए, महान मंदिर के मुख्य भाग में चले, और आगे के भवन में चलते हुए, हम एक छोटे कमरे में प्रविष्ट हुए, जिसका अस्तित्व, समझने में आसान नहीं था, और ऐसा प्रतीत हुआ, मानो कि, हमको अपनी उपस्थिति में हमारे पीछे प्रवेश कराते हुए, घनीभूत बंद दीवारें दूर खिसक गईं।

मेरे शिक्षक, स्पष्टरूप से प्रवक्ता, मेरी ओर मुड़े और उन्होंने कहा, ''मेरे भाई, यहॉ वह नौजवान आदमी है, जिसके शरीर में तुम रहने जा रहे हो।'' मैं मुड़ा और भौंचक्का होकर, मैंने नौजवान के चेहरे को देखा। निश्चितरूप से, वहॉ हम दोनों के बीच में, बिल्कुल भी, कोई समानता नहीं थी। वह मुझसे

काफी छोटा था, और हमारे अंदर केवल समानता ये थी कि वह ठीक वैसा ही गंजा था, जैसा कि मैं था! मेरे शिक्षक मुझ पर हॅंसे, और उन्होंने मुझे, उलाहना भरी उंगुली, मेरी नाक पर दिखाईः ''अब, अब लोबसांग,'' वह हॅंसे, ''अपने निर्णय को इतनी जल्दी मत करो। इस सब की योजना बना ली गई है; पहले मैं तुम्हें आकाशीय अभिलेख से कुछ चित्र दिखाने वाला हूॅ।'' और उन्होंने ऐसा किया।

अभिलेखों को देखने का अपना कार्य पूरा करने के बाद, उन्होंने उस नौजवान को संबोधित करते हुए कहा, ''अब नौजवान, मैं समझता हूॅ कि ये समय है कि अपने बारे में तुम कुछ हमें बताओ, क्योंकि यदि किसी को तुम्हारे शरीर को लेना है, तब निश्चितरूप से, उस लेने वाले को, ये जानने का ये समय है कि उसका सामना किस से होना है।''

ऐसा संबोधित किये जाने पर, नौजवान, वास्तव में, अत्यंत उग्र दिखाई दिया और उसने म्लान स्वर में कहा, ठीक है, नहीं, अपने भूतकाल के जीवन के सम्बंध में, मुझे कुछ नहीं कहना। वह हमेशा मेरे विरुद्ध खड़ा रहा है। मैं जो कुछ भी, अपने भूतकाल के बारे में कहूॅंगा, वह हमेशा मुझे नीचे की ओर ही खींचेगा।'' मेरे शिक्षक ने उसकी ओर दुखी होकर देखा, और कहा, ''नवयुवक यहॉ हमें उन चीजों का बहुत बड़ा अनुभव है, और हम किसी व्यक्ति का निर्णय, उसके मातापिता से नहीं करते, परंतु उससे करते हैं कि वह व्यक्ति स्वयं क्या है।'' मेरे शिक्षक ने आह भरी, और तब कहा, ''तुम आत्महत्या का घोर पाप करने जा रहे थे, वास्तव में एक पाप, एक पाप, जो तुमको प्रायश्चित करने के लिए, अनेक अनेक जीवनों में महंगा पड़ता। हम तुमको शांति, सूक्ष्मलोक में शांति का प्रस्ताव देते हैं, ताकि तुम उन चीजों में से कुछ की समझ पा सको, जिन्होंने तुम्हें तुम्हारे पूरे जीवन भर कष्ट दिया है। जितना अधिक तुम सहयोग करोगे, हम उतनी ही आसानी से तुम्हारी मदद कर सकते हैं। साथ ही साथ, उस काम में मदद दे सकते हैं, जो हमारे सामने है?'' नवयुवक ने नकार में अपना सिर हिलाया और कहा, ''नहीं, सहमति इस बात पर थी, कि मैं अपना शरीर छोड़ना चाहता हूॅ, आप किसी और को इस पर रखना चाह रहे थे, केवल यही सहमति थी, मैं आपको इस पर कायम रखता हूॅ।''

सहसा वहॉ एक चमक हुई, और नवयुवक गायब हो गया। मेरे साथ का बूढ़ा लामा, जो अब पूरा स्वस्थ नौजवान था, हर्षित हुआ और चीखा, ''ओह प्रिय, प्रिय ऐसे उग्र विचारों के साथ, वह यहॉ इस सूक्ष्मलोक में, हमारे साथ नहीं टिक सकता। अब हमें वहॉ जाना पड़ेगा, जहॉ वह अपने कमरे में अकेला सो रहा है। परंतु आज की रात, हम उसे सोने दें, हम शरीर को घायल नहीं करना चाहते, इसलिए मुझे आपके साथ, कैसे भी, अगली रात तक ल्हासा लौटना है।''

समय गुजरा, और मैं देख सकता था कि बूढ़ा लामा, तेजी से गिर रहा था, इसलिये मैंने उससे कहा, ''समय, जब हम सूक्ष्मलोक में गये।'' ''हॉ'' ''उसने जबाव दिया, ''मैं अपने इस शरीर को फिर नहीं देखूॅंगा। मुझे जाना चाहिए, हमको जाना चाहिए, क्योंकि जबतक मैं सूक्ष्मशरीर में हूॅ, उससे पहले यदि मैं मरा, तब हमको बिलम्वित करेगा।''

हमने उस झटके को साथसाथ झेला, और ऊपर की ओर चलते गये, परंतु सूक्ष्मलोक, जहॉ हमने पहले यात्रा की थी, में नहीं। इसबार हम विश्व के ऊपर, इंग्लैंड के एक घर में चले। हमने भौतिक रूप से उस आदमी को देखा, जिसको मैंने पहले सूक्ष्मलोक में देखा था। वह इतना असंतुष्ट, इतना दुखी दिखाई दिया। हमने उसके ध्यान को आकर्षित करने का प्रयास किया, परंतु वास्तव में, वह बड़ी

गहरी नींद में सो रहा था। बूढ़ा लामा फुसफुसाया, क्या तुम आ रहे हो?'' मैं फुसफुसाया, ''क्या तुम आ रहे हो?'' और हमने इसको, पहले एक ने और बाद में दूसरे ने, कहना जारी रखा, जबतक कि अंततः, अत्यंत अत्यंत अनिच्छा के साथ, इस व्यक्ति की सूक्ष्म–आकृति, उसके भौतिक शरीर में से उभरी। शीघ्र ही वह पसीज गया (oozed out), धीमे से वह अपने शरीर के एकदम ऊपर, उसकी सही आकृति में, संघनित हो गया और तब उसने अपनी स्थिति को विपरीत, सूक्ष्मशरीर का सिर पैरों की ओर, किया। आकृति घूमी, और अपने पैरों पर खड़ी हो गई। वह वास्तव में, बहुत उग्र दिखाई दे रहा था और मैं देख सकता था कि उसे, हम से पहले मिलने की याद बिल्कुल भी नहीं थी। ये मेरे लिये अचंभित करने वाला था, परंतु मेरा साथी फुसफुसाया कि वह इतने खराब मिजाज में था, और उसने खुद को, अपने शरीर में इतने हिंसकरूप में वापस छोड़ दिया था, कि उसने अपनी सभी स्मृतियों, जो उसके साथ थीं, को पूरी तरह से समाप्त कर दिया था।

''इसलिये तुम अपने शरीर को छोड़ना चाहते हो,'' मैंने कहा। ''मैं सर्वाधिक निश्चियपूर्वक चाहता हूॅं'', वह मेरे ऊपर वापस लगभग गरजा।'' ''मैं यहॉ उससे पूर्णतः घृणा करता हूॅं।'' मैंने उसे देखा और मैंने भयभीत होकर, और, अत्यधिक सुंदर बिन्दु को उसके ऊपर रखने के लिये नहीं, शुद्ध भय के साथ, अपने कंधे हिलाये। मैं इस जैसे किसी आदमी के शरीर को कैसे प्राप्त करने जा रहा था? ऐसा उग्र व्यक्ति, इतना कठिन। परंतु, वहॉ ऐसा ही था। वह हॅसा और उसने कहा, ''ऐसा है, **तुम** मेरे शरीर को चाहते हो? ठीक है, कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम क्या चाहते हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम इंग्लैंड में क्या हो, केवल वह जिससे फर्क पड़ता है, वह है, तुम किसे जानते हो, तुम्हारे पास कितना है?''

हमने कुछ समय के लिये, उससे बात की और वह ठंडा होता दिखाई दिया और मैंने कहा, ''ठीक है, एक चीज, जो तुम्हें करनी होगी वह है, दाढ़ी बढाना। मैं अपनी दाढ़ी को मूड़ नहीं सकता क्योंकि जापानियों के द्वारा, मेरे जबड़ों को नुकसान पहॅुचाया गया है। क्या तुम दाढ़ी बढ़ा सकते हो? ''हॉ, श्रीमान्,'' उसने जबाव दिया हॉ मैं बढ़ा सकता हूॅ और बढ़ाऊॅगा।''

मैंने एक क्षण के लिये सोचा और तब मैंने कहा, ''बहुत ठीक, तुम एक महीने के समय में, एक उपयुक्त दाढ़ी बढ़ाने में सक्षम होगे। एक महीने के समय में, तब, मैं आऊॅगा और तुम्हारे शरीर को ले लॅूगा और तुमको सूक्ष्मलोक में जाने दिया जायेगा, ताकि तुम अपनी शांति को पुनः प्राप्त कर सको, और जानो कि जीवित रहने में आनंद है।'' तब मैंने कहा, ''यदि तुम अपनी जीवनगाथा हमें बताओ, ये हमें बहुत, बहुत अधिक, सहायक होगा, क्योंकि यद्यपि हम उसे आकाशीय अभिलेखों के माध्यम से सूक्ष्मलोक में देख चुके हैं, फिर भी, सम्बंधित व्यक्ति से ही, वास्तविक अनुभवों को सुने जाने से व्युत्पन्न, ये एक वरदान होगा।

वह फिर से, भयानकरूप से उग्र दिखाई दिया, और उसने कहा, ''नहीं, नहीं, मैं उसे कहना नहीं बर्दाश्त कर सकता, मैं कोई दूसरा शब्द कहने वाला नहीं हूॅं।''

हम दुख के साथ मुड़े, और सूक्ष्मलोक में गये, ताकि हम, उसके जीवन में से अधिकांश को देखने के लिये, आकाशीय अभिलेख से परामर्श ले सकें, परंतु आकाशीय अभिलेख में कोई उसे देखता है, जो घटित हो चुका है, कोई, एक व्यक्ति की, आवश्यकरूप से अनकही सलाहों को, प्राप्त नहीं कर

सकता, हम कार्य देखते हैं, परंतु विचार को, जो कि क्रिया से पहले आता है, नहीं देखते।

परंतु अब हमें, बहुत वर्षों पहले के उन दिनों की, एक आगे की उछाल लेने दें। नौजवान, अब अनेक अनेक वर्षों से, कुछ हद तक, सूक्ष्मलोक में तनावमुक्त है, और कुछ थोड़ी सीमा तक, उन कठिनाइयों की सराहना करता है, जिनके साथ हमें मुकावला करना पड़ा। अब उसने हमें, खुद का जीवन वृतांत बताने की सहमति दे दी है। वह सूक्ष्मलोक में, और मैं लोबसांग रम्पा, यहाँ पृथ्वीलोक में, उन चीजों को, जो नौजवान ने बताई, एकदम ठीक ठीक वैसा, जैसा कि बताया गया, लिखने का प्रयास कर रहे हैं। हम उसकी कहानी को शीघ्र ही लायेंगे, परंतु ये जोर देना आवश्यक है कि नाम नहीं लिये जायेंगे, क्योंकि ये दूसरों को परेशानी पैदा कर सकते हैं। ये कोई बदले की कहानी नहीं है, ये कटुता की कहानी नहीं है। इस पुस्तक में, वास्तव में, ये, असंभव दिखते हुए अवरोधों के ऊपर विजय की कहानी है। यहाँ मेरी पुस्तकों को रोकने के लिए, अनेक प्रयास किये जाते रहे हैं, परंतु मैं हमेशा ही, उस तरीके पर, जिसमें एक आदमी कदम बढ़ाता है, सावधान रहा हूँ, यद्यपि उसके कदम बढ़ाने पर कुत्ते भौंकते हैं; मैं हमेशा सावधान रहा हूँ कि एक आदमी अपने काम को जारी रख सकता है, यद्यपि मच्छर और मक्खियाँ, उसके आसपास मंडराती हैं। इसलिये मैं कहता हूँ कि उसके लिये, जिसे मैं करना चाहता था, जो अब संभव है, मुझे कटुता की आवश्यकता नहीं है, और मेरा वर्तमान कार्य, ''सड़क की बगल से गिरे हुए,'' किसी दूसरे का कार्य, पूरा होने ही वाला है।

मैं अपने आदेशों पर सर्वाधिक कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ, फिर कहता हूँ कि मेरी सभी पुस्तकें सत्य हैं, एकदम सत्य हैं, उन्हें किसी लेखक की अनुज्ञा (licence) के बिना लिखा गया है, चूँकि ये चीजें मेरे साथ घटीं, उनमें सत्य निहित है। सभी चीजें, जिनके सम्बंध में, मैं लिखता हूँ, मैं कर सकता हूँ, परंतु सार्वजनिक प्रदर्शन के लिये नहीं, क्योंकि न तो मैं भूत हूँ और न ही प्रदर्शन करने वाला। चीजें, जो मैं करता हूँ, अपने कार्य को पूरा करने के लिये हैं।

इसलिये अब हम पन्ना पलटें और पढ़ें कि वह क्या था, जो नौजवान ने कहा।

अध्याय–आठ

ये एक कहानी है, मेजबान के जीवनवृत की। ये एक कहानी है, जो कहने में कठिन है, क्योंकि कहने वाला सूक्ष्मलोक में है, और एक वह, जिसको इसे लिखना है, वह पृथ्वीलोक में है, अलबेर्टा, कनाडा के कालगेरी (Calgery, Alberta, Canada) शहर में। ये कहानी, उसके संदर्भ के बाहर है, जो पहले से लिखी जा चुकी है, और जिसका हिस्सा, जो स्वाभाविकरूप से जारी रहेगा, के बीच में एक विराम प्रस्तुत करती है, परंतु जब कोई सूक्ष्मलोक के मामलों में व्यवहार कर रहा है, तब किसी को समय के मामले में, कुछ रियायतें देनी होगीं, क्योंकि सूक्ष्मलोक का समय, पृथ्वीलोक के समान नहीं है। इसलिये उसकी जीवनगाथा अब दी जा रही है, और सभी प्रकार के प्रश्नों को पूछने वाले लोगों के पत्रों की बौछार से बचने के लिये स्पष्टीकरण, कि ये अभी क्यों दी जा रही है, यहॉ दिया गया है। इस बिन्दु से आगे, तब दो, और जबतक कि मैं सूचित न करूँ, लिखी गई हर चीज, उसके द्वारा जिसे हम ''मेजबान'' कहते हैं, बोलकर बताई हुई है।

बाबा, वास्तव में, एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे; कम से कम प्लिम्पटन (Plympton), के देहाती जिले में, जिसमें जहॉ तक मुझे याद है, प्लिम्पटन सेंट मैरी (Plympton St. Mary), प्लिम्पटन सैंट मोरिस (Plympton St. Maurice), अंडरवुड (Underwood), कोलब्रुक (Coalbrook), तथा काफी संख्या में दूसरे उपनगरों को शामिल करता है।

बाबा, प्लिम्पटन[39] की जलापूर्ति (Waterworks) के प्रमुख थे। हर दिन, वह पोनी पर सवार होकर जाते और पहाड़ी पर, जबतक एक मील, या ऐसा ही कुछ नहीं होता, ऊँची चढ़ाई चढ़ते, चढ़ाई पर, वे एक बंद टीले पर, जिसपर एक छोटी झोपड़ी थी, आते, पानी की टंकी अंदर ढकी हुई थी। बाबा, एक चार फुट लंबी छड़ी, जिसका एक सिरा प्लेट की आकृति का, और दूसरा सिरा गोल था, के साथ जाया करते थे। वह प्लेट की आकृति के सिरे के पास अपना कान लगाये हुए आसपास घूमते थे, और दूसरे सिरे को वे जमीन के संपर्क में रखते थे, और वह नीचे प्लिम्पटन, अंडरवुड, कोलब्रुक, और दूसरे जिलों के नलों को पोषित करने के लिये, पानी को पाइपों में होकर दौड़ता हुआ अनुभव कर सकते थे।

कई लोगों और तमाम नौसिखियों को काम पर लगाते हुए, बाबा का एक बड़ा प्रगतिशील व्यापार था। उन्होंने उन्हें नलसाजी (plumbering) सिखाई, जिसके कारण बाद में, टिन का काम करने और सामान्य इंजीनियरिंग के सम्बंध में, अनेक अपमानजनक कहानियॉ, उठीं। उन दिनों में, शताब्दी के ठीक प्रारंभ में, पतीलियॉ, कड़ाहियॉ, तड़का लगाने के लिये बर्तन, और शेष सब कुछ, लेने के लिये लोग सुपरमार्केट नहीं भागते थे; ये चीजें हाथ से बनाई जाती थीं और बाबा के आदमी ऐसा करते थे।

बाबा, प्लिमटन के सेंट मोरिस में, मेयोरल्टी हाउस (Mayoralty House) में रहते थे। घर वास्तव में, नगर प्रमुख का घर रहा था, और वह गिल्डहॉल (Guildhall) और पुलिस थाने के एकदम ठीक सामने था।

मेयोरल्टी हाउस, चार से पॉच एकड़ के बीच भूमि पर, तीन हिस्सों में बंटा बना हुआ था। पहला भाग, चार मंजिला मकान था, और शायद, एक एकड़ से थोड़ा कम, एक चारदीवारी वाले बाग को बनाता था। उस बाग में, घर के पास में, अनेक बड़े बड़े पत्थरों और विभिन्न रंगों के कांचों वाली खिड़कियों से बना हुआ एक आश्रम था। उसके बाहर, पूरे किनारों पर फूलों और पौधों के साथ, घास का एक छोटा मैदान था। मध्य में, अच्छी तरह टाइलें लगा हुआ, मछली वाला एक बड़ा तालाब था और सिरे पर पानी से चलने वाले पहियों के साथ, एक फुब्बारा था। पानी का एक जेट चालू किया जा सकता था, और पानी की हील्स (water heels) आसपास घूमती रहतीं थीं। तब वहॉ एक छोटा गोलक था, जो पानी में नीचे जाता था और दिन के किसी निश्चित समयों पर, मछलियॉ उस गोलक को खींच

39 अनुवादक की टिप्पिणी : प्लिम्पटन (Plympton) दक्षिण पूर्वी डेवन (Devon) में प्लेमाउथ (Playmouth) शहर का उत्तरी–पूर्वी घनी आबादी वाला उपनगर है। इसका नाम प्लाइम नदी के नाम के आधार और स्थिति पर रखा गया है।

ले जातीं और एक घंटी बजती और उन्हें खाना मिल जाता।

वहाँ मछली वाले तालाब के सामने, बड़ी सावधानी के साथ रखरखाब की गई, और पूरी तरह साफ रखी गई, दो बड़ी बड़ी पक्षीशालाऐं (aviaries) थीं। इनमें दीवार के विरुद्ध जमे हुए दो मरे हुए पेड़ थे, और वह अत्यंत शर्मीली चिड़ियों के लिये आदर्श स्थान उपलब्ध कराता था। चिड़ियायें इतनी अधिक पालतू थीं कि जब बाबा पक्षीशाला में जाते, वास्तव में, दरवाजा खोलते हुए, कोई चिड़िया उड़ती नहीं थी।

बगीचे के पहले भाग में, आगे, और नीचे, पिताजी के आनंदों में से एक, ग्रीनग्रह (greenhouse), और उसके परे फलों का एक छोटा बगीचा था।

उस दीवारबन्द बाग के बाहर, निजी सड़क का एक रास्ता था, जो प्रमुख सड़क को छोड़ता था और मायोरेल्टी हाउस के निचले वाले हिस्से में, जो उस सड़क के आरपार एक पुल के रूप में, नीचे की ओर जाता था, और तली में माल्ट गृह (malt houses) होते थे, जहाँ गुजरे हुए दिनों में, घरों में, जौ मिश्रित दूध, रखा रहता था। जब से मैंने उन्हें जाना, माल्ट गृहों का उपयोग नहीं किया जाता था, क्योंकि, प्रकटरूप से, कुछ सौ मील से, प्लिम्पटन में माल्ट को भेजना, काफी अधिक सस्ता होता था। माल्ट हाउस के पास, एक अग्निशमन स्टेशन था। बाबा के पास आग बुझाने वाली गाड़ी थी, और उनके पास घोड़े थे, जो आग बुझाने वाले इंजनों को घटनास्थल तक ले जाते थे। उन्होंने ये सब, एक सार्वजनिक सेवा के रूप में किया, परंतु यदि व्यापारी या बड़े घर, जलने से बचाये जाते, तो बाबा, वास्तव में, एक समुचित शुल्क वसूल करते थे। परंतु गरीब लोगों से कोई पैसा नहीं लेते थे। आग बुझाने वाले इंजनों का भलीभांति रखरखाव किया जाता था, उनका, स्वयंसेवकों या खुद के कर्मचारियों के द्वारा, रखरखाव किया जाता था।

यहाँ भी आंगन (yards) थे, जहाँ बाहरी उपयोग में आने वाले अधिकांश उपकरण रखे थे, वैगन (wagon) और वैसी ही दूसरी चीजें रखी जातीं थीं। यहाँ भी, उनके पास दो मोर थे, जो उनका गर्व और आनंद थे, और जब वह निश्चित शोर निकालते, वे हमेशा उनके पास आते थे।

कोई उस आंगन और एक द्वार में होकर, एक उद्यान में जाता, जो, मेरा ख्याल है, परिमाण में ढाई या तीन एकड़ का था। यहाँ वह सब्जियाँ और फलदार पेड़ उगाते थे, और पूरे उद्यान की भलीभांति देखभाल की जाती थी।

उस घर के नीचे, उस चार मंजिला के नीचे, बिना किसी खिड़की वाली, परंतु भलीभांति हवादार दिखती हुई, अनेक कार्यशालायें थीं। यहाँ कुशल दस्तकार, टिन का काम करने वाले, तांबे का काम करने वाले, अर्द्धकुशल कर्मचारी काम करते थे और उन्हें काफी मेहनत से काम करना पड़ता था।

बाबा के दो बेटे और एक बेटी थी। दोनों बेटे, जबरदस्ती प्रशिक्षु कर्मचारियों के रूप में ठेले गये थे। उन्हें सामान्य इंजीनियरिंग, टिन की कारीगरी, तांबे की कारीगरी और सर्वव्यापी नलसाजी सीखनी पड़ती थी और उन्हें, जबतक कि वह सभी परिक्षाओं को उत्तीर्ण न कर लें, और पंजीकरण का प्रमाण न पा लें, अपना अध्ययन भी करना पड़ता था।

मेरे पिता काफी अच्छे इंजीनियर थे, परंतु उन्होंने कुछ समय बाद, बाबा से ये कहते हुए कि बाबा का नियंत्रण अत्यधिक कठोर, अत्यधिक तानाशाहीपूर्ण था, उनसे नाता तोड़ लिया था। मेरे पिताजी एक अलग घर में चले गये थे, जो अभी भी, सेंट मोरिस (St. Maurice) में है, परंतु इसे ईंटियाँ मकान (brick house) कहा जाता था, क्योंकि उस सड़क पर, लाल ईटों से बना, ये एकमात्र मकान था। पिताजी ने शादी की, और कुछ समय के लिये सेंट मोरिस में रहे। पहले एक बेटा पैदा हुआ, और शीघ्र ही मर गया, और तब एक बेटी पैदा हुई, और काफी लंबे समय बाद, मैं पैदा हुआ, और मैंने हमेशा विश्वास किया है कि, मैं अवांछित दुर्घटना था। निश्चितरूप से, मुझे किसी भी प्रकार से कभी पसंद नहीं किया गया। मैं कभी लोकप्रिय नहीं रहा, मुझे कभी दोस्त बनाने की इजाजत नहीं मिली। हर चीज, जो

मैं करता था, स्वतः ही गलत होती थी, और हर चीज, जो मेरी बहन करती थी, स्वतः ही सही होती थी। हमेशा अवांछित होना, और कृपापात्र को हर चीज प्राप्त होते जाना, उसको अपने मित्रों के साथ और उसकी पार्टियों में देखना, और शेष सबकुछ। कुछ समय बाद, ये किसी को, मानो कि चिड़चिड़ा बना देता है। दूसरी पसंद भी, मेरे लिये सर्वोत्तम समझी जाती थी।

माता और पिता, सेंट मेरी के अवशेषों में, रिजवे (ridgeway) को चले गये। वहॉं उन्होंने एक व्यापार शुरू किया, नहीं, नलसाजी नहीं, इंजीनियरिंग का एक व्यापार, जिसमें बिजली, जो उस समय, लोकप्रिय उपयोग में आती जा रही थी, शामिल थी। मेरे पिताजी, जहॉंतक वे बहुत अच्छे व्यक्ति होना बर्दाश्त कर सकते थे, वास्तव में, बहुत अच्छे व्यक्ति थे। वह वृश्चिक राशि के थे, और मेरी मां कन्या राशि की। वह डेवोनशायर (Devonshire) के दूसरे भाग से, एक बहुत अच्छे परिवार से थी। पहले मेरे परिवार के पास काफी धन और काफी भूमि थी, परंतु उसके पिताजी और एक पड़ौसी, एक पथ के अधिकार में झगड़े में पड़ गये, और अंततः वे कानून के पास चले गये। न्यायालय का फैसला आया और उसकी अपील की गई, और इसलिये, जबतक कि उनके पास मुश्किल से भी पैसा रहा, वह चलता गया। निश्चितरूप से, उनके पास मुकदमेबाजी को जारी रखने के लिये, कोई पैसा नहीं था। इसलिये भूमि, जो इस सब कष्ट का कारण थी, उसको बेच दिया गया।

माता और पिता साथ नहीं निभ सके। मां बहुत तानाशाह थी, वह अपने कारण, अपनी उच्च महत्वकांक्षाओं के कारण, स्थानीयरूप से ''लेडी'' जानी जाती थी। वह परिवार के भाग्य के नुकसान होने के द्वारा, काफी कड़वी हो गई थी। दुर्भाग्यवश, वह अपनी कड़वाहट को अपने पति और मुझ पर निकालती रहती थी।

बाबा के एक भाई थे, जो एक सर्वाधिक प्रतिभावान कलाकार थे; वह शाही शिक्षाशास्त्री थे, और उन्होंने, अपना अत्यंत संतोषजनक नाम कमाया था। मुझे उनकी एक चित्रकारी की विशेषरूप से याद है, जिसने मुझे हमेशा मंत्रमुग्ध किया। ये एक पुराने प्राचीर बहुमुखी (Barbican, Polymouth) का चित्र था; प्राचीर, जैसा वह था, जब मेफ्लॉवर (Mayflower)[40] ने संयुक्त राज्य की ओर जलयात्रा की। ये एक आश्चर्यजनक चित्र था, ये सजीव रंगों में चमकता था, यह कोमल था, और कोई भी इसको देख सकता था, और वास्तव में, शीघ्र ही पाता कि वह वहॉं था। चाचा रिचार्ड (uncle Richards), जैसा हम उन्हें कहते थे, हमेशा कहते थे कि वह चित्र, हम बच्चों में से किसी एक को मिलेगा। ये मेरी बहन को मिला, और ये वह चीज है, जिसके लिये मैं वास्तव में ललचाता हूॅं, ये वह चीज थी, जिसे मैं दूसरी सभी चीजों में सबसे अधिक चाहता था, सिवाय उसके, जिसका, एक कुछ वर्षों बाद, जब मुझे एक मॉडल ट्रेन का, नीली ट्रेन का, वायदा किया गया था, और मेरी बचकानी ऑंखों में ये पूरी दुनियॉं की एक सर्वाधिक आश्चर्यजनक ट्रेन थी। मुझे इसे पाने का वायदा किया गया था, और एक दिन मैं इसे पाने वाला था। मुझे कहा गया था, ''ओह नहीं तुम इसे नहीं ले सकते, तुम्हारी बहन एक प्यानो चाहती है। तुम्हारे पिताजी और मैं, अभी उसको लेने जा रहे हैं।'' हॉं, मैं वास्तव में उस ट्रेन को वैसे ही, जैसे कि मैं चित्र को चाहता था, चाहता था।

ऐसी चीजें हमेशा होती रहती थीं। मेरी बहन के पास एक आश्चर्यजनक सायकिल थी, मुझे पैदल के लिये छोड़ दिया गया था। परंतु, इस लेखन का ये उद्देश्य नहीं है; मुझे ये सब कहना पड़ा क्योंकि जब मैंने अपने शरीर को ग्रहण करने की सहमति दी थी, मुझे कहा गया था, ये सहमतिपत्र का एक भाग था। मैं निंदित शरीर से, कैसे भी, परेशान था। ये सब गलत था।

मैं बीमार सा पैदा हुआ, और मेरे जन्म ने मेरी मॉं को बहुत बीमार कर दिया। जब मैं पैदा हुआ

---

40 अनुवादक की टिप्पिणी : मेफ्लॉवर (Mayflower) ने 6 सितम्बर 1620 को इंगलैंड के प्लेमाउथ के बारबिकन (Barbican) क्षेत्र से नवीन विश्व के प्लेमाउथ, मैसाच्युसैट्स तक, मात्र 102 यात्रियों और जहाजी बेड़े के सदस्यों के साथ, समुद्री यात्रा की थी। 2020 में वहॉं इसकी 400वीं वर्षगॉंठ मनाई जाने की योजना है। प्लेमाउथ में तीन मंजिला संग्रहालय है, जिसमें मेफ्लॉवर की समुद्री यात्रा से जुड़ी कहानियॉं संजोकर रखी गयीं हैं।

और किसी अनजान कारण से ये मेरे विरुद्ध गया, वह किसी प्रकार से, विष पाती हुई प्रतीत हुई, जैसे मानो कि मैंने ही उसको जहर दिया हो। वहॉ ऐसा कुछ नहीं था, जो मैं इस सम्बंध में कर पाता, मैं इस सब को जानने के लिये अत्यधिक छोटा भी था। कैसे भी, वह, और मैं भी, अत्यंत बीमार थे, और मैं पृथ्वी पर अपने पूरे जीवन भर बीमार रहा। मैं बीमार था। हमारे पास एक डॉक्टर था, डॉक्टर डक्कन स्टांप (Dr. Duncan Stamp), वह वास्तविक डॉक्टरों में से एक था, हमेशा पढ़ने वाला, अपनी प्रसिद्धि के लिये, हमेशा विभिन्न (प्रंशंसा) पत्रों को पाने वाला। वह अधिक सहानुभूतिपूर्ण नहीं था, परंतु उस के पास ज्ञान की बहुलता थी। वह मुझे पसंद नहीं करता था, और मैं उसे नहीं पसंद करता था। परंतु मुझे एक असाधारण चीज याद है; एक दिन मैं ठीक था, उन्होंने कहा कि मैं मर रहा था। ये डॉक्टर स्टांप, मेरे बिस्तर के पास आये और वे कुछ चीज, हल्की कड़ी के साथ, मेरे ऊपर लटकाते हुए प्रतीत हुए, और उन्होंने नलियॉ मेरे नीचे तक दौड़ाई। इस दिन तक मैं नहीं जानता था कि उन्होंने क्या किया, परंतु मैंने स्वाथ्य की पुर्नप्राप्ति की और इसके बाद, मैंने हमेशा उनको एक चमत्कारिक कार्यकर्त्ता समझा।

मुझे याद है, महान युद्ध अर्थात् प्रथम विश्वयुद्ध में, मेरे मां–बाप और मेरी बहन, हम प्लाई माउथ में, नार्थ रोड स्टेशन पर थे। हमें पैनी–कोम–क्विक (Penny-Com-Quick) नामक एक क्षेत्र में, किसी से मिलने जाना था। रात बहुत हो गई थी, अचानक ही हमने बंदूक के चलने की आवाज सुनी और आकाश में खोजबत्ती (search light) की किरणें झलकीं, और खोजबत्ती की किरण में, मैंने अपने पहले जैप्लिन (Zeppelin)[41] को देखा। ये प्लाईमाउथ के ऊपर उड़ा, और तब फिर से समुद्र में चला गया परंतु ये दूसरी घटना है, जिसे मैं कभी नहीं भूला, कि वह जहाज, प्रकाश की क्रासित किरणों (crossed beams of light) में कैसा दिखता था।

इतिहास से भरपूर प्लिम्पटन (Plympton), एक पुराना स्थान है। वहॉ चर्च हिल (Church Hill) के नीचे, सेंट मैरी एक बड़ा गिरजाघर है। जैसे ही कोई पहाड़ी के नीचे जाता है, कोई नीचे जाये, और चर्च के आंगन के आसपास तक चले, और तब बायीं ओर मुड़े, गिरजाघर की मीनारें और अधिक ऊॅची, पहाड़ी से भी ऊॅची, दिखाई देती थीं। यदि कोई चर्च को पीछे छोड़ दे, तो कोई मठ (priory) और विभिन्न पुराने धार्मिक घरों में, जिनका उपयोग पुजारियों के द्वारा बंद कर दिया गया है, आ जाता है, क्योंकि प्रकटरूप से, शक्ति का विभाजन हो चुका है, और चर्च के प्रधान कार्यालय को, वक्फास्ट (Buckfast) हटा दिया गया है।

मठ के पीछे, एक सुखद धारा थी, जिसमें नरकट (reeds) और बैंत (osires) उगते थे। यहॉ लोग नरकट प्राप्त किया करते थे, और टोकरियॉ तथा दूसरे बर्तन बनाने के लिये दौड़ते थे। यहॉ, सौ या ऐसे ही कुछ वर्षों पहले, वे शहद की शराब बनाया करते थे, जो उस जमाने की पेय थी।

हर कोने पर एक, छोटे खंबों वाली चार मीनारों तथा भूरे पत्थरों की एक बड़ी मीनार के साथ, चर्च एक अत्यधिक प्रभावशाली स्थान था। घंटियॉ, जब ठीक से बजाई जातीं, आश्चर्यजनक होती थीं, और घंटियॉ बजाने वाले, परिवर्तनों को बजाने के लिये, जैसा वे अपने आप को कहते थे, संपूर्ण डिमोन (Dimon) से आया करते थे, और अपनी खुद की कुशलता को प्रदर्शित करते हुए, प्लिम्पटन के आसपास घंटी बजाने के लिये जाया करते थे।

सेंट मोरिस चर्च, सेंट मैरी की भांति, उतना बड़ा नहीं था, ये छोटा और स्पष्टरूप से उपनगरीय (satellite) चर्च था। उन दिनों में सेंट मोरिस और सेंट मेरी, मुश्किल से ही परस्पर कोई सामाजिक गतिविधियॉ करने वाले, दो भिन्न भिन्न समुदाय थे। कोलब्रुक और अंडरवुड दोनों में कोई चर्च नहीं थे।

---

41 अनुवादक की टिप्पिणीः जैपलिन (Zeppelin), जैपलिन के जर्मन काउंट फर्डीनांड (Count Ferdinand), जिसने दृढ़ हवाईजहाजों का विकास किया, के नाम पर बनाया गया, प्रारंभिक बीसवीं शताब्दी का, लम्बे और बेलनाकार आकार का दृढ़ ढॉचेवाला एक प्रकार का जर्मन हवाईजहाज था, जो प्रथम विश्वयुद्ध में बमबारी के लिये और विश्वयुद्ध के बाद 1930 के दशक तक, यात्री परिवहन के उपयोग में लाया जाता था।

उन्हें इसके बजाय सेंट मोरिस या सेंट मेरी को जाना पड़ता था।

प्लिम्पटन बड़े घरों का अंश रखता था, परंतु उनमें से अधिकांश को, ओलीवर क्रोमवैल (Oliver Cromwell) और उसके आदमियों के द्वारा, बुरी तरह से नुकसान पहुँचाया गया था। उनमें से अनेक, न्यायाधीश जेफरीस (Jeffreys) के आदेश के द्वारा गिरा दिये गये थे, परंतु प्लिम्पटन का किला, एक वह स्थान था, जो मुझे आकर्षित करता था, और वहॉ, इसके ऊपर की दीवार के मजबूत पत्थर के अवशेषों का एक बड़ा टीला था, और दीवारें इतनी मोटी थीं, और हम में से कुछ ने पाया था कि वहॉ लंबाई में दीवारों में होकर जाने वाली एक सुरंग थी। अधिक सशक्त बच्चों में से कुछ ने बताया था कि वे दीवारों के नीचे, एक अनजान प्रकोष्ठ में, जिसमें कंकालों के होने की कल्पना की जाती थी, गये हैं, परंतु मैं, कभी भी उतना दिलेर नहीं बन सका, मैंने केवल उनके शब्दों को स्वीकार कर लिया। प्लिम्पटन महल, आसपास, किनारों पर उठे हुए पत्थरों के उठे हुए, एक किनारीदार बड़े गोल स्थान, एक अखाड़े के ऊपर खड़ा हुआ था। उठा हुआ किनारा, टहलने के सार्वजनिक स्थान के रूप में, एक बहुत सुंदर स्थान था, परंतु बीच में डूबा हुआ टुकड़ा, मानो कि, किसी तश्तरी के केन्द्र का सर्वाधिक उपयोग, सर्कसों और दूसरी शक्लों के सार्वजनिक मनोरंजनों के द्वारा किया जाता था।

मुझे, सहकारिता क्षेत्रों में पूरी तरह असहज नाम के एक स्थान, अपने पहले स्कूल को भेजा गया था। मूलतः प्लिम्पटन कॉपरेटिव हॉलसेल सोसाइटी के स्वामित्व की सम्पत्ति होने के कारण, इसका ये नाम रखा गया था। दूसरे विकास के लिये निधि इकट्ठा करने के लिये, जमीन को बेच दिया गया था और वहॉ कुछ घर बना लिये गये थे, और तब कुछ अधिक घर, तब थोड़े और, और तब थोड़े और, ताकि अंत में ये पृथक समाज, अपने आप में लगभग एक छोटा गॉव बन गया। और यहॉ मैं स्कूल गया। ये ठीक था, मैं सोचता था, इसे कन्याओं का स्कूल (Dames school) कहा जायेगा। ये कुमारी गिलिंग (Miss Gillings) और उसकी बहन थीं, जो इसे, जिसे स्कूल समझा जाता था, साथसाथ चलाती थीं परंतु, वास्तव में, ये अपने उदंड बच्चों से त्रस्त, अनिच्छुक मातापिताओं को पीड़ा से बचाने के लिये अधिक था। अपनी बीमार अवस्था में, टीले से मिस गिलिंग्स स्कूल के ठीक बाहर की तरफ पैदल चलना, मेरे लिये एक भयानक परीक्षा थी, परन्तु वहॉ ऐसा कुछ नहीं था, जो मैं इस सम्बंध में कर पाता। एक समय बाद, यद्यपि, मुझे उस स्कूल में और अधिक जाने के लिये, काफी बड़ा समझा गया, इसलिये मुझे तैयारी करने वाले एक स्कूल (preparatory school) में स्थानांतरित कर दिया गया। ये मिस्टर बीयर्ड (Mr. Beard) का स्कूल कहलाता था। मिस्टर बीयर्ड, एक अच्छे बूढ़े आदमी थे, वास्तव में, एक चतुर वृद्ध इंसान, परंतु वह अनुशासन लागू नहीं कर सके।

वह स्कूली जीवन से सेवानिवृत हो चुके थे और तब, सेवानिवृति से परेशान होते हुए, उन्होंने अपना खुद का स्कूल खोल लिया था, और मात्र जगह, जो वह पा सके, जार्ज होटल (George Hotel) से जुड़ा हुआ बड़ा कमरा था। जार्ज होटल, जार्ज पहाड़ी के शिखर पर और पूरी तरह सुप्रसिद्ध था। कोई मेहराब वाले रास्ते में होकर प्रविष्ट होता और मैदान में चलता और तब मिस्टर बीयर्ड के स्कूल को पाने के लिये, सभी पूर्व अस्तबलों और कोचवानों के घरों में से गुजरने के बाद, किसी को पूरे रास्ते भर, आंगन में होकर जाना पड़ता। एक कमरे में, जो दिखता था कि ये एक सभागार (assembly hall) है, आंगन के दूर वाली तरफ, ऊपर जाने वाली लकड़ी की सीढ़ियॉ थीं। ये पहला स्कूल था, जहॉ मैंने कुछ सीखना प्रारंभ किया, और मैं अधिक नहीं सीख पाया, परंतु ये मेरा दोष था, बूढ़े बीयर्ड का दोष नहीं। वास्तव में, एक स्कूल शिक्षक होने के लिये, वह अत्यधिक सज्जन थे, लोग उनसे लाभ उठाते थे।

कुछ समय बाद, प्लिम्पटन ग्रामर स्कूल, एक नये स्थान पर फिर से खुला। प्लिम्पटन ग्रामर स्कूल, इंग्लैंड के ग्रामर स्कूलों में सर्वाधिक प्रसिद्ध था; जोसुआ रेनॉल्ड्स (Joshua Reynolds) को शामिल करते हुए, वहॉ काफी प्रसिद्ध लोग रहे थे। सेंट मोरिस में, पुराने ग्रामर स्कूल में, उसका नाम

तथा दूसरे अनेक अत्यन्त प्रसिद्ध लोगों के नाम, मेजों और लकड़ी के सामान पर, नक्काशी से गढ़े गये थे, परंतु स्कूल की वह इमारत बंद कर देनी पड़ी, क्योंकि सामयिक विनाश ने उस इमारत पर हमला कर दिया था और ऊपरी तल असुरक्षित समझे जाते थे।

एक लंबी खोज के बाद, एक बहुत बड़ा घर, जो प्लिम्पटन किले की छॉव में, वास्तव में, उस गोल भाग की छॉव में था, जहॉ सर्कस आया करते थे, प्राप्त किया गया।

उसके परिवर्तन के लिये बड़ी रकमें अदा की गईं, और मैं उस स्कूल में नाम लिखाने वाले, पहले विद्यार्थियों से एक था। मैंने इसे थोड़ा सा भी पसंद नहीं किया। मैं स्थान से घृणा करता था। शिक्षकों में से कुछ कार्यदलों से अलग कर दिये गये थे, और बच्चों से, बच्चों के रूप में व्यवहार करने के बजाय, वे बच्चों से मक्कार सैनिकों की तरह व्यवहार करते थे। विशेषतः एक शिक्षक में, चाक की बत्तियों को आधे में तोड़ने, और प्रत्येक आधे को अपनी पूरी ताकत से किसी दोषी पर फेंकने की एक बहुत खराब आदत थी, और यद्यपि, आप सोच सकते हैं कि वह चाक अधिक नुकसान नहीं कर सकता था, मैंने एक लड़के के चेहरे को, मार से चोटिल देखा है। आजकल, मेरा मानना है कि शारीरिक हमले के लिये, शिक्षक जेल को चले जाते, परंतु कम से कम, ये उन्हें व्यवस्थित रखता था।

मनोरंजन के लिये, हमें पुराने ग्रामर स्कूल के मैदानों पर जाना पड़ता था, जिसके लिये हमें लगभग एक मील पैदल चलना पड़ता था, एक मील वहॉ, तब सारे व्यायाम इत्यादि, एक मील वापस।

अंत में, स्कूल छोड़ने का समय आया, मैंने कोई बहुत अच्छी चीज नहीं की थी परंतु, तब, मैंने कोई बहुत बुरी चीज भी नहीं की थी। स्कूल के कार्य के साथसाथ मुझे कुछ पत्राचार पाठ्यक्रम भी करने होते थे, और मुझे ये कहते हुए कि मैं इसके, उसके या किसी दूसरी चीज के लिये पात्रता प्राप्त था, थोड़े कागज भी प्राप्त होते थे। परंतु जब स्कूल को छोड़ने का समय आया, मेरे मां बाप ने मुझे मेरी पसंद पूछने की, किसी ऐसी निरर्थकता के बिना, जैसे कि मैं क्या बनना चाहूँगा, मुझे मोटर इंजीनियरिंग प्रतिष्ठान (firm), प्लाईमाउथ (Plymouth) में प्रशिक्षु (apprentice) बना दिया। इसलिये लगभग उस दिन, जब मैंने स्कूल छोड़ा मुझे इस प्रतिष्ठान में, ओल्ड टाउन स्ट्रीट, प्लाईमाउथ (Old Town Street, Plymouth) भेजा गया। उन्होंने कुछ कारें इत्यादि बेची थीं, परंतु वे मोटर सायकिलों से अधिक संबंधित थे। वास्तव में, वे साउथ डेवन (South Devon) में डगलस (Douglas) मोटर सायकिल के लिये एजेंट थे। फिर, ये एक सहानुभूतिरहित स्थान था, क्योंकि यहॉ सबकुछ, जो अर्थ रखता था, वह काम था। मैं प्लिम्पटन को जल्दी, भोर में, छोड़ दिया करता था और साढ़े पॉच मील दूर, बस से, प्लिम्पटन को जाता था। जब तक मध्यान्ह भोजन (lunch) का समय होता, मैं भूख से बेजार होता था, इसलिये मौसम कैसा भी हो, मैं अपनी सेंडविचों (sandwiches) को ले लिया करता था। वहॉ, पीने के लिये, पानी के सिवाय कुछ नहीं था, और मैं प्लिम्पटन में, सेंट एंड्रयूज चर्च के पीछे, छोटे पार्क में चला जाता। वहॉ मैं पार्क में बैठा करता था, और अपनी सेंडविचों को जितनी जल्दी हो सके, नीचे उतार लेता था; अन्यथा मैं विलंबित हो सकता था।

वास्तव में, ये बहुत बहुत कठिन काम था क्योंकि कईबार, भारी मोटर सायकिल को लाने के लिये, हम प्रशिक्षुओं को बाहर दूर, इतनी दूर जैसे कि क्राउन हिल (Crown Hill) भेजा जाता था। ठीक है, हम बस के द्वारा, एक स्थान के लिये केवल एक आदमी, क्राउन हिल या दूसरे स्थानों को जाते, और तब हमें खराब हुई बाइकों को वापस लाने की समस्या का सामना करना पड़ता। हम उन पर सवारी नहीं कर सकते थे, क्योंकि वे दोषयुक्त होती थीं, इसलिये केवल सवारी, जो हमें मिलती, वह था, पहाड़ी से नीचे उतरना।

मुझे एकबार की याद है, जब मुझे एक बहुत बड़ी हार्ले डेविडसन (Harley Davidson) मोटर सायकिल को लाने के लिये, क्राउन हिल जाना पड़ा था। मालिक ने फोन किया था और कहा था कि बाइक को ठीक बाहर से, उठाया जा सकता है, इसलिये मैं वहॉ गया, बस से उतरा, मोटर बाइक को

देखा, वापस धकेल कर इसे स्टेंड से उतारा और दूर को धक्का दिया। जब एक पुलिस की गाड़ी मेरे सामने आई, मैं लगभग तीन मील चल चुका था। पुलिस के दो सिपाही बाहर निकले, और मैंने सोचा कि वे मुझे मार डालने वाले हैं! एक ने मुझे गरदन से पकड़ा, दूसरे ने मेरे पीछे से मेरी भुजायें पकड़ीं, और सड़क के किनारे, ये सब इतना अचानक हो गया, और मुझे पुलिस की कार में गठरी बनाकर पीछे पटक दिया गया, और फुर्ती से क्राउन हिल पुलिस थाने ले जाया गया। यहाँ एक चीखते हुए पुलिस सार्जेंट ने, जबतक कि मैं उन्हें ये न बताऊँ कि मेरे साथी, गिरोह के सदस्य, कौन थे, सभी प्रकार से भयानक ढंगों से मृत्यु के साथ, मुझे धमकी दी।

अब, मैं इस वक्त बहुत बड़ा नहीं था, और मैं ये भी नहीं जानता था कि वह किस सम्बंध में बात कर रहा था। इसलिये उसने मुझे कानों के आसपास कुछ चांटे मारे और तब मुझे एक कोठरी में रख दिया। उसने मेरे स्पष्टीकरण को नहीं सुना कि जैसा कि मुझे निर्देशित किया गया था, मैं एक मोटर सायकिल को लेने आया था।

लगभग आठ घंटे बाद, प्रतिष्ठान के आदमियों में से एक आया और मुझे पहचाना और पुष्टि की कि मैं पूरे वैधानिक तरीके से एक खराब मोटर बाइक को ला रहा था। पुलिस सार्जेंट ने मेरे चेहरे पर एक थप्पड़ मारा और मुझे दोबारा फिर परेशानी में न पड़ने और उन्हें परेशान न करने के लिये कहा। इसलिये मैं पुलिस के लोगों को पसंद नहीं करता। मुझे पुलिस के साथ, मेरे पूरे जीवन भर परेशानी हुई थी, और इसे मैं कसम खा के कह सकता हूँ: मैंने कभी कोई ऐसी चीज नहीं की, जो मुझे पुलिस से प्रताड़ित करा सके। हर बार, जैसे कि उस बार, जब उन्होंने मुझे सफाई नहीं देने दी कि क्या हुआ था, ये केवल पुलिस की मलिनता थी।

अगले दिन, यद्यपि, बाइक का स्वामी प्रतिष्ठान में आया, और एक पागल की भांति हँसा। वह पूरी तरह से सहानुभूतिहीन था। वह ये सोचता हुआ भी नहीं लगा कि खींचा जाना, और पुलिस की कोठरी में लिया जाना, कितना बड़ा सदमा है।

एक दिन, मैं मुश्किल से बिस्तर से उठ पाया। मैंने बीमार महसूस किया, मैंने इतना बीमार महसूस किया कि मैं तत्काल ही मर जाना जाता था। ये कोई अच्छा नहीं था, मेरी माँ ने बिस्तर में से उठने के लिये जोर डाला। इसलिये अंततः, मुझे बिना किसी नाश्ते के जाना पड़ा। दिन नम था और दिन ठंडा था। वह मेरे साथ बस स्टॉप तक गई, और मुझे इतने खराब तरीके से, ओल्ड डेवन की मोटर ट्रांसपोर्ट बस में धकेल दिया कि मैं अपने घुटनों पर गिर पड़ा।

मैं काम पर गया परंतु, दो घंटे बाद मैं वहाँ बेहोश गया और किसी ने कहा कि मुझे घर ले जाया जाना अपेक्षित है, परंतु प्रभारी आदमी ने कहा कि उनके पास, परेशानी में पड़े हुए प्रशिक्षुओं के आसपास या पीछे घूमने के लिये समय नहीं है, इसलिये मुझे दिन की समाप्ति तक वहाँ रखा गया, कोई नाश्ता नहीं, कोई लंच नहीं, कुछ नहीं।

कार्य दिवस के अंत में, अत्यधिक आलस के साथ, मैंने अपना रास्ता, सेंट एंड्रयूज (St. Andrews) चर्च के सामने बस स्टॉप की तरफ, सड़क पर लिया। सौभाग्यवश, वहाँ एक बस प्रतीक्षा कर रही थी, और मैं कोने की सीट पर जाकर गिर पड़ा। जब मैं घर पहुँचा, मेरे पास बिस्तर में जाने की ही पर्याप्त शक्ति थी। वहाँ किसी की भी, कल्याण (welfare) में अधिक दिलचस्पी नहीं थी, किसी ने नहीं पूछा कि मैं कैसा महसूस कर रहा था, किसी ने नहीं पूछा कि मैंने रात्रि का खाना क्यों नहीं खाया, मैं केवल बिस्तर पर सोने चला गया।

मेरी रात बहुत भयानक गुजरी, मैंने महसूस किया कि मैं जल रहा था और मैं पसीना आने के कारण गीला था। सुबह मेरी माँ मिलने आई और उसने मुझे काफी बेरुखी के साथ उठाया, क्योंकि, मैं थकावट की नींद में गिर चुका था और वह ये भी देख सकी कि मैं ठीक नहीं था। अंततः, उसने डॉक्टर स्टांप को फोन किया। आधे दिन के बाद वह आया। उसने मुझ पर एक नजर मारी और कहा,

''अस्पताल,'' इसलिये रोगीवाहन आया, उन दिनों में रोगीवाहन, स्थानीय संस्थाओं के द्वारा चलाये जाते थे, और मुझे साउथ डेवन और ईस्ट कोर्नवॉल अस्पताल (East Cornwall Hospital) में ले जाया गया। मुझे फेफड़े का बहुत बुरा कष्ट था।

मैं उस अस्पताल में लगभग ग्यारह सप्ताह के लिये रुका और तब वहॉ बड़ी चर्चा हुई कि मुझे किसी सेनेटोरियम (Sanatorium) में भेजा जाये या नहीं, क्योंकि मुझे क्षय रोग था।

पिता और माता इसके विरोध में थे, क्योंकि, उन्होंने कहा कि यदि मुझे कुछ एक मील दूर सेनेटोरियम में भेजा जाता है, उनके पास आने और मुझसे मिलने का समय नहीं होगा। इसलिये मैं घर पर ही रहा और बहुत ठीक नहीं हो पाया। अक्सर मुझे अस्पताल वापस जाना पड़ता था। तब मेरी नजर खराब हो गई, और मुझे रॉयल आई इनफरमरी मटले प्लेन (Royal Eye Infirmary, Mutley plain) में ले जाया गया, जो साउथ डेवन और ईस्ट कार्नवॉल अस्पताल से बहुत दूर नहीं था। ये बहुत सुखद अस्पताल था, कोई भी, जबकि वह ऑखों का अंधा हो, कह सकता है कि कोई चीज सुखद है। परंतु अंततः बहुत बड़ी विकृत दृष्टि के साथ, मुझे अस्पताल से मुक्त कर दिया गया और मैं फिर से घर आ गया।

अब तक बेतार का तार भलीभांति ज्ञात हो चुका था, रेडियो से पहले इसको बेतार का तार कहा जाता था। मेरे पिताजी के पास एक क्रिस्टल सेट था और मैं सोचता था कि ये सर्वाधिक सर्वोत्कृष्ट चीज है, जो मैंने अपने जीवन में कभी देखी। पिताजी ने रेडियो के सम्बंध में काफी पढ़ा था, और उन्होंने, उनमें अनेक वाल्वों वाले बड़े–बड़े रेडियो सेट बनाये, और तब लोगों के लिये रेडियो सेट बनाने और लोगों के लिये बिजली का काम करने का एक व्यापार स्थापित किया।

इस बार ये तय किया गया कि परिवर्तन के लिये मुझे दूर जाना चाहिए, और इसलिये, जैसा भी मैं बीमार था, मुझे पुरानी बायसकल पर रखा गया और एक कामगार के साथ, लिडफोर्ड (Lydford), जहॉ मेरी एक आंटी थी, भेज दिया गया। मैं अक्सर अभिलाषा करता था कि ये आंटी मेरी मॉ होती। वास्तव में, वह बहुत अच्छी औरत थी, और मैं उसे इतना प्यार करता था, जितना कि मैं निश्चतरूप से, अपनी मॉ को नहीं करता था। वह मेरी देखभाल करती, उसने मुझसे, वास्तव में, ऐसे व्यवहार किया मानो कि मैं उसके खुद के बच्चों में से एक होऊॅ, परंतु, जैसा उसने कहा, और एक बीमार बच्चे को पच्चीस मील चलाकर लाना, जबकि वह मुश्किल से ही सांस ले सकता है, अच्छा नहीं है। परंतु अंततः, मुझे घर लौटना पड़ा और इसबार की यात्रा काफी आसान थी। लिडफोर्ड, टेविसटॉक (Tavistock) के परे, डार्टमूर में ऊपर, ओकहाम्प्टन (Okehampton) से बहुत दूर नहीं, डेवोनशायर म्यूर्स में, काफी ऊॅचा है, और वहॉ हवा शुद्ध थी और खाना अच्छा।

प्लिम्पटन में घर वापस आकर, मैंने दूसरे पत्राचार पाठ्यक्रमों को पढ़ना प्रारंभ किया, और तब मेरी मॉ ने मुझसे कहा कि मुझसे काम करने की अपेक्षा की जाती है। पिता के पास काफी रेडियो सेट और बिजली के सामान थे, इसलिये मुझे चीजों को छोटे व्यापारियों को बेचने के सम्बंध में यात्रा करनी पड़ती थी। मैं, बैटरियों, रेडियो के पुर्जों और रेडियो के उन सामानों को बेचने के लिये, एल्बर्टन, मोडबरी, ओकहेम्प्टन (Elburton, Modbury, Okehampton) और दूसरे स्थानों पर गया। परंतु कुछ समय बाद, काफी काफी बीरान जिन्दगी ने मुझे अत्यधिक तबाह कर दिया और मेरा स्वास्थ्य फिर से टूट गया। उस समय मैं एक कार ड्राइव कर रहा था, और मैं अंधा हो गया, और जब कोई कार चला रहा हो, किसी को अपनी नजर पूरी तरह से गुमा देना, पूरी तरह से असुखद चीज है। सौभाग्यवश, मैं किसी नुकसान के बिना, कार को रोकने में सफल हुआ और जबतक कि कोई देखने के लिये नहीं आया कि क्या हो रहा था, और मैं यातायात में जाम क्यों लगा रहा था, मैं जहॉ था, वहीं रुक गया। एकबारगी, मैं लोगों का समझा नहीं सका कि मैं बीमार था और कि मैं देख नहीं सकता था, परंतु अंततः पुलिस बुलाई गई और वे मुझे रोगीवाहन के द्वारा अस्पताल ले गये। मेरे मां–बाप को सूचना दी

गई, और उनका पहला ख्याल, कार के सम्बंध में था। जब कार चलाकर घर लाई गई, ये पाया गया कि मेरे पास का सारा सामान, रेडियो सेट, बैटरियां, परीक्षण उपकरण, हर चीज जो उसमें थी, चुरा ली गयी थी। इसलिये मैं लोकप्रिय नहीं था। परंतु अस्पताल में कुछ समय की अवधि ने मुझे ठीक कर दिया और तब मैं फिर से घर गया।

मैंने कुछ और अध्ययन किया, और अंततः ये तय किया गया कि मुझे रेडियो ऑपरेटर के रूप में प्रशिक्षण लेने का प्रयास करना चाहिए। इसलिये मैं साउथएम्प्टन और साउथएम्प्टन के बाहर गया, वहाँ एक खास स्कूल था, जो किसी को हवाईजहाज के ऊपर रेडियो संचालक का प्रशिक्षण देता था। मैं वहाँ कुछ समय के लिये ठहरा और अपनी परीक्षाओं को पास किया और बेतार के तार के संचालक के रूप में, प्रथम श्रेणी का लायसेंस प्राप्त किया। परीक्षा देने के लिये, मुझे क्रोयडोन (Croydon) जाना पड़ा और मैं सफल हुआ। उसी समय मैंने हवाईजहाज उड़ाना सीखा, और साथ ही साथ, मैंने लायसेंस प्राप्त करने की व्यवस्था की। परंतु मैं एक व्यवसायिक लायसेंस के लिये, चिकित्सीय जॉच को उत्तीर्ण नहीं कर सका, इसलिये अपना भविष्य प्रारंभ करने से पहले ही मुझे जमींदोज कर दिया गया।

जब मेरा स्वास्थ्य इतना खराब था कि मुझे नापसंद (reject) किया गया, घर वापस आने पर, मुझ पर, काफी कुछ खराब स्वास्थ्य के लिये और इन पाठ्यक्रमों के पढ़ने में धन बरबाद करने के लिये दोषारोपण किया गया। इसके द्वारा मैंने थोड़ा सा चिड़चिड़ा महसूस किया, क्योंकि, मेरे खराब स्वास्थ्य के लिये मुझे दोष नहीं दिया जाना चाहिए था, मैं बीमार नहीं होना चाहता था। परंतु एक बड़ी पारिवारिक गोष्ठी हुई, और मेरे मां–बाप ने तय किया कि कुछ तो करना ही पड़ेगा; मैं मात्र अपने जीवन को व्यर्थ कर रहा था।

ऐसे ही एक समान क्षण में, स्थानीय स्वास्थ्य निरीक्षक, जो मेरे मातापिता के साथ काफी मित्रवत् था, ने कहा कि धुंआ परीक्षकों के लिये वहाँ काफी बड़े अवसर थे, विशेषरूप से बड़े शहरों में, लोग परिस्थिति विज्ञान (ecology) के सम्बंध में चिंतित होते जा रहे थे, और कारखानों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों से वहाँ धुंए का काफी अधिक प्रदूषण था, इसलिये धुंआ निरीक्षकों का एक नया वर्ग प्रारंभ किया जा रहा था। वहाँ वास्तव में, सफाई निरीक्षक थे, और सफाई निरीक्षक, जो मांस निरीक्षक भी थे, परंतु अब वहाँ धुंआ निरीक्षकों का एक नया वर्ग था। मुख्य सफाई निरीक्षक ने कहा कि ये मेरे लिये केवल एक चीज होगी, ये अच्छी नौकरी थी, अच्छी वेतन वाली और स्वाभाविकरूप से, मुझे एक विशेष पाठ्यक्रम लेना होगा। इसलिये धुंआ निरीक्षकों के लिये, एक नया पत्राचार पाठ्यक्रम अभी लाया गया था। मैंने इसे घर पर पढ़ा और बड़ी जल्दी से, वास्तव में तीन महीनों में पास हो गया और तब मुझे बताया गया कि मुझे अध्ययन के लिये, बकिंघगम पैलेस रोड पर, रॉयल सेनेटरी इंस्टीट्यूट लंदन में, जाना पड़ेगा। इसलिये अत्यधिक प्रसन्न न होते हुए, मेरे मॉ–बाप ने मुझे धन अग्रिम दिया और मैं लंदन गया। मैंने हर दिन, रॉयल सेनेटरी इंस्टीट्यूट में कक्षायें लीं और कारखानों, बिजली घरों, और सभी प्रकार के अनोखे स्थानों में में जाने के लिये, अक्सर हम क्षेत्रीय यात्राओं पर बाहर जाते थे। अंत में, तीन महीनों बाद, हमें एक बड़े परीक्षा हॉल में जाना पड़ा, जहाँ आसपास पिसते हुए हजारों लोग दिखाई देते थे। हम सभी छोटे–छोटे समूहों में थे; एक, जो किसी विशेष परीक्षा को देने जा रहा था, को उसी प्रकार की परीक्षा देने वाले दूसरों से अलग कर दिया जाता था। कैसे भी, मैंने परीक्षा पास की और धुंआ निरीक्षक का प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

अपने प्रमाणपत्र को लेकर और सोचते हुए कि अब हर चीज सरलता से पार हो जायेगी, मैं प्लिम्पटन को लौटा। परंतु ये नहीं होना था। मैंने बकिंघम में मैंने एक नौकरी के लिये आवेदन दिया और साक्षात्कार के लिये, वहाँ से लोजेलेस (Lozelles) गया। वहाँ मुझे बताया गया कि मैं नौकरी नहीं पा सकता था, क्योंकि मैं उस काउंटी का निवासी नहीं था।

मैं प्लिंप्टन वापस गया और प्लाईमाउथ में एक नौकरी के लिये प्रयास किया। परंतु प्लाईमाउथ

की नगर परिषद ने मुझे अधिकांशतः, उसी कारण से नियोजित नहीं किया, सिवाय इसके कि मैं ठीक काउंटी में था, परंतु ठीक शहर में नहीं। इसलिये वह चली गई, और इसी तरह से, कुछ वर्षों बाद, मैंने शरीर और आत्मा को साथसाथ बनाये रखने के लिये पर्याप्त धन लाने और किसी प्रकार से स्वयं को कपड़ों में बनाये रखने के लिये, कुछ भी काम, जोकि मैं कुछ कर सकता था, किया। मेरे पिताजी गुजर गये। वह वर्षों से बहुत खराब स्वास्थ्य में थे।

अधिकांश समय वे बिस्तर में रहे थे, और उनके मरने से लगभग एक साल पहले, उनका व्यापार बेच दिया गया था, और दुकान को एक डॉक्टर के शल्यकक्ष के रूप में बदल दिया गया था। कॉच की खिड़कियॉ हरी पेंट की गई, और हमारे रहने के हिस्से को परामर्शकक्ष और दवाखाने के रूप में उपयोग में लाये जाते हुए, दुकान स्वयं शल्यकक्ष थी। मैं और मेरी मॉ वहॉ रहते थे, जो कभी हमारे कार्यकक्ष रहे थे।

परंतु पिताजी की मृत्यु के बाद, डॉक्टरों के संघ ने नये क्षेत्र में जाने का निर्णय किया, और इसलिये हमारे पास आमदनी विल्कुल नहीं बची। मेरा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक नहीं था, इसलिये मेरी मॉ अपनी पुत्री के पास चली गई, और मैं पत्राचार महाविद्यालय में एक पुरुस्कार प्राप्त विद्यार्थी रहा था, इसलिये मुझे पैरीवेल मिडिलसेक्स (Perivale, Middlesex) में, शल्यक्रिया के उपकरण बनाने वाले एक प्रतिष्ठान में एक नौकरी मिल गयी। पहले मुझे कर्मचारियों का प्रबंधक नियुक्त किया गया था, परंतु जब प्रतिष्ठान के मालिक ने देखा कि मैं विज्ञापन प्रति अच्छी तरह से लिख सकता था, तब उसने मुझे विज्ञापन व्यवस्थापक भी बना दिया।

मुझे शल्यक्रिया के उपकरणों की फिटिंग में, पाठ्यक्रम लेने पड़े और उसके बाद, मैं सर्जीकल फिटर परामर्शदाता बन गया।

मैं इतना अच्छा समझा जाता था कि मुझे पैरीवेल से, लंदन के दिल में भेज दिया गया, और मैं लंदन के कार्यालयों में प्रमुख फिटर था।

मैंने लंदन के कार्यालयों में काम को छोड़ा, उससे ठीक पहले, इंग्लैंड और जर्मनी में युद्ध की घोषणा हो गई। हर चीज गुपागुप (black out), हो गई और मैंने पैरीवेल से लंदन और लंदन से पैरीवेल की वापसी यात्रा, हर दिन आना जाना, पूरी तरह से थकाने वाला पाया। इसने मेरी शक्ति को अत्यंत घटा देने का प्रयास दिया, और इसी अवधि में मेरी शादी हो गई। ठीक है, इस सम्बंध में, मैं ये कहना प्रस्तावित नहीं करता, क्योंकि मैं समझता हूँ कि पृथ्वी पर, प्रेस पहले से ही बहुत कुछ कह चुकी है, लगभग सबकुछ असत्य। मुझे अपने जीवन के बारे में बताने के लिये कहा गया था, इसलिये मैं स्वयं को सख्ती के साथ अपने तक ही सीमित रखूँगा।

हम पेरीवेल में रहना जारी नहीं रख सके, क्योंकि, यात्रा की परिस्थितियॉ अत्यधिक खराब थीं, इसलिये हमने लंदन के नाइट्स ब्रिज (Knightsbridge) क्षेत्र में, एक अपार्टमेंट पाने की व्यवस्था की। ये मुझे प्रतिदिन अपने ऑफिस जाने के लिये, ट्यूब रेलवे के स्टेशन तक जाने में, वरदान साबित हुआ।

युद्ध गरमाता जा रहा था, चीजें मुश्किल होती जा रहीं थीं, और जबरर्दस्त राशन व्यवस्था तथा खाद्यान्नों की तंगी थी। लंदन पर भारी बमबारी हो रही थी। मेरा अधिकांश समय आग की निगरानी करने में जाता था, मुझे समीप आते हुए जर्मन लड़ाकू विमानों की निगरानी करते हुए, इमारतों की चोटी तक पहुॅचती हुई, जंग लगी लोहे की सीढ़ियों पर चढना पड़ता था और यदि मैं समय रहते उन्हें देख लेता, तो मुझे नीचे काम करने वाले लोगों को चेतावनी देनी पड़ती थी।

एक दिन, मैं अपनी सायकल पर चढ़कर, काम पर जाने के लिये, हाइड पार्क (Hyde Park) में से गुजर रहा था और मैंने बमबर्षकों को समीप आते देखा। एक ने बम गिराये और जो ऐसे लगे मानो कि वे असुखद रूप से मेरे समीप ही आते जा रहे हैं, इसलिये मैंने अपनी सायकिल को पटका और कुछ

पेड़ों की तरफ दौड़ा। बम गिरे; उनका निशाना पार्क से चूक गया और वे बकिघंम पैलेस में गिरे, जहॉ उन्होंने अच्छा खासा नुकसान किया।

ऐसा लगा, हर जगह बम गिर रहे थे। एक दिन मुझे एक विशेष शल्य व्यवस्था के प्रकरण में बाहर जाना था और मैं चारिंग चौराहे के स्टेशन (Charing Cross Station) पर पहुॅचने ही वाला था, तभी अचानक, बादलों में से एक बड़ा बम गिरा, और ठीक भूमिगत स्टेशन, जो लोगों की भीड़ से भरा था, में होकर स्टेशन में गया। मैं अभी भी, धूल के गुबार और किसके छितरे हुए टुकड़ों को देख सकता हूॅ? ये स्टेशन की छत के छेद में से फट गया था।

एक रात, वहॉ भयानक हवाई हमला हुआ, और वह स्थान, जहॉ मेरी पत्नी और मैं रहते थे, बम गिरे। मुझे, हम जैसे थे वैसे ही, रात में ही बाहर आना पड़ा। हम लंबे समय तक, अंधेरे में भटकते रहे, दूसरे लोग भी ऐसे ही भटक रहे थे, हर चीज हलचल में थी। बम गिर रहे थे और पूर्वी सिरे पर जलती हुई लपटों के साथ, आकाश विवर्ण (lurid) हो चुका था। हम सेंट पॉल्स कैथेड्रल (St. Paul's Cathedral) को लपटों में खाके के रूप में देख सकते थे, और धुऐं के बड़े बड़े बादल ऊपर उठे। अक्सर हम, गोली दागती हुई मशीनगनों की खटखट सुनते थे, और कभीकभार, जले हुए कारतूस, हमारे आसपास नीचे गिरते। वहॉ हर जगह, गिरता हुआ बम का टुकड़ा होता और हम अपने स्टील के हेलमेटों को पहने रहते, अन्यथा असुरक्षित शरीर में होकर, तेजी से नीचे आते हुए, धुऐं देते हुए टुकडे, हमारे शरीरों में होकर गुजर गये होते।

अंत में भोर हुआ, और मैंने अपने नियोक्ता को ये कहने के लिये, कि मुझ पर बम गिरा था, फोन किया, उसने कहा, ''उसका बुरा मत मानो, तुम तो काम पर आ जाओ। दूसरे लोग भी बम से मारे गये हैं।'' इसलिये गंदा और भूखा, मैं एक ट्रेन पर चढ़ा, और अपने कार्यालय गया। अपनी सड़क पर पहुॅचने पर, वहॉ मैंने देखा कि उसे घेर लिया गया था। मैंने उसे छोड़कर, अवरोध से बचकर, जाने का प्रयास किया, परंतु सर्वाधिक हस्तक्षेप करने वाला पुलिस का एक सिपाही आया और उसने मुझ पर लूटने की मनःस्थितियों के आरोप, जो उस समय काफी खराब थे, लगाये। ठीक उसी समय, मेरा बॉस एक कार में से निकला और मेरे पास आया। उसने अपनी पहचान के कागजात सिपाही को दिखाये और हम अपने अवरोध को साथसाथ पारकर, अपने कार्यालय को पहुॅचे।

हर कहीं से पानी दौड़कर बाहर आ रहा था। उस स्थान पर बम टकराया था और पानी की आपूर्ति व्यवस्था खपरों में टूट गई थी। अनेक तलों के ऊपर की छत से, पानी झरना बनकर, जमा सामान पर गिर रहा था। तलघर, पानी में गरदन तक डूबा हुआ था, और हर जगह कॉच था, वहॉ हर जगह पत्थर के टुकड़े थे, और हम मुड़े और हमने बम का एक टुकड़ा, एक दीवार में रखा हुआ पाया।

ये उथल–पुथल की स्थिति थी। वहॉ बचाने लायक बहुत कुछ नहीं था, हमने कुछ अभिलेखों और उपकरण के केवल कुछ टुकड़ों को बाहर लाने की व्यवस्था की, और हम सभी व्यवस्थित हुए और स्थान को थोड़ा साफ करने का प्रयास किया, परंतु ये निराशाजनक था, वहॉ काम करने का स्थान, दोबारा प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं था। अंततः मेरे नियोक्ता ने कहा कि वह देश के दूसरे हिस्से में जा रहा था, और उसने मुझे अपने साथ चलने का न्यौता दिया। मैं ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि, मेरे पास पैसा नहीं था। वास्तव में, चीजों को खरीदना, और देश के किसी दूर के स्थान में एक ताजा नये घर को जमाना, बहुत मुश्किल था। ये ऐसा खर्चा था, जिसे मैं अभी सोच भी नहीं सकता था। इसलिये, चूंकि मैं जाने में असमर्थ था, मैं, इंग्लैंड में, युद्धकाल में, बेकार, नौकरी से बाहर हो गया।

मैं नौकरी पाने का प्रयास करते हुए, विभिन्न कामदिलाऊ दफ्तरों में गया। मैंने युद्धकालीन सिपाही बनने का प्रयास किया, परंतु मैं चिकित्सीय परीक्षण उत्तीर्ण नहीं कर सका। परिस्थितियॉ निराशाजनक होती जा रहीं थीं; कोई हवा पर जीवित नहीं रह सकता, और अंतिम उपाय के रूप में, मैं पत्राचार स्कूल, जहॉ मैंने काफी पाठ्यक्रम लिये थे, के कार्यालयों में गया।

ऐसा हुआ कि उन्हें एक आदमी की जरूरत थी, उनके खुद के आदमियों में से कुछ, सेना में बुला लिये गये थे, और मैं ऐसा था, कि मुझे ईर्ष्या करने योग्य अभिलेख धारण करने वाला माना जाता था, और इसलिये मुझे कहा गया कि मुझे सलाहकार विभाग में एक नौकरी दी जा सकती है। वेतन पॉच सौ पाउंड प्रति सप्ताह होगा और मुझे सरे (Surrey) में, वेब्रिज (Weybridge) में रहना होगा। नहीं, उन्होंने कहा, वे मुझे वहॉ जाने के लिये, कोई भी चीज अग्रिम के रूप में नहीं दे सकते थे। पहले मुझे संचालकों में एक के साथ साक्षात्कार के लिये वहॉ जाना होगा। इसलिये मैंने पूछताछ की और पाया कि ग्रीन लाइन बस के द्वारा जाना सबसे सस्ता तरीका था। इसलिये नियत दिन, मैं वेब्रिज गया, परंतु वहॉ जाम लगा था, संचालक अंदर नहीं आया था, मुझे बताया गया, ''ओह, वह कभी समय पर नहीं आता उसका कहना है, वह चार बजे तक यहॉ नहीं होगा। तुमको केवल प्रतीक्षा करनी होगी।'' ठीक है, अंततः संचालक आया और उसने मुझे देखा, वह काफी अधिक मृदुभाषी था, और उसने मुझे पॉच सौ पाउंड प्रति सप्ताह में नौकरी का प्रस्ताव दिया। उसने मुझे बताया कि वहॉ गैराज के ऊपर, एक फ्लेट खाली था, और मैं उतना भुगतान करते हुए, जो वास्तव में अत्यधिक महंगा किराया था, उसे ले सकता था। परंतु मैं नौकरी पाने की जल्दी में था, इसलिये मैं उसकी शर्तों पर राजी हो गया। मैं लंदन वापस लौटा, और हमें हमारी चीजें, जैसी कि वे वेब्रिज में थीं, खराब मिलीं, गैराज के ऊपर के फ्लेट के लिये, ऊॅची और टूटीफूटी लकड़ी की सीढ़ियॉ। अगले दिन, मैंने पत्राचार लिपिक के रूप में, काम शुरू कर दिया, ये वह है, जो एक पत्राचार स्कूल में यथार्थ था।

वहॉ बहुत सारे दोषयुक्त शब्द थे; अब हमारे पास, कूड़ा करकट इकट्ठा करने वाले, सफाई विशेषज्ञ कहे जाते थे, जबकि वास्तव में वे कूड़ा इकट्ठा करने वाले हैं। कुछ पत्राचार लिपिक, अपने आपको सलाह देने वाले परामर्शदाता (advisory consultants) या आजीविका परामर्शदाता (carrier consultants) कहते हैं, परंतु अभी भी, जो हम करते थे, वह पत्राचार लिपिक के कर्त्तव्य थे।

किसी विशेष वर्ग का होना, अपराध प्रतीत होता था, मुझे हमेशा कहा जाता रहा है कि मेरे पिता नलसाज थे; वास्तव में, वह नहीं थे। परंतु यदि वे रहे भी होते, तो क्या? निश्चितरूप से, उन्होंने मेरी तरह से, नलसाज के रूप में प्रशिक्षु का कार्य किया था। परंतु उनके पास कोई चारा नहीं था। मैंने मोटर इंजीनियर के प्रशिक्षु के रूप में काम किया, और कैसे भी, प्रसिद्ध मिस्टर क्रेपर (Mr. Crapper)[42], एक सज्जन, जिसने शौचघरों (water closets), जैसे कि वे आजकल हैं, का आविष्कार किया, के सम्बंध में क्या? बूढ़े क्रेपर के दिन से आजतक, उनमें अभी सुधार नहीं हुआ है। क्रेपर, यदि आपको याद हो, एक नलसाज था, और एक हंसमुख अच्छा व्यक्ति भी। फ्लशटैंक का उसके अविष्कार और फ्लश के शौचालय ने उसको किंग एडवर्ड (King Edward), जो मिस्टर क्रेपर को अपना निजी मित्र मानते थे, का दुलारा बना दिया। इसलिये, आप देखें, एक नलसाज, ठीक वैसे ही पंसारी भी, राजशाही का मित्र हो सकता है; थॉमस लिप्टन (Thomas Lipton) एक तथाकथित पंसारी था। निश्चितरूप से वह था, उसका एक बहुत बड़ा किराने का प्रतिष्ठान था, और वह किंग जार्ज पंचम (King George V)[43] का

42 अनुवादक की टिप्पिणी : थॉमस क्रेपर (Thomos Crapper) एक नलसाज था, जिसने लंदन में थॉमस क्रेपर एंड कंपनी की स्थापना की थी। उसे अपने उत्पादों की गुणवत्ता के लिये जाना जाता था और इसके लिये उसे कई शाही पुरुस्कार भी प्राप्त हुए। क्रेपर का जन्म यार्कशायर में 1836 में हुआ था। इसकी ठीक जन्मतिथि ज्ञात नहीं है। 1596 में जॉन हेरिंगटन (John Harington) ने फ्लशिंग शौचगृह (flushing toilet) का अविष्कार किया था। बाद में, 1778 में इसका पेटेंट जोसेफ ब्रामाह (Joseph Bramah) ने प्राप्त किया था। 1880 में राजकुमार एडवर्ड (जो बाद में एडवर्ड सातवें कहलाये) ने उसके इसप्रकार के शौचगृहों को खरीदा था, और उसके बाद थॉमस एंड कंपनी को 30 ऐसे शौचगृह और पेशाबघर बनाने का आदेश दिया था। उसके बाद ही, ये सामान्य प्रचलन में आया। क्रेपर ने स्वच्छता के सामान को प्रदर्शन करने वाला पहला सार्वजनिक शोरूम बनाया। जिससे उसे इस क्षेत्र में ख्याति प्राप्त हुई। ये जार्ज सेंवथ का व्यक्तिगत मित्र था।

43 अनुवादक की टिप्पिणी : किंग जार्ज पंचम (King George V) ब्रिटेन और उसके अधीनस्थ राष्ट्रों का राजा और 6 मई 1910 से 20 जनवरी 1936 को अपनी मृत्यु पर्यन्त भारत का सम्राट था। किंग जार्ज पंचम ने 25 हजार 700 दिनों तक राज्य किया, जो ब्रिटेन के राजवंश का सबसे लंबे समय तक राज्य करने वाला सातवां राजा था। ये राजकुमार और राजकुमारी वेल्स का दूसरा बेटा, और तत्कालीन साम्राज्ञी विक्टोरिया (Queen Victoria) का नाती था।

मित्र था।

निश्चितरूप से इससे फर्क नहीं पड़ता कि किसी व्यक्ति का बाप क्या था, एक ऐसे माता–पिता का होना, जो व्यापारी थे, इतना अपमानजनक क्यों है? आजकल राजघरानों की लड़कियॉं, व्यापारियों के साथ ब्याही जा रहीं हैं, क्या वे नहीं हैं? परंतु मैं हमेशा आनंदित होता हूँ, क्योंकि जीसस (Jesus), ऐसा कहा जाता है, एक बढ़ई का पुत्र था। ये अपमानजनक कैसे हुआ?

ठीक है, ये सब मुझे अपनी कहानी से काफी दूर ले जा रहा है, परंतु यहॉं मैं अब केवल यही और कहूँगा कि मैं, उनकी तुलना में, उन बेचारे गरीब, बीमार लोगों के पुत्रों की तुलना में, जो अपने आपको प्रेस का आदमी कहते हैं, एक नलसाज का बेटा हुआ। मेरे लिये कोई काम खराब नहीं है। प्रेस के एक आदमी की तुलना में, एक नलसाज, लोगों के घपले को साफ करता है।

एक प्रेसमैन लोगों के लिये घपला पैदा करता है।

चूंकि मैं यहॉं समाप्त होता रहा हूँ, मैंने अनेक दिलचस्प चीजें पाईं हैं, परंतु विशेषरूप से, एक चीज, जो मुझे षड़यंत्र करती दिखती है, वह ये है; मैं एक अत्यंत आदरणीय नाम धारण करता हूँ, केवल 'अंकल रिचार्ड (Uncle Rechard)'' की वजह से नहीं, परंतु दूसरों के माध्यम से, जो उसके सामने गये, जो श्रीमान् जोसुहा रेनाल्डस (Joshuua Reynolds) का सहकर्मी था और दूसरा लंदन की मीनार का, लार्ड लेफ्टिनेंट (Lord Lieutinent) या जो कुछ भी वे उसे कहें, था, और ये उस समय था, जबकि मुकुट के नगीनों को चुराने का प्रयास किया गया था, एक प्रयास जो व्यर्थ हो गया।

यहॉं ऊपर देखने को बहुत कुछ है, सीखने को बहुत कुछ है, और मुझे बताया गया कि मुझे अभी काफी कुछ सीखना है, क्योंकि वे कहते हैं, मैंने नम्रता के साथ नहीं सीखा, मैंने अभीतक ये नहीं सीखा कि लोगों के साथ मिलकर कैसे चला जाये। ठीक है, मैं, इस सब चीज की इमला बोलने में जिसे मैं बाइबल की गड्डियों के ऊपर कसम खाऊॅंगा कि ये सत्य है केवल सत्य, अपना सर्वोत्तम (best) कर रहा हूँ।

अध्याय– नौ

वेब्रिज में जिंदगी प्रसन्न नहीं थी। मैं हवाई हमले का एक वार्डन बन गया। एक दूसरा वार्डन अत्यंत ईर्ष्यालु था, और उसने वह सब कुछ किया, जो वह मुझे नुकसान पहुँचाने के लिये कर सकता था। मैंने इस्तीफा देने का प्रस्ताव किया, परंतु मुझसे मेरा इस्तीफा नहीं चाहा गया था।

एक रात को, जबकि मैं वेब्रिज में था, एक हवाई हमला हुआ, और हवाई हमले के बाद, एक पुलिस वाला दरवाजे पर आया। ऐसा लगा कि एक छोटी रोशनी, इतनी छोटी कि मुश्किल से किसी के ध्यान में आने के लिये पर्याप्त होगी, सौ फीट दूर से दिखाई दे रही थी। वहाँ एक फ्लेट में लैंडिग पर, एक दोषयुक्त स्विच था। ये उनमें से एक था, पुराने पीतल के स्विचों में से एक बड़ी मूठ वाला, और मैं समझता हूँ कि जोरदार दस्तक देने के कारण उत्पन्न हुए कंपनों और सबकुछ, ने उसे हिला दिया था कि वह केवल मात्र अपनी स्थिति में बना हुआ था। पुलिस मैन अपने आप देख सकता था कि यदि एक मक्खी छींकती, तो रोशनी बाहर आ जाती, क्योंकि ताले के पुर्जे (tumbler) की स्प्रिंग खराब थी परंतु, नहीं, रोशनी दिख रही थी, ये सबकुछ वहाँ था। इसलिये वहाँ, एक अदालत में, हाजिरी और जुर्माना होना था, और ये वह चीज है, जिसके ऊपर मैंने हमेशा विरोध किया है, क्योंकि ये इतनी अनावश्यक थी, और वार्डन वह ''दुश्मन'' था, जो इसकी सूचना दे चुका था। इसके बाद मैंने ए.आर.पी. से इस्तीफा दे दिया। ये विश्वास करते हुए कि यदि लोग साथसाथ काम नहीं कर सकते, तो ''दल'' को तोड़ देना ही अच्छा था।

बेब्रिज में, मुझसे, पत्रों का उत्तर देना और लोगों को पत्राचार पाठ्यक्रमों को लेने के लिये राजी करना, बॉस की कारों का रखरखाव, और हर चीज करने की अपेक्षा की जाती थी। वह खराब, चीजों को, अवैतनिक संदेशवाहक लड़के की भाँति, हमेशा लगातार बदलता रहता था, और कोई भी काम, जो उसके हाथ में आ जाये, कराता था। सब कुछ पॉच सौ रूपये प्रति सप्ताह के लिये!

लोग सेना में भरती किये जा रहे थे, परिस्थितियाँ और कठिन होती जा रही थीं। खाद्यपदार्थ कम और कम होते जा रहे थे, और ब्रुकलैंड (Brookland) के हवाईजहाज कारखाने में हमेशा अजीब से शोर होते थे। एक दिन एक वेलिंगटन (Wellington) की उड़ान की परीक्षा की जा रही थी, और वह वेब्रिज के एक गॉव के बगल से ही टकरा गया। पायलट ने अपने खुद के जीवन की कीमत पर गॉव को बचाया, क्योंकि उसने उस जहाज को बिजलीयुक्त रेलवे लाइन के ऊपर टकराया। हवाईजहाज एक खिलौने की तरह था, जो हजारों टुकड़ों में टूट गया था, ये पूरी जगह पर छितरा गया था, परंतु पायलट की आत्मबलि की वजह से वेब्रिज की जनता बच गयी थी।

ठीक इसी समय, मुझे सेना में भर्ती के कागजात प्राप्त हुए। मुझे सेवाओं में से एक में, प्रविष्ट होने के पूर्व, एक औपचारिकता के रूप में, स्वास्थ्य परीक्षकों के मंडल (Board of Medical Examiners) के सामने जाना पड़ा।

निश्चित दिन, मैं एक बड़े हाल में गया, जहाँ परीक्षा किये जाने के लिये प्रतीक्षा करते हुए दूसरे लोगों की भीड़ थी। मैंने एक सेवक से कहा, वहाँ, ''मुझे टी.बी. हो चुकी है, तुम जानते हो।'' उसने मुझे देखा और कहा, मुझे कहना चाहिए, लड़के, तुम थोड़े से बरबाद दिखते हो। वहाँ बैठो।'' इसलिये मैं वहाँ बैठा, जहाँ निर्देशित किया गया था, और मैं बैठा, और बैठा। अंत में, जब उस स्थान के लगभग प्रत्येक व्यक्ति की परीक्षा की जा चुकी थी, डॉक्टरों का पैनल मेरी ओर मुड़ा। ''ये क्या है?'' एक ने कहा, ''तुमने कहा, तुम्हें टी.बी. हो चुकी है, तुम जानते हो टी.बी. क्या होती है?'' ''मैं निश्चितरूप से जानता हूँ, श्रीमान्'' मैंने कहा। ''मुझे ये हो चुकी है,'' उसने मुझसे तमाम प्रश्न पूछे और तब तुनकमिजाजी की और तुनकमिजाजी दिखाई। तब उसने अपने सहायक से कुछ शब्द कहे। अंत में, वह मेरी तरफ मुड़ा, मानो कि, वह विश्व का सबसे बड़ा निर्णय ले रहा हो।

''मैं तुम्हें किंग्सटन (Kingston) अस्पताल भेज रहा हूँ,'' उसने कहा। ''वे वहाँ तुम्हारी परीक्षा

करेंगे, वे शीघ्र ही पता लगा लेंगे कि तुम्हें टी.बी. हुई है या नहीं, और यदि तुम्हें नहीं हुई हो, ईश्वर तुम्हारी सहायता करे!'' उसने सावधानी से एक फार्म भरा, उसे सीलबंद किया, दूसरे लिफाफे में रखा और सीलबंद किया, तब उसने मेरी ओर गुस्से से उछाल दिया। मैंने उसे फर्श पर से उठाया और अपने घर का रास्ता पकड़ा।

अगले दिन, मैंने अपने नियोक्ता को बताया कि मुझे परीक्षण के लिये अस्पताल जाना था। वह पूरी तरह से परेशान दिखाई दिया। मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने सोचा हो, ''ओह ये आदमी मेरा समय क्यों खराब करता है। वह नौकरी को क्यों नही पा लेता, और मेरी नजर से दूर क्यों नहीं हो जाता। तथापि, मैंने उस दिन का अपना काम पूरा किया, और उसके अगले दिन, जैसा निर्देशित किया गया था, मैंने टेम्स नदी पर किंग्सटन के लिये बस पकड़ी। मैंने वहॉ अस्पताल के लिये अपना रास्ता लिया। मेरी सभी प्रकार की जॉचें हुईं और तब मेरा एक्सरे किया गया। जब एक्सरे को, एक सुखाने वाली आलमारी में ठेल दिया गया, जिसमें काफी गीले एक्सरे, सुखाने के लिये टंगे थे। आधे घंटे बाद, एक औरत आई, और उसने कहा, ''ठीक है, तुम घर जा सकते हो!'' यही सबकुछ था, कुछ नहीं कहा गया, इसलिये मैं तभी घर चला गया।

उसके आगे, वेब्रिज में टी.बी. के अस्पताल में जाने के लिये एक बुलावा आया। वास्तव में, ये लगभग तीन या चार सप्ताह बाद था, परंतु बुलावा आया और मैं एक भोले छोटे बच्चे की भांति टी.बी. के अस्पताल गया। अब तक, मैं पूरे मामले में, दिल से बीमार हो चुका था। टी.बी. अस्पताल में, मुझे एक अत्यंत आश्चर्यजनक डॉक्टर के द्वारा देखा गया, जो वास्तव में, पूरा वैसा था जैसा कि एक डॉक्टर को होना चाहिए। उसने वहॉ मेरा एक्सरे लिया, और वह मेरे साथ सहमत हुआ, कि ये पूरी तरह मूर्खता थी कि, मुझे एक विभाग से दूसरे विभाग को ठेला गया। उसने कहा, ये पूरी तरह स्पष्ट था कि टी.बी. के माध्यम से, मेरे फेफड़ों में बुरे निशान थे, और उसने कहा यदि मैं सेना में गया, मैं एक देनदारी बन जाऊँगा, कोई पूंजी नहीं। निश्चितरूप से, इंग्लैंड उस स्थिति तक नहीं आया था, जबकि उन्हें बुला सके, उनकी सूची बना सके, जो स्पष्टरूप से बीमार हैं। ''मैं, ये कहने के लिये कि आप किसी भी प्रकार की सेवा के लिये अनपयुक्त हैं, एक रिपोर्ट भेजूंगा।''

समय गुजरता गया, और अंत में, मुझे ये बताते हुए कि सेना की सेवाओं के लिये मेरी आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि मुझे चौथी श्रेणी में, निम्नतम श्रेणी में, वर्गीकृत किया गया था, मैंने डाक में एक कार्ड प्राप्त किया।

मैं उस कार्ड को लेकर अपने नियोक्ता के पास गया, और उसे दिखाया और वह ये सोचता हुआ प्रतीत हुआ कि ठीक है, यदि दूसरे सभी सेवा के लिये बुला लिये जायें, उसे काम को जारी रखने के लिये कोई मिल गया है। उन दिनों में, वहॉ, टालने का प्रयास करने वाले लोगों की एक उत्तेजित छीनाछपटी हुई; हर एक बचने का प्रयास कर रहा था।

एक व्यक्ति, जो नियोक्ता के अंतर्गत प्रबंधक था, छोड़कर दूसरी नौकरी के लिये चला गया, और दूसरे व्यक्ति को प्रबंधक नियुक्त किया गया, परंतु मैं और वह, बिलकुल नहीं निभा सके, हमने कुछ नहीं किया। वह इस प्रकार का था कि मैं उसको पूरी तरह से नापसंद करता था, और मैं इस प्रकार का दिखता था कि वह पूरी तरह मुझे नापसंद करता था। तथापि, मैंने सर्वोत्तम किया, जो मैं कर सकता था, परंतु चीजें कठिन से कठिनतर होती जा रहीं थीं, क्योंकि, वहॉ वेतन में किसी वृद्धि के बिना, और अधिक, और अधिक कार्य था। ये स्पष्ट था कि हर कोई, नियोक्ता के पास कहानियॉ इत्यादि सुनाते हुए दौड़ रहा था, आवश्यकरूप से, सच्ची कहानियॉ एक भी नहीं।

एक दिन, काम के बाद, मैं बगीचे में होकर घूम रहा था। मेरे पास साढ़े तीन एकड़ का एक बाग था, और मैं थोड़े से जंगली पेड़ों के झुंड में होकर गुजर रहा था। तब शाम थी, और अंधेरा बढ़ता जा रहा था। कैसे भी, मैं एक बाहर निकली हुई जड़ से टकरा कर गिर गया और एक भयानक चीख

के साथ नीचे गिर गया।

शाब्दिक रूप से, इसने मुझे झटक कर, अपने आप से बाहर कर दिया!

मैं सीधा खड़ा हुआ, परंतु भगवान मेरी आत्मा को आशीष दे! मैंने पाया कि ''मैं'' ''मैं नहीं था'' क्योंकि मैं सीधा खड़ा हुआ था और मेरा शरीर, औंधे मुँह सपाट पड़ा था। मैंने पूरी तरह भौंचक्का होकर आसपास देखा, और मैंने कुछ अंजान दिखने वाले लोगों को अपने आसपास देखा। भिक्षु, मैंने सोचा, ये दानव भिक्षु यहाँ क्या कर रहे हैं? मैंने उनको देखा, और मैंने ठीक से उनको देखा, मैंने माना कि मेरा शरीर जमीन पर था, और तब मेरे सिर में, मुझे कुछ आवाज या वैसी ही कुछ प्राप्त हुई। पहले मुझे ऐसी छाप मिली कि ये कुछ अनजान विदेशी भाषा थी, परंतु जैसे ही मैंने इसके सम्बंध में सोचा, मैंने पाया कि मैं इसे, जो कहा जा रहा था, समझ सकता था।

''नौजवान'' आवाज ने मेरे सिर में कहा, ''तुम एक बुरी चीज की सोच रहे हो, तुम अपने जीवन से दूर जाने के सम्बंध में सोच रहे हो। वास्तव में, ये बहुत बुरी चीज है। आत्महत्या गलत है, कोई कारण नहीं, कोई बात नहीं कि कल्पित कारण या बहाना, कुछ भी हो, आत्महत्या हमेशा गलत है।''

''तुम एकदम ठीक कहते हो,'' मैंने सोचा, ''जैसी मुझे है, वैसी तुम्हें कोई तकलीफ नहीं है। यहाँ मैं इस कुए में हूँ, मेरे पास, उस स्थान को शब्दों में एकदम ठीक वर्णन नहीं करने वाला एक भयानक कार्य है, और मैं कोई तरक्की नहीं पा सकता और मेरा बॉस मुझ से नापसंद होता दिखाई देता है, मैं यहाँ क्यों रुकूं। वहाँ आसपास तमाम पेड़ हैं, और फेंकने के लिये, एक अच्छा रस्सा भी है।''

परंतु मैं इस सम्बंध में बहुत अधिक नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि ये कहते हुए कि यदि मैं चाहूँ, मैं उनसे, जिन्हें मैं पृथ्वी की प्रताड़नायें समझता हूँ, एक बड़ी मुक्ति पा सकता हूँ, मेरे दिमाग में एक विचार रखा गया था। अपने शरीर को किसी प्रेत या आत्मा, जो लगभग उससे पहले, जबकि मैं उछलकर बाहर आ पाता, मेरे अंदर की ओर उछलना चाहती थी, को उपलब्ध कराने के द्वारा, यदि मैं चाहता, यदि मैं वास्तव में गंभीर होता, तो मैं मानवता के लिये कुछ कर सकता था। ये सब मुझे बकवास दिखाई दिया, परंतु मैंने सोचा, मैं इसे एक घुमाव दूंगा और उन्हें बात करने दूंगा। उन्होंने कहा, अभिरुचि के असली प्रमाण के रूप में, पहले मुझे अपना नाम बदलना था। उन्होंने मुझे एक अजीब नाम बताया, जिसे वे मुझसे ग्रहण कराना चाहते थे। परंतु ठीक है, मैंने केवल अपनी पत्नी को बताया कि मैं अपना नाम बदलने जा रहा था, क्योंकि उसने सोचा कि मैं थोड़ा पागल, या कुछ वैसा ही था, और उसे जाने दिया, और इसलिये, मैंने पूर्ण वैधानिकता के साथ, अपना नाम बदल दिया।

तब मेरे दांत ने कष्ट देना शुरू किया। मेरा समय बहुत भयानक गुजरा। अंत में, मैं उससे और अधिक बंधा नहीं रह सका और मैं एक स्थानीय दंत चिकित्सक के पास गया। उसने दांत को बाहर निकालने का प्रयास किया, परंतु वह बाहर नहीं आया। उसने उस चीज में एक छेद बनाया, ताकि वह उसे एक उठाने वाली युक्ति (elevator), उस प्रकार की नहीं, जिसको लोग विभिन्न तलों (floors) में यात्रा करने के लिये उपयोग में लाते हैं, परंतु उस प्रकार की, जो एक दांत को उत्तोलक के द्वारा उठाने के लिये उद्देशित है, के रूप में प्रयोग कर सके। इस दंत चिकित्सक ने, लंदन में किसी विशेषज्ञ से फोन पर बात की और मुझे जल्दी में, एक नर्सिंग होम में जाना पड़ा।

मेरी पत्नी ने मेरे नियोक्ता को बताया कि मुझे एक नर्सिंग होम में जाना पड़ा और उससे ये कथन कहा गया, ''ठीक है, जब मुझे दांत में दर्द है, तब भी मुझे काम करना पड़ेगा!'' और यही मात्र सहानुभूति थी, जो हमें मिली। इसलिये मैं, अपने खर्चे पर, इस नर्सिंग होम में गया, वास्तव में, स्वास्थ्य योजना जैसी, जिसे तुम अब देखते हो, कोई चीज नहीं थी, और तब मेरी छोटी शल्यक्रिया हुई, जो कुल मिलाकर उतनी आसान नहीं थी। दंत चिकित्सक अच्छा था और बेहोश करने वाला विशेषज्ञ और भी अच्छा था। मैं एक सप्ताह नर्सिंग होम में रुका, और तब वेब्रिज वापस लौटा।

वहाँ काफी संख्या में असुखद छोटी घटनायें, उकसाने वाली और उसी प्रकार की सभी, और

अनुचित आरोप हुए। गंदगी को छानने के लिये सभी विस्तारों में जाने का कोई बिन्दु नहीं है, क्योंकि कुल मिलाकर, मैं कोई प्रेस का आदमी नहीं था, परंतु अभियोग झूठे थे, इसलिये मेरी पत्नी ने और मैंने इसके ऊपर बातें कीं, और हमने तय किया कि हम यहाँ और अधिक नहीं टिक सकते, इसलिये मैंने अपना नोटिस थमाया। उस क्षण से, मैं कोढ़ी हो सकता था, या किसी प्रकार की और खराब बीमारी हो सकती थी; महामारी, क्योंकि शेष सप्ताह के लिये मैं अपने कार्यालय में बैठा रहा, कोई मुझसे मिलने नहीं आया, उनको स्पष्टरूप से बता दिया गया था कि ऐसा नहीं करना है, और मुझे किसी प्रकार का कोई काम करने को नहीं दिया गया। मैं वहाँ केवल एक अपराधी की भांति सजा काटते हुए रुका। सप्ताह के अंत में ऐसा था कि मैं समाप्त हो गया।

हमने आनंद के साथ वेब्रिज छोड़ा और हम लंदन गये। हम थोड़े से आसपास घूमे, ओ परमात्मा, मैं भूल गया कि हमने कितने स्थानों पर प्रयास किया था और कैसे भी, इससे कोई प्रभाव नहीं पड़ता, परंतु तब हमने पाया कि परिस्थितियाँ असहनीय थीं, और हम थेम्स डिटान (Thames Ditton) कहे जाने वाले लंदन के एक उपनगर में, दूसरे स्थान में चले गये।

ओह, इस मूर्खतापूर्ण मामले से उबरने के लिये, मैं इतना अधिक आशंकित हूँ, कि मैं इस सम्बंध में बात करना पसंद नहीं करता, परन्तु मैं इतना जल्दी में था कि मैं थोड़ा सा भूल गया। यहाँ ये है: मुझे उससे पहले किसी समय, ये कहा गया था कि मैं दाढ़ी बढ़ाऊं। ठीक है, मैंने सोचा कि माजरा क्या है? ठीक वैसे ही, जैसे कि भेड़ के मेमने को लटकाया जाता है, जब मैं वेब्रिज में था, मैंने इस दाढ़ी को बढ़ाया और इस पर मेरे नियोक्ता द्वारा, और उन लोगों के द्वारा, जो मेरे साथ काम करते थे, थोड़ा सा मजाक उड़ाया गया। बुरा मत मानो, मैंने सोचा, मैं उनके साथ काफी लंबे समय तक नहीं रहूँगा।

हम थेम्स डिटान की तरफ चले; अत्यंत कम समय के लिये हम एक सराय, जो एक मजाकिया बूढ़ी औरत द्वारा चलाई जाती थी, जिसे धूल ही नहीं दिखाई देती थी, में ठहरे। उसने सोचा कि वह एक मकड़जाल वाले, या कुछ वैसे ही, महल में रहती थी और सीढ़ियों में कोने में लटकते हुए मकड़ी के जालों को देखने में पूरी तरह अक्षम थी। परंतु वह मकान मालकिन जैसी अत्यधिक थी और इसलिये हमने दूसरे स्थान को देखा। सड़क के नीचे, वहाँ एक ऐसा स्थान था, एक घर जो ऊपर और नीचे के फ्लेटों के रूप में किराये पर दिया जा रहा था। हमने वह स्थान ले लिया; हमने ये ख्याल नहीं किया कि हम पैसा कहाँ से प्राप्त करने वाले थे, क्योंकि, हमारे पास कोई काम नहीं था, बिलकुल कोई काम नहीं। बदले में, मैं थोड़ा पैसा पैदा करने के लिये, हमको चेतन बनाये रखने के लिये, कुछ भी काम कर रहा था। मैं रोजगार दफ्तर में गया, परंतु मुझे निकाले जाने के बजाय मैंने अपनी नौकरी छोड़ी थी, इसलिये मुझे बेरोजगारी भत्ते का कोई लाभ नहीं मिलना था। इसलिये मुझे कभी बेरोजगारी भत्ते की राशि नहीं मिली, मैं आजतक नहीं जानता, मैंने बिना उसके कैसे व्यवस्था की, परंतु मैंने की।

मेरे पास एक पुरानी सायकिल थी और मैं इसका उपयोग आसपास काम पाने का प्रयास करने में चढ़ने के लिये करता था, परंतु नहीं, कोई काम उपलब्ध नहीं था। युद्ध समाप्त हो चुका था, लोग सेनाओं से वापस आ चुके थे, और श्रम का बाजार संतृप्त था। ये उनके लिये ठीक था, उन्हें बेरोजगारी का लाभ मिलता था और शायद एक पेंशन भी; मेरे पास कुछ नहीं था।

तब एक रात को मेरे पास आदमियों का एक समूह पहुँचा। उन्होंने मुझे मेरे शरीर से धक्का देकर बाहर निकाला, और मुझसे बात की, और उन्होंने मुझे पूछा कि क्या मैं अभी भी अपने शरीर से बाहर, वहाँ, जिसे मैं स्वर्ग समझता था, निकलना चाहता था। मैं मानता हूँ, ये स्वर्ग है, परंतु इन लोगों ने उसे सूक्ष्मलोक कहा। मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि, मैं पहले की तुलना में अधिक, बाहर जाना चाहता हूँ, इसलिये उन्होंने बताया कि ठीक अगले दिन, मुझे घर में रुकना चाहिए। एक आदमी, जो पूरी पीली पोशाक में था, मुझे खिड़की तक ले गया और इशारा किया। उसने कहा, ''उस पेड़ पर, तुम वहाँ उस पेड़ पर जाओ, और अपने हाथों को उस शाखा पर रखो, और अपने आपको ऊँचा खींचो और तब जाने

दो।'' उसने मुझे ये कहते हुए कि निर्देशों का शब्दशः पालन करना एकदम आवश्यक था, एकदम सही समय दिया, जिसपर मुझे ये करना चाहिए, अन्यथा मुझे, और ऐसे ही दूसरे लोगों को भी बहुत सारा कष्ट होगा। परंतु मेरे लिये सबसे खराब, मुझे अभी भी, पृथ्वी पर छोड़ दिया जायेगा।

अगले दिन मेरी पत्नी ने सोचा, मैं झक्की या कुछ वैसा ही हो गया हूँ, क्योंकि मैं सामान्य की भांति बाहर नहीं गया, मैं आसपास ही चहलकदमी करता रहा। और तब तय किये समय से एक या दो मिनट पहले, मैं बाहर बाग में गया और टहलता हुआ पेड़ के पास गया। मैंने वृक्षलता, या जो कुछ भी ये हो, की एक टहनी को खींचा, जैसा निर्देश किया गया था, शाखा तक पहुँचा। और तब मैंने महसूस किया मानो ये बिजली की तड़क के द्वारा तोड़ दी गई हो। मुझे गिरने का नाटक करने की आवश्यकता नहीं हुई, मैं जोर से नीचे गिरा! मैं नीचे गिरा, और तब, अच्छा भव्य भगवान, मैंने खुद से बाहर की ओर जुड़ा हुआ, चांदी का एक रस्सा देखा। मैं ये देखने के लिये कि ये क्या था, इसे पकड़ने के लिये गया, परंतु धीमे से मेरे हाथ दूर हटा दिये गये। मैं वहॉ भयानक रूप से डरा हुआ अनुभव करते हुए पड़ा रहा, क्योंकि दो लोग, उस चांदी के रस्से पर थे, और वे इसके साथ कुछ कर रहे थे, और एक तीसरा व्यक्ति, अपने हाथ में एक दूसरे चांदी के रस्से के साथ था, और, भयों का भी भय, मैं उनके पूरे समूह में होकर देख सका, इसलिये मैंने आश्चर्य किया कि क्या मैं इस सब को देख रहा था, या मेरा मस्तिष्क बाहर दौड़ रहा था, ये सब इतना ही अजीब था।

अंत में, वहॉ कुछ चूसने जैसी और छिड़कने जैसी एक आवाज हुई, और तब मैंने पाया आनंदों का आनंद। मैं एक सुंदर, सुंदर विश्व में तैर रहा था, और उसका मतलब था कि इतने दूर चले जाना। मैंने अपने संविदा (contract) का भाग पूरा किया। जो मुझे अपने पिछले जीवन के सम्बंध में कहना था, उसे मैं कह चुका हूँ। और अब मैं वापस, सूक्ष्मलोक की अपनी खुद की भूमिका के विषय में जा रहा हूँ।

मैं लोबसांग रंपा हूँ, और मैंने उसे लिखना बंद कर दिया है, जो कि उस व्यक्ति द्वारा बताया हुआ है, जिसका शरीर मैंने लिया। ये सब कितना अनिच्छापूर्वक, इतना अभव्यतापूर्वक था। मुझे जारी रखने दें, जहॉ उसने छोड़ा था।

लाश जमीन पर पड़ी थी; थोड़ी सी फड़कती हुई, और ठीक है, मैं अत्यधिक शर्म के बिना, स्वीकार करता हूँ कि मैं भी ऐंठ रहा था परंतु मेरी ऐंठन भय के कारण पैदा की गई थी। मैं अपने सामने, इस खिंचे हुए शरीर के प्रदर्शन को पसंद नहीं करता था, परंतु तिब्बत के एक लामा साथी ने आदेश दिया, सुखद आदेश, साथ ही साथ असुखद आदेश भी, इसलिये मैं इनके साथ खड़ा रहा, जबकि मेरे दो लामा भाई, आदमी के रजततंतु के साथ कुश्ती लड़ते रहे। इससे पहले की उसकी पूरी तरह से काटी जाये, उन्हें मेरी को जोड़ना था। सौभाग्यवश, वह बेचारा साथी घबराने की ऐसी अवाक् स्थिति में था, और इसलिये वह हक्का बक्का था।

अंत में, जो घंटों दिखाई दिये, परंतु वास्तव में, वे एक सेकंड का पॉचवां भाग ही थे, उन्होंने मेरी रजत तंतु को जोड़कर, उसकी को काट दिया। शीघ्र ही, उसे ले जाया गया, और मैंने उस शरीर को देखा, जिसके साथ मैं अब जुड़ा हुआ था और मैंने कंधे उचकाये। परंतु तब आदेशों का पालन करते हुए, मैंने अपनी सूक्ष्मआकृति, जो मेरी होने वाली थी, को नीचे शरीर पर डूबने दिया। उफ, पहला संपर्क भयानक था, ठंडा और घृणित। मैं उछलकर हवा में आ गया, फिर से डर में। दो लामा मुझे स्थिर करने के लिये आगे आये, और मैं फिर से धीमे–धीमे डूबा।

मैंने फिर से, संपर्क किया, और मैं आतंक और विकर्षण के भय से कांपा। ये वास्तव में, एक अविश्वसनीय, एक झटका देने वाला, और एक वह था, जिसमें होकर मैं फिर कभी नहीं गुजरना चाहूँगा।

मैं बहुत बड़ा दिखाई दिया, या लाश अत्यधिक छोटी दिखाई दी। मैंने तंग महसूस किया; मैंने महसूस किया कि मैं मृत्यु के लिये निचोड़ा जा रहा था, और गंध! अंतर! मेरा पुराना शरीर चिथड़ा हो

गया था, और मर रहा था, परंतु ये कम से कम मेरा खुद का शरीर था, और अब मैं इस विदेशी चीज में बंधा हुआ था, और मैं इसे थोड़ा सा भी पसंद नहीं करता था।

कैसे भी, और मैं इसे स्पष्ट नहीं कर सकता। मस्तिष्क की मोटर नाड़ियों (motor nerves) को पकड़ने के लिये, मैंने अंदर ही अंदर टटोला। मैंने इस बेकार चीज को कैसे काम में लिया? थोड़े समय के लिये, मैं वहॉ केवल असहाय पड़ा रहा, ठीक मानो कि मुझे लकवा मार गया था। शरीर काम नहीं करता। मैं एक बहुत जटिल कार के साथ, एक अनुभवहीन ड्राइवर की भांति, गड़बड़ाता सा दिखाई दिया। परंतु अंत में, अपने सूक्ष्मशरीरी भाइयों की मदद से, मैंने स्वयं पर नियंत्रण पा लिया। मैंने शरीर से काम कराने की व्यवस्था की। कांपते हुए, मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ और जैसे ही मैंने पाया कि मैं आगे की बजाय, पीछे की तरफ चल रहा था, भय के साथ लगभग चीखा। मैं डगमगाया और फिर से गिरा। ये वास्तव में, एक विकट अनुभव था। वास्तविक रूप से, इस शरीर से मेरा जी मिचला रहा था और मैं डरा हुआ था कि मैं इसकी व्यवस्था करने में सक्षम नहीं हो पाऊँगा।

मैं अपने मुँह के बल, जमीन पर औंधा पड़ा था और चल भी नहीं सकता था, तब मैंने कनखियों से, दो लामाओं को पास में खड़े हुए, और परेशानी, जो मेरे साथ थी, पर उच्चरूप से चिंतित होते हुए देखा। मैं गुर्राया, ''ठीक है, देखो, यदि तुम इस अरुचिकर चीज को कर सकते हो, तुम खुद इस प्रयास को, जो तुम मुझे करने की कह रहे हो, करो!''

अचानक ही लामाओं में से एक ने कहा, ''लोबसांग! तुम्हारी उंगलियॉ ऐंठ रही है; अब अपने पैरों के साथ प्रयास करो''। मैंने ऐसा किया और पाया कि वहॉ पूर्वी और पश्चिमी शरीरों में आश्चर्यजनक अंतर था। मैंने कभी ये नहीं सोचा था कि ऐसी चीज संभव है, परंतु तब मुझे कुछ चीज याद आई, जो मैंने तब, जब मैं जहाज पर इंजीनियर था, सुनी थी; पश्चिमी समुद्रों में, जहाजों का प्रोपैलर एक दिशा में घूमना चाहिए और पश्चिमी समुद्रों में इसे उलटी दिशा में घूमना चाहिए। ये मुझे स्पष्ट जैसा लगा, मैंने खुद से कहा कि मुझे फिर से नये सिरे से प्रारंभ करना चाहिए। इसलिये मैंने शांति रखी, और मैंने अपने आपको शरीर से बाहर जाने दिया, और बाहर से मैंने इसे सावधानी से देखा। जितना ज्यादा मैं इसे देखता था, उतना ही कम मैं इसे पसंद करता था, परंतु तब, मैंने सोचा कि, इसके लिये केवल दोबारा प्रयास करने के अलावा कुछ नहीं था। इसलिये फिर से मैंने असुखदरूप से पतली, ठंडी चीज, जो एक पश्चिमी शरीर था, में निचोड़ा गया।

मैंने अत्यधिक प्रयास के साथ, उठने का प्रयास किया, परंतु फिर से गिर गया, और तब अंत में, कैसे भी, मैं अपने पैरों पर चढ़ने की व्यवस्था कर सका, और मैंने अपनी पीठ को, उस मित्रवत् पेड़ के साथ दबाया।

घर से सहसा एक आवाज आई और एक दरवाजे को झटके से खोला गया। एक औरत, ये कहते हुए, दौड़ती हुई बाहर आई, ''ओह! तुमने फिर क्या कर दिया? अंदर आओ और लेट जाओ।'' इसने मुझे काफी सदमा पहुॅचाया। मैंने अपने साथ के उन दो लामाओं के बारे में सोचा और मैं डरा हुआ था कि उनको देखकर औरत को दौरा पड़ सकता है, परंतु स्पष्टतः, वे उसे पूरी तरह अदृश्य थे। और कि दोबारा फिर, मेरे जीवन की एक और एक आश्चर्यजनक चीज हुई। मैं हमेशा इन लोगों को, जो सूक्ष्मलोक से मुझसे मिलने आते थे, देख सकता था, परंतु यदि मैं उनसे बात करता, तभी कोई दूसरा व्यक्ति अंदर आता, दूसरा व्यक्ति सोचता कि मैं अपने आपसे बात कर रहा था, और मैं पागल होने की ख्याति नहीं पाना चाहता था।

औरत मेरी तरफ आई, और जैसे ही उसने मेरी तरफ देखा, उसके चेहरे पर एक बड़ा भौंचक्का सा प्रभाव आया। वास्तव में, मैंने सोचा कि उसे मिर्गी का दौरा पड़ने वाला है, परंतु उसने स्वयं को नियंत्रित किया, और उसने एक भुजा मेरे कंधों पर रखी।

खामोशी के साथ मैंने सोचा कि शरीर को कैसे नियंत्रित किया जाये, और तब बहुत धीमे

से, एकसमय में एक कदम पर सोचते हुए, मैंने घर की ओर अपना रास्ता लिया, और सीढ़ियों पर ऊपर गया, और उस पर, जो स्पष्टतः मेरा पलंग था, पसर गया।

पूरे तीन दिनों तक, मैं अस्वस्थता की पैरवी करते हुए, उस कमरे में रहा, जबकि मैंने अभ्यास किया कि अपने आपको बनाये रखने का प्रयास करते हुए, शरीर से काम, जो मैं कराना चाहता था, कैसे कराया जाये, क्योंकि ये सचमुच ही भयानक अनुभव कराने वाला अनुभव था, जो मैंने अपने जीवन में पाया। मैंने चीन और तिब्बत में, तथा जापान में, सभी प्रकार के कष्ट सहन किये थे, परंतु किसी दूसरे व्यक्ति के शरीर में कैद हो जाने और उसको नियंत्रित करने का अनुभव, एक नया और पूरी तरह से क्रांतिकारी अनुभव था।

मैंने उसको सोचा, जो मुझे अनेक वर्षों पहले, काफी वर्षो पहले, जो वास्तव में, एक अलग जीवन दिखाई देता था, पढ़ाया गया था। ''लोबसांग'' मुझे बताया गया था, ''काफी दिनों पहले, इस तंत्र के काफी दूर, परे के महान प्राणियों, और उन प्राणियों को, जो मानवाकृति में नहीं थे, विशेष उद्देश्यों के लिये, इस पृथ्वी पर आना पड़ता था। अब, यदि वे अपने ही वेश में आते, तो वे अत्यधिक ध्यान आकर्षित कर सकते थे, इसलिये हमेशा उनके पास वे शरीर, जिनमें वे प्रवेश कर सकते थे और जिन्हें वे नियंत्रित कर सकते थे, होते थे, और उस स्थान के मूल निवासी प्रतीत होते थे। आने वाले दिनों में, ''मुझे बताया गया था कि, ''तुमको एक ऐसा अनुभव होगा, और तुम इसे पूरी तरह से झटका देने वाला पाओगे।'' मैंने पाया!

उन लोगों के लाभ के लिये, जो असल मे अभिरुचि रखते हैं, मुझे परकाया प्रवेश के सम्बंध में कुछ बातें कहने दें, क्योंकि वास्तव में, मुझे दुनियॉ को इतना अधिक बताना है, और फिर भी, प्रेस के लोगों की निन्दा के कारण, मेरी कहानी पर विश्वास न करने के लिये, ठगा गया है। मैं आपको अगली पुस्तक में, इस सम्बंध में और अधिक बताऊँगा, परंतु एक बात जो मैं करने जा रहा था, लोगों को ये बताना था कि परकाया प्रवेश कैसे काम करता है, क्योंकि इसके अनेक लाभ हैं। उन पर एक निश्चित संभावना के रूप में सोचें, जो मैं आपके सामने रखने जा रहा हूँ; मानव जाति ने एक संदेशवाहक को चंद्रमा पर भेजा है, परंतु मानव जाति नहीं जानती कि गहरे अंतरिक्ष में कैसे यात्रा की जाये। ब्रह्मांड की दूरियों की तुलना में, चंद्रमा की यात्रा, पूरी तरह से महत्वहीन होकर फीकी पड़ जाती है। एक अंतरिक्ष यान को कुछ दूसरे तारों तक यात्रा करने के लिये, अनेक लाख वर्ष लगेंगे। और फिर भी, एक आसान तरीका है, और मैं आपसे पूरी तरह निश्ंचित होकर कहता हूँ कि सूक्ष्मलोक की यात्रा, वह तरीका है। ये उन प्राणियों के द्वारा (मैं प्राणियों कहता हूँ क्योंकि वे मानव आकृति में नहीं हैं), जो पूरी तरह से भिन्न निहारिकाओं से आते हैं, पहले की जा चुकी हैं, ये अभी भी की जा रही हैं। वे इस क्षण में भी यहॉ मौजूद हैं, वे सूक्ष्मयात्रा के द्वारा आये हैं, और जैसे कि पुराने लोग किया करते थे, उनमें से कुछ ने, मानव शरीरों को प्राप्त कर लिया है।

मानव, यदि वे जानते कि समय और आकाश से ऊपर उठते हुए, सूक्ष्मलोक के यात्रियों को कहीं भी, कैसे भेज सकते थे, सूक्ष्मलोक की यात्रा, उतनी तेज हो सकती है, जैसे कि विचार, और यदि आप नहीं जानते हैं कि विचार कितने तेज होते हैं, तो मैं आपको बताऊँगा कि ये सूक्ष्मशरीर की यात्रा के द्वारा यहॉ से मंगल तक जाने में, एक सेकंड का दसवां भाग लेंगे, परंतु आने वाले दिनों में, सूक्ष्मशरीर की यात्रा के द्वारा, एक विश्व में जाने और वहॉ परकाया प्रवेश के द्वारा उस विश्व के किसी शरीर में प्रवेश करने में, अन्वेषक सफल होंगे, ताकि उन्हें प्रथम अनुभव की चीजें, प्राप्त हों। अब, ये वैज्ञानिक गल्पकथा नहीं है। ये परम सत्य है। यदि दूसरे विश्वों में, दूसरे लोग इसे कर सकते हैं, तब पृथ्वी के लोग भी इसे कर सकते हैं। परंतु मुझे दुखपूर्वक कहना पड़ता है कि शुद्ध रूप से झूठे संदेह, जो मेरे शब्दों के ऊपर थोपा गया है, के कारण, ये विशिष्ट पहलू, लोगों को सिखाने में सफल नहीं हो सका।

दुर्भाग्यवश, जब कोई किसी शरीर को लेता है, वहॉ निश्चित गंभीर अक्षमतायें होती हैं। मुझे एक उदाहरण देने दें; एक शरीर लेने के तत्काल बाद ही, मैंने पाया कि मैं संस्कृत नहीं लिख सकता था, मैं चीनी नहीं लिख सकता था, ओह हॉ, निश्चितरूप से, मैं भाषा को जानता था, मैं जानता था कि मैं क्या लिख रहा हूॅ, परंतु शरीर जिसमें मैं गया था, ऐसी टेढ़ीमेढ़ी चीजों को करने के लिये, जैसी कि संस्कृत या चीनी थीं, ''ढला हुआ'' नहीं था। ये केवल उनका पुर्नउत्पादन करने में सफल था, जैसे कि शब्द इंगलिश, फ्रेंच, जर्मन और स्पेनिश अक्षर।

ये सब मांसपेशियों के नियंत्रण से होता है। आपके पास वही चीजें पश्चिम में भी होती हैं, जब आप पाते हैं कि अधिकांश अंग्रेजों की तुलना में, अच्छी शिक्षा के साथ एक सुशिक्षित जर्मन, हमें कहने दें, फिर भी, अंग्रेजी को वैसा नहीं बोल सकता, जैसे कि मूलनिवासी बोलते हैं। वह स्वरों के लिये, अपनी जीभ को आसपास नहीं घुमा सकता। इसलिये कोई बात नहीं, वह कितना भी उच्चशिक्षित क्यों न हो, वह फिर भी ध्वनियों को ठीक से नहीं कह सकता। लगभग सार्वभौमिक रूप से, ये कहा जाता है कि उस तरीके को देखकर, जिसमें वह अपने शब्दों का उच्चारण करता है, आप हमेशा बता सकते हैं कि कोई व्यक्ति किसी जिले का मूलनिवासी है कि नहीं, अर्थात् क्या वह अपने स्वरतंतुओं की वैसी व्यवस्था कर सकता है, जैसे कि मूलनिवासी करते हैं या आदत कुछ विसंगतियॉ लाती है, जिसमें मूलनिवासी पिछड़े होते हैं। किसी दूसरे शरीर में स्थानांतरण करने में, कोई सभी ध्वनियॉ आदि कर सकता है, क्योंकि शरीर उन ध्वनियों को पैदा कर रहा है, जिनके लिये वह अभ्यस्त है, उदाहरण के लिये अंग्रेजी, फ्रांसीसी, या स्पेनिश, परंतु जब लिखने का मामला आता है, तो ये पूरी तरह से अलग बात है।

इस तरीके से देखें; कुछ लोग चित्र बना सकते हैं या वे पेन्ट कर सकते हैं। इसलिये हम कहें कि इन लोगों, कलाकारों के पास, निश्चित प्रकार के कुछ अनियमित संचालनों, वे कुछ, जिनका एक निश्चित अर्थ है, की एक क्षमता है। अब, जबतक कि कोई व्यक्ति जन्मजात कलाकार नहीं है, प्रशिक्षण और अत्यधिक अभ्यास के बाद भी, उसी प्रजाति के अधिकांश लोग, उसे नहीं कर सकते, उसकी कलाकृतियॉ स्वीकार्य नहीं समझी जा सकतीं। जब कोई पूर्वी अस्तित्व पश्चिमी शरीर को ले लेता है, तो उसी प्रकार की चीजें होती हैं। वह भाषण में तो संप्रेषित कर सकता है, और वह उस सब को, जो लिखने में किया जा सकता था, जान सकता है, परंतु, वह उसमें, जो उसकी मूल भाषा जैसे कि संस्कृत, चीनी या जापानी थी, लिख नहीं सकता क्योंकि, इसमें अनेक वर्षों के अभ्यास की आवश्यकता होती है, और उसके प्रयास इतने अनिश्चित, इतने अपरिष्कृत होते हैं कि, संकेतों का कोई समझने योग्य अर्थ नहीं होता।

दूसरी कठिनाई ये है कि अस्तित्व पूर्वी है, और शरीर या वाहन पश्चिमी है। यदि आप इसे अजीब पायें, मुझे कहने दें, कि यदि आप इंग्लैंड में होते, तो आप एक कार को सीधे हाथ के नियंत्रणों से चला रहे होते, ताकि आप सड़क पर दायीं ओर चलते, परंतु यदि आप अमेरिका में हैं, आप उस कार को, जिसमें स्टियरिंग व्हील बायें हाथ की ओर है, चला रहे होते और आपको सड़क पर दायीं ओर चलना होता। हर आदमी इसे जानता है, एह? ठीक है, आप कुछ बेचारे, अभागे, ड्राइवर को ले लेते हैं, जो इंग्लैंड में पतली गलियों में चलाने का अभ्यस्त है, अचानक ही आप उसे बाहर उठा लेते है और उस बेचारी गरीब आत्मा को अमरीकी कार में थोप देते है और बिना किसी शिक्षा के उसे अमरीकी सड़कों पर खुला छोड़ देते हैं। बेचारे गरीब के पास अधिक अवसर नहीं होंगे, क्या होंगे? क्या वह लंबे समय जीवित रहेगा। उसके बनायी हुई सभी प्रतिक्रियायें, जो आधे जीवन काल में प्रशिक्षित की जा सकती थीं, अचानक ही उल्टी हो जाने के कारण चीखेंगी और आपातकाल के समय, वह तत्काल ही, सड़क पर गलत पक्ष में चलाने लगेगा, और दुर्घटनाओं का, जिन्हें वह बचाने का प्रयास कर रहा था, कारण बनेगा। क्या आप इसे स्पष्टतः जानते हैं? मेरा विश्वास करें कि मैं ये सब जानता हूॅ, ये सब मेरे

साथ हुआ है। इसलिये, परकाया प्रवेश, अदीक्षित लोगों के लिये नहीं है। मैं इसे पूरी गंभीरता के साथ कहता हूँ, यदि लोग ठीक ज्ञान पा सकते, परकाया प्रवेश में बहुत कुछ किया जा सकता था और मुझे आश्चर्य है कि रूसी लोगों ने भी, जो अनेक चीजों में काफी आगे हैं, अभी तक परकाया प्रवेश के प्रकरण में टक्कर नहीं ली है। ये आसान है, यदि आप जानते है कि कैसे। ये आसान है, यदि आप उपयुक्त सावधानियॉ ले सकते हैं। परंतु यदि आप इन चीजों को पढ़ाने का प्रयास करेंगे, जैसा मैं कर सका, आपको काफी विचारहीन बच्चे, या प्रेस के लोग मिलेंगे। तब अधिकांशतः कोई उसे प्रारंभ कर सके, उससे पहले ही पूरी चीज नकारात्मक हो जाती है।

दूसरा बिन्दु, जिस पर विचार किया जाना है, वह है एक उपयुक्त वाहन या शरीर का प्राप्त करना, क्योंकि आप किसी के शरीर में वैसे ही नहीं कूद सकते और एक डाकू की तरह से, एक कार, जो यातायात के सिग्नल पर रुकी हुई है, में प्रवेश करते हुए, शरीर को नहीं ले सकते। ओह नहीं, ये उससे भी अधिक कठिन है। आपको एक शरीर का पता लगाना है, जो आपके शरीर के साथसाथ लयबद्ध है, जो कहीं भी लयबद्ध है, और कुल मिलाकर, इसका ये अर्थ नहीं है कि शरीर धारण करने वाला अच्छा हो या खराब, इससे कोई लेनादेना नहीं है; इसे उस शरीर के कंपन सम्बंधी आवृतियों के साथ लेनादेना है।

यदि आप रेडियो में रुचि रखते हैं, आप जान जायेंगे कि आपके पास, हम कहें, एक सुपर हैटरोडाइन रिसीवर (super-heterodyne receiver) है, जिसमें ट्यूनिंग करने वाले तीन संधारित्र (condensers) लगे हुए हैं। अब यदि सैट ठीक से काम कर रहा है, तो आप स्पष्टता के साथ एक स्टेशन पा जाते हैं, परंतु जैसे ही आप सन्नादियों (harmonics), भिन्न भिन्न तरंगदैर्ध्यों या भिन्न आवृतियों पर चलते हैं, आप वास्तव में, वही संकेत प्राप्त करते हैं। कुल मिलाकर, ये एक ही चीज है। आवृति में कोई केवल चक्रों, जिनमें तरंग धनात्मक से ऋणात्मक की ओर परिवर्तित होती है, की संख्या को गिनता है, परंतु, जब आप एक तरंगदैर्ध्य लेते हैं, आप केवल तरंग की दो पड़ौसी चोटियों के बीच की दूरी नापते हैं। ये वैसा ही है, जैसे कि एक गुलाब को किसी दूसरे नाम से पुकारना, परंतु जो मैं आपको बताने का प्रयास कर रहा हूँ, क्या ये संभव है, परंतु दूर भविष्य के दिनों में, यहॉ पृथ्वी पर, ये एक रोजमर्रा की चीज होने वाली है।

परंतु थेम्स डिटान की तरफ वापस। लंदन के बड़े शहर के अनेक उपनगरों में से एक, ये एक छोटा सुंदर शांत स्थान था। मैं विश्वास करता हूँ कि इसे लंदन की उपशायिकाओं (dormiroties) में से एक कहा जा सकता है। इस स्थान में काफी संख्या में पेड़ थे, और हर सुबह, कोई व्यापारियों को थेम्स डिटान स्टेशन, जहॉ वे एक रेल पा सकें, जो उन्हें विंबलडन (Wimbledon) या लंदन के दूसरे हिस्सों में ले जाये, ताकि वे अपना रोजाना का कार्य कर सकें, की ओर भागते हुए देख सकता था। शेयर के दलाल, बीमा के आदमी, बैंक वाले, और शेष सभी प्रकार के अनेक लोग, लंदन के शहर में से थे। जहॉ मैं रहता था, वह कुटीर अस्पताल (Cottage Hospital) के ठीक सामने था। उससे दायीं ओर काफी दूर जाने पर, किसी को एक प्रकार का खेल का मैदान मिलता था, और खेल के मैदान से लगा हुआ, मिल्क मार्केटिंग बोर्ड (Milk Marketing Board) नाम का एक बड़ा भवन था।

थेम्स डिटान ''अच्छी श्रेणी'' का था और कुछ ध्वनियॉ, जिन्हें मैं अपनी खुली हुई खिड़कियों में से सुन सका, अत्यधिक अच्छी श्रेणियों की थीं, क्योंकि मैंने, कुछ भारी जोर के साथ ध्वनियों को, वास्तव में, समझने में मुश्किल पाया। परंतु बोली मेरे लिये कभी आसान नहीं थी। इससे पहले कि मैं एक ध्वनि निकाल सकूँ, मुझे सोचना पड़ता था और तब मुझे ध्वनि, जो मैं कहने का प्रयास कर रहा था, की आकृति को देखना पड़ता था। अधिकांश लोगों की बोली स्वाभाविकरूप से आती है। आप बिना किसी परेशानी के, बिना किसी महान विचार के बड़बड़ा सकते हैं, परंतु तब नहीं जबकि आप एक पूर्वी हैं, जिसने पश्चिमी शरीर को लिया है। आज के दिन भी, मुझे सोचना पड़ता है कि मैं क्या कहने वाला हूँ,

और यह मेरी बोली को, कुछ हद तक धीमा दिखने वाला, और कई बार संकोचशील बना देता है, यदि कोई शरीर को लेता है, पहले साल या दो सालों के लिये, शरीर मूलभूत रूप से मेजवान, अर्थात् जो लिया गया था, का रहता है। परंतु समय के अंतराल में शरीर की आवृति बदलती है, और अंततः वह किसी के मूल शरीर के समान आवृति की हो जाती है, और किसी की मूलभूत प्रकट होती है। ऐसा है, जैसा मैंने आपको पहले कहा, इलेक्ट्रोप्लेटिंग या इलेक्ट्रोटाइपिंग की भांति, क्योंकि अणु, अणु से बदलता है। ये अत्यधिक कठिन नहीं होना चाहिए, क्योंकि यदि आप में एक चीरा लगा है, और चीरा स्वस्थ हो जाता है, तब आपको विस्थापित अणु मिलते है, क्या नहीं मिलते? वे, वे ही अणु नहीं होते, जिनमें चीरा लगाया गया था, परंतु नई कोशिकायें होती हैं, जो किसी के चीरे को विस्थापित करने के लिये पैदा हुईं थीं। परकाया प्रवेश में भी कुछ कुछ वैसा ही है। शरीर, लिया गया विदेशी शरीर होना बंद कर देता है; बदले में अणु को अणु से बदलते हुए, ये किसी का खुद का शरीर हो जाता है, जो किसी ने खुद पैदा किया है।

परकाया प्रवेश की जानकारी का केवल मात्र आखिरी टुकड़ा। ये किसी को ''भिन्न'' बना देता है। ये सहायकों को, किसी के समीप होने की एक विशिष्ट भावना देता है और यदि एक परकाया प्रवेशित व्यक्ति, दूसरे को अनपेक्षित ढंग से छूता है, तो वह दूसरा व्यक्ति, अचानक ही चीखते हुए कह सकता है ''ओह अब तुमने मुझे कलहंस के मुंहासे (goose pimples) दिये है'' इसलिये यदि आप परकाया प्रवेश का अभ्यास करना चाहते हैं, तो आपको इसके लाभों के साथसाथ, हानियों पर भी विचार करना पड़ेगा। आप जानते हैं कि दूसरे के द्वारा पहला हमला किये जाने की प्रतीक्षा में, आवारा कुत्ते, अकड़ी हुई टांगों से किस प्रकार एक दूसरे के आसपास सूंघते हैं,? ठीक है, ये वह है, जिससे मैंने पश्चिमी जगत के लोगों को अपनी ओर पाया। वे मुझे नहीं समझते, वे नहीं जानते कि ये सब किसके बारे में है, वे महसूस करते हैं कि वहॉं कुछ बात अलग है, और वे नहीं जानते कि क्या है, इसलिये अक्सर उन्हें मेरे सम्बंध में अनिश्चितता रहेगी। वे नहीं जानते कि वे मुझे पसंद करते हैं, कि वे मुझ पूरी तरह नापसंद करते हैं। ये वास्तव में, परेशानियॉं पैदा करता है, परेशानियॉं, जो इस तरह से प्रकट होती हैं कि पुलिस के सिपाही, सीमा तट के अधिकारी, हमेशा मेरे प्रति शंकित रहते हैं। सीमा तट के अधिकारी, मुझे सबसे खराब मानने को हमेशा तैयार रहते हैं, और आव्रजन अधिकारी, हमेशा मुझसे और अधिक जानना चाहते हैं क्यों, कैसे और कब इत्यादि, इत्यादि। ये किसी को प्रभावी रूप से, ''स्थानीय मूल निवासियों'' को अस्वीकार्य बना देता है। परंतु, अब हमें अगली पुस्तक की ओर जाना चाहिए। इससे पहले कि हम यहॉं से चलें, एक अंतिम शब्द है कि, जो मैंने पूर्वी लोगों, जो परकाया प्रवेश में गये हैं, के सम्बंध में लिखा, यदि किसी प्रकार से आप इसे समझने में कठिन पायें, और अपनी भाषा में लिखने में समर्थ हैं, यदि आप दायें हाथ से काम करने वाले हैं, तो आप इसे दायें हाथ से और तब इसी चीज को पुनः अपने बायें हाथ से लिखें।

इस प्रकार तीसरी पुस्तक—परिवर्तनों की पुस्तक, समाप्त हुई।

पुस्तक चारः

जैसा ये अब है!

अध्याय दस

आकाशीय अभिलेख के, ब्रह्मांडीय ज्ञान के समुद्र में नीचे की ओर झाड़ू लगाने की भॉति, सूर्य का प्रकाश, शांत नदी को इतने शानदार ढंग से खेते हुए, उसे नीचे समुद्र की ओर धकेलते हुए, फिसलता रहा, परंतु, यहॉ ये नदी मेरे ध्यान को घेर रही थी। जैसे ही कोई पत्ती, कभीकभार, समीप से तैरती हुई जाती, मैं अधमुदीं ऑखों से, स्पंदनयुक्त सतह पर, सभी छोटे धब्बों के ऊपर देखता। सहसा वहॉ एक खड़खड़ाहट और स्पंदन हुआ, और तीन जलीय चिड़ियॉ, सतह पर पानी की बड़ी छपछपाहट के आनन्द के साथ, नीचे आईं। कुछ क्षणों के लिये, उन्होंने पानी को आपस में एकदूसरे के ऊपर फेंकते हुए, नीचे अपने पंखों में कुरेदते हुए, और सामान्यतः अच्छे पक्षियों से संबंधित समय को गुजारते हुए, पानी को आसपास उछाला। तब, मानो कि किसी अचानक संकेत पर, उन्होंने अपने पंखों को फैलाया, अपने पैरों को पैडलों की भॉति चलाया, और लहरों के, तीन बढ़ते हुए छल्लों को अपने पीछे छोड़ते हुए, एक विशेष आकृति में उड़ान भरी।

सूर्य के प्रकाश ने, पेड़ों की पत्तियों में होकर, प्रकाश के विभेदनयुक्त धब्बे बनाये तथा मेरे सामने वाले पानी के किनारे पर छाया बनाई। धूप कुनकुनी थी। मैं पीछे लेटा रहा और भिनभिनाती आवाज के प्रति सावधान हुआ। धीमे से, मैंने अपनी ऑखें खोलीं, और वहॉ ठीक मेरी नाक के सामने, अत्यंत रुचि के साथ मुझे देखती हुई, एक मक्खी थी। तब, मानो कि ये तय करते हुए कि मैं अमृत या जो कुछ भी ये हो, जिसे मक्खियॉ चाहती हैं, का उपयुक्त स्रोत नहीं होऊँगा; ये और तेजी से भिनभिनाई, और एक पेड़ की छाया में शरण लिये हुए किसी फूल की ओर मुड़ गई। जैसे ही इसने व्यस्ततापूर्वक एक फूल की जॉच की, मैं इसे वहॉ दूर घूमते हुए सुन सका, और तब वह पीछे की तरफ बाहर आई और मैंने देखा कि उसकी टांगें और शरीर, पीले फूल के पराग से ढका हुआ था।

थेम्स डिटान में, यहॉ टेम्स नदी के बगल से, हैम्पटन कोर्ट के बड़े महल के सामने, पेड़ों के नीचे झुकना, सुखदायक था। मेरा ध्यान घूमा, और मेरा ख्याल है, मुझे झपकी आ गई। ये जो कुछ भी था, मैं अचानक ही कुछ दूरी पर शोर के प्रति सजग हो गया। मेरी दृष्टि, लंदन की मीनार से नीचे की तरफ आती हुई, और अपने तात्कालिक मनभावन पुरुष मित्र और अपने सेवकों के तामझाम के साथ, जो उसके शाही वृत्तों में अपरिहार्य दिखाई देता था, रानी एलिजाबेथ प्रथम को लाती हुई शाही नौका पर गयी।

शाही नौका पर संगीत बज रहा था, और ऐसे संगीत का बजना, जबकि टेम्स में ऊपर की ओर आ रहे हों, मुझे बेतुका दिखाई दिया, परंतु मैं चप्पुओं की छपछपाहट, और मौजमस्ती तथा धमालों की फूटन को सुन सकता था। वहॉ काफी खिलाखिलाहट थी, और अपनी अर्द्धनिद्रा की स्थिति में, मैंने स्वयं में सोचा कि एलिजाबेथ के पुराने दिनों में, लोग निश्चितरूप से वैसे व्यवहार नहीं करते थे, जैसे कि आजकल के किशोर व्यवहार करते हैं।

मैंने अपनी ऑखें खोलीं और ठीक मोड़ के आसपास आती हुई, किशोरों से भरी हुई, और नाव पर एक ग्रामोफोन के साथ एक रेडियो रखे हुए, एक बड़ी डोंगी थी। दोनों भिन्न भिन्न धुनों का भोंपू बजा रहे थे। वे बातें करते हुए नाव खे रहे थे, और हर एक भिन्न विषय पर बात करता हुआ प्रतीत हुआ, कोई भी, किसी दूसरे पर ध्यान नहीं दे रहा था। वे हेम्पटन कोर्ट गुजार कर आगे बढ़े, और मेरी नजर से गायब हो गये, और थोड़े समय के लिये, फिर सब कुछ शांत था।

मैंने फिर से, महान रानी एलिजाबेथ और टॉवर ऑफ लंदन से हेम्पटन कोर्ट की उसकी यात्राओं के बारे में सोचा; जहॉ मैं किनारे पर लेटा था, उसके लगभग सामने, जैटी रखने का एक स्थल था,

जहॉ वे अपनी नौका को रखा करते थे। खेनेवाले समीप आ जाते थे, और तब रस्से फैंके जाते थे और नाव को इतना धीमे से खींचा जाता था कि, वह रानी के संतुलन को खराब न करे, क्योंकि वह एक बहुत अच्छी नाविक नहीं थी, टेम्स पर भी नहीं! हेम्पटन कोर्ट स्वयं ही एक स्थान था, जिसे मैं मोहित करने वाला पाता था। मैं अक्सर वहॉ जाता था, और कुछ असामान्य स्थितियों में भी, मैं स्पष्ट देख सकता था कि वह स्थान, वास्तव में, उन लोगों की आत्माओं से शापित था, जिनके शरीर काफी समय पहले गुजर चुके थे।

परंतु वहॉ, मेरे पीछे, काफी बातचीत जारी थी, और मैं पीछे घूमा और वहॉ चार लोगों को देखा। ''ओह मेरे भगवान,'' एक औरत ने कहा, ''तुम इतने स्थिर थे, कि तुम पिछले दस मिनट से हिले नहीं हो, कि हमने सोचा कि तुम मर गये!'' इसके साथ ही वे बातें करते हुए, और बातें करते हुए, चल दीं। मैंने सोचा, विश्व में अत्यधिक शोर है, हर कोई बातें बहुत अधिक करता था, और कहने को बहुत कम था। मन में उस विचार के साथ, मैंने अपने आसपास देखा। वहॉ, टेम्स नदी में, मेरे सामने, कुछ नावें थीं। मेरे ठीक बायीं ओर, ठीक नीचे, एक बूढ़ा आदमी था, जो मानो फादर रहा होगा। वह वहॉ एक पुराने पेड़ की ठूंठ की तरह से टिका हुआ था। उसके मुॅह में एक पाइप था और उससे धुऐं की एक धुंधली बाड़ बाहर आ रही थी। उसके सामने, एक छड़ी से बंधी हुई, मछली पकड़ने वाली एक बंशी थी, जिसका तैरने वाला लाल और सफेद भाग, ठीक मेरे सामने उछल रहा था। थोड़े समय के लिये, मैंने उसे देखा, वह बिलकुल नहीं हिला, और मैंने आश्चर्य किया कि लोग मछली मारने में क्या पाते हैं। मैं इस निष्कर्ष पर पहुॅचा कि ये किन्हीं वयस्क लोगों की ओर से, मात्र एक बहाना था, ताकि वे शांत रह सकें और ध्यान कर सकें, भूत का सोचें और आश्चर्य करें कि भविष्य उनके लिये क्या रखता है।

भविष्य? मैंने खतरे में अपनी घड़ी की ओर देखा, और तब अपने पैरों पर खड़े होने की जल्दी की और पुरानी सायकल, जो किनारे पर, मेरे बगल से पड़ी थी, पर सवार हुआ।

और सामान्य की तुलना में अधिक जल्दी के साथ, मैंने सड़क पर दायीं ओर, आसपास और इसलिये पश्चिमी मोलेसे (Molesey) के पथ पर, जहॉ रोजगार दफ्तर था, पैडल मारे।

परंतु नहीं, वहॉ मेरे लिये कोई रोजगार नहीं था, नौकरी का कोई प्रस्ताव नहीं। ऐसा लगता था कि लोग काफी सारे हैं, और नौकरियॉ काफी कम, और जैसे ही एक आदमी ने मुझे रुखाई से कहा, ''ठीक है दोस्त, तुमने अपनी नौकरी छोड़ दी और तुम्हें करनी भी नहीं है, इसलिये, चूॅकि तुमने उसे छोड़ा है और उसे नहीं करना है, तुमको कुछ भी भुगतान प्राप्त नहीं होगा, देखो। इसलिये ये सकारण ही बैठता है कि सरकार ऐसे किसी व्यक्ति को भुगतान करने नहीं जा रही है, जो नौकरी छोड़ चुका है, क्योंकि पहले उसके पास एक नौकरी थी, जो उसने छोड़ दी, इसलिये तुम्हें कोई अंशदान नहीं मिलेगा, और जबतक तुम्हें कोई बेकारी भत्ता (dole) नहीं मिलता, तब तक रोजगार दफ्तर तुम्हें कोई काम नहीं देगा। दफ्तर उन लोगों के लिये रोजगार रखता है जिन्हें बेकारी भत्ता मिलता है, क्योंकि, यदि वह उस व्यक्ति को एक नौकरी दे देते हैं, तो उसे बेकारी भत्ता नहीं देना पड़ता, इसलिये उनकी आंकिकी (statistics) अच्छी दिखती है।

मैंने व्यावसायिक कामदिलाऊ एजेंसियों में, वे स्थान जहॉ आप जाते हैं और पैसे का भुगतान करते हैं, और जहॉ सिद्घाततः वे आपके लिये नौकरी तलाशते हैं, प्रयास किया। मेरा खुद का अनुभव, विशेषरूप से दुर्भाग्यपूर्ण रहा हो सकता है, परंतु कई बार प्रयास करने के बावजूद भी, उनमें से किसी ने मुझे, कभी भी, नौकरी का प्रस्ताव नहीं दिया।

मैंने टेम्स डिटान जिले के आसपास, कई फालतू चीजों की व्यवस्था की, और मैं कुछ ऐसे चिकित्सीय कार्य करने में सक्षम था, जिन्हें कि पुरातनपंथी (orthodox) डॉक्टर नहीं कर पाते थे, या नहीं करते थे, और मैंने अच्छी तरह सोचा, कि मैं पूरी तरह से अर्हता प्राप्त (qualified) चिकित्सीय आदमी हूॅ, और ऐसा सिद्ध करने के लिये मेरे पास कागजात थे, इसलिये मैं अपने आपको, इंग्लैंड में

पंजीकृत कराने का प्रयास क्यों न करूं?

बाद में, कई बार, मैंने अनौपचारिकरूप से, जनरल मेडीकल काउंसिल को पहुँच की। वास्तव में, मैं उनके स्थान पर गया और उन्हें इस सम्बंध में बताया। उन्होंने मुझे कहा कि हॉ मेरे पास सभी अर्हतायें थीं, परंतु दुर्भाग्यवश, चुंगकिंग अब साम्यवादियों के हाथों में था, और चूंकि वे एक साम्यवादी देश में प्राप्त की गई थीं, उन्होंने कहा, कि मैं केवल अपनी पात्रता मात्र से, मान्यताप्राप्त (recognÁed) होने की आशा नहीं कर सकता था।

मैंने अपने कागजात प्रस्तुत किये और इन्हें सीधे ही, सचिव की नाक में ठूंस दिया। मैंने कहा, ''देखिये, जब ये कागजात तैयार किये गये थे, चीन एक साम्यवादी देश नहीं था। वह इंग्लैंड फ्रांस, अमेरिका, और दूसरे अनेक देशों का मित्र था। ठीक वैसे ही, जैसे कि इंग्लैंड के लोग शांति के लिये लड़े थे, मैं शांति के लिये लड़ा और क्योंकि मैं एक अलग देश में था, इसका कहने का मतलब ये नहीं है, कि मेरे पास, जैसी कि आपके पास हैं, भावनायें नहीं हैं।'' वह गुनगुनाया और बड़बड़ाया, और आसपास भुनभुनाया, और तब उसने कहा, ''एक महीने के समय में वापस आओ। हम देखेंगे कि क्या व्यवस्था की जा सकती है। हॉ, हॉ मैं पूरी तरह सहमत हूँ, तुम्हारी अर्हतायें ऐसी हैं कि उनको मान्य किया जाना चाहिए। केवल चीज, जो मान्यता को लटका रही है, वह ये है कि चुंगकिंग अब एक साम्यवादी देश का शहर है।''

इसलिये मैंने उसके कार्यालय को छोड़ दिया, और मैं बोतलों में रखे सभी नमूनों को देखने के लिये, हन्टेरियन संग्रहालय (Hunterian Museum) गया और तब मैंने सोचा कि ये कितना आश्चर्यजनक था कि, मनुष्य हर जगह मनुष्य ही थे, वे सभी मोटे तौर से एक ही ढंग से काम करते थे, और फिर भी, एक व्यक्ति, जो एक देश में प्रशिक्षित किया गया था, उसे दूसरे भिन्न देश के लोगों का इलाज करने के लिये, पात्रता प्राप्त नहीं स्वीकार किया गया। ये सब मेरे परे था।

परंतु नौकरियॉ प्राप्त करना, वास्तव में मुश्किल था, और टेम्स डिटान में जीवनयापन की लागत बहुत अधिक थी। मैंने पाया कि एक विवाहित मनुष्य, जो सिद्धान्तः मैं था, के खर्चे बहुत थे, उसकी तुलना में बहुत अधिक, जब मुझे अकेले ही व्यवस्था करनी होती थी।

पुस्तक की इस स्थिति में, शायद, मैं उन लोगों में से कुछ को, जो मुझे ये पूछते हुए कि मैं, तिब्बत का एक लामा, एक और किसी के साथ, अपनी पत्नी के साथ क्यों रहता हूँ, भयानक आक्रामकरूप से लिखते हैं, उत्तर देने में एक क्षण लूँ। ठीक है, ''महिलायें'' जो इतने आक्रामक ढंग से लिखती हैं, मुझे आपसे ये कहने दें; मैं अभी भी एक भिक्षु हूँ, मैं अभी भी, एक भिक्षु की तरह रहता हूँ और संभवतः आप ''महिलाओं'' में से कुछ ने, वास्तव में, ब्रह्मचारी विवाहितों के सम्बंध में सुना होगा, जिनके पास एक मकान मालकिन, या बहन, जिनके साथ वे बिना आवश्यकरूप से उसकी सोचे हुए रहते हैं! इसलिये ''महिलाओ'', उत्तर है, नहीं, मैं नहीं!

परंतु टेम्स डिटान को छोड़ने का समय आ चुका था, और हम लंदन के और अधिक समीप चले गये, क्योंकि अपने खुद के प्रयासों के द्वारा, मैंने एक नौकरी उपलब्ध करा ली थी। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि एक शरीर के रूप में, जो मैंने अभी प्राप्त किया है, एक अतिरिक्त समय का जीवन था, उसके लिये कोई अवसर नहीं थे। शरीर का पहला मालिक, मैंने आकाशीय अभिलेखों के द्वारा देखा, सत्यतापूर्वक और वास्तव में, आत्महत्या करने जा रहा था, और उसने इस वाहन के साथ, इस शरीर के सभी अवसरों को, जो होते, पूरा कर दिया होता। इस प्रकार, कोई बात नहीं, मैंने कितने भी परिश्रम के साथ प्रयास किये, मैं कभी भी नौकरी, जो कि दूसरा आदमी कर सकता था, नहीं पा सका; मात्र नौकरी, जो मैं ले सकता था, ये थी जो मैंने स्वयं के लिये पैदा की। अब, मैं ये नहीं कहना चाहता कि ये नौकरी क्या थी, न ही मैंने इसे कहॉ किया, क्योंकि इसे इस कहानी से कोई लेना देना नहीं है, परंतु ये हमारी तात्कालिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये और हमको जीवित बनाये रखने के लिये उचित दिखाई

दी। परंतु, मुझे आपको, एक बात जो मुझे बहुत क्रोधित कराती है, बतानी चाहिए, फिर से, मेरे पुराने दुश्मनों पुलिस से संबंधित है। मैं अपनी कार में, पीछे बैठे हुई किसी शरीरविज्ञानी आकृति के साथ, दक्षिण किंग्सटन में होकर कार चला रहा था। ये उन आकृतियों में से एक थी, जो दुकानों को सजाती दिखतीं थीं, या जो कईबार, शल्यचिकित्सा के फिटरों के प्रशिक्षण के लिये दी जातीं हैं। ये आकृति कार के पीछे की सीट पर थी, और जब मैंने इस (यात्रा) को प्रारंभ किया, ये कपड़े से ढकी हुई थी, परंतु मैंने खिड़की खुली रखकर कार चलाई, और मैं समझता हूँ कि सूखी हवा ने, कपड़े का कुछ भाग आकृति पर से उघाड़ दिया।

मैं काफी शांति के साथ, यह सोचते हुए, कि मैं आगे क्या करने वाला था, कार चला रहा था। तभी वहाँ, मेरे बगल से, अचानक जोर की आवाज हुई, जिसने मुझे लगभग छत तक उछाल दिया। मैंने दर्पण में देखा और दो आकृतियों को मेरे प्रति संकेत करते हुए, सड़क के एक बगल में आ जाने के किये इशारा करते हुए पाया। सड़क पर बगल में तमाम कारें खड़ी की हुई थीं, इसलिये मैंने इसे स्थान, जहाँ मैं थोड़ा रुक सकूँ, पाने का प्रयास करने के लिये, थोड़ा सा चलाया। अगली चीज ये थी, पुलिस ने मुझे पकड़ने की सोची और तब कहा कि मैं पन्द्रह मील प्रतिघंटा की चाल से यातायात में होकर भागने का प्रयास कर रहा था।

ठीक है, मैं जहाँ था, आवागमन को अवरुद्ध करते हुए, वहीं रुक गया और मैं उन लोगों के सम्बंध में, जो कारों में थे, थोड़ी सी भी परवाह नहीं कर सका कि वे कैसे पार कर सकेंगे, इसलिये मैं वहीं रुक गया। पुलिस ने मुझे वहीं रुकने और उनके पास जाने का इशारा किया, परंतु मैंने नहीं सोचा कि वे मुझसे मिलना चाहते हैं। मैं उन्हें नहीं मिलना चाहता था, इसलिये मैं केवल बैठ गया। अंततः पुलिस का एक सिपाही, अपनी छोटी छड़ी के साथ, जो पहले से ही उसके हाथ में थी, बाहर निकला। वह ऐसा दिखाई देता था, मानो कि वह गोली चलाने वाले या कुछ वैसे ही किसी दस्ते का सामना कर रहा हो, वास्तव में, वह डरा हुआ दिखाई दिया। लगभग कमोवेश बगल से चलता हुआ, शायद, यदि मैंने गोलीबारी प्रारंभ कर दी, लक्ष्य पर कम ध्यान देता हुआ, धीमे से वह मेरी कार की बगल से आया। तब उसने कार के पीछे देखा और एकदम लाल हो गया।

ठीक है अफसर, ये क्या है? मुझसे क्या किये जाने की आशा की जाती है?'' मैंने उसे पूछा। सिपाही ने मेरी ओर देखा और वह वास्तव में मूर्ख दिखाई दिया, वह पूरी तरह से भेड़ जैसा दिखाई दिया। ''मुझे खेद है, श्रीमान्,'' उसने कहा, ''परंतु हमें कहा गया था कि एक आदमी आसपास कार चला रहा था और पिछली खिड़की से औरत की नंगी टांगें दिखाई दे रहीं थीं।

मैं पीछे पहुँचा और मैंने कपड़े को आकृति के ऊपर से खींचा, और तब मैंने कहा, ''ठीक है, अफसर, इस मॉडल में मुझे जीवन के कोई चिन्ह दिखाओ, मुझे बताओ कि उसकी हत्या कैसे की जा रही है। उसे अच्छी तरह देखो।'' और तब मैंने आकृति को अधिक सावधानी के साथ ढक दिया। पुलिस का सिपाही वापस अपनी कार में गया, और हमारे पीछे की सभी कारें हूट कर रही थीं, मानो कि वे एक समारोह में, हॉल को या किसी वैसी चीज को, भरने का प्रयास कर रही हों। मैं पूरी तरह से खराब गुस्से के साथ, कार चलाकर दूर गया।

पुलिस के साथ एक दूसरा मौका था, जो एक मुस्कान दिखा जगा सकता है; लंदन में, मेरा एक दफ्तर था और ये भूगर्भीय ट्यूब स्टेशन (underground tube station) के अत्यंत समीप था। लगभग मध्यांह भोजन के समय, मेरी पत्नी, अक्सर, मुझसे मिलने आया करती थी और जब वह बिदा होती, मैं उसे ये देखने के लिये कि, उसने सुरक्षापूर्वक व्यस्त लंदन की सड़क को पार कर लिया, खिड़की में से देखा करता था।

एक दिन, मैं काम को समाप्त करने, और घर जाने के लिये तैयार होता ही जा रहा था, जबकि दरवाजे पर, एक जोरदार आधिकारिक दस्तक हुई। मैं खड़ा हुआ और दरवाजे तक गया, और तब वहाँ

पुलिस के दो काफी बड़े सिपाही थे। एक ने कहा, ''हम ये जानना चाहते हैं कि आप यहॉ क्या कर रहे हैं।'' मैं मुड़ा, और उन्हें अपने दफ्तर में आने दिया। उन्होंने रुचि के साथ आसपास देखा और उसका सहयोगी गवाही देने के लिये तैयार हो गया। हर जगह, जहॉ प्रमुख सिपाही ने देखा, उसके सहयोगी ने भी उसे देखा।

मैंने उन्हें बैठने के लिये आमंत्रित किया, परंतु नहीं, वे नहीं बैठे, वे वहॉ आधिकारिक कार्य के लिये थे, उन्होंने मुझे बताया। उन्होंने सोचा था कि मैं कुछ अवैध गतिविधियों में संलग्न था और मैं किसी गिरोह को संकेत दे रहा था।

इसने मुझे, वास्तव में, सदमा पहुॅचाया, वास्तव में, मैं आश्चर्य के साथ, लगभग भौंचक्का रह गया और मैं ठीक से ये भी नहीं समझ सका कि वे किस सम्बंध में बात कर रहे थे। ''आपका जो कुछ भी मतलब हो?'' मैं चीखा। मुख्य सिपाही ने कहा, ''ठीक है, हमको ऐसा सूचित किया गया था कि आप दोपहर के करीब, अजीब अजीब संकेत करते हैं, और हमने आपकी निगरानी की, और हमने वे अजीब संकेत देखे। आप ये संकेत किनके लिये कर रहे हैं?''

इसने मुझे जगा दिया और मैंने हॅसना प्रारंभ किया। मैंने कहा, ''ओ भले भगवान, दुनियॉ कहॉ तक पहुॅच गई है, मैं हाथ हिलाकर, केवल अपनी पत्नी को विदा रहा हूॅ, जबकि मैं देखता हूॅ कि वह सड़क सुरक्षित ढंग से पार कर ले, और ट्यूब स्टेशन पर पहुॅच जाये।''

उसने जवाब में कहा, ''ऐसा नहीं हो सकता; तुम यहॉ से स्टेशन नहीं देख सकते।'' बिना किसी दूसरे शब्द के, मैं अपनी कुर्सी से उठा, खिड़की को खोला, जो ठीक मेरे दायें ओर थी, और कहा, ''देखो और खुद देखो।'' उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा, तब खिड़की तक गये और बाहर देखा। पर्याप्त सुनिश्चित होने के बाद, जैसा मैंने कहा, वहॉ भूगर्भीय स्टेशन था, वहॉ सामने। उन दोनों ने थोड़ा सा रंग बदला, और मैंने अपना रंग थोड़ा सा अधिक संवारने के लिये कहा ''ओह हॉ, मैंने आप दोनों लोगों को देखा है, आप सामने वाले फ्लेट में, उस खंड में थे, मैंने आपको परदों के पीछे छिपने का प्रयास करते हुए देखा है। मैंने आश्चर्य किया था कि आप ऐसा क्या कर रहे थे।''

तब प्रमुख सिपाही ने कहा, ''तुम इस ऑफिस के नीचे वाले तल पर रहते हो। हमें सूचना मिली है कि तुम उस फ्लेट में नीचे यौन गतिविधियों में संलग्न हो,'' मैंने कहा कि काफी हो गया, और मैंने कहा, ''ठीक है, मेरे साथ झीने से नीचे (downstairs) आओ, और सभी नंगी औरतों को खुद देखो।'' वे मेरे रवैये से बिलकुल भी प्रसन्न नहीं थे और उन्होंने आश्चर्य किया कि उन्होंने क्या गलत कर दिया था।

हम साथ साथ सीढ़ियों से एक मंजिल नीचे गये, और मैंने बड़े शोरूम का ताला खोला, जिसकी खिड़कियों पर भारी परदे, बड़े कीमती लेस के नेट, पड़े थे।

परदे पड़ीं खिड़कियों के ऊपर, वास्तव में, लगभग एक फुट वर्गाकार के छोटे हवादान थे, जिन पर परदे नहीं थे।

मैं एक पड़ी हुई आकृति के पास गया, और उसे उठाया और तब कहा, ''देखो, यदि एक व्यक्ति, इसको आसपास ले जाते हुए, यहॉ से यहॉ रख रहा है, '' मैंने प्रदर्शन किया, एक ताकझांक करने वाली, भांजीमार बूढ़ी औरत, जो उस सामने वाले फ्लेट में रहती है, सोच सकती है कि ये एक नंगा शरीर है।''

मैंने आकृतियों पर चपत लगाई, ''ठीक है, उनको देख लो, क्या वे तुम्हें अश्लील दिखाई देती हैं''?

पुलिस के सिपाहियों ने अपना सुर पूरी तरह बदल दिया, और वरिष्ठ ने कहा, ''ठीक है, मुझे खेद है कि आप को कष्ट दिया गया, श्रीमान्, मैं वास्तव में, अत्यधिक दुखी हूॅ, परंतु हमें, एक बहुत वरिष्ठ पुलिस अधिकारी की बहन की ओर से एक शिकायत मिली थी, कि यहॉ अजीबोगरीब चीजें हो

रही हैं। हम उस पर पूरी तरह संतुष्ट हैं, जो हमने देखा। आपको दोबारा कष्ट नहीं दिया जायेगा।''

ठीक है, मैं था! एक शाम को लगभग सात बजे, मुझे अपने दफ्तर जाना था, और मैंने दरवाजे का ताला खोला और अंदर गया, चूंकि मुझे ऐसा करने का पूरा अधिकार था। मैंने वहॉ थोड़ा सा काम किया, जो मुझे करना था और तब वहॉ से छोड़ दिया। जैसे ही मैंने दरवाजे को ताला लगाया, मेरे पीछे पुलिस के दो सिपाहियों ने मुझे बेरहमी से पकड़ लिया, और मुझे पुलिस कार में धकेलने का प्रयास किया। परंतु, मैं अपने अधिकारों को जानता था, और मैंने तत्काल ही, उन्हें सफाई देने के लिये कहा। उन्होंने मुझे बताया कि ऐसी सूचनायें प्राप्त हुई हैं (हॉ, ये वही औरत थी!) कि एक अपराधी सा दिखने वाला आदमी (अर्थात्! मैं) इमारत में तोड़कर घुसते हुए देखा गया था, इसलिये वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि मुझे यहॉ होने का अधिकार था, इसलिये मैंने फिर से ऑफिस का ताला खोला और अंदर गया, और मुझे, वास्तव में, भवन के अभिकर्त्ता को बुलाना पड़ा, जिसने मुझे वह स्थान किराये पर दिया था, और उसने मुझे, मेरी आवाज से पहचाना। एकबार फिर, पुलिस मूर्ख दिखाई दी और बिना एक शब्द कहे चली गई।

उसके शीघ्र बाद ही, मैंने निर्णय किया कि ऐसे कार्यालय में टिकने की कोई तुक नहीं है, जहॉ ये स्पष्ट था कि, सामने वाली बूढ़ी मुर्गी के पास, अपना समय गुजारने के लिये, ये कल्पना करने से, कि वह सभी प्रकार की काल्पनिक अपराधी मामलों की सूचनाऐं, पुलिस की महिला सिपाही को देती है, अच्छा कुछ भी करने के लिये नहीं है। इसलिये मैंने ऑफिस को छोड़ दिया और दूसरी जगह चला गया।

फिर, मैंने उन लोगों के बीच, जो पुरातनपंथी (orthodox) दवाओं से कोई सहायता नहीं पा सके थे, कुछ मनोवैज्ञानिक कार्य किया, और मैंने काफी अच्छा किया, मैंने वास्तव में, किया। मैंने काफी संख्या में लोगों को ठीक किया, परंतु एक दिन एक आदमी था, जिसने मुझे ब्लेकमेल करने का प्रयास किया। इसलिये मैंने सीखा कि जबतक कि कोई, वास्तव में, पंजीकृत न हो, वह अत्यधिकरूप से उन लोगों की कृपा पर होता है, जो प्रसन्नतापूर्वक सभी सहायता, जो पा सकते थे, पा जाते हैं, और तब वे किसी का भयादोहन (blackmail) करने का प्रयास करते हैं, परंतु भयादोहक (blackmailer) को, ठीक है, कुल मिलाकर उसका रास्ता नहीं मिला!

ठीक इसी समय, एक नौजवान महिला हमारे जीवन में आई, अपनी खुद की इच्छा से, अपनी खुद की स्वतंत्र इच्छा से, हमारे जीवन में आई। हमने उसने पुत्री के रूप में माना, और अभी भी मानते हैं, और वह अभी भी हमारे साथ है। परंतु उसका भाग्य, उसने महसूस किया, इस तरह का था कि उसे हमारे साथ रहना पड़ा, और वह रही। बाद में, प्रेस ने ये कहने का प्रयास करते हुए कि ये एक शाश्वत त्रिकोण का मामला है, इस पर बहुत कुछ हंगाामा किया; सत्य की तुलना में, कुछ भी अधिक पक्का नहीं था। हम ''शाश्वत त्रिकोण'' के बजाय, ''मैदान'' में खड़े थे।

इस समय के करीब ही, मुझे लेखकों के एक अभिकर्त्ता से परिचित कराया गया। मैंने सोचा, उसके साथ, मुझे लेखकों की पाण्डुलिपियों को पढ़ने, और उनकी समीक्षा करने का एक काम मिलने वाला है, परंतु नहीं, वह मेरी कहानी को थोड़ा सा जानता था और अपनी खुद की इच्छा के काफी काफी विरोध में, मैंने अपने आपको, एक पुस्तक लिखने के लिये, सहमत होने दिया। कोई, जबकि भुखमरी उसके आसपास कोने में खड़ी हो, अत्यधिक ध्यान करने वाला नहीं हो सकता है, और आप जानते हैं, भुखमरी केवल आसपास कोने में ही नहीं खड़ी थी, ये दरवाजे पर जोर से दस्तक दे रही थी।

इसलिये, मैंने ये पुस्तक लिखी, और तब कुछ लेखकों ने, जो मेरे तिब्बत–ज्ञान से ईर्ष्या रखते थे, मेरा पता लगाने का प्रयास किया। उन्होंने सभी प्रकार की जासूसी एंजेंसियों को लगाया, और एक एजेंसी ने, वास्तव में, 'द टाइम्स' या 'द टेलीग्राफ ऑफ लंदन' में, लोबसांग रंपा के लिये विज्ञापन

दिया; उसे अमुक अमुक पते पर लिखना चाहिए, जहॉ कोई बहुत अच्छी चीज, उसकी प्रतीक्षा में है।

मैं जानता था कि ये एक जाल था। इसलिये मैंने अपने एजेंट श्रीमान् सायरस ब्रुक्स (Mr. Cyrus Brooks) को बताया। उसने अपने दामाद से फोन कराया कि ये सब किस सम्बंध में था। हॉ, ये वास्तव में, ये एक जाल था। जर्मनी का एक लेखक जबरदस्त अपमानित था कि मैंने तिब्बत के बारे में लिखा है, जबकि उसका सोचना था कि ये उसका निजी, अलंघनीय (invioble) क्षेत्र था, इसलिये उसने मुझे चिन्हित करने का प्रयास किया, ताकि वह ये निर्णय कर सके कि वह मेरे विरुद्ध क्या कार्यवाही कर सकता था।

लगभग इसी समय, लोग उस नौजवान महिला के साथ जुड़े, जो हमारे साथ रह रही थी। उन्होंने नापसंदगी भरा विचार दिया कि मैंने उसे बरबाद किया है। मैंने नहीं किया था, और उन्होंने मेरे बारे में पता लगाने का प्रयास करते हुए, एक निजी जासूस लगाया। परंतु ये बेचारा, ठीक है, मुझे ऐसा लगा, कि वह उतना प्रखर नहीं था। उसने कभी मेरे संपर्क में आने का प्रयास नहीं किया। मैं आश्चर्य करता हूँ कि वह डरा हुआ या कुछ वैसा ही था। परंतु एक आदमी के रूप में, सीधे ही मुझसे पूछने के बजाय, उसने कानों सुने साक्ष्यों पर विश्वास किया, और जैसा कि हर आदमी को मालूम होना चाहिए, कानों सुनी, वैधानिक साक्ष्य नहीं होती। क्या ऐसा होता है? परंतु दोनों पक्ष, एक साथ आये और वे प्रेस के संवाददाता, जो अपने साथियों के बीच अधिक लोकप्रिय नहीं था, के सामने गये। उन्होंने कुछ जालों का प्रयास किया, जो मैंने सीधे ही देख लिये, परंतु जब बाद में, हम आयरलैंड चले गये, इन लोगों ने ये कहते हुए कि, मैं घर के तले में, काले जादुओं की विधियॉ कर रहा था, कि मेरे पास एक गुप्त मंदिर है; कि मैं सभी प्रकार के यौन व्यभिचार का दोषी हूँ, इत्यादि, और कि मैं अपने व्यावसायिक जीवन में किसी समय पुलिस के द्वारा परेशान किया गया हूँ। ठीक है, ये आसान था, मैं पुलिस के साथ हमेशा परेशान किया जाता रहा हूँ, परंतु मुझ पर कभी किसी प्रकार का अभियोग नहीं लगा, और सत्य रूप में, मैंने पुलिस का ध्यान आकर्षित करने लायक कोई चीज, कभी नहीं की है। परंतु इन सब बातों को, पुराने कष्टों और जली हुई राख, जो जल चुकी है, को कुरदने में, खंगालने में, कोई तुक नहीं है, परंतु यहॉ मैं उस नौजवान महिला के पति की प्रशंसा करना चाहता हूँ। वह एक सज्जन था और सज्जन है, वह बहुत भला आदमी है, वह अभी भी हमारा मित्र है, और चूंकि वह अच्छी तरह जानता था और, वास्तव में, उसने इसकी पड़ताल कर ली है, कि मेरे सम्बंध में बयान, पूरी तरह एकदम गलत थे।

नहीं, मैं इस सम्बंध में और अधिक नहीं कह रहा हूँ, समाचार जगत के सम्बंध में कुछ नहीं, उस नौजवान महिला के रिश्तेदारों के बारे में भी कुछ नहीं। वह अभी भी हमारे साथ है, प्रिय पुत्री के रूप में, अभी भी, हमारे साथ है। इसलिये आप वहॉ हैं, जहॉ तक सब कुछ पूरा है।

जब ये सब कुछ हुआ, हम आयरलैंड चले गये, और एक चीज ने, एक और दूसरी ने, मेरे स्वास्थ्य को बरबाद करने का षड़यंत्र किया। मुझे हार्दिक पक्षाघात (coronary thrombosis) हुआ, और ये सोचा गया था कि मैं मरने वाला हूँ, परंतु समाचार जगत ने जीवन इतना रहस्यमय बना दिया था कि हमें आयरलैंड छोड़ना पड़ा, जो हमने हद दर्जे की अनिच्छा (extreme reluctance) के साथ किया। मेरे वहॉ अनेक मित्र थे, और मैं अभी भी, वहॉ अपने जैसे मित्र रखता हूँ।

हमने आयरलैंड छोड़ दिया और कनाडा गये, जहॉ हम अभी हैं। हम कनाडा में आसपास काफी घूमे, हम विभिन्न शहरों और प्रांतों में गये, परंतु अंत में, हमें डाक में एक पत्र मिला, जिसने हमें अत्यधिक प्रस्तावित (offer) किया।

एक दिन, डाक में एक बड़ा मोटा पत्र आया। डाक टिकट एक देश के थे, जिसको मैं उस समय, उल्लेखनीयरूप से, कम जानता था। ये दक्षिणी अमेरिका का एक देश यूरुग्वे (Uruguay) से था, जो अर्जेंटीना और ब्राजील के बीच में है।

पत्र मजेदार था। इसने मुझे बताया कि पत्र का लेखक, एक बड़ी कंपनी का प्रमुख था। जहॉ वे

छपाई, पुस्तक प्रकाशन, हर तरह का काम करते थे। मुझे कंपनी के खर्चे पर, मॉन्टेविडियो (Montevideo)[44] जाने के लिये कहा गया था, और वहॉ मैं अपना काम जारी रख सकता था, मुझे सचिव, टायपिस्ट, अनुवाद की सेवायें, वास्तव में हर चीज, जो मैं चाहता था, दी जाती। लेखक ने मुझे, एक बड़ी मेज, जिसके ऊपर, उसके सामने आई.बी.एम. का टायपराइटर रखा था, और उसके पीछे बहुत सारी किताबें थीं, और, मेरा ख्याल है, फिलिप्स की इमला बोलने वाली एक मशीन (Phillips dictating machine) भी वहॉ थी, के पीछे काफी प्रभावशाली लगता हुआ, अपना एक फोटोग्राफ भेजा।

हमने इस पर चर्चा की, ''हम'' का अर्थ है, मेरी पत्नी और हमारी दत्तक पुत्री और काफी समय बाद, हमने सोचा कि ये एक अच्छा विचार था। इसलिये हमने सभी आवश्यक जानकारियॉ लीं और लंबे समय बाद, अंत में, क्योंकि औपचारिकताओं ने समय लिया, हमने न्यूयार्क की यात्रा के लिये, फोर्ट एरी, ओन्टारियो, कनाडा (Fort Erie, Ontario, Canada) में एक ट्रेन पकड़ी। हमें कहा गया था कि हम मूरी मैककॉरमैक (Moore-McCormack) जलयान, एक वह जो सामान्यतः बारह यात्रियों को ले जाता था, के लिये बाहर जाने वाले यात्री थे।

न्यूयार्क में सामान्यतः हर चीज, हड़बड़ाहट और हलचल भरी थी। हम रात को बड़े होटलों में से एक में ठहरे, और अगली सुबह, म्यूर–मैककॉरमैक गोदी के लिये, हम न्यूयार्क बंदरगाह पर गये, और जब मैंने पाया कि वह गोदी ठीक उसके सामने थी, जिसपर मैं कई वर्ष पहले तैरकर पहुॅचा था। ऐसा लगा, मैं अत्यधिक आनंदित था, तथापि, मैंने कुछ नहीं कहा, क्योंकि कटु स्मृतियों को कुरेदने में कोई बहुत बड़ा बिन्दु नहीं है, परंतु, मैं स्वीकार करता हूॅ, मैंने नदी की पुलिस के प्रति काफी निगरानी रखी।

हम जहाज पर गये और अपने शाही कमरे खोजे, और उस रात को काफी देर में, चार इंजनों वाले जहाज के डेक पर सामान लादा गया। हम पहले ब्राजील में विक्टोरिया की तरफ चले। वहॉ, इससे पहले कि हम एक बड़े सुरम्य, एक बड़े गर्म छोटे समुदाय में पहुॅचें, हम एक लंबे प्रवेश (inlet) में गये। ये हमारे रुकने का पहला बंदरगाह था। तब हम पास में ही एक स्थान पर गये, ताकि इंजन, जो कि डीजल के इंजन थे, ब्राजील की रेलों के लिये लादे जा सकें।

जबतक कि हमें युरुग्वे में मॉन्टेविडियो जाने की इजाजत नहीं मिली, ब्राजील में, वहॉ दो या तीन और स्टॉप भी थे। परंतु जैसे ही हम मॉन्टेविडियों के समीप पहुॅचे, वास्तव में, हम पुन्टा डेल ऐस्ट (Punta del Este)[45] में थे, रेडियो के द्वारा कप्तान को सूचित किया गया कि हम मॉन्टेविडियो में नहीं उतर सकते, क्योंकि वहॉ गोदी की हड़ताल थी, इसलिये हम पहले ब्यूनसआयर्स (Buenos Aires)[46] गये, जहॉ हम उस बंदरगाह में, लगभग एक सप्ताह के लिये रुके। ये बहुत व्यस्त बंदरगाह था, और

---

44 अनुवादक की टिप्पिणी : रियो डे प्लाटा (Rio de Plata) नदी के उत्तर पूर्वी किनारे पर तथा युरूग्वे के दक्षिणी समुद्रतट पर स्थित मांटेविडियो (Montevideo), युरूग्वे की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है। 2011 की जनगणना के आधार पर इसकी आबादी लगभग 14 लाख है, जो पूरे देश की आबादी का एक तिहाई है। इसका क्षेत्रफल 201 वर्ग किमी है। शहर की स्थापना 1724 में स्पेन के एक सैनिक के द्वारा हुई थी। पहले फीफा विश्व कप के मैच मांटेविडियो में कराये गये थे। लैटिन अमेरिका के देशों में, यहॉ के जीवनयापन की गुणवत्ता, प्रथम स्थान पर आती है। 2016 में इसे लैटिन अमेरिका के बीटा वैश्विक नगरों (beta world cities) में सम्मिलित किया गया था, और विश्व के नगरों में इसका 78वां स्थान था।

45 अनुवादक की टिप्पिणी : पुन्टा डेल ऐस्ट (Punta del Este), यूरोप के संकीर्ण पठार में, यूरुग्वे के एटलांटिक तट पर स्थित आरामगाहों (resorts) का एक नगर है। पुर्तगाली विस्तारवाद के चलते इसके बसने की शुरूआत 18वीं शताब्दी में हुई। 1896 में ऐंटोनियो ल्यूसिक ने 4447 एकड़ बंजर भूमि खरीदी और उस पर विश्वभर से मंगा कर, विविध पेड़ और पौधे लगाये, और एक वानस्पतिक उद्यान (Botanical garden), तैयार किया। बाद में पेड़ों ने खुद ही बढ़ना फैलना प्रारम्भ किया और अब पूरा क्षेत्र अधिकांशतः चीड़, बबूल, यूक्लिपटस के पेड़ों और विविध प्रजाति की झाड़ियों से भरा पड़ा है। इसकी आबादी लगभग 10,000 है, जो पर्यटकों के कारण गर्मियों में अत्यधिक बढ़ जाती है। यहॉ 45 मीटर ऊॅचा एक प्रकाशस्तम्भ (lighthouse) है।

46 अनुवादक की टिप्पिणी : लगभग एक करोड़ सत्तर लाख आबादी वाला ब्यूनस आयरस (Buenos Aires), अर्जेंटीना की राजधानी और सर्वाधिक आबादी वाला नगर है, जिसे 1994 में संवैधानिक स्वायत्तता प्राप्त हुई। इसका शाब्दिक अर्थ होता है भली हवायें (fair winds) या अच्छी हवायें (good airs)। ब्यूनस आयरस बहुसंस्कृतीय नगर है। इसमें अनेक धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं। यहॉ स्पेनी भाषा के अतिरिक्त अनेक भाषायें बोली जाती हैं।

हमने बड़ी संख्या में, अंदर आते हुए विदेशी जलयान देखे। जर्मनी जलयान, वहाँ सर्वाधिक लोकप्रिय दिखे, और अनेक जलयान, ऐसा लगा, सीधे ही नदी, जो अर्जेटीना और युरेग्वे के बीच सीमा बनाती थी, की ओर जा रहे थे। हमें बताया गया कि कुछ मील और आगे, मांस को पैक करने वाला, एक बड़ा संयंत्र (Piant), फ्रे बेन्टोस (Fray Bentos) का संयंत्र था।

अंत में, यद्यपि, हमें बंदरगाह छोड़ने की इजाजत मिल गयी, और हम नीचे रियो डे ला प्लाटा (Rio de la Plata)[47] के साथसाथ चले, और काफी बाद में, हम अपने ठिकाने, मॉन्टेविडियो में आये। हम बाहर के बंदरगाह में गये, और जलयान को लंगर डालना था। वहाँ हड़ताल थी, और पूरा का पूरा जहाजी बेड़ा इकट्ठा था, और उन पर पहले ध्यान दिया जाना था, क्योंकि वे वहाँ पहले से थे। इसलिये हम जहाज पर ही लगभग एक सप्ताह रुके। अंत में, जहाज को बंदरगाह में प्रवेश करने दिया गया, और हम तट पर पहुँचे।

यद्यपि, हमारी आशायें पूरी तरह धूमिल हो गयीं थीं, क्योंकि हमने पाया कि बड़ा कारोबारी व्यक्ति, वास्तव में, कुल मिलाकर उतना बड़ा कारोबारी नहीं था। बदले में, ठीक है, इसको अपनी दयालुता पर छोड़ते हुए, वह एक अरमानों वाला आदमी था, जो हमेशा पूरे नहीं हुए।

मॉन्टेविडियो में रहना बहुत महंगा था। हर चीज का भुगतान, अमेरिकी डॉलरों में किया जाना था, इसलिये, प्रभावी रूप से, विनिमय दर का विचार रखते हुए, वे एक विशिष्ट विचार रखते हुए प्रतीत हुए; हम मूलभूत चीजों के लिये भी, कल्पनातीत रकम दे रहे थे। तथापि, हम वहाँ डेढ़ साल रहे, तब हमने पाया कि वहाँ सभी प्रकार की हड़तालें और विदेशियों पर बढ़ते हुए प्रतिबंध थे। इसलिये हमने छोड़ देने का निर्णय लिया।

ये सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण है, कि हमें छोड़ना पड़ा, वास्तव में, मॉन्टेविडियो एक अच्छा स्थान था। हड़तालियों को छोड़कर, जनता अधिकांशतः अत्यंत सुखद, अत्यंत सौहार्दपूर्ण थी, और ये यूरोपीय शहर जैसा होता लगता था। ये एक आश्चर्यजनक बंदरगाह और समुद्रतटों के साथ एक सुंदर शहर था। अत्यंत थोड़े समय के लिये, हम हवाई अड्डे के काफी समीप, करास्को (Carrasco)[48] नामक एक स्थान पर रुके। इसमें एक बड़ा भयानक दोष था, कि बड़े समुद्रतटों की महीन रेत, हमेशा घरों में घुसती जाती थी। इसलिये हम शहर के केन्द्र से काफी दूर रहे, हम एक अपार्टमेंट भवन में गये, जहाँ से प्रकाश स्तम्भ (light house) दिखाई देता था।

बाहर बंदरगाह जाने वाली सड़क पर, कुछ मील दूर, एक टूटा हुआ जलयान था। ये एक काफी बड़ा यात्री जलयान था और किसी कारण से ये मुख्य प्रवेश से थोड़ा सा हटकर डूब गया था, और वहाँ ये अवशेष बन गया था। भाटे (low tide) के समय, कोई मुख्य गोदी को देख सकता था। ज्वार (high tide) के समय, पुल और पुल के डेक, फिर भी, पानी के ऊपर रहते थे। हमने यहाँ काफी कुछ तस्करी होती देखी, क्योंकि जलयान को तस्करों के द्वारा ''डलाव (drop)" के रूप में प्रयोग किया जाता था।

वहाँ मॉन्टेविडियो में, बंदरगाह के पार, दूसरी तरफ के एक ऊँचे स्थान (high eminence) को शामिल करते हुए, अनेक सुंदर दृश्य थे। इसे ''पर्वत'' के रूप में जाना जाता था और वहाँ, ठीक शिखर के ऊपर, एक प्रकार का किला था, जो स्थानीय पर्यटन के आकर्षण का केन्द्र था।

---

47 अनुवादक की टिप्पिणी : रियो डे ला प्लाटा (Rio de la Plata) ये युरूग्वे और पराना (Parana) नदियों, जो एटलांटिक महासागर में गिरती हैं, के संगम पर स्थित है। रियो डे ला प्लाटा को एक नदी, खाड़ी या मर्यादित समुद्र कहा जा सकता है। ये दुनियाँ की सबसे चौड़ी नदी है, जिसकी चौड़ाई 2 किमी से लगाकर इसके मुहाने पर 220 किमी तक है, तथा लंबाई करीब 290 किमी है। ये अर्जेटीना युरूग्वे के बीच, सीमा का कुछ भाग बनाती है। इस पर काफी बड़े बंदरगाह और ब्यूनस आयरस और मोंटेविडियो शहर बसे है। रियो डे ला प्लाटा के तटों पर अर्जेटीना और युरूग्वे के घनी आबादी वाले शहर बसे हुए है।

48 अनुवादक की टिप्पिणी : करास्को (Carrasco), जिसका वर्तमान नाम क्रासकीनो हैं, जो 1936 में लेफ्टीनेन्ट मिखाली क्रासकिन, जो सीमा विवाद में शहीद हुए थे, के नाम पर रखा गया है। रूस कें खासान्स्की (khasansky) जिले में, क्रासकीनो एक शहरी क्षेत्र है, जो व्लाडीबोस्टक से 175 मील दक्षिण की तरफ, पोसयट (Posyet) खाड़ी के किनारे पर और उत्तरी कोरिया की सीमा के समीप स्थित है। 2010 में इसकी आबादी लगभग 3250 थी। इसे 1890 में स्थापित किया गया था।

ब्रिटेन के लोगों ने मॉन्टेविडियो को आधुनिक बनाने के लिये काफी कुछ किया था। उन्होंने उसकी बस सेवा शुरू की थी, और उन्होंने गैस के काम भी शुरू किये थे, और इसका एक लाभ ये हुआ कि अनेक लोगों को अंग्रेजी का थोड़ा ज्ञान था।

एक दिन, जब हम शहर के केन्द्र के समीप, एक और अपार्टमेंट में चले गये थे। आकाश काला हो गया, और कुछ समय के लिये, हर चीज कटु रूप से ठंडी (bitterly cold) हो गयी। तब वहॉ एक चक्रवात (cyclone) आया। हम तीनों ने अपनी खुली खिड़कियों को बंद करने के लिये संघर्ष किया। और चूंकि हम अपने कंधों को खिड़कियों के विरुद्ध कठोरता से दबाते हुए इकट्ठे नहीं थे, हमने वास्तव में, एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा। बस स्टेशन की छत अचानक ही हमसे टकराई और गायब हो गयी, लोहे की नालीदार चद्दरें हवा में ऐसे उड़ रही थीं, मानो कि वह टिश्यू पेपर की बनी हों। हमने नीचे देखा, और सभी बसों के कामगारों को देखा, वे खुले हुए मुँह और चौड़ी ऑखों से ऊपर की ओर देख रहे थे।

वास्तव में, हमारे लिये एक आनंददायक दृश्य वह था, जबकि घरों की ऊपर की छत की ओर रखी मुर्गियॉ, सीधे हवा में उड़ा दी गई, और शायद, आखिरी उड़ान में, जो उन्होंने अपने जीवनों में कभी ली, सड़क के बाद सड़क पार करती गईं। अपने पंखों को बगलों से कसकर बंधी हुई मुर्गियों को उड़ते देखना, ये वास्तव में, आश्चर्यचकित करने वाला एक दृश्य था।

एक दृश्य, जिसने मुझे वास्तव में आनंदित किया, वह था, जबकि नये धुले हुए कपड़ों से लदी हुई एक पूरी अलगनी, कपड़े तैराती चली गयी। अलगनी इतनी कठोर और कड़ी थी, मानो एक लोहे की छड़, और चादरें और ''अनुल्लेखनीय (unmentionable)'' उस पर सीधे नीचे लटक रहे थे, मानो कि वे शांत हवा में हों। मैंने चक्रवात इत्यादि अनेक तूफान देखे हैं, परंतु मेरी दृष्टि में, ये सर्वाधिक आनंददायक था।

परंतु साम्यवादियों के विभिन्न समूहों के कारण, जो कष्ट पैदा कर रहे थे, मॉन्टेविडियो अपना आकर्षण खो रहा था। इसलिये हमने कनाडा लौटने का निर्णय लिया। अनेक प्रकार से, मैं उसके लिये खेद व्यक्त करता हूँ, क्योंकि मैं सोचता हूँ कि मैं दूसरे अधिकांश शहरों के बजाय, युरेग्वे में ही रहता। वहॉ उनकी मानसिकता दूसरी तरह की है। वे अपने आपको युरुग्वे का पूर्वी गणतंत्र (Oriental Republic of Uruguay) कहते हैं। आश्चर्यजनक आदर्शो के साथ, ये एक गरीब देश है, परंतु आदर्श इतने आदर्श हैं कि वे अव्यावहारिक हैं।

हम समुद्र से कनाडा वापस लौटे, और तब वहॉ कमाने का प्रश्न उठा। इसलिये मुझे दूसरी पुस्तक लिखनी पड़ी। मेरा स्वास्थ्य तेजी से गिर रहा था। और यही एकमात्र चीज थी, जो मैं कर सकता था।

अपनी अनुपस्थिति की अवधि में, मैंने पाया कि एक व्यक्ति ने उस सामग्री पर, जो मैंने एक कुछ वर्षों पहले, अंग्रेजी पत्रिका के लिये लिखी थी, एक पुस्तक लिखी है। वह एक अत्यधिक विशेष प्रकार का व्यक्ति था, जब कभी उसे रोका गया या एक कानूनी दावे की धमकी दी गई, वह सुविधापूर्वक, दिवालिया हो गया और दोस्तों या रिश्तेदारों ने उसके व्यापार को खरीद लिया, इसलिये वहॉ इसप्रकार का निवारण (redress) नहीं था, वास्तव में वहॉ कुछ भी नहीं था।

कष्टों में से एक बड़ा, जो मुझे तीसरी ऑख से मिला, वह है कि अनेक लोग जो ''लोबसांग रंपा द्वारा अनुमोदित'' लिखते थे, और उस माल पर जिसकी वह आपूर्ति करते थे, केवल इसप्रकार का लेबल लगा देते थे। ये सब कुछ बहुत तेज है; मैं चीजों को ''अनुमोदित'' नहीं करता, अनेक लोग भी, मेरा रूप धारण करते हैं, वास्तव में, काफी संख्या में अवसरों पर, मुझे पुलिस को बुलाना पड़ा था। उदाहरण के लिये, मियामी[49] में एक आदमी, जिसने सेनफ्रांसिस्को में मेरे नाम से प्रकाशक को एक पत्र

49 अनुवादक की टिप्पिणी : मियामी (Miami), दक्षिण पूर्व संयुक्त राज्य में एटलांटिक समुद्र तट पर दक्षिणी फ्लोरिडा का एक बड़ा

लिखा, उसने वास्तव में, मेरे नाम के हस्ताक्षर किये थे। उसने तमाम सारी ''पवित्र जो (Holy Joe)'' चीजें लिखी थीं, जो मैं कभी नहीं करता, और उसने स्वयं को तमाम सारी पुस्तकें भेजने का आदेश दिया। एकदम प्रसंगवश उसी समय मैंने पुस्तक विक्रेता को वेंकोवर (Vancouver) में लिखा, और स्पष्टरूप से, मेरा पत्र पाकर, और ब्रिटिश कोलंबिया की डाक की मुहर देखकर, वह इतना चकित हुआ कि उसने मुझे लिखा और पूछा कि मैं इतना जल्दी कैसे चला गया। इसलिये ऐसा पता लगा कि ये व्यक्ति, मेरे नाम से कईबार सामान का आदेश दे चुका है, और भुगतान नहीं करता। जैसा मैंने कहा, यदि कोई '' मेरा'' रूप धारण करने में, इतना पर्याप्त बेवकूफ है, कठोर भाषा में, लिखने वाला ये व्यक्ति, पकड़े जाने के लायक है। वहॉ दूसरे भी लोग थे, जैसे कि एक आदमी, जो पहाड़ी गुफा से निवृत हुआ, छोटे छिछले कपड़ों में पालथी मारकर बैठा, मेरे होने का नाटक किया। उसने किशोरों को, ये कहते हुए कि ये उनके लिये अच्छा था, यौन करने की, मादक दवायें लेने की, सलाह दी। परंतु समाचार माध्यमों ने, वास्तव में, ऐसी घटनाओं को पकड़ लिया और काफी हंगामा मचाया, और यद्यपि ये सिद्ध हो गया था कि ये बहरूपिये मेरा रूप धारण कर रहे थे, समाचार माध्यम, उसकी सूचना देने के लिये, जो वास्तव में हो रहा था, कभी वास्तविकता की सूचना देने के लिये पास नहीं फटके। मैं बुरी तरह, बुरी तरह, बुरी तरह से आत्महत्या के विरोध में हूँ। मैं बुरी तरह से, बुरी तरह से, बुरी तरह से, मादक दवाओं के विरुद्ध हूँ, और मैं बुरी तरह से, बुरी तरह से, बुरी तरह से, समाचार माध्यमों के विरुद्ध हूँ। मैं सोचता हूँ कि औसत संवाददाता, पराभौतिकी या गूढ़ रहस्यों, की चीजों को रिपोर्ट करने के लिये उपयुक्त नहीं हैं, उनके पास ज्ञान नहीं होता, उनके पास आध्यात्म नहीं होता, और मेरे विचार से, उनके पास मस्तिष्क की शक्ति भी नहीं होती।

एक समय के बाद, फोर्ट इरी में, जहॉ हम दक्षिणी अमेरिका से लौटे थे, हम प्रेसकोट ओन्टारियो (Presscot, Ontario) गये, जहॉ हम एक छोटे होटल में रहे। उस होटल का व्यवस्थापक, वास्तव में, एक अत्यधिक सुघड़ व्यक्ति था। हम वहॉ एक साल रुके, और पूरे साल की अवधि में, प्रबंधन और हमारे बीच, किसी भी समय, हल्की सी भी असहमति या सामंजस्य में हल्की सी भी कमी नहीं हुई। उसका नाम था, इवान मिलर (Ivan Miller), और वह वास्तव में, सज्जन था और मेरी अभिलाषा है कि मैं अब फिर से उसके सभी प्रयासों की, जो उसने किये, के प्रति अपनी सराहना व्यक्त करने के लिये, उसका पता जानता। वह बड़ा महान आदमी था, वास्तव में बहुत बड़ा, और वह पहलवान रह चुका था। फिर भी, वह अधिकांश औरतों से भी अधिक सज्जन था।

बंदरगाह है। मियामी की जनसंख्या लगभग 55 लाख और इसका क्षेत्रफल लगभग 145 वर्ग किमी है। ये वित्त, व्यापार, संस्कृति, संचार, मनोरंजन, कला और अंतराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में एक बड़ा केन्द्र है। 2012 इसे अल्फा वर्ल्ड सिटी के रूप में वर्गीकृत किया गया था। मियामी अमेरिका का सबसे स्वच्छ शहर है और इसकी हवा की गुणवत्ता वर्षभर सर्वोत्तम रहती है। यहॉ काफी हरे भरे क्षेत्र, पीने के स्वच्छ पानी, साफ सड़कें हैं, और पूरे शहर में पुर्नचलन के कार्यक्रम चलाये जाते है। यहॉ 300 से अधिक बहुमंजली इमारतें हैं। डाउन टाउन में अंतराष्ट्रीय बेंकों और अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों का बहुत बड़ा केन्द्र है। दो से अधिक दशकों तक मियामी का बंदरगाह, ''विश्व की समुद्री राजधानी'' के रूप में जाना जाता रहा है। यहां आने वाले यात्री जलयानों की संख्या विश्वभर में सबसे अधिक है।

अध्याय – ग्यारह

कनाडा में वापस होना, उसे प्राप्त करने के लिये, जो विश्वसनीय डाकसेवा थी, अच्छा था। युरुग्वे में काफी परेशानियाँ रहीं थीं, और एक विशेष घटना, जिसने मुझे क्रोध से झागदार बना दिया, वह थी जब, एक लेखक के रूप में, मुझे लिखी गई ढेर सारी डाक मिलती थी, और मोन्टेविडियो का डाकखाना, मुझे उसे नहीं प्राप्त करने देता था। मेरे पास अपना ग्रहण किया हुआ नाम था, और मेरे पास वह नाम भी था, जिससे मैं लोबसांग रंपा, लिखता था, और मोन्टेविडियो के डाकघर के अधिकारी, मुझे दो नामों में डाक नहीं प्राप्त करने लेने देने के लिये एकदम आमादा थे। उनका ये विचार था कि ऐसा व्यक्ति टेढ़ा होना चाहिए, यदि उसे दो नाम लेने पड़े, और इसलिये मैंने मामले पर बहुत विचार किया, और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैं टी. लोबसांग रंपा के नाम से अधिक जाना जाता था। तब मैं पोस्ट ऑफिस गया और मैंने कहा कि मैं टी. लोबसांग रंपा के नाम से डाक लेना चाहता हूँ, और शेष को वे अपने पास रख सकते थे।

तब उन्हें मेरे कागजात देखने पड़े। मेरे कागजातों में नाम गलत था, इसलिये मैं अपनी डाक को पाने में असमर्थ रहा। और अंत में, मुझे एक वकील, ''ऐवोगाडो (Abogado),'' जो नाम के परिवर्तन का पुर्जा बना दे, के पास जाना पड़ा। इसे वैधानिकरूप से किया जाना था, और दस्तावेज पर अनेक अनेक टिकटें लगीं। जिसके बाद, एक युरेग्वे के वैधानिक समाचार पत्र में नाम परिवर्तन के सम्बंध में नोटिस दिया जाना था। जब ये सभी औपचारिकतायें पूरी हुईं, तभी मैं टी लोबसांग रंपा के नाम की डाक पा सका परंतु मुझे दूसरे नाम का उपयोग करने से रोक दिया गया।

अब, वास्तव में, कनाडा में भी कानूनी रूप से, मेरा नाम लोबसांग रंपा हो गया है, और जबकि हम नौकरशाही के विषय पर, अधिकारियों के विषय इत्यादि के विषय पर, बात कर रहे थे कि मैं कनाडा का एक नागरिक हूँ। मैंने कनाडा का प्राकृतिकरण (naturalisation) ले लिया है, और यहाँ फिर से, औपचारिकतायें, वास्तव में, अद्भुत थीं, (पूरी करनी पड़ीं)। परंतु यहाँ, आजकल हर चीज में औपचारिकतायें दिखाई देती हैं, मैं वृद्धावस्था पेंशन, जिसके लिये मैं पात्र हूँ, पाने के लिये प्रयास करता रहा हूँ, परंतु अफसरशाही ऐसी है, या इसलिये कि अधिकारी मुझे कहते हैं कि जबतक मैं एकदम सही पता, और पहुँचने का एकदम सही दिनांक, और छोड़ने का हर स्थान, जहाँ मैं कनाडा में रहा हूँ, नहीं देता, स्पष्टरूप से, मैं उसे नहीं पा सकता। ठीक है, मैं विंडसर (Windsor)[50] से लगाकर प्रेसकोट (Prescott)[51] तक, तब मान्ट्रियल से सेंट जोन्स तक, न्यू ब्रूंसविक (New Brunswick), हेलीफेक्स (Halifax)[52], बेंकोवर से पूरे रास्ते भर, वापस कालगेरी (Calgary), इत्यादि अनेक स्थानों पर रहा हूँ,

---

50 अनुवादक की टिप्पिणी : कनाडा के धुर दक्षिण में स्थित विंडसर (Windsor), ऑन्टारियो का एक शहर है। ये डेट्रॉइट नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। यहाँ कनाडा के मोटर वाहन उद्योग का योगदान उल्लेखनीय है। विंडसर 1854 में एक गाँव के रूप में था। तब इसकी आबादी लगभग 300 से कुछ अधिक थी। 1858 में इसे ताल्लुका का दर्जा मिला, और 1892 में इसे शहर घोषित कर दिया। 1 जुलाई 1867 को यहाँ विंडसर पुलिस सेवा का गठन हुआ। 12 अक्टूबर 1871 को लगी भयंकर आग ने लगभग 100 भवनों को नष्ट करते हुए, इसके अधिकांश केन्द्रीय भाग को नष्ट कर दिया था। 25 अक्टूबर 1960 को हुए भयानक गैस विस्फोट ने यहाँ के काफी भवनों को नष्ट कर दिया। विश्व युद्ध प्रथम और द्वितीय में इसने सराहनीय योगदान दिया। अन्य कनाडियाई नगरों की भांति यहाँ अनेक गंभीर तूफान और तड़ित अक्सर होते रहते है। 1946 में विंडसर में सबसे भयानक और मारक समुद्री तूफान आया था। यहां की हवा की गुणवत्ता कोयला या ऊष्माजनित विद्युत उपक्रमों के कारण बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। इसे कई बार कनाडा की धुंध राजधानी कहा जाता है। 2016 में विंडसर की जनसंख्या लगभग 2 लाख 18 हजार थी। यहाँ आने वाले आव्रजनों की संख्या काफी अधिक है। 27.7 प्रतिशत जनसंख्या विदेशों में पैदा हुए नागरिकों की है। विंडसर की अधिकांश जनसंख्या अंग्रेजीभाषी है। फ्रेंच यहाँ दूसरी भाषा के रूप में है। यहाँ अपराध दर कनाडा में सबसे कम है।

51 अनुवादक की टिप्पिणी : प्रेसकोट (Presscott), अमेरिका के ऐरिजोना प्रान्त की यावापाई काउंटी (Yavapai County), का एक नगर है। इसकी आबादी लगभग 40,000 है। प्रेसकोट में, काफी घर विक्टोरियन शैली के हैं, जिनमें से आठ से नौ तक ऐतिहासिक इमारतें हैं। प्रेसकोट में ऐम्बरी रिडल ऐरोनॉटीकल यूनिवर्सिटी (Embry-Riddle Aeronautical University) और उत्तरी एरिजोना विश्वविद्यालय तथा डोमिनियन विश्वविद्यालय (Northern ArÁona University and Dominion university) हैं। यहाँ, शहर से 11 किमी दूर, नगरपालिका का एक हवाई अड्डा है।

52 अनुवादक की टिप्पिणी : 1749 में स्थापित किया गया हेलीफैक्स (Halifax), कनाडा के नोवा स्कोटिया (Nova Scotia), प्रान्त की

और मुझे सोच लेना चाहिए था कि मैं कनाडा के नागरिक के रूप में, और उसी के पासपोर्ट इत्यादि के साथ अधिक जाना जाता हूँ, परंतु स्पष्टरूप से ये अफसरशाही के पागल अधिकारियों को उपयुक्त नहीं लगता। इसलिये मामला अभी भी, ''विचाराधीन'' है। ये किसी भी दूसरी चीज की तुलना में, सड़े हुए सेब की भांति अधिक दिखाई देता है। क्या ऐसा नहीं है? ई

पिछली रात, मैं वास्तव में काफी अस्वस्थ था, और देर रात तक मैं बैचेनी भरी नींद से जगा और समूह को, उनको जो मेरे सहयोगी, तिब्बत के लामा थे, अपने आसपास झुंड बनाये हुए पाया। वे सूक्ष्मलोक में थे, और वे मुझे शरीर से बाहर आने के लिये, और साथ चलने के लिये तथा उनके साथ चीजों पर चर्चा करने के लिये, झकझोर रहे थे। ''तुम सबके साथ क्या मामला है''? मैंने पूछा। ''यदि मैं जैसा अब हूँ, उससे अधिक खराब महसूस करता हूँ, तो मैं स्थाईरूप से यहॉ से चला जाऊॅगा। पहले हम तुम्हारे लिये, कुछ ओर भी करना चाहते हैं।''

यदि कोई सूक्ष्मलोक की यात्रा उतने वर्षों तक करता है, जैसी कि मैंने की है, इसमें कुछ भी नहीं है, ये बिस्तर से बाहर कदम रखने के समान सरल है, इसलिये मैं इस शरीर में से तुरंत खिसक गया और सूक्ष्मलोक में चला गया। हम एक झील, जिस पर अनेक जलपक्षी क्रीड़ा कर रहे थे, के बगल से साथसाथ चले। यहॉ सूक्ष्मलोक में, आप जानते हैं, प्राणियों को मनुष्यों से कोई भय नहीं होता। इसलिये ये पक्षी केवल पानी में खेल रहे थे। हम काई से ढके हुए एक किनारे पर बैठे, और मेरे शिक्षक ने कहा, ''तुम जानते हो, लोबसांग, परकाया प्रवेश के सम्बंध में अधिक विस्तार से नहीं बताया गया है। हम चाहते थे कि तुम उन लोगों के बारे में, जिन्होंने परकाया प्रवेश किया है, कुछ कहो।'' ठीक है, उस दिन सूक्ष्मलोक में चौराहेनुमा धब्बे पर होना, अत्यंत सुखद था। इसलिये मैंने इंगित किया कि मैं कल सुबह, पुस्तक पूरी होने से पहले, फिर से काम पर लग जाऊॅगा।

यद्यपि, सूक्ष्मलोक में कष्ट से दूर, चिंताओं से दूर, और शेष सब से भी दूर होना, ये बहुत सुखद था। परंतु, जैसा मुझे ध्यान दिलाया गया था, लोग पृथ्वी पर आनंद के लिये नहीं जाते हैं; वे जाते हैं, क्योंकि उन्हें कुछ सीखना है, सिखाना है।

तब, आज दूसरा दिन है, एक दिन, जबकि मुझे परकाया प्रवेश के सम्बंध में, कुछ और अधिक लिखना है।

एटलांटिस[53] के दिनों में, और हॉ! वास्तव में, एटलांटिस था, ये एक लेखक की कपोल कल्पना,

---

राजधानी है। वैधानिक रूप में इसे हैलीफैक्स क्षेत्रीय नगरपालिका (Halifax Regional Municipality, HRM), कहा जाता है, इसकी जनसंख्या चार लाख के करीब है। हैलीफैक्स में शासकीय और निजी कम्पनियों का भारी जमावड़ा है। हैलीफैक्स के मूल निवासियों को मिकमाकी (Mi'kma'ki), कहा जाता है, जो 1400 और 1500 के बीच उत्तरी अमेरिका में आने वाले यूरोपियनों से भी पहले से वहॉ रहते रहे हैं। हैलीफैक्स अटलांटिक राज्यों में बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र है। शहर ने बहुसंस्कृतीय जनसंख्या के विकास के साथसाथ, अनेक समुद्रीय और सैन्य परंपराओं को संजोकर रखा है। हैलीफैक्स में वर्षभर, भॉतिभांति के उत्सव एवं त्योहार मनाये जाते हैं, जैसे कि एटलांटिक फिल्मोत्सव (Atlantic Film Festival), ग्रीकफैस्ट (Greekfest), रॉयल नोवा स्कोटिया अन्तर्राष्ट्रीय टेटू महोत्सव (Royal Nova Scotia International Tattoo), एटलांटिक जाज महोत्सव (Atlantic Jazz Festival), बहुसंस्कृतीय महोत्सव (Multicultural Festival), आदि। हैलीफैक्स गर्व (Halifax Pride) एटलांटिक कनाड़ा के सबसे बड़ा उत्सव होता है। कैनेडियन ब्रॉडकास्टिंग कोरपोरेशन के अनेक रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। 2008 की पुरुषों की विश्व आइस हॉकी चेम्पियनशिप (2008 Men's World Ice Hockey Championship), हैलिक्स और क्यूबेक सिटी में आयोजित की गयीं थी।

53 अनुवादक की टिप्पिणी : एटलांटिस (Atlantis), एक द्वीप है, जिसका उल्लेख प्लेटो (Plato), के कार्य में किया गया है। अटलांटिस के बारे में प्लेटो ने लिखा है कि अटलांटिस स्वर्ग था। वहॉ आलीशान महल और मंदिर थे, जिन पर सोने चांदी की परतें चढ़ी होती थीं। मंदिरों की दीवारें और आधारस्तंभ भी बहुमूल्य धातुओं से बने थे। प्लेटो ने भगवान की एक मूर्ति का भी उल्लेख किया है, जो पूरी तरह से सोने की बनी थी। जिसमें रथ को आगे खींचते पॉच घोड़े भी दिखाये गये हैं। मूर्ति को समुद्र के देवता के रूप में पूजा जाता था। एटलांटिस को उस समय धरती की सबसे खुशहाल जगह माना जाता था। वहॉ सोने और चांदी के साथ–साथ बहुमूल्य पत्थरों की भरमार थी। द्वीप पर दूर दूर तक हरे–भरे मैदान फैले थे। जमीन बहुत उपजाऊ थी। बड़ी तादाद में पशु–पक्षी तथा फलों के बगीचे भी थे। शहर को पॉच भागों में बांटा गया था। इस प्रकार शासन व्यवस्था भी आदर्श थी।

प्लेटो ने अटलांटिस को पृथ्वी का स्वर्ग तो करार दिया, लेकिन साथ ही कुछ नकारात्मक बातें भी लिखी हैं। प्लेटो ने एक स्थान पर बताया है कि अटलांटिस सभ्यता के राजाओं ने, अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए, दूसरे राज्यों पर हमले किये। उन्होंने बड़ी संख्या में नरसंहार कर दूसरे इलाकों पर कब्जा किया, परन्तु, एथेंस (Ethens) से पार नहीं पा सके थे। प्लेटो के मुताबिक, इस काम के लिए भगवान ने अटलांटिस वालों को सजा भी दी। यह सजा तूफान, बाढ़, भूकंप और ज्वालामुखी के रूप में थी। इन प्राकृतिक आपदाओं से अटलांटिस को

मनगढ़त कल्पना मात्र नहीं है; एटलांटिस यथार्थ था। परंतु, वास्तव में, एटलांटिस के दिनों में एक बड़ी ऊँची सभ्यता थी। लोग ''देवताओं के साथ घूमते थे।'' पृथ्वी के बागवान, हमेशा एटलांटिस के विकासों की निगरानी करते थे। परंतु जिनकी देखभाल की जा रही है, वे देखभाल करने वालों से अंजान थे, और इसलिये ऐसा सामने आया कि पृथ्वी के बागवानों ने परकाया प्रवेश की प्रक्रिया का उपयोग किया ताकि वे निगरानी का एक अत्यंत सौम्य रूप रख सकें।

उपयुक्त कंपनों के अनेक शरीर, बागवानों की आत्माओं के द्वारा उपयोगों में लाये जाते थे, और तब वे मनुष्यों में घुलमिल जाते थे और केवल ये पता करते थे कि मनुष्य, बागवानों के सम्बंध में क्या विचार रखते थे, और क्या वे षडयंत्र रच रहे थे।

पृथ्वी के बागवानों, जो सुमेरियन नाम से जाने जाने वाली रहस्यमय सभ्यता की देखभाल करते थे के शिक्षक भी परकाया प्रवेश के द्वारा पृथ्वी पर आये हुए थे। इतना अधिक समय लेते हुए, बड़े अंतरिक्षयानों को रिक्त स्थानों में रखना, ये कुल मिलाकर अत्यधिक धीमा था। परकाया प्रवेश के द्वारा ये कुछ सेकंडों का ही मामला था।

मिस्री लोग भी, अधिकांशतः नियंत्रित किये जाते थे और पूरी तरह उच्च अस्तित्वों, जो विशेषरूप से संस्कारित शरीरों में प्रविष्ट होते थे, के द्वारा पढ़ाये जाते थे, और जब वे शरीर, वास्तव में, अस्तित्वों के द्वारा उपयोग में नहीं लाये जाते थे, उनको सावधानीपूर्वक साफ किया जाता था, लपेटा जाता था और पत्थर के संदूकों में रख कर अलग रख दिया जाता था। मिस्री मूल के भोलेभाले लोग, इन संक्षिप्त रस्मों की झलक पाते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बागवान शरीरों का संरक्षण कर रहे थे, इसलिये उन लोगों ने, जो ऐसी कार्यवाहियों को देख चुके थे, अपने पुजारियों के घरों की तरफ दौड़े, और उन्होंने वह सब कुछ बताया, जो उन्होंने देखा था।

तब पुजारियों ने सोचा कि वे ऐसी चीजों की जॉच करेंगे, और जब एक पर्याप्त उच्च व्यक्ति मरा, उन्होंने उसे पट्टियों में लपेटा, मसालों से पोता और इस सब का शेष सब कुछ, परंतु उन्होंने पाया कि शरीर सड़ गये। तब वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ये आंतें, हृदय, यकृत या फेफड़े ही थे, जिन्होंने सड़न पैदा की, इसलिये ये सभी अंग निकालकर अलग अलग जारों में रखे गये।

ये अच्छी चीज है कि वे आने वाली आत्माओं के लिये, मेजबानों को तैयार नहीं कर रहे थे क्योंकि मेजबान, वास्तव में, आंत रहित होते, क्या वे नहीं होते?!

वास्तव में, कुछ तथाकथित मल्हम लेपन उस समय था, जब एक अंतरिक्ष पुरुष यात्री या अंतरिक्ष महिला यात्री निलंबित सजीवन की स्थिति में रखी जानी थी, ताकि वह (पुरुष या महिला) एक अंतरिक्ष यान के द्वारा हटाई जा सके और इलाज के लिये दूसरी जगह ले जायी जा सके।

इस पृथ्वी पर, काफी संख्या में सुप्रसिद्ध नेता रहे हैं, जो पृथ्वी के शरीरों में, परकाया प्रवेश के द्वारा लाये गये अस्तित्व थे, अब्राहिम (Abraham), मोसेस (Moses), गौतम (Gautama), क्राइस्ट (Christ), और तब सुप्रसिद्ध प्रबुद्धों में भी प्रबुद्ध लियोनार्डो द विंसी (Leonardo da Vinci)[54]।

समय–समय पर भारी नुकसान पहुँचा।

तभी प्रलय हुई और सब कुछ समाप्त हो गया, और समूची सभ्यता इतिहास बनकर रह गई। दरअसल वहॉ कई आपदाओं ने एक साथ हमला किया था। इतिहास के मुताबिक, वहॉ ज्वालामुखी फटा तो समुद्र के पानी से उठी ऊँची लहरों ने समूचे द्वीप को अपने में समा लिया। ज्वालामुखी से निकली काली राख ने पूरे क्षेत्र में अंधेरा कर दिया। बड़ी मात्रा में समुद्र में राख मिलने से उसका रंग भी बदल गया। ज्वालामुखी से निकली बड़ी और गर्म चट्टानों की मानो बारिश ही होने लगी। कई जोरदार धमाके हुए। वर्षों बाद भी, वैज्ञानिक इस घटनाक्रम की तह तक नहीं पहुँच सके हैं। केवल अनुमान ही लगाया जाता है कि उस समय 500 से 1000 एटम बम फटने जैसी स्थिति पैदा हुई थी। जिसके चलते समूची सभ्यता का इतने बड़े स्तर पर सफाया हो गया कि आज तक उसका कोई प्रमाण नहीं मिल पाया है। पूरी सभ्यता का नामोनिशान मिट गया। वर्तमान में कोई एक विशेष देश या महाद्वीप नहीं, वल्कि समुद्र में डूबी हुई पूरी भूमि को एटलांटिस कहा जाता है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि प्राचीन ग्रीक में कालीस्टे द्वीप ही एटलांटिस का एकमात्र अवशेष है, जो अटलांटिस के बारे में कुछ जानने की संभावना बनाये रखता है। हालांकि अभी तक यहां से भी कोई उल्लेखनीय जानकारी नहीं जुटाई जा सकी है।

54 अनुवादक की टिप्पिणी : इटलीवासी लियो नार्डो द विंसी (Leonardo da Vinci) (1452–1519) महान चित्रकार, मूर्तिकार, वास्तुशिल्पी, संगीतज्ञ, कुशल यांत्रिक, तथा वैज्ञानिक थे। अवैध पुत्र के रूप में इनका जन्म फ्लोरेस प्रदेश के विंसी नामक ग्राम में हुआ था।

लियोनार्डो द विंसी के आविष्कार जनश्रुतियॉं हैं और उसने विश्व के ज्ञान को बहुत, बहुत, महानतापूर्वक बढ़ाया। वह, जैसा मैं सोचता हूँ, कोई भी सहमत होगा, पृथ्वी के लोगों के ज्ञान से कहीं अधिक परे, कुशलताओं और विज्ञानों को धारण करता था। लियोनार्डो द विंसी के नाम से जाना जाने वाला व्यक्ति, बिना किसी विशेष लाभ वाला, एक अवैध बच्चा रहा था, कौन जानता है? हो सकता है वह भी, किसी नलसाज का बेटा रहा हो! व्यक्ति का शरीर, जो लियोनार्डो द विंसी बना, कंपन की उस श्रेणी का था, कि अत्यंत ऊंचा अस्तित्व ही उसके शरीर को ले सकता था और उन चीजों को कर सकता था, जो किसी भी आदमी ने, कभी नहीं कर सके होते।

पूरी गंभीरता में, मैं कहता हूँ कि यदि इस विश्व के लोग केवल उनको सुनें, जो वास्तव में, परकाया प्रवेश कर सकते हैं, तो अंतरिक्ष को खोजने का एक आश्चर्यजनक अवसर होगा। उन सभी विश्वों पर सोचें जो वहॉं हैं। सेकडों के दायरे में, विश्व की यात्रा करने में सफल होने की सोचें। कुछ विश्व, पुरातनपंथी मनुष्यों के द्वारा कभी नहीं पहुँचे जा सकते हैं क्योंकि, वायुमंडल गलत हो सकता है, मौसम गलत हो सकता है, या गुरुत्वाकर्षण गलत हो सकता है। परंतु जब कोई व्यक्ति परकाया प्रवेश कर रहा है, तो वह उस ग्रह के किसी भी निवासी के शरीर को ले सकता है, और इसतरह तब वह बिना किसी प्रकार की परेशानियों के, उस ग्रह पर खोज कर सकता है।

परकाया प्रवेश के विज्ञान में पूरी तरह दक्ष मनुष्य, पशुओं के शरीर में भी प्रवेश कर सकते हैं, ताकि प्रभावीरूप से उनका अध्ययन किया जा सके। ये पहले किया जा चुका है; पहले ये काफी जल्दी जल्दी किया जा चुका है, और जातीयस्मृति (racial memories) के कारण, कुछ निश्चित गलत धारणा है कि मानव, जानवरों के रूप में, दोबारा पैदा होते है। वे हमेशा नहीं होते, और न ही जानवर भी मनुष्यों के रूप में पैदा होते हैं। पशु, किसी भी प्रकार से, मनुष्यों से घटिया नहीं हैं। परंतु कुछ निश्चित जानवरों का शरीर लेने वाले, पृथ्वी के बागवानों की जातीय स्मृति है, उसका ज्ञान एक विकृत रूप में, लंबा खिंचता चला गया। इसप्रकार ये ऐसा है कि अच्छे धर्म, भ्रष्ट कर दिये गये।

हमने कनाडा में विस्तृत रूप से यात्रायें कीं हैं। मैं विंडसर, ओन्टारियो, से फोर्ट इरी और प्रेसकोट तक रहा हूँ, और तब हम सेंट जोन, एन.बी गये। कुछ समय के लिये, जैसा कि आप मेरी दूसरी पुस्तकों में पढ़ सकते हैं, हम, बड़ी प्रसन्नता के साथ, समुद्र के बगल से एक अत्यंत सुखद शहर, न्यू ब्रूंसविक में रहे। परंतु जैसा मेरे लेखापाल ने कहा, एक लेखक को घूमना ही चाहिए, इसलिये हम मान्ट्रियल गये और कुछ समय के लिये, बसाहट में रहे। बसाहट, बच्चों के भवनों की, एक की चोटी पर एक रखी हुई ईंटों की भांति, घरों का बेढब दिखता हुआ एक संग्रह है। कैसे भी, ये रहने के लिये काफी सुंदर स्थान था, और वास्तव में, हमने इसे इतना पसंद किया कि इसे छोड़ देने के बाद भी, हम बाद में, वहॉं लौटे। यहॉं फिर से, मान्ट्रियल में हमेशा हड़तालें थी, भाषा की भी कठिनाई थी, क्योंकि फ्रांसीसी कनाडा के नागरिक, उन लोगों के प्रति जो फ्रेंच नहीं बोलते, बिलकुल भी मित्रवत् नहीं थे, और मेरा खुद का पक्का विश्वास हमेशा ये रहा है कि, कनाडा अंग्रेजी बोलने वाला देश था, और मैंने फ्रांसीसी बोलने से मना कर दिया था।

शीघ्र ही, वह समय आया, जब हम फिर से, इसबार वेंकोवर, ब्रिटिश कोलंबिया को चल दिये, जहॉं हम एक होटल में रहते थे, वास्तव में एक होटल, जिसमें अपार्टमेंट भी बने थे। बाद में, वेंकोवर उसके अंतर्गत, जिसको मैं सरकार की सर्वाधिक भयानक शक्ल समझता हूँ, काफी नीचे चला गया, और

ये एकदम शाकाहारी थे। इनकी सभी कृतियॉं मौलिक हैं। लियो नार्डो द विंसी के प्रमाणिक चित्रों में से बहुत थोड़े ही बच सके हैं। इनके सोलह चित्र प्रमाणिक माने जाते हैं, जिनमें से मोनालिसा (Monalisa) और द सुपर (The supper) प्रमुख हैं। ये सभी यूरोप के भिन्न भिन्न देशों की सम्पत्ति माने जाते हैं और संग्रहालयों में सुरक्षित रखे गये हैं। वर्तमान चित्रों का मूल्यानुमान सम्भव नही है। बिल गेट्स ने, 1994 में, लियो नार्डो द विंसी की किताब, Codex Leicester को तीन करोड़ डॉलर में खरीदा था और उसके कुछ पन्नों को Windows 95 में screen saver के रूप में उपयोग किया था। मोनालिसा की मोहक, मारक मुस्कान पर आज भी विश्वभर में चर्चा होती रहती है। नवम्बर 2017 में, विंसी की जीसस क्राइस्ट की एक पेंटिंग, न्यूयार्क में 45. 03 करोड़ डालर में नीलाम हुई है।

वेंकोवर के विरुद्ध दूसरी शिकायत ये है कि ''कोई पालतू जानवर नहीं (no pets)'' का साइनबोर्ड हर जगह दिखाई देता था, और जैसा कि एक होटल वाले ने एकबार कहा था, पालतू जानवरों ने कभी उसके व्यापार को नुकसान नहीं पहुँचाया था, परन्तु बच्चों ने, और वैसे ही पियक्कड़ों ने, और वैसे ही लोगों ने, जो बिस्तर में धूम्रपान करते थे, और स्थान में ही आग लगा देते थे, पहुँचाया था।

मैं अपने जीवन में, आसपास काफी घूमा हूँ। मैंने काफी सीखा है, और अनेक निश्चित चीजें है, मैं ''इच्छा'' करता हूँ, हो पातीं।

उदाहरण के लिये, मैं अभिलाषा करता हूँ, कि संचार माध्यमों के ऊपर सेंसरशिप हो सकती थी, क्योंकि गलत (inaccurate) संचार सूचनाओं के द्वारा, मैंने इतनी अधिक दीनता पैदा होती देखी है। मैं ये जानकर प्रसन्न हूँ कि, अब और अधिक लोग, स्पष्टरूप से सहमत हो रहे हैं, क्योंकि आजकल समाचार जगत की परिशुद्धता (accuracy) अक्सर संदेह में होती है।

काफी, काफी, समय पहले, मेरे बारे में किये गये कथन एकदम सही साबित हुए हैं। ऐसा भविष्यकथन किया गया था कि, मेरे खुद के लोग भी, मेरे विरुद्ध हो जायेंगे। ठीक है, वे हुए हैं, वास्तव में, वे हुए हैं, क्योंकि मेरे संकट के समय में, मेरी मदद करने को, या मेरी कहानी की सत्यता को प्रमाणित करने को, और कि वह कहानी सत्य है, कोई भी आगे नहीं आया।

तिब्बत की मदद करने के सम्बंध में, मेरे पास अनेक आशायें थी। उदाहरण के लिये, मैंने सोचा कि मान्यता मिल जाने के साथ, मैं राष्ट्र संघ के सामने, तिब्बत के लिये बोलने में सफल होऊँगा। मैं आशा करता था कि, मान्यता के साथ, मैं तिब्बत के बारे में, एक रेडियो कार्यक्रम रखूँगा परंतु नहीं, नहीं। मुझे, तिब्बत के लोगों के द्वारा, जिन्होंने अपना वह देश छोड़ा था, कभी भी, किसी भी प्रकार की, कोई मदद नहीं दी गई। पर्याप्त दुखपूर्वक, ये उनका नुकसान है, और वैसे ही मेरा भी। इतना अधिक अच्छा किया जा सकता था। मेरा नाम विस्तृतरूप से जाना जाता है, ये माना जा चुका है कि मैं लिख सकता हूँ, ये भी कहा गया है कि मैं बात कर सकता हूँ। मैं दोनों का उपयोग, तिब्बत की सेवा में करना चाहता था। फिर भी, उन्होंने मुझे मान्यता प्रदान में करने में कोई उत्सुकता नहीं दिखाई, ठीक वैसे ही, जैसे कि, एक भूतपूर्व दलाईलामा के सम्बंध में है, जिसने पंचेनलामा को मान्यता नहीं दी थी, और इसका उल्टा भी। हम कहेंगे ये वैसा ही है, जैसे कि एक राजनेता, दूसरे के अस्तित्व को नकार देता है। परंतु मेरे पास बड़ी संख्या में पत्र हैं, आज के दिन, उदाहरण के लिये, मेरे पास 103 पत्र हैं। अक्सर ये इससे अधिक भी होते हैं, और पत्र पूरे विश्वभर से आते हैं। मैं उन चीजों को सीखता हूँ, जो अनेक लोगों के लिये बंद हैं, और गलत या सही, मुझे बताया गया है, कि वर्तमान लोग, जो तिब्बत से पलायन कर गये हैं, मुझे मान्यता नहीं दे सकते, क्योंकि दूसरा धार्मिक धड़ा, जो उनकी मदद कर रहा है, नाराज हो जायेगा। मेरे पास सभी साक्ष्य है कि वास्तव में ऐसा है। परंतु ठीक है, इस चीज को प्रारंभ करने में, एक छोटे से धार्मिक युद्ध को प्रारंभ में, कोई तुक नहीं है, क्या है?

मुख्यरूप से ये शरणार्थियों के निम्न क्रम हैं, जो मेरे विरुद्ध दिखाई देते हैं। मुझे कुछ महीनों पहले, एक महत्वपूर्ण व्यक्ति, जो दलाई लामा से मिलने गया था और मेरे विषय में चर्चा की थी, से एक पत्र मिला था। मुझे ऐसा सूचित किया गया था कि दलाईलामा ने मुझे पोटाला लौटने के लिये, आमंत्रण

दिया है जब वह साम्यवादियों के आक्रमण से मुक्त हो जाये।

और मात्र कुछ सप्ताह पहले, हमारी दत्तक पुत्री (हम कोई नाम नहीं देते) याद करें? को, ये बताते हुए कि दलाईलामा, डॉक्टर के रंपा के स्वास्थ्य के सम्बंध में अत्यधिक चिंतित थे, और दलाई लामा नित्य उनके लिये प्रार्थना कर रहे थे, एक पत्र प्राप्त हुआ था। पत्र अब मेरे प्रकाशकों के कब्जे में है।

''दूसरी अभिलाषा'' जो मेरी है, वह ये है; आसपास अनेक गूढ़विज्ञान संस्थायें हैं। उनमें से कुछ, अत्यधिक प्राचीन होने का दावा करती हैं, फिर भी, वे एक विज्ञापन वाले व्यक्ति के द्वारा, केवल कुछ वर्ष पहले प्रारंभ की गई थीं, परंतु मेरी शिकायत ये है; यदि ये सभी लोग इतने पवित्र हैं, इतने अच्छे हैं, आध्यात्मिक ज्ञानप्राप्ति के लिये इतने समर्पित हैं, तो हम सब एक साथ क्यों नहीं बैठ सकते, क्योंकि यदि वे सत्यपूर्वक असली हैं, तो वे पहचान जायेंगे कि सभी मार्ग घर को जाते हैं।

इन संस्कृति महाविद्यालयों में से विद्यार्थियों की कुछ संख्या ने मुझसे पूछा है कि मैं अमुक अमुक या किसी दूसरे समूह के भी, संपर्क में क्यों नहीं आता, और उत्तर ये है कि मैं इसे कर चुका हूँ, और इन सभी समूहों के द्वारा, मुझे कुछ सदमा देने वाले जबाव मिले हैं, क्योंकि वे ईर्ष्यालु हैं, या क्योंकि उनको समाचारकर्मियों के द्वारा, जहरीला बना दिया गया है। ठीक है, मैं इसे उस तरह बिल्कुल नहीं देखता। मैं धारण करता हूँ कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई किस धर्म से जुड़ा है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई गूढ़ विज्ञान का किस प्रकार अध्ययन करता है। यदि लोग असली हैं तो वे एकसाथ काम करने के योग्य होंगे।

कुछ वर्षो पहले, मुझे एक व्यक्ति ने, जो कि तथाकथित तिब्बती विज्ञान का संस्थापक था, पहुँच की थी। उसने मुझे लिखा, और सुझाव दिया कि हम ढेर सारा पैसा पैदा कर सकते हैं, यदि मैं उसके साथ संयुक्त हो जाऊँ, और वह मेरे नाम का उपयोग करे। ठीक है, मैं ऐसी चीजों को नहीं करता; मैं पैसा बनाने की चालबाजी, जैसे इस काम के लिये, आगे नहीं आता। मेरी दैनिक आस्थायें हैं, और मैं उस आचरण के अंतर्गत रहता हूँ, जो मुझे पढ़ाया गया था।

मैं इन तथाकथित पराभौतिकी समितियों या क्रमों से अनेक नकली हैं, केवल पैसा बनाने के लिये आईं हैं। मैं एक विशेष समूह के बारे में जानता हूँ, जो मुक्त रूप से पूर्ण स्वीकार करता है कि वे लेखकों के समूह में, जिसको अच्छा समझते हैं, उनमें से सबसे अच्छे को ले लेते हैं, और उससे एकदम अलग तरह की गलती कराते हैं। ठीक है, वह बेईमान है।

ये आपको, एकबार फिर कहने का, एक अच्छा अवसर है, कि यदि आप इस पुस्तक को, सामने के बजाय, पिछले सिरे से, कि मेरी सभी पुस्तकें पूरी तरह सत्य हैं, प्रारम्भ करें, जैसा कि अनेक लोग करते हैं। हर चीज जो मैंने लिखी है, तथ्य है। पराभौतिकी का हर अनुभव, जिसके सम्बंध में, मैं लिखता हूँ, मैं कर सकता हूँ, और ये मेरी सबसे अधिक कर्त्तव्यनिष्ठ अभिलाषा है कि एक समय आयेगा, जब लोग, वास्तव में, मेरी पुस्तकों के सत्य को मान्यता प्रदान करेंगे, क्योंकि मुझे अभी भी, लोगों को काफी कुछ सिखाना है। आजकल, प्रेस के द्वारा संचारित झूठों के कारण, मुझसे कोढ़ी या परित्यक्त की भांति व्यवहार किया जा रहा है। अनेक लोग मेरी पुस्तकों में गोता लगाते हैं, और तब चीजों को लिखते हैं,

मानो कि ये उनका खुद का विचार हो। कुछ समय पहले, मैंने अत्यंत संतोष के साथ, लघु तरंगों पर मेरी पुस्तकों में से एक के एक लंबे सारांश को सुना,, और तब वाचन के अंत में, मैं, ये सुनकर कि उसका लेखन, किसी महिला, जो मुश्किल से ही अपने हस्ताक्षर कर पाती है, को दिया गया है, लगभग भौंचक्का रह गया! तब, मेरा विश्वास करें, मेरी सभी पुस्तकें सत्य हैं, और मैं इसके द्वारा विश्वास करता हूॅं कि मेरे पास एक प्रणाली है, जिसके द्वारा इस विश्व के लोग, दूसरे विश्वों में सुरक्षापूर्वक यात्रा कर सकते हैं।

मैं श्रीमती शीलाघ एम राउस, जिन्होंने इन पंद्रह पुस्तकों को टाइप किया है, धन्यवाद देना चाहूॅंगा। पहली मैंने टाइप की थी। उसने उन्हें, किसी कराह के भी बिना टाइप किया है। दूसरी चीज जिसमें आपकी रुचि हो सकती है ये है; श्रीमती रंपा ने, इस पूरे मामले पर अपना पक्ष रखते हुए, अपनी पुस्तक लगभग पूरी कर ली है। यदि आप इसके सम्बंध में ठीक से जानना चाहते हैं, आपको विज्ञापनों की निगरानी करनी होगी, क्या आप नहीं करेंगे? या आप लिख सकते हैः

Mr. E. Z. Sowter
A. Touchstone Ltd.
33 Ashby Road
Loughborough, Leics,
England

इस प्रकार पुस्तक, जैसा ये अब है, समाप्त हुई।